बहती धारा

एडवेंचर्स ऑफ़ हकलबेरी फिन



मार्क ट्वेन

'The Adventures of Huckleberry Finn' by Mark Twain
का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक : श्यामू संन्यासी

मूल्य
विशिष्ट संस्करण : छः रुपये
साधारण संस्करण : पांच रुपये

परिचय

प्रस्तुत उपन्यास सुप्रसिद्ध अमरीकी उपन्यासकार मार्क ट्वेन के महान उपन्यास 'एडवेंचर्स आफ हकलबेरी फिन' का अविकल हिन्दी अनुवाद है। मार्क ट्वेन की यह कृति उनके दूसरे उपन्यास 'एडवेंचर्स आफ टाम सायर' की ही भांति विश्व की अन्यतम औपन्यासिक कृतियों में गिनी जाती है। अधिकांश आलोचकों का यह अनुमान है कि मार्क ट्वेन ने हकलबेरी के माध्यम से अपने ही बाल और किशोर जीवन की वैविध्यपूर्ण झांकियां इन दोनों अमर उपन्यासों में प्रस्तुत की हैं और शायद इसीलिए इन कृतियों के पात्र और उनमें वर्णित घटनाएं पाठक के मन में सदा के लिए बस जाती हैं।

मार्क ट्वेन तो प्रेमचन्द की तरह लेखक का साहित्यिक नाम है। वास्तविक नाम था सैमुएल लैंगार्न क्लेमेंस। संयुक्त राज्य अमरीका के एक राज्य मिसौरी के छोटे-से गांव में फ्लोरिडा में ईसवी सन् १८३५ में इनका जन्म हुआ था। अपने जन्म-स्थान के बारे में मार्क ट्वेन ने एक जगह अपनी मजाकिया व्यंग्य शैली में लिखा है, "मिसौरी के एक अज्ञात गांव फ्लोरिडा में मेरा जन्म हुआ। इस गांव की जनसंख्या १०० थी और मैंने वहां जन्म लेकर उसमें १ प्रतिशत की वृद्धि कर दी। मानव-जाति के इतिहास में एक मेरे सिवाय और किसी भी महापुरुष ने, यहां तक कि शेक्सपियर ने भी [illegible]

प्रकार २२ वर्ष की उम्र तक इन्होंने खूब यात्राएं कीं, जीवन की
में अनेकविध अनुभव अर्जित किए और ठोकरें भी खूब खाईं
पाकर इनके साहित्यिक व्यक्तित्व के विकास में बहुत सहायक

१८५७ में ये भाग्योदय की तलाश में दक्षिण अमरीका जा
निकले, परन्तु न्यू ओरलियन्स राज्य में मिसिसिपी नदी पार कर
अगनबोट के कप्तान बन गए। नदी-मार्ग के अगनबोट का कप्तान
अभिलाषा बचपन से ही इनके मन में थी; चिरसंचित अभिलाष
हुई थी, इस जीवन में ये इतने रच-पच गए कि फिर दक्षिण अमरीक
भाग्य आजमाने का विचार भी हमेशा के लिए छोड़ दिया। मिसि
इनका नाविक जीवन अमरीकी गृहयुद्ध के छिड़ने के साथ ही स
गया, क्योंकि नदी-मार्ग पर आवागमन बन्द कर देना पड़ा।
१८६२ में ये अपने भाई के पास कारसन सिटी चले गए और वहां से
की चांदी की खानों की ओर निकल पड़े। इनका विचार जल्दी से
बहुत-सा पैसा कमाकर अमीर बन जाने का था, लेकिन भाग्य ने सा
दिया और हर काम में घाटा होता रहा। तब अन्त में इन्होंने सब
को छोड़कर हमेशा के लिए लेखक और पत्रकार का पेशा अपना लि

सबसे पहले १८५६ में इन्होंने 'मार्क ट्वेन' नाम अपनाया। ए
योगी कप्तान इसाइया सेलर्स के मूर्खतापूर्ण कार्यों की खिल्ली उड़
लिए इन्होंने एक लेख लिखा और उसे 'मार्क ट्वेन' उपनाम से प्रक
करवा दिया। तभी से यह उनका साहित्यिक नाम हो गया और अ
सारा संसार सैमुएल लैंघार्न क्लेमेंस को इसी नाम से जानता है।

१८६५ में, न्यूयार्क के 'सटरडे प्रेस' में प्रकाशित 'कालावेरास का
का फुदकनेवाला मेंढक' नामक कहानी ने इन्हें तत्कालीन श्रेष्ठ कह
लेखकों की पांत में बिठा दिया। बाद में इसी नाम से एक कहानियों
संग्रह भी प्रकाशित हुआ।

१८७० में मार्क ट्वेन ने ओलिविया लैंगडन से विवाह किया।
इनके दो पुत्रियां भी हुईं। किसी न किसी समाचारपत्र से इनका सम्ब
निरन्तर बना रहा। १८७२ में ये स्थायी रूप से हार्टफोर्ड रहने के लि
चले गए और वहीं रहते हुए अपनी श्रेष्ठ कृतियों का प्रणयन किया। पुस्त

से प्राप्त प्रसिद्धि और आय से प्रोत्साहित होकर मार्क ट्वेन ने अपने एक सम्बन्धी, चार्ल्स एल० वेब्स्टर के साथ प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया और साथ ही एक मित्र को कम्पोज करने की मशीन बनाने के लिए बहुत-सा पैसा दिया; लेकिन दोनों ही उद्योग असफल हुए और इतना घाटा हुआ कि सब कुछ बेच-बाचकर भी कर्ज चुकाया न जा सका। यदि मार्क ट्वेन चाहते तो देने से इनकार कर सकते थे, क्योंकि दोनों में से एक भी उद्योग सीधे उनके नाम पर नहीं था। लेकिन उन्होंने घाटे की नैतिक जिम्मेदारी से मुंह नहीं मोड़ा और ७० बरस की उम्र में विश्व-व्याख्यान-माला का कार्यक्रम बनाकर और एक-एक पाई बचाकर सारा कर्ज बेबाक कर दिया।

इस विश्व-यात्रा के दौरान मार्क ट्वेन १८९६ में भारत भी आए थे और उनके साथ उनकी पत्नी और दोनों पुत्रियां भी थीं। अपनी इस यात्रा का विशद वर्णन मार्क ट्वेन ने 'फालोइंग द इक्वेटर' नामक पुस्तक में किया है। १८ जनवरी, १८९६ को वे भारत आए और बम्बई, पूना, बड़ौदा, इलाहाबाद, वाराणसी, कलकत्ता, दार्जीलिंग, मुजफ्फरपुर, लखनऊ, कानपुर, आगरा, दिल्ली और जयपुर में भाषण देने के बाद २६ मार्च को यहां से आगे के लिए चल दिए। भारत में सभी जगह उनके भाषणों की खूब धूम रही और टिकट लगा रहने पर भी हर जगह काफी बड़ी संख्या में लोग उन्हें सुनने के लिए आते थे। उनके भारतीय श्रोताओं में अंग्रेजों के अतिरिक्त पारसी, मुसलमान और हिन्दू भी काफी संख्या में होते थे। उस समय के प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार 'मदरास स्टैंडर्ड', 'स्टेट्समैन', 'टाइम्स आफ इंडिया', 'बाम्बे गजेट' आदि ने उनके सभी भाषणों को प्रमुखता से छापा था। मार्क ट्वेन के भाषण होते भी थे बहुत मजेदार। उनके लतीफे, चुटकुले और व्यंग्योक्तियों को सुनकर श्रोता हंसते-हंसते दोहरे हो जाते थे।

भारत के बारे में उन्होंने अपनी यात्रा-पुस्तक में एक स्थान पर लिखा है: "भारत वास्तव में सपनों और रोमान्स का देश है। यहां बेहिसाब अमीरी और बेहिसाब गरीबी है। शान-शौकत से रहनेवाले हैं तो फटे-चिथड़े पहननेवाले भी हैं। महल हैं तो झोपड़ियां भी हैं। शेर हैं और हाथी भी हैं। जंगल हैं और सांप भी हैं। यह हजार जातियों और हजार बोलियों का देश है। मानव-संस्कृति का यह पलना है। मानवी भाषा का यह जन्म-

स्थान है। इंग्लैण्ड की यह [illegible], कनाडा की यह [illegible] और [illegible] की भी अवहेलना की है। यह एक ऐसा देश है जिसे देखने के लिए यहाँ दुनिया के कोने-कोने से लोग आते हैं और यहाँ की एक झलक भी देखने को मिल जाए तो फिर दुनिया में कुछ भी देखने का मन नहीं होता।'

यहाँ के निवासियों के बारे में मार्क ट्वेन की राय बहुत ऊँची थी। अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है 'ओल्ड बगुड [illegible] हैं' 'बेन्ट' और [illegible] में अपना है कि [illegible] कौन [illegible] में है ही नहीं।"

इस प्रकार पूरे तेरह वर्षों तक दुनिया के विभिन्न देशों में भ्रमण करके मार्क ट्वेन ने एक आम आदमी के भी ऊपर का [illegible] पुकारा और अमरीका लौटकर पुनः पत्रकारिता और पुस्तक लेखन में लग गए। लेकिन १९०४ में उनकी पत्नी और दोनों पुत्रियों की सहसा मृत्यु हो गई। यह एक ऐसा आघात था जिसे वे सह न सके। अपने एकाकी जीवन में उन्होंने जो कुछ भी लिखा उसपर इस विषाद की छाया स्पष्ट दिखाई देती है और कटुता एवं निराशा भी परिलक्षित होती है।

२१ अप्रैल, १९१० को ७४ वर्ष की उम्र में अमरीका के इस महान लेखक की मृत्यु हो गई।

कालक्रमानुसार मार्क ट्वेन की मुख्य कृतियाँ इस प्रकार हैं: "इनोसेंट्स एब्रॉड' (१८६९), 'द गिल्डेड एज' (१८७३), 'मार्क ट्वेन्स स्केचेज़: ओल्ड एंड न्यू' (१८७५), 'द एडवेंचर्स आफ टाम सायर' (१८७६), 'लाइफ ऑन द मिसिसिपी' (१८८३), 'द एडवेंचर्स आफ हकलबेरी फ़िन' (१८८४), 'कालोनल द ड्रवेटर' (१८८७), 'वाट इज मैन' (१९०६) और 'द मिस्टीरियस स्ट्रेंजर' (१९१६)। 'मार्क ट्वेन इन इरप्शन' नाम से उन्होंने अपना आत्मचरित भी लिखा था।

मार्क ट्वेन का युग अमरीकी इतिहास का नवजागरण काल है। औद्योगिक विकास और व्यापक जनवादी आस्था के परिणामस्वरूप धर्म और राजनीति की ही तरह उस काल के अमरीकी साहित्य में भी उदार और स्वच्छन्दतावादी मानवीय दृष्टिकोण मुखर होता दिखाई देता

हस्तियाँ अब्राहम लिंकन और कवि वाल्ट व्हिटमन इसी युग में हुए। थोरो और इमर्सन ने भी इसी काल में अपनी रचनाओं से अमरीकी साहित्य और विचार-परम्परा को समृद्ध किया। उत्तरी अमरीका के इस युग के प्रायः सभी साहित्यकारों ने समाज और व्यक्ति के संघर्ष से आविर्भूत समस्याओं को प्रस्तुत किया है। अधिकांश ने पददलितों के प्रति करुणा और स्नेह-समवेदना का प्रदर्शन किया है। राजनीति और साहित्य, दोनों में ही इस काल में दासप्रथा-विरोधी आन्दोलन की प्रमुखता रही और 'टाम काका की कुटिया' जैसा मानवतावादी उपन्यास भी इसी काल में लिखा गया।

मार्क ट्वेन ने अपने युग के इन सभी स्वस्थ और मानवतावादी प्रभावों को ग्रहण किया और अपने भ्रमणशील जीवन और व्यापक अनुभवों के आधार पर अपनी कथा-कृतियों में ऐसे जीवन्त चरित्रों का निर्माण किया जो विश्व साहित्य की अमूल्य निधि हैं। विकट से विकट परिस्थिति में भी व्यंग्य और विनोद के निर्माण में कुशल इस लेखक की प्रतिभा अद्वितीय और काव्यमय पौरुषेय शैली की क्षमता अतुलनीय है। स्थानीय वातावरण अथवा आंचलिकता के सांगोपांग प्रस्तुतीकरण में तो मार्क ट्वेन ने कमाल ही कर दिखाया है। नीग्रो लोगों और विभिन्न प्रदेशों की स्थानीय बोलियों का जैसा अद्भुत प्रयोग मार्क ट्वेन ने किया है वैसा शायद ही कोई कर पाया होगा। विचारों की दृष्टि से भी यह लेखक अपने युग से बहुत आगे है। जिस जमाने में अमरीका का सम्भ्रान्त वर्ग नीग्रो गुलाम को मनुष्य भी समझने को तैयार नहीं था 'हकलबेरी फिन' में यह लेखक भगोड़े नीग्रो दास जिम की मानवीयता को पूरी गरिमा के साथ प्रस्थापित करता दिखाई देता है। व्यंग्य और विनोद, मानवीय करुणा और सहानुभूति एवं मानव की दुष्टता-क्रूरता तथा वीरता और उदारता का जैसा कुशल निर्वाह मार्क ट्वेन ने अपने उपन्यासों में किया है वह अन्यत्र दुर्लभ ही है।

'हकलबेरी फिन के कारनामे' मार्क ट्वेन का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास समझा जाता है। इस युग के सुप्रसिद्ध अमरीकी उपन्यासकार हेमिंग्वे की राय में 'हकलबेरी फिन' मार्क ट्वेन की ऐसी पुस्तक है जिससे समस्त आधुनिक साहित्य का प्रादुर्भाव होता है। एक पूर्ववर्ती लेखक की कृति के सम्बन्ध में किसी भी परवर्ती लेखक की ऐसी उक्ति उस कृति को

इतना रम्य, ऐसी जीवन्त परिस्थितियाँ और कुप्रथाओं समाज की परिचायक है।

उन्नीसवीं शताब्दी (१८४० की दशाब्दी) में अमरीका का महान नदीय जलमार्ग थी। मिसिसिपी के सुदूर तक फैले जलमार्गों, अनेक छोटी-बड़ी नौकाओं और बेड़ों पर सवार नौकरों-बनजारों व्यक्तियों का आवागमन हुआ करता था। एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक माल और सामान भी इसी मार्ग द्वारा पहुँचाया जाता था। यह जलमार्ग अनवरत रूप से दिन-रात चलता रहता था। नदी के बहते पानी की ही तरह था इसके तट पर मानवी आवा-गमन का प्रवाह। एक दिन हकलबेरी फिन अपने शराबी और क्रूर पिता को चकमा देकर, अपनी हत्या का भ्रम फैलाकर इस नदीमार्ग से भाग निकलता है। रास्ते में उसे मिल जाता है जिम नाम का नीग्रो दास, जो अपनी मालकिन के यहाँ से इस डर से भागा है कि वह कहीं उसे दक्षिण के किसी दास व्यापारी के हाथ बेच न दे। गोरा बालक और अश्वेत नीग्रो दास एक छोटे-से बेड़े पर अपनी यात्रा आरम्भ करते हैं, जो जितनी भयानक और कष्टकर है उतनी ही रम्य और सुखकर भी। जिनमें बायस्कोप की तरह नानाविध दृश्यावलियाँ, घटनाएँ और चरित्र गुजरते जा[te] हैं। पग-पग पर संकट और आपदाएँ हैं, जिनका प्रत्युत्पन्न मति से साम[ना] किया जाता है। बुरे और भले सभी तरह के लोग मिलते हैं, लेकिन प[ता] चलता है कि कोई भी न केवल बुरा और न केवल भला होता है। क्रूर [से] क्रूर में भी कहीं न कहीं सहृदयता रहती है। मन में यह बोध जागता है कि साहस और आत्मविश्वास से हर संकट का सामना किया जा सकता है। सही अर्थों में तो 'हकलबेरी फिन' परम्पराओं की दासता से मुक्ति की पुकार और मनुष्य की बाल-आत्मा को वयस्कों की वर्जनाओं से स्वतन्त्र करने [के] शुभ प्रयत्नों की मंगलमय कहानी है, जिसे मार्क ट्वेन जैसे महान् लेखक ने परिहास के पुट, करुणा की फुहारों और आनन्द के धाराप्रवाहों से इस तरह मंडित कर दिया है कि बार-बार पढ़ते रहने का मन होता है। इस महान कृति के अनुवाद में मुझे जिस आनन्द और परितृप्ति की उपलब्धि [हुई] आशा है, पढ़ते समय पाठकों को भी उतनी ही रसोपलब्धि होगी।

—अनुवादक

चेतावनी !

जो लोग इस आख्यान में उद्देश्य ढूंढते पाए जाएंगे उनपर मुकदमा चलाया जाएगा; जो लोग नैतिकता की खोज करेंगे उन्हें देश-निकाला दे दिया जाएगा; जो लोग कथानक का पता लगाने की कोशिश करेंगे उन्हें गोली मार दी जाएगी।

लेखक की आज्ञा से

जी० जी०, शस्त्राधिकारी शस्त्रपालक द्वारा प्रसारित

बहती धारा

घुटने लगता। जब बात बर्दाश्त के बाहर हो गई तो मैं उसकी कड़ी निगरानी से भाग छूटा। फिर से अपने फटे चीथड़े पहनकर और ऊपर चीनी का बोरा ओढ़कर मैंने छुटकारे की सांस ली। लेकिन टाम सायर ने मुझे ढूंढ़ निकाला और बताया कि वह एक डाकू-दल बनाने जा रहा है और अगर मैं फिर विधवा के यहां लौट गया और ढंग-ढड़े से रहने लगा तो वह मुझे अपने दल में शरीक कर लेगा। लिहाजा मैं लौट आया।

लौट आने पर विधवा मुझे गले लगाकर खूब रोई; वह मुझे नासमझ, पथ-भटका, आवारा, भगोड़ा, और भी न जाने क्या-क्या कहती रही। लेकिन उसका मन्शा बुरा नहीं था। उसने मुझे फिर नये कपड़े पहना दिए, और मैं मन मारकर रह गया, कर भी क्या सकता था! फिर वही पुराना चरखा चलने लगा। हर कानून-कायदे का सख्ती से पालन करो। विधवा जब खाने की घंटी बजाए तो ठीक समय पर हाजिर हो जाओ। लेकिन मेज पर पहुंचते ही एकदम खाना शुरू नहीं कर सकते! बुढ़िया खाने की चीजों पर सिर झुकाकर जाने क्या बड़बड़ाने लगती; हालांकि खाद्य-पदार्थों में कोई खराबी नहीं होती थी, सिवाय इसके कि हर चीज अलग-अलग पकाई हुई होती थी। अलग-अलग पकाई चीजें जरूर इतनी स्वादिष्ट नहीं होतीं, जितनी एक ही बरतन में साथ डालकर पकाई हुईं। सब चीजों को एक ही बरतन में साथ पकाने से वे घुल-मिलकर एकरस और खूब स्वादिष्ट हो जाती हैं।

रात के खाने के बाद बुढ़िया किताब लेकर बैठ गई और मुझे मोसेज और बुलरशर्स[1] के बारे में पढ़ाने लगी। मोसेज के बारे में मेरी जिज्ञासा और उत्सुकता बढ़ती जाती थी। लेकिन धीरे-धीरे विधवा से मालूम हुआ कि मोसेज को मरे काफी अरसा हो गया। बस उसी समय मोसेज में मेरी सारी दिलचस्पी खत्म हो गई। बात यह है कि जो मर-मरा गए मैं उनको कोई महत्त्व नहीं देता।

इतने में तम्बाकू पीने की बड़ी जोर की तलब हुई और मैंने विधवा से इजाजत मांगी। मगर उसने मना कर दिया। कहा, यह बुरी बात है,

---

१. बाइबिल के पात्र मूसा आदि।

...ऐसा कभी नहीं करना चाहिए इत्यादि-इत्यादि।
लोगों की बान पड़ जाती है कि वे बगैर जाने-समझे कई मामलों में
राय कायम कर लेते हैं, जैसे कि वह विधवा। जो मोसेज उसका सगा
ा और मर जाने के कारण अब किसी के काम नहीं आ सकता था उसे
इतना परेशान रहती थी और मेरी तम्बाकू पीने की अच्छी-भली
को बुरा बताती थी। और मजा यह कि खुद नसवार लेती थी;
सेसे वह शायद अच्छी आदत थी, क्योंकि खुद जो अमल करती

धवा डगलस की बहिन मिस वाटसन दुबली-पतली खूसट बुढ़िया
रंगीन चश्मा लगाती और हाल में ही अपनी बहिन के पास रहने
आई थी। विधवा के पढ़ा चुकने पर वह हिज्जे की किताब लेकर
था खाने बैठ गई। पूरे एक घण्टे की कवायद के बाद विधवा के
र उसने मेरा पिण्ड छोड़ा। घण्टे-भर से ज्यादा तो मैं उस भिक-भिक
त भी नहीं कर पाता। फिर पूरे एक घण्टे तक सन्नाटा हो गया—
चुप्पी और बेकारी, जिसमें मेरा जी उकताने लगा और चुलबुली
ही। और मिस वाटसन हुक्म दागने लगी, 'हक्ल बेरी, अपने
मत रखो!' 'यों कूबड़ निकालकर मत बैठो, हक्लबेरी! सीधे
ा यह कि 'यों मुह बाकर अंगड़ाई मत लो, हक्लबेरी! राम
कब तमीज आएगी!' फिर वह नरक के बारे में बताने लगी तो
मेरे मुह से निकल गया—'काश, मैं वहां जा पाता!' अब उसकी
ा क्या पूछना! मारे गुस्से के खौखिया उठी। हालांकि मैंने यह
बुरे आशय से नहीं कही थी। मैं सिर्फ कहीं जाना चाहता था,
वर्तन चाहता था, इसलिए योंही बिना विचारे बात मेरे मुंह से
थी। लेकिन उसने उपदेशों की झड़ी लगा दी: 'ऐसी बुरी और
भूलकर भी मुह से नहीं निकालनी चाहिए, दुनिया चाहे इधर
ो जाए, मेरे मुह से ऐसी बात कभी नहीं निकलेगी; और, मैं
ह जीऊंगी कि अन्त में स्वर्ग जा सकूं' आदि-आदि। स्वर्ग, जा
जा रही हो मैं तो वहां जाकर घाटे में ही रहता, फायदा कुछ
टे इस्मत क्ने पाऊंगी, इसलिए मन ही मन फैसला कर लिया

घुटने लगता। जब बात बर्दाश्त के बाहर हो गई तो मैं उसकी कड़ी निगरानी से भाग छूटा। फिर से अपने फटे चीथड़े पहनकर और ऊपर चीनी का बोरा ओढ़कर मैंने छुटकारे की सांस ली। लेकिन टाम सायर ने मुझे ढूढ़ निकाला और बताया कि वह एक डाकू-दल बनाने जा रहा है और अगर मैं फिर विधवा के यहां लौट गया और ढंग-ढड़े से रहने लगा तो वह मुझे अपने दल में शरीक कर लेगा। लिहाजा मैं लौट आया।

लौट आने पर विधवा मुझे गले लगाकर खूब रोई; वह मुझे नासमझ, पथ-भटका, आवारा, भगोड़ा, और भी न जाने क्या-क्या कहती रही। लेकिन उसका मन्शा बुरा नहीं था। उसने मुझे फिर नये कपड़े पहना दिए, और मैं मन मारकर रह गया, कर भी क्या सकता था! फिर वही पुराना चरखा चलने लगा। हर कानून-कायदे का सख्ती से पालन करो। विधवा जब खाने की घंटी बजाए तो ठीक समय पर हाजिर हो जाओ। लेकिन मेज पर पहुंचते ही एकदम खाना शुरू नहीं कर सकते! बुढ़िया खाने की चीजों पर सिर झुकाकर जाने क्या बड़बड़ाने लगती; हालांकि खाद्य-पदार्थों में कोई खराबी नहीं होती थी, सिवाय इसके कि हर चीज अलग-अलग पकाई हुई होती थी। अलग-अलग पकाई चीजें जरूर इतनी स्वादिष्ट नहीं होती, जितनी एक ही बरतन में साथ डालकर पकाई हुई। सब चीजों को एक ही बरतन में साथ पकाने से वे घुल-मिलकर एकरस और खूब स्वादिष्ट हो जाती हैं।

रात के खाने के बाद बुढ़िया किताब लेकर बैठ गई और मुझे मो[illegible]
और बुलरशर्स[1] के बारे में पढ़ाने लगी। मोसेज़ [illegible]
उत्सुकता बढ़ती जाती थी। लेकिन धीरे-धीरे विधवा [illegible]
मोसेज़ को मरे काफी अरसा हो गया।
दिलचस्पी खत्म हो गई। बात यह है कि जो मर-म[illegible]
महत्त्व नहीं देता।

इतने में तम्बाकू पीने की बड़ी जोर [illegible]
से इजाजत मांगी। मगर उसने मना कर [illegible]

---

१. बाइबिल के पात्र मूसा आदि।

झटका दिया तो वह मोमबत्ती की लौ में जा गिरी और मेरे बचाने के पहले तो जल-भुनकर खत्म भी हो गई। किसी से पूछने की जरूरत नहीं थी क्योंकि मैं खुद जानता था कि यह भारी अपशकुन हुआ और जरूर कुछ बुरा होने वाला है। मैं बुरी तरह डर गया। फिर किसी तरह अपने कपड़ों को जोर से झिंझोड़-झटककर बला-बला टाली और उठकर चलते हुए तीन बार मुड़-मुड़कर छाती पर सलीब का चिह्न बनाया। मैंने धागे से अपने बालों की एक छोटी-सी लट को भी बांधने की कोशिश की ताकि डायनें पास न आ सकें; लेकिन मन को किसी भी तरह तसल्ली नहीं हो रही थी। यह सुन रखा था कि घोड़े की नाल मिलने के बाद दरवाजे की चौखट पर जड़ी जाने के बदले खो जाए तो इस टोटके से उस अमंगल का निवारण किया जा सकता है और तब डायनों की बाधा नहीं सताती। लेकिन यह किसी ने नहीं बताया था कि मकड़ी मारने के अमंगल का भी इस टोटके से निवारण हो सकता है।

मैं कांपता हुआ फिर बैठ गया और तम्बाकू पीने के लिए मैंने अपना पाइप निकाला। इस समय सारा घर सो चुका था और मौत का-सा सन्नाटा था, इसलिए मेरा तम्बाकू पीना विधवा को मालूम नहीं हो सकता था। काफी देर के बाद मैंने कस्बे की घड़ी को टन-टन बारह बजाते सुना। उसके बाद फिर सन्नाटा हो गया—पहले से कहीं चुप और शान्त। फिर थोड़ी देर में, नीचे वृक्षों के तले, अंधेरे में किसी के पांव के नीचे एक टहनी के दबकर टूटने की आवाज सुनाई दी—वहां जरूर कोई चल-फिर रहा था। मैं दम साधकर बैठ गया और सुनने लगा। नीचे से बहुत धीमी और साफ आवाज सुनाई दी—म्यांऊ-म्यांऊ! सुनकर मेरे जी-में-जी आया। इधर से मैंने उतने ही धीरे जवाब दिया—म्यांऊ-म्यांऊ! फिर मैं मोमबत्ती बुझाकर खिड़की की राह छप्पर पर निकल आया। वहां से खिसककर जमीन पर उतरा और रेंगता हुआ पेड़ों के बीच पहुंच गया। वहां देखा तो टाम सायर खड़ा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था—हां, वही था।

कि जहां यह जा रही है वहां जाने की कोई कोशिश नहीं करूंगा। लेकिन
यह बात मैंने उससे कही नहीं—फायदा कुछ न होता, झंझट जरूर हो
जाता; फिर उसकी बकवास सुननी पड़ती।

मगर बकवास तो सुननी ही पड़ी। फौरन वह मुझे बड़ी उमंग से स्वर्ग
के बारे में बतलाने लगी: 'वहां किसीको कुछ भी नहीं करना पड़ता; बस,
सारे दिन बीन बजाकर गाया करो, चाहे चैन से घूमते रहो!' ऐसा स्वर्ग
मुझे तो जरा भी न भाया। लेकिन यह बात भी मैंने उससे कही नहीं।
सिर्फ इतना पूछ लिया कि तुम्हारे खयाल में, क्या टाम सायर वहां जा
सकता है? वह बोली, 'नहीं, कोई उम्मीद नहीं!' सुनकर मुझे खुशी हुई;
क्योंकि मैं तो चाहता ही था कि हम दोनों साथ-साथ रहें।

मिस वाटसन मुझे इसी तरह कोचती रही, यहां तक कि मैं थक गया
और अकेलापन महसूस करने लगा। फिर उन दोनों बहिनों ने एक-एक
कर हबशियों (गुलामों) को अन्दर बुलाया और सबने मिलकर रात की
प्रार्थना की और तब हर कोई सोने के लिए चला गया। मैं भी एक मोमबत्ती
लेकर ऊपर अपने कमरे में आया और उसे मेज पर रख दिया। फिर
खिड़की के पास एक कुर्सी पर बैठकर हंसी-खुशी की कोई बात सोचने लगा,
जिससे मन प्रसन्न हो जाए। लेकिन कुछ भी नहीं सूझा। इतना अकेलापन
और उदासी लग रही थी कि जी चाहता था, मर जाऊं! आसमान में
तारे उदास-उदास चमक रहे थे और जंगल में पेड़ों की पत्तियां उदासी-
भरा मर्मर स्वर कर रही थीं। फिर दूर कहीं एक उल्लू बोला—घू-घू···,
किसी मृतक की याद दिलाता हुआ; और तुरन्त बाद एक अबाबील और
एक कुत्ता साथ-साथ चीत्कार उठे, किसीके मरने की घोषणा करते हुए।
और हवा ऐसे अनबूझ स्वर में कनबतियां करने लगी कि मेरे रोंगटे खड़े
हो गए। तभी मैंने दूर जंगल में से आती एक कराहट सुनी—किसी मृत
आत्मा का पैशाचिक स्वर, जो चाहकर भी अपने मन का दुःख कह नहीं
पाती और इसीलिए हर रात अपनी कब्र में से उठकर कराहती हुई इधर-
उधर भटका करती है। मैं बुरी तरह डर गया, दिल ज़ोरों से धड़कने
लगा और मनाने लगा कि कोई संगी-साथी आ जुटे तो जान बचे। तभी
... कहां से आकर मेरे कन्धे पर रेंगने लगी। मैंने ज़ोर का

झटका दिया तो वह मोमबत्ती की लौ में जा गिरी और मेरे बचाने के पहले ही जल-भुनकर खत्म भी हो गई। किसी से पूछने की जरूरत नहीं थी क्योंकि मैं खुद जानता था कि यह भारी अपशकुन हुआ और जरूर कुछ बुरा होने वाला है। मैं बुरी तरह डर गया। फिर किसी तरह अपने कपड़ों को जोर से झिंझोड़-फटककर अला-बला टाली और उठकर चलते हुए तीन बार मुड़-मुड़कर छाती पर सलीब का चिह्न बनाया। मैंने धागे से अपने बालों की एक छोटी-सी लट को भी बांधने की कोशिश की ताकि डायनें पास न आ सकें; लेकिन मन को किसी भी तरह तसल्ली नहीं हो रही थी। यह सुन रखा था कि घोड़े की नाल मिलने के बाद दरवाजे की चौखट पर जड़ी जाने के बदले खो जाए तो इस टोटके से उस अमंगल का निवारण किया जा सकता है और तब डायनों की बाधा नहीं सताती। लेकिन यह किसी ने नहीं बताया था कि मकड़ी मारने के अमंगल का भी इस टोटके से निवारण हो सकता है।

मैं कांपता हुआ फिर बैठ गया और तम्बाकू पीने के लिए मैंने अपना पाइप निकाला। इस समय सारा घर सो चुका था और मौत का-सा सन्नाटा था, इसलिए मेरा तम्बाकू पीना विधवा को मालूम नहीं हो सकता था। काफी देर के बाद मैंने कस्बे की घड़ी को टन-टन बारह बजाते सुना। उसके बाद फिर सन्नाटा हो गया—पहले से कहीं चुप और शान्त। फिर थोड़ी देर में, नीचे वृक्षों के तले, अंधेरे में किसी के पांव के नीचे एक टहनी के दबकर टूटने की आवाज सुनाई दी—वहां जरूर कोई चल-फिर रहा था। मैं दम साधकर बैठ गया और सुनने लगा। नीचे से बहुत धीमी और साफ आवाज सुनाई दी—म्यांऊ-म्याऊ! सुनकर मेरे जी-में-जी आया। इधर से मैंने उतने ही धीरे जवाब दिया—म्याऊ-म्याऊं! फिर मैं मोमबत्ती बुझाकर खिड़की की राह छप्पर पर निकल आया। वहां से फिसलकर जमीन पर उतरा और रेंगता हुआ पेड़ों के बीच पहुंच गया। वहां देखा तो टाम सायर खड़ा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था—हां, वही था।

अध्याय २

सरकती हुई टहनियों से कहीं सिर में खरोंच न लग जाए, इसलिए झुके-झुके पर पंजों के बल चलते हुए हम विधवा के बगीचे के पिछले हिस्से की ओर बढ़ रहे थे। जैसे ही रसोईघर के सामने से गुजरे मैं एक उभरी हुई जड़ से ठोकर खाकर गिर पड़ा। धड़ाम की आवाज हुई। हम दोनों फौरन वहीं दुबक गए और दम साध लिया। उस समय मिस वाट्सन का मस्त-तगड़ा हब्शी जिम रसोईघर के दरवाजे में बैठा था। हमें वह इसलिए दिखाई दे गया कि उसके पीछे रसोईघर में रोशनी हो रही थी। आवाज सुनते ही वह एकदम उछलकर खड़ा हो गया और दरवाजे में से झांककर देखने लगा। कोई मिनट-भर देखते रहने के बाद उसने पूछा, "कौन है ?"

कुछ देर खड़ा वह टोह लेता रहा, फिर दबे पांवों चलता हुआ वहां आया जहां हम दोनों दम साधे पड़े थे। अब वह हम दोनों के ठीक बीच में और बिलकुल इतने करीब खड़ा हो गया कि कभी भी छुआ जा सकता था। इस तरह उसे वहां खड़े-खड़े काफी देर हो गई, लेकिन कोई आवाज नहीं हुई। इसी हालत में जाने कितने मिनट गुजर गए। तभी मेरे एक टखने में जोर की खुजली उठी, लेकिन मैं चुपचाप पड़ा रहा, खुजलाने की हिम्मत न हुई। सोचा, खुजली आप ही मिट जाएगी, मगर वह फैलती गई और थोड़ी देर में तो कान, पीठ, कन्धे, सब कहीं चींटियां-सी रेंगने लगीं। ऐसा लग रहा था कि यदि नहीं खुजलाया तो दम ही निकल जाएगा। खुजली की ऐसी तकलीफ बाद में भी मुझे कई बार हुई है। खासकर बड़े लोगों से मिलते समय, दफन-कफन के वक्त या जब नींद नहीं आ रही हो और सोने की कोशिश करनी पड़े—गरज यह कि जब आप खुजला नहीं सकते, ऐसे समय मेरे सारे बदन में नीचे से ऊपर तक खुजली होने लगती है।

इतने में जिम ने कहा, "बोलते क्यों नहीं, कौन हो ? कहां हो ? मैंने किसी को गिरते सुना है, जरूर सुना है। न सुना हो तो कुत्ता खा जाए मेरी बिल्लियों को ! अच्छा, अब यहीं बैठकर देखता हूं कि फिर गिरने की आवाज सुनाई देती है या नहीं !"

और यह कह कर वह मेरे और टाम के बीचोंबीच जमीन पर बैठ गया। एक पेड़ के तने से पीठ टिकाकर उसने दोनों टांगें फैला दीं। उसकी एक टांग मेरी टांग से लड़ते-लड़ते बची। अब मेरी नाक खुजलाने लगी और सो भी इतनी जोर से कि आंखों में आंसू आ गए। फिर अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे, सब कहीं खुजली होने लगी। मेरे बुरे हाल हो गए। समझ नहीं पा रहा था कि कैसे जब्त करूं! छह या सात मिनट तक जान सांसत में पड़ी रही, लेकिन ऐसा लगता था जैसे घण्टों बीत गए। सब मिलाकर ग्यारह जगह खुजखुजाहट हो रही थी। दांत भींचे मैं जब्त करने की कोशिश करता रहा, शायद मिनटभर बाद मेरी हिम्मत जवाब दे जाती·· तभी जिमकी नाक बजती सुनाई दी, दूसरे ही क्षण वह खर्राटे ले रहा था। मेरे जी-में-जी आया और मजा यह कि अब कहीं खुजली भी नहीं हो रही थी।

टाम ने इशारा किया—मुंह से एक हलकी सी आवाज—और हम वहां से रेंगते हुए आगे बढ़े। कोई दस फुट जाने के बाद टाम ने मेरे कान में फुसफुसाकर कहा, क्यों न जिम को पेड़ से बांधते चलें, बड़ा मजा आएगा। मैंने मना कर दिया, कहीं जाग गया और शोर मचा दिया तो लेने के देने पड़ जाएंगे; और वे जान जाएंगी कि मैं घर में नहीं हूं। अब टाम ने कहा कि हमारे पास मोमबत्तियां नहीं हैं, चलो, रसोईघर में से ले आएं। लेकिन मैं इसके भी पक्ष में नहीं था। डर रहा था कि जिम जाग गया तो बुरा होगा। पर टाम किसी भी तरह नहीं माना। तब मुझे मन मारकर उसके साथ जाना पड़ा। हम रसोईघर में घुसे और टाम ने तीन मोमबत्तियां लेकर उनकी कीमत पांच सेंट का एक सिक्का मेज पर रख दिया। अब बाहर आ गए तो मैंने जोर लगाई कि चलो, सही-सलामत निकल आए। चाहता था कि जल्दी वहां से भाग आएं, लेकिन टाम को शैतानी सूझ रही थी। वह जिम को यों ही छोड़ जाने के लिए तैयार नहीं था। धीरे-धीरे रेंगता हुआ उधर चला गया जहां जिम बैठा खर्राटे भर रहा था। मैं डर के मारे और अकेलेपन से खड़ा उसके लौटने का इन्तजार करता रहा। इन्तजार की वे घड़ियां मुझे बहुत लम्बी और भारी लगीं।

जैसे ही टाम लौटा हम बगीचे की बागड़ के रास्ते बाहर निकल गए

ने न तो किसी के सामने सिक्के से कभी कुछ कहा और न किसी को बताया कि डायनों को बुलाने के लिए क्या कहना होता है। आस-पास वाले उस सिक्के को एक निगाह देखने के लिए जिस को मुंह मांगी चीज़ दो तैयार हो जाते थे, मगर छूने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी— के दिये सिक्के को भला कौन छू सकता था ! धीरे-धीरे जिम चाकरी सी काम का न रहा—जिसपर डायनें सवारी कर चुकी हो और जो को रूबरू देख चुका हो उससे चाकरी भला क्या होती !

ख़ैर, जब टाम और मैं पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गए तो हमने वहां टकर गांव की ओर देखा। हमें तीन-चार जगह दीये टिमटिमाते दिए, शायद उन घरों में कोई बीमार रहा होगा। ऊपर आसमान चमक रहे थे और गांव के किनारे नदी की धारा दिखाई दे रही थी, कोई मील-भर चौड़ा पाट इस समय बिलकुल शान्त और खूब फैला रहा था। हम पहाड़ी के उस पार उतर गए। वहां हमें जो हारपर, र्स और दो-तीन दूसरे लड़के मिले। वे सब चमड़ा रंगने के एक ारखाने में छिपे बैठे थे। हमने वहां घाट से दबी एक छोटी डोंगी ौर उसमें सवार होकर धारा के साथ चल पड़े। कोई ढाई मील ने के बाद हमें पहाड़ी के किनारे एक झील-सी मिली। डोंगी को ा किनारे लगाया और उतर पड़े।

र हमें वहां से झाड़ियों में ले गया। वहां उसने सबसे वचन लिये ा यह भेद किसी पर प्रकट नहीं करेंगे और बात को बिलकुल गुप्त फिर आगे चले तो झाड़ियां घनी होती गईं। वहीं पहाड़ की गुफा े लिए एक सूराख-सा बना हुआ था। हमने मोमबत्तियां जला लीं के बल रेंगते हुए अन्दर घुसे। दो सौ गज इसी तरह रेंगते चले ाद थोड़ी खुली जगह मिली। यहां टाम कुछ देर इधर-उधर ढूढ़- ता रहा और फिर फौरन एक दीवाल के नीचे गायब हो गया। ता चला कि वह किसी सुरंग का मुंह था। उस सुरंगनुमा गलि- ने हुए हम एक ऐसी जगह पहुंचे जो चारों तरफ से बन्द कमरे- रही थी। यहां नमी और ठण्ड के साथ-साथ पानी की बूंदें भी थीं। हम यहां पहुंचकर रुक गए।

…ने था किसी के सामने सिक्के से कभी कुछ कहा और न किसी को बताया कि डायनों को बुलाने के लिए क्या कहना होता है। आस-पास वसी उस सिक्के को एक निगाह देखने के लिए जिस को मुह मागी चीज़ दो तैयार हो जाते थे, मगर छूने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी — के दिये सिक्के को भला कौन छू सकता था ! धीरे-धीरे जिम चाकरी सी काम का न रहा—जिसपर डायनें सवारी कर चुकी हों और जो को रूबरू देख चुका हो उससे चाकरी भला क्या होती !

खैर, जब टाम और मैं पहाड़ी की चोटी पर पहुच गए तो हमने वहा टकर गाव की ओर देखा। हमे तीन-चार जगह दीये टिमटिमाते दिए, शायद उन घरो में कोई बीमार रहा होगा। ऊपर आसमान चमक रहे थे और गाव के किनारे नदी की धारा दिखाई दे रही थी, कोई मील-भर चौड़ा पाट इस समय बिलकुल शान्त और खूब फैला ग रहा था। हम पहाडी के उस पार उतर गए। वहा हमे जो हारपर, बर्स और दो-तीन दूसरे लड़के मिले। वे सब चमड़ा रगने के एक कारखाने मे छिपे बैठे थे। हमने वहा घाट से बधी एक छोटी डोंगी और उसमे सवार होकर धारा के साथ चल पड़े। कोई ढाई मील ने के बाद हमे पहाड़ी के किनारे एक झील-सी मिली। डोंगी को रा किनारे लगाया और उतर पड़े।

र हमें पहा से झाड़ियों मे ले गया। वहा उसने सबसे वचन लिये र यह भेद किसी पर प्रकट नहीं करेंगे और बात को बिलकुल गुप्त फेर आगे चले तो झाड़िया घनी होती गईं। वहीं पहाड़ की गुफा के लिए एक सूराख-सा बना हुआ था। हमने मोमबतिया जला ली के बल रेंगते हुए अन्दर घुसे। दो सौ गज इसी तरह रेंगते चले बाद थोड़ी खुली जगह मिली। यहां टाम कुछ देर इधर-उधर टूट-ता रहा और फिर फौरन एक दीवाल के नीचे गायब हो गया। ता चला कि यह किसी सुरग का मुह था। उस सुरगनुमा गलि-ने हुए हम एक ऐसी जगह पहुचे जो चारों तरफ से बन्द कमरे-रहा थी। वहां नमी और ठण्ड के साथ-साथ पानी भी बहे भी थीं। हम यहां पहुचकर रुक गए।

ने। न तो किसी के सामने सिक्के से कभी कुछ कहा और न किसी को यही बताया कि डायनों को बुलाने के लिए क्या कहना होता है। आस-पास के हबशी उस सिक्के को एक निगाह देखने के लिए जिम को मुंह मांगी चीज देने को तैयार हो जाते थे, मगर छूने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी—जिन के दिये सिक्के को भला कौन छू सकता था! धीरे-धीरे जिम चाकरी के किसी काम का न रहा—जिसपर डायनें सवारी कर चुकी हो और जो जिन को रूबरू देख चुका हो उससे चाकरी भला क्या होती!

खैर, जब टाम और मैं पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गए तो हमने वहां से पलटकर गांव की ओर देखा। हमें तीन-चार जगह दीये टिमटिमाते दिखाई दिए, शायद उन घरों में कोई बीमार रहा होगा। ऊपर आसमान में तारे चमक रहे थे और गांव के किनारे नदी की धारा दिखाई दे रही थी, उसका कोई मील-भर चौड़ा पाट इस समय बिलकुल शान्त और खूब फैला हुआ लग रहा था। हम पहाड़ी के उस पार उतर गए। वहां हमें जो हारपर, बेन राजर्स और दो-तीन दूसरे लड़के मिले। वे सब चमड़ा रंगने के एक पुराने कारखाने में छिपे बैठे थे। हमने वहां घाट से बंधी एक छोटी डोंगी खोली और उसमें सवार होकर धारा के साथ चल पड़े। कोई ढाई मील नीचे जाने के बाद हमें पहाड़ी के किनारे एक झील-सी मिली। डोंगी को हमने यहां किनारे लगाया और उतर पड़े।

टाम हमें वहां से झाड़ियों में ले गया। यहां उसने सबसे वचन लिये कि अपना यह भेद किसी पर प्रकट नहीं करेंगे और बात को बिलकुल गुप्त रखेंगे। फिर आगे चले तो झाड़ियां घनी होती गईं। वहीं पहाड़ की गुफा में जाने के लिए एक सूराख-सा बना हुआ था। हमने मोमबत्तियां जला लीं और पेट के बल रेंगते हुए अन्दर घुसे। दो सौ गज इसी तरह रेंगते चले जाने के बाद थोड़ी खुली जगह मिली। यहां टाम कुछ देर इधर-उधर ढूंढ़-खोज करता रहा और फिर फौरन एक दीवाल के नीचे गायब हो गया। अब हमें पता चला कि यह किसी सुरंग का मुंह था। उस सुरंगनुमा गलियारे में होते हुए हम एक ऐसी जगह पहुंचे जो चारों तरफ से बन्द कमरे-जैसी लग रही थी। यहां नमी और ठण्ड के साथ-साथ पानी की बूंदें भी टपक रही थीं। हम यहां पहुंचकर रुक गए।

टाम ने कहा, "अब हमारे डाकू-दल की स्थापना होगी। हम इसे 'टाम सायर का दस्यु-दल' कहेंगे। इसमें सम्मिलित होनेवालों को अपने खून से हस्ताक्षर कर प्रतिज्ञा करनी होगी।"

सभी भर्ती होना चाहते थे, इसलिए टाम ने जेब से प्रतिज्ञा-पत्र निकाला और पढ़ना शुरू किया। प्रतिज्ञा में कहा गया था कि हर लड़का दल के अन्दर रहेगा और दल का पूरा साथ देगा और दल का भेद किसी से नहीं कहेगा; और अगर किसी बाहरी आदमी ने दल के किसी भी लड़के को सताया या बुरा सलूक किया तो दल के जिस लड़के को भी उस आदमी और उसके परिवार को मार डालने का हुक्म दिया जाएगा बिना किसी ननूनच के उसे वह हुक्म बजा लाना होगा, और जब तक वह उन लोगों को मारकर उनके सीनों मे सलीब का चिह्न तराश न देगा न तो कुछ खाए-पिएगा और न सोएगा। सलीब इस दल का निशान होगा और दल के बाहर का कोई आदमी इस निशान का इस्तेमाल न कर सकेगा; अगर किया तो पहली बार उसपर मुकदमा चलाकर सजा दी जाएगी और दुबारा उसका वध कर दिया जाएगा। और अगर दल के किसी सदस्य ने भेद प्रकट किया तो उसका गला काट दिया जाएगा और उसकी लाश को जलाकर राख चारों ओर बिखेर दी जाएगी और खून की स्याही से उसका नाम दल की सूची से काटकर उसे हमेशा-हमेशा के लिए भुला दिया जाएगा; उसका नाम दल के लिए गाली समझी जाएगी और भूलकर भी कभी जबान पर नहीं लाया जाएगा।

सब ने इस प्रतिज्ञा-पत्र की खूब तारीफ की और कहा कि यह बहुत बढ़िया है और टाम से पूछा कि क्या यह तुम्हारे ही दिमाग की उपज है। उसने बताया कि कुछ हिस्सा तो जरूर मेरा ही सोचा हुआ है, लेकिन बाकी बहुत-सा डाकुओं की सच्ची कहानियों की किताबों से लिया हुआ है। और उसने कहा कि उच्च कोटि के जितने भी दस्युदल होते हैं सबके ऐसे ही प्रतिज्ञा-पत्र होते हैं।

कुछ लोगों की यह राय हुई कि दल का भेद देनेवाले लड़कों के परिवारों को भी मार डालना चाहिए। टाम को यह राय बहुत पसन्द आई और [illegible] लिया।

फिर बेन राजर्स ने कहा, "हक फिन के परिवार नहीं है। बताओ इसका क्या होगा ?"

"क्यों, क्या इसका पिता नहीं है ?" टाम सायर ने जवाब दिया।

"है तो जरूर, मगर पता नहीं कहां है ! पहले चमड़ा रंगाई के कारखाने में शराब पीकर सूअरों के साथ पड़ा रहता था। इधर तो साल-भर से दिखाई नहीं दिया। उसे कहां ढूंढ़ेंगे ?"

देर तक वे इस विषय पर चर्चा करते रहे। सबका यही कहना था कि दल में शरीक होने वाले हर लड़के का परिवार होना चाहिए, ताकि वक्त-जरूरत उन लोगों को मारा जा सके; अगर कोई बिना परिवार का है तो उसे दल में लिया नहीं जा सकता, क्योंकि ऐसा करना उन लोगों के साथ ज्यादती होगी जो परिवार वाले हैं। अन्त में बात यहां तक पहुंच गई कि मुझे दल में शरीक नहीं किया जा सकता। सब मुंह लटकाए चुप बैठ गए। किसी की समझ में कोई तरीका नहीं आ रहा था। मैंने भी समझा, अपने खिलाफ फैसला हो गया और मुझे रुलाई आने लगी, तभी फौरन एक बात सूझ गई और मैंने मिस वाटसन को पेश कर दिया, कहा कि तुम चाहो तो उसे मार सकते हो।

सुनते ही सब खुशी से उछल पड़े।

"ठीक है, ठीक है ! उससे काम चल जाएगा। हक शरीक हो सकता है।"

फिर सबने अपनी-अपनी अंगुलियों में पिन चुभाकर खून निकाला और मैंने भी अपने खून से प्रतिज्ञा-पत्र पर दस्तखत कर दिए।

"अच्छा, अब बताओ," बेन राजर्स ने पूछा, "हमारे दस्यु-दल का काम क्या होगा ?"

"खून और लूटपाट।" टाम ने कहा।

"मगर हम लूटेंगे किसे—मकानों को, जानवरों को, या…?"

"छुः ! पशुओं को निकाल ले जाना, घरों में घुसना चोरी है, मक्कारी है।" टाम ने कहा, "हम चोर-उचक्के गिरे नहीं, डाकू हैं, असली खानदानी डाकू और हमें ऐसी डकैती करेंगे। हमारा काम होगा राह चलती बग्घियों और गाड़ियों को रोकना, लूटना और खून करना। हम हाटे

फिर बेन राजर्स ने कहा, "हक फ़िन के परिवार नहीं है। बताओ, इसका क्या होगा?"

"क्यो, क्या इसका पिता नहीं है?" टाम सायर ने जवाब दिया।

"है तो जरूर, मगर पता नहीं कहां है! पहले चमड़ा रगाई के कारखाने मे शराब पीकर सूअरो के साथ पड़ा रहता था। इधर तो साल-भर से दिखाई नही दिया। उसे कहा ढूंढ़ेंगे?"

देर तक वे इस विषय पर चर्चा करते रहे। सबका यही कहना था कि दल मे शरीक होने वाले हर लड़के का परिवार होना चाहिए, ताकि वक्त-जरूरत उन लोगों को मारा जा सके; अगर कोई बिना परिवार का है तो उसे दल में लिया नहीं जा सकता, क्योंकि ऐसा करना उन लोगों के साथ ज्यादती होगी जो परिवार वाले हैं। अन्त मे बात यहा तक पहुंच गई कि मुझे दल मे शरीक नही किया जा सकता। सब मुंह लटकाए चुप बैठ गए। किसी की समझ मे कोई तरीका नही आ रहा था। मैंने भी समझा, अपने खिलाफ फैसला हो गया और मुझे रुलाई आने लगी; तभी फौरन एक बात सूझ गई और मैंने मिस वाटसन को पेश कर दिया ... उसे मार सकते हो।

सुनते ही सब खुशी से उछल पड़े।

"ठीक है, ठीक है! उससे काम चल जाएगा। हक शरीक हो सकता है।"

फिर सबने अपनी-अपनी अंगुलियों मे पिन चुभाकर खून निकाला और मैंने भी अपने खून से प्रतिज्ञा-पत्र पर दस्तखत कर दिए।

"अच्छा, अब बताओ," बेन राजर्स ने पूछा, "हमारे दस्यु-दल का काम क्या होगा?"

"खून और लूटपाट।" टाम ने कहा।

"मगर हम लूटेंगे किसे—मकानों को, जानवरों को, या...?"

"दुत्! पशुओं को निकाल ले जाना, घरों में घुसना चोरी है, नकबजनी है।" टाम ने कहा, "हम चोर-उठाई गिरे नहीं, डाकू हैं, असली खानदानी डाकू और खुले बन्दो डकैती करेंगे। हमारा काम होगा राह चलती सवारियों और गाड़ियों को रोकना, लूटना और खून करना। हम डाटे

मारे रहेंगे और लोगों का खून कर उनकी घड़ियाँ और रुपये-पैसे लेंगे। सेंत में हम कुछ भी नहीं लेंगे।"

"क्या हम हर बार लोगों का खून करेंगे ?"

"हाँ, हर बार। यही ठीक रहेगा। वैसे कुछ उस्तादों की यह राय भी है कि हर बार खून नहीं करना चाहिए मगर लोगों को पकड़ लाकर गुफा में बन्द कर देना चाहिए जब तक उनकी फिरौती[1] न आ जाए।"

"फिरौती क्या होती है ?"

"मुझे नहीं मालूम। लेकिन कुछ लोग खून के बदले फिरौती को ज्यादा पसन्द करते हैं। फिरौती के बारे में मैंने किताबों में भी पढ़ा है, इसलिए हमें भी फिरौती पर अमल करना होगा।"

"लेकिन बिना जाने हम फिरौती कैसे कर सकते हैं ?"

"जानने न जानने से क्या, जो लिखा है वह हमें करना ही होगा। हम अपने मन से तो कुछ कर नहीं रहे। वह जो दिया कि किताबों में लिखा है। लिखे के विरुद्ध जाने से तो बड़ा गोलमाल हो जाएगा। क्या तुम गोलमाल करना चाहते हो ?"

"ठीक है, तुमने जो कहा उसे हमने सुन लिया। मगर, टाम सायर, यह बताओ कि बगैर यह जाने कि फिरौती क्या है हम उन पकड़े हुए लोगों के साथ फिरौती करेंगे कैसे ? मुझे तो इस बात का जवाब चाहिए। तुम्हारे ख्याल में यह क्या चीज है ?"

"ठीक-ठीक तो मुझे मालूम नहीं, लेकिन पकड़े हुए लोगों को फिरौती तक रोके रखने का शायद यह मतलब हो कि उन्हें मरने तक रोक रखा जाए।"

"हाँ, अब कुछ बात हुई। एक मतलब तो समझ में आया। यह तुम्हें पहले ही बता देना चाहिए था। ठीक है, हम उन्हें उनके मरने तक रोक रखेंगे। लेकिन यह काम बड़े झंझट का होगा—एक तो रोज उन्हें खिलाओ-पिलाओ और दूसरे उनके भाग जाने का डर। देख लेना, वे भागने की कोशिश से तो बाज आएंगे नहीं।"

---

१. फिरौती उस रकम को कहते हैं जो किसी पकड़े गए हुए व्यक्ति को छोड़ने के लिए
[illegible]

"कैसी बात करते हो बेन राजर्स ! भागेंगे कैसे ? पहरेदार भरी बन्दूकें लिये खोपड़े पर सवार जो रहेंगे—अपनी जगह से एक कदम भी हिले कि गोली नही मार दी जाएगी !"

"अच्छा, पहरेदार ! मतलब यह कि किसी को बन्दूक लेकर रात-दिन उनपर पहरा देना होगा। बेचारा पहरेदार रात मे सो भी न सकेगा। इससे क्या यह अच्छा न होगा कि जैसे ही वे पकड़कर यहां लाए जाए कोई मुगदर से कपाल क्रिया कर उनकी फिरौती कर दे ? फौरन छुट्टी हो जाये !"

"ऊं हूं ! हम ऐसा नही कर सकते, क्योंकि किताबो मे ऐसा कही भी नही लिखा है। और बेन राजर्स, तुम्हे तय करना होगा कि तुम ढंग से सारे काम करना चाहते हो जैसाकि किताबो मे लिखा है या बेढंगेपन से ? क्या तुम्हारा खयाल है कि किताबें लिखने वाले सब बेवकूफ थे ? क्या वे जानते नही थे कि काम करने का सही ढंग क्या है और गलत क्या ? कहीं तुम्हें अपने बारे मे यह गलतफहमी तो नहीं है कि तुम किताबें लिखने वालो से ज्यादा जानते हो और उन्हे सिखा सकते हो ? नहीं जनाब, आपको कुछ नही आता; और हम बिलकुल कायदे से फिरौती करेंगे, बेकायदा हर्गिज नही।"

"अच्छा बाबा, यही सही ! मगर इतना जरूर कहूंगा कि मुझे यह ंग परले दर्जे की बेवकूफी लगता है। अच्छा, यह बताओ, क्या हम औरतो ा भी खून करेंगे ?"

"सुनो, इसका सवाल ! बेन राजर्स, ऐसा सवाल तो कोई नासमझ ी नहीं करेगा ! औरतों का खून ? ऐसी बात तो किसी किताब मे कही नही लिखी है। हम उन्हें गुफा में लाएंगे, आदर-मान से रखेंगे, विनय व्यवहार करेंगे और वे धीरे-धीरे हमसे प्रेम करने लगेंगी और फिर लौट- अपने घर जाना ही नही चाहेंगी।"

"अगर किताबो मे ऐसी बात लिखी है तो वह मुझे स्वीकार है, मगर ने ठीक नहीं समझता क्योंकि थोड़े ही दिनो में सारी गुफा औरतों र फिरौती वाले आदमियो से भर जाएगी और डाकुओ के लिए वहा रखने को भी जगह नही बचेगी। खैर, मुझे क्या करना है, जैसा तुम ।"

इस बीच टामी बार्न्स को, जो सबसे छोटा था, नींद आ गई थी
उसे जगाया गया तो वह डर गया और रो-रोकर कहने लगा कि
आऊंगा, मुझे अम्मा के पास ले चलो, मुझे डाकू नहीं बनना।

इसपर सब उसका मजाक बनाने और उसे 'अम्मा का लाडला'
'रोना' कह-कहकर चिढ़ाने लगे। वह बुरी तरह बिगड़ गया और
देने लगा कि अभी जाकर सारी पोल खोल दूंगा। तब टाम ने अपने पा
पांच सेंट का सिक्का देकर उसे बड़ी मुश्किल से चुप किया। फिर वह बो
"अब हम को भी घर चलना चाहिए। अगले हफ्ते फिर यहां मिलेंगे
तब किसी को लूटेंगे और किन्हीं लोगों का खून करेंगे।"

बेन राजर्स ने कहा कि मैं तो नहीं आ सकूंगा, क्योंकि सिर्फ इतव
को बाहर जाने की छुट्टी मिलती है, इसलिए हमें डकैती का शुभार
अगले इतवार को ही करना चाहिए। दूसरे सब लड़कों ने इसका विरो
किया। उनका कहना था कि रविवार के दिन कोई दुष्कर्म नहीं कर
चाहिए। आखिर में यह बात मान ली गई। फिर तय पाया कि जैसे
मौका मिलेगा यहां आकर काम शुरू करने का दिन तय कर लेंगे। इस
बाद हमने टाम सायर को दस्यु-दल का नायक और जो हारपर को उप
नायक चुना और घर के लिए चल पड़े।

सायबान की छत पर होकर खिड़की की राह जब मैं अपने कमरे में चुपके
से पहुंचा तो दिन का उजेला फैलने लगा था। मेरे नये कपड़े धूल-मिट्टी से
गन्दे और एकदम चीकट हो गए थे और मैं थकान से थकना चूर हो रहा था।

अध्याय ३

दूसरे दिन सवेरे मिस वाटसन ने मेरे कपड़ों की जो हालत देखी तो आग-
बबूला हो गई और लगी बरसने। लेकिन विधवा बेचारी ने कुछ न कहा।
दु:खित मन से चुपचाप कपड़ों पर के धब्बे और गारा-मिट्टी छुड़ाती रही।
उसका दु:खी चेहरा देखकर मुझे दया आ गई और सोचने लगा कि हो

सके तो मुझे सलीके से रहना और अच्छा व्यवहार करना चाहिए। फिर मिस वाटसन मुझे छोटी कोठरी में ले गई और देर तक प्रार्थना करती रही, लेकिन वह बेकार ही था। उसने मुझसे कहा कि रोज प्रार्थना किया करो; प्रार्थना से जो भी मागोगे ज़रूर मिलेगा। लेकिन उसकी यह बात सच नहीं निकली। मैंने कोशिश भी की, लेकिन कुछ न हुआ। एक बार मुझे मछली फंसाने की बन्सी मिल गई, लेकिन उसमें काटे नहीं थे; और बगैर काटे की बन्सी किस काम की! सो मैंने काटों के लिए तीन-चार बार प्रार्थना की, मगर काम नहीं बना। आखिर एक दिन मैंने मिस वाटसन से कहा कि आप ही मेरे लिए प्रार्थना कर दीजिए जिससे बन्सी के काटे मिल जाए। उस सती मानस ने छूटते ही जवाब दिया, तुम अव्वल दर्जे के बेवकूफ हो, उल्लू की दुम फाख्ता! लेकिन उसने यह नहीं बताया कि मैं बेवकूफ क्यों और कैसे हूं और न मेरी ही समझ में आया कि इसमें बेवकूफी की क्या बात हुई!

फिर मैं जगल में चला गया और इस विषय पर देर तक विचार करता रहा। आखिर इस नतीजे पर पहुचा कि प्रार्थना से मन चाही चीज पाने की बात झूठ है। अगर प्रार्थना से आदमी की मुराद पूरी हो सकती तो डीक्नविन को अपना वह रुपया जो उसने सूअर के मास के व्यापार मे गवाया फिर से क्यों नहीं मिल जाता? या विधवा अपनी चोरी गई नसवार की डिबिया फिर क्यों नहीं पा जाती? या मिस वाटसन मुटा क्यो नहीं जाती? ऊं हू, प्रार्थना में कोई दम नहीं है और इससे मन की मुराद पाने की बात सफा झठ है। मैं घर लौट आया और यह बात विधवा से कह भी दी तो वह बोली कि नहीं, प्रार्थना से मागी चीजें मिलती तो हैं, लेकिन वे 'आध्यात्मिक वस्तुएं' होती हैं भौतिक नहीं। ये बड़े-बड़े शब्द मेरी समझ मे न आए और मैं मुह बाए उसकी ओर देखता रह गया। तब उसने समझाया कि आध्यात्मिक का मतलब है आत्मा के भले का काम, उदाहरणार्थ तुम्हें दूसरे लोगों की सहायता करनी चाहिए, दूसरों के लिए जितना अपने से बन सके करना चाहिए, हमेशा दूसरों का ज्यादा-से-ज्यादा ध्यान रखना चाहिए और अपने स्वार्थ की बात बिलकुल नहीं सोचनी चाहिए। मैंने इस बात पर थोड़ा गौर किया तो पाया कि दूसरों में तो मिस वाटसन भी आ जाती है। यह बात मुझे बड़ी उलझनपूर्ण मालूम हुई, इसलिए मैं फिर

विचार करने के लिए जंगल में चला गया। वहां काफी देर सोचने-विचारने के बाद इस नतीजे पर पहुंचा कि इसमें तो सारा फायदा दूसरे लोगों का है और अपने हाथ कुछ भी नहीं लगता। तुरन्त फैसला कर डाला कि ऐसा काम किया ही क्यों जाए; मैं प्रार्थना और 'आध्यात्मिक बातों' के चक्कर में नहीं पड़ूंगा। चलो, एक सिरदर्द से छुट्टी हुई।

कभी-कभी विधवा मुझे एकान्त में ले जाकर परमात्मा के बारे में बताया करती थी। वह परमपिता की ऐसी सुन्दर, सरस कहानियां सुनाती और उसकी दयालुता का ऐसा वर्णन करती कि मैं विभोर हो जाता और मन ऐसे काम करने की बात सोचने लगता जिससे उसकी कृपा प्राप्त हो सके। लेकिन दूसरे ही दिन मिस वाटसन सारा गुड़ गोबर कर देती। वह परमात्मा के कोप और गलतियां करने वालों को उसके द्वारा दी जाने वाली कठोर सजाओं और यातनाओं का ऐसा दहलानेवाला वर्णन करती कि मेरे सारे नेक इरादे मिट्टी में मिल जाते। मुझे यही लगता कि जरूर दो परमात्मा हैं—एक विधवा का, भला, अच्छा और गरीब-दुखियों की मदद करने वाला; और दूसरा मिस वाटसन का, गुस्सैल और बात-बात पर कड़ी सजा देने वाला। जो विधवा के परमात्मा के पास चला गया, निहाल हो गया; और जो मिस वाटसन के परमात्मा के हत्थे चढ़ गया उस बेचारे की खैर नहीं। मैंने निश्चय किया कि खुद मैं तो मिस वाटसन के परमात्मा के पास कभी फटकूंगा नहीं; लेकिन विधवा का परमात्मा स्वीकार कर सके तो जरूर उसका बनकर रहना चाहूंगा। यद्यपि यह समझ में नहीं आता था कि मेरे-जैसे मूर्ख, एक दम निम्नकोटि के और अति सामान्य जन का भला और उद्धार वह कैसे कर सकेगा।

पिताजी इधर साल-भर से दिखाई नहीं दिए थे, इसलिए मैं खुश था और मन-ही-मन मनाया करता कि वे कभी न आएं। नशा उतरते ही वे मुझे ढूंढ निकालने और जी भरकर पिटाई करते थे, इसलिए मैं उनके आने पर अक्सर जंगलों में भाग जाया करता और वहीं छिपा बैठा रहता।

... लोगों का यह ख्याल था कि वे नदी में डूब मरे हैं।

... कुछ पता नहीं चलता था, क्योंकि काफी समय डूबे रहने के कारण वह
बिलकुल विकृत हो गया था और पहचाना नहीं जा सकता था; लेकिन
डीलडौल, फटे चीथड़ों और असाधारण रूपसे लम्बे बालों के कारण लोगो
ने उसे मेरे पिताजी की लाश मान लिया था। मेरे पिताजी का हुलिया भी
ठीक ऐसा ही था। वह लाश पीठ के बल तैरती पाई गई थी। लोगो ने उसे
निकाला और नदी किनारे दफना दिया। लेकिन मेरे मन मे अन्देशा फिर
भी बना रहा। इसका कारण भी था। लोगो ने उस लाश को पानी मे पीठ
के बल तैरते हुए पाया था जबकि मैं इस बात को बहुत अच्छी तरह
जानता था कि डूबा हुआ आदमी कभी पीठ के बल नहीं तैरता; डूबे हुए
आदमी की लाश हमेशा औंधे मुह उतराती है। यानी मुझे अन्देशा था
कि डूबनेवाला मेरे पिता नहीं कोई और था। बाद मे यह बात सच निकली।
डूबनेवाली कोई औरत थी, जो आदमी के कपड़े पहने हुई थी। इस तरह
पिताजी के लौट आने का डर मेरे दिल और दिमाग पर बराबर हावी रहा।
लाख मनाता था कि कभी न आएं पर मन कहता था कि वे आ धमकेंगे
और मारते-मारते अधमुआ कर देंगे। यह खटका बराबर बना ही रहा।

जब मौका मिल जाता हम डाकुओं का खेल खेल लेते थे। फिर कोई
महीने-भर बाद मैं दल से अलग हो गया। सभी लड़के अलग हो गए थे।
न तो हमने किसी को लूटा और न किसी का खून किया, यों ही झूठ-मूठ
लूट-पाट और खून-खच्चर के खेल खेला किए। एकदम जंगल में से निकल
आने और सूअर चराने वालों या गाड़ियों मे सब्जी लेकर हाटजानेवाली
औरतों पर 'हमला' करते थे, लेकिन न किसी को छुआ और न किसी को
पकड़कर लाए। टाम सायर सूअरों को 'चादी-सोने की सिल्लियां' और
शलजम आदि सब्जियों को 'हीरे-जवाहरात' कहता था। इन 'हमलों' के
बाद हम अपनी गुफा में लौट आते और अपनी जवांमर्दी की डींगे हाका
करते कि कितनो का खून किया, कितनो के सीनों मे दल का निशान दगाया
और क्या-क्या कारनामे किए! लेकिन मुझे तो इस तरह के बेकार 'हमलों'
और डींगो से कोई फायदा नजर नहीं आता था। एक दिन टाम सायर ने
एक लड़के को जलती हुई लकड़ी लेकर सारे गांव का चक्कर लगाने का
हुक्म दिया। उसने बताया कि यह दल के सदस्यों को इकट्ठा करने का

'गंगेम' है। उसने इसका नाम 'मशाल-संकेत' बनाया था। जब सब लड़के जमा हो गए तो टाम ने बताया कि 'नायक' को उसके 'गोइन्दों' से गुप्त समाचार मिले हैं कि कल स्पेनी सौदागरों और अमीर अरबों का एक पूरा काफला 'केव हालो' में हीरे-जवाहरातों और बेशकीमत माल-असबाब से भरे दो सौ हाथियों, छह सौ ऊंटों और हजारेक खच्चरों समेत पड़ाव डालने वाला है और उनके पास मुश्किल से चार सौ रखवाले होंगे, इसलिए हम ताक में रहेंगे और मौका मिलते ही हमला करके सबको मार डालेंगे और माल-असबाब लूट लेंगे। उसने कहा, हमें अपनी-अपनी बन्दूकों और तलवारों को ठीक-ठाक कर लेना और तैयार हो जाना चाहिए।

बिना पूरी तैयारियों के टाम कभी 'हमला' नहीं करता था। शलजम की गाड़ी पर ही 'हमला' क्यों न करना पड़े, वह घंटों बन्दूकों और तलवारों की सफाई, दुरुस्ती और धुलाई-पुंछाई करवाता था। वैसे बन्दूकों और तलवारों के नाम पर हमारे पास झाड़ू और लकड़ी के पटरों की खपच्चियां ही थीं, जो घिसते-घिसाते खस्ताहाल हो गई थीं; यहां तक कि ईंधन के काम की भी नहीं रह गई थीं; और अगर सबको जलाते तो मुट्ठी-भर राख भी न मिल पाती! इन हथियारों से हम स्पेनी सौदागरों और अमीर अरबों के पूरे काफले को मार सकेंगे, इस बात पर मेरा जरा भी विश्वास नहीं था, लेकिन मैं हाथियों और ऊंटों को देखना चाहता था, इसलिए दूसरे दिन, जोकि शनिवार था, वहां पहुंच गया जहां हम ताक लगाकर बैठने वाले थे। इशारा पाते ही हम जंगल में से निकले और पहाड़ी पर से नीचे की ओर टूट पड़े। लेकिन वहां न तो स्पेनी सौदागर थे और न अमीर अरब ही, और-तो-और ऊंट और हाथी भी नहीं थे। काफले के नाम पर सिर्फ प्राथमिक कक्षा के छोटे-छोटे बच्चे थे जो रविवासरीय स्कूल की ओर से वन-विहार के लिए आए थे। फिर भी हमने 'हमला' किया और बच्चों को तराई तक खदेड़ते ले गए। हीरा-जवाहरात तो नहीं, पर केक-रोटी और मुरब्बा-चटनी जरूर हाथ लगे और बेन राजर्स को एक कपड़े की गुड़िया और जो हारपर को प्रार्थना की पुस्तक और एक धर्म पुस्तिका भी मिल

मैंने यह बातें टाम सायर से भी कही। वह बोला, हीरे तो ढेरों थे, अरब
सौदागर भी थे और हाथी और ऊंट और दूसरी सब चीजें भी थी इसपर
मैंने पूछा कि हमें दिखाई क्यो नही ? तब उसने कहा कि कैसे मूर्खतापूर्ण
सवाल करते हो ! अगर 'डान क्विक्जोट' किताब पढ़े होते तो सब समझ
में आ जाता और तब ऐसे अहमकाना सवाल कभी न करते। खैर, अब
समझ लो। जादूगरों का नाम तो सुना ही होगा। वे हैं हमारे शत्रु। ईर्ष्या-
वश उन्होंने मन्तर के ज़ोर से काफले के सैंकड़ो सिपाहियो, ऊंटो, हाथियो
और सारे खजाने को बच्चो के रविवासरीय स्कूल में बदल दिया। उसने
जादूगरों और उनके जन्तर-मन्तर की बात कही इसलिए मैंने सुझाव दिया
तो क्यो न हम जादूगरों से ही निपट लें।

टाम ने कपाल ठोककर कहा, "कुन्दमगज़ इसे कहते हैं ! जरूर तुम्हारे
भेजे में भूसा भरा है। जादूगरो से निपट भी सकोगे ? पलक झपकते तो वे
जिनों को बुला लेंगे और रक्षा के लिए भगवान को पुकारने से पहले ही
भुरकस निकाल दिया जाएगा। जिन तुमने देखे हो तो जानो। एक-एक
पेड़ के जितना ऊंचा और गिरजाघर के जितना मोटा और गोल-मटोल
होता है।"

"काश, हमारी तरफ भी कुछ जिन होते ! फिर तो हम उन लोगों को
यो हरा देते, आनन-फानन।" मैंने कहा।

"होंगे कहां से ? जिनों को बुलाने का तरीका मालूम है ?"

"नही, मुझे तो नही मालूम। तुम्ही बताओ, वे जादूगर उन्हे किस
तरह बुलाते हैं ?"

"वे किस पुराने-धुराने दीये या लोहे की अंगूठी को रगड़ते हैं औ
जिन धड़धड़ाते धुआं उगलते, बिजली की तरह कड़कते और बादल की
तरह गरजते हुए हाजिर हो जाते हैं और जो काम उन्हें बताया जाता
फौरन बजा लाते हैं। चाहे पूरी मीनार जड़-मूल से उखाड़नी पड़े, गाजर
मूली की तरह उखाड़ लेते हैं और रविवासरीय स्कूल के अधीक्षक या कि
आदमी के भी बारे में कहो उसके सिर पर दे मारते हैं। जिनों को आप क्या
समझते क्या हैं !"

"ऐसे ऊधम किसके हुक्म से करते हैं ?"

'संकेत' है। उसने इसका नाम 'मशाल-संकेत' बताया था। जब सब लड़के जमा हो गए तो टाम ने बताया कि 'नायक' को उसके 'गोइन्दों' से गुप्त समाचार मिले हैं कि कल स्पेनी सौदागरों और अमीर अरबों का एक पूरा काफला 'केव हालो' में हीरे-जवाहरातों और बेशकीमत माल-असबाब से लदे दो सौ हाथियों, छह सौ ऊंटों और हजार के लगभग खच्चरों समेत पड़ाव डालने वाला है और उनके पास मुश्किल से चार सौ रखवाले होंगे, इसलिए हम ताक में रहेंगे और मौका मिलते ही हमला करके सबको मार डालेंगे और माल-असबाब लूट लेंगे। उसने कहा, हमें अपनी-अपनी बन्दूकों और तलवारों को ठीक-ठाक कर लेना और तैयार हो जाना चाहिए।

बिना पूरी तैयारियों के टाम कभी 'हमला' नहीं करता था। शलजम की गाड़ी पर ही 'हमला' क्यों न करना पड़े, वह घंटों बन्दूकों और तलवारों की सफाई, दुरुस्ती और धुलाई-पुंछाई करवाता था। वैसे बन्दूकों और तलवारों के नाम पर हमारे पास झाड़ू और लकड़ी के पट्टरों की खपच्चियां ही थीं, जो घिसते-घिसाते खस्ताहाल हो गई थीं; यहां तक कि ईंधन के काम की भी नहीं रह गई थीं; और अगर सबको जलाते तो मुट्ठी-भर राख भी न मिल पाती! इन हथियारों से हम स्पेनी सौदागरों और अमीर अरबों के पूरे काफले को मार सकेंगे, इस बात पर मेरा ज़रा भी विश्वास नहीं था, लेकिन मैं हाथियों और ऊंटों को देखना चाहता था, इसलिए दूसरे दिन, जो कि शनिवार था, वहां पहुंच गया जहां हम ताक लगाकर बैठने-

बनवाऊंगा और उसे बेच दूंगा। देर तक मैं एक इंडियन की तरह काम पर जुटा रहा और पसीने-पसीने हो गया, पर नतीजा कुछ न निकला। मैं समझ गया कि सब बकवास है और टाम सायर की यह भी एक गप ही थी। वह भले ही विश्वास करता रहे कि अरबों, स्पेनियों, हाथियों और ऊंटों का कारवां था। मैं उससे जरा भी सहमत नहीं। मैंने अपनी आंखों देखा था कि वे रविवासरीय स्कूल के छोटे-छोटे बच्चे ही थे।

अध्याय ४

यों ही तीन-चार महीने बीत गए और सर्दियां आ गयीं। इस बीच मैं स्कूल भी जाने लगा था। वहां कुछ हिज्जे करना, पढ़ना, लिखना और थोड़ा-बहुत पट्टी-पहाड़ा भी सीख गया था। पहाड़ों में मैं छह सत्ते पैंतीस तक पहुंच कर रुक गया और सोचने लगा कि अब इससे आगे सीखने की जरूरत नहीं है, मैं सीखने की कोशिश करता भी तो जिन्दगी-भर इससे आगे शायद ही बढ़ पाता। गणित में कुछ भी नहीं सीख पाया था, उसमें अपनी गति ही नहीं थी।

शुरू में तो मुझे स्कूल के नाम से चिढ़ थी और वहां जाते बुखार चढ़ता था, मगर धीरे-धीरे आदत होती गई। कभी स्कूल जाते-जाते उकता जाता तो छड़ी मार दिया करता था। फिर दूसरे दिन की पिटाई होती कि छड़ी का दुख मार का जाता। पर इससे एक फायदा भी होता था। उकताहट मिट जाती और मन प्रसन्न हो जाया करता था। इस तरह मैं स्कूल का अभ्यस्त होता गया और विधवा के तौर-तरीकों का भी। अब वे उतने बुरे नहीं लगते थे। घर के अन्दर रहना और बिस्तरे पर सोना बदस्तूर तो बहुत खलता था, लेकिन ऐसा नहीं कि सहा न जा सके। इसलिए जब ... शुरू न हुई मैं बीच-बीच में आराम पाने के लिए घर से बाहर ... में सोने चला जाया करता था। वैसे तो मुझे रहन-सहन ... ही पसन्द था, लेकिन यह भी सच है कि नया तरीका भी थोड़ा ...

"जो भी दीये या अगूठी को रगड़ता है उसीके हुक्म से दीये या अगूठी को रगड़ने वाले के वे गुलाम होते हैं और उसकी हर बात उन्हें माननी होती है अगर वह कहे कि हीरों का चालीस मील लम्बा-चौड़ा महल बनाओ और उस सारे को 'गुड़ गम' या दूसरा किसी मिठाई से भर दो और चीन के बादशाह की बेटी को पकड़ लाओ, हम उससे शादी करेंगे तो उन्हें ये सारे काम और तो भी सूरज उगने के पहले पूरे करके दिखाने होते हैं। इतना ही नहीं, अगर तुम कहो कि इस महल को यहां से वहां, और वहां से यहां सारे देश में घुमा लाओ तो उन्हें यह भी करना पड़ता है, समझे !"

"अच्छा-अच्छा !" मैंने कहा, "समझ गया। जिनों में अकल नाम की भी नहीं होती। भला बताओ, अकल हो तो महल अपने ही लिए न रख ले ! ऐसा महल कोई भी अक्ल वाला किसी दूसरे को क्यों देने लगा ? और अगर मैं जिन हुआ तो पुराना दीया कोई कितना ही रगड़े, अपना काम छोड़कर हर्गिज नहीं आने का। मैं तो दीया रगड़ने वाले को सीधा परमधाम ही पहुंचा दूं"

"कैसी बात करते हो हकफिन !" टाम ने कहा, "जिन होने पर दीये के रगड़े जाते ही तुम्हें हजार काम छोड़कर हाजिर होना ही पड़ता है। उस समय तुम्हारी मर्जी नहीं चल पाती, दीये वाले की मर्जी पर चलना पड़ता है।"

"क्या ? पेड़ जितना ऊंचा और गिरजाघर-जैसा चौड़ा-चकला मैं दूसरे की मर्जी पर चलूंगा ? खैर, तुम कहते हो तो जरूर चला आऊंगा, लेकिन क्या मुझे देखकर उसके होश-हवास गुम नहीं हो जाएंगे ? जान बचाने के लिए तब उन बेटाजी को दुनिया के सबसे ऊंचे पेड़ की फुनगी तक भी पहुंचना पड़ेगी इतना जान लो।"

"तुमसे बात करना बेकार है हकफिन। तुम न कुछ जानते हो और न कुछ समझ सकते हो—तुम्हारे भेजे में तो भूसा भरा है, भूसा !"

मैं दो-तीन दिन जिनों के बारे में सोचता रहा और फिर फैसला किया कि क्यों न आजमाकर देखा जाए—सच झूठ जो भी होगा सामने आ जाएगा। मैंने एक पुराना दीया और लोहे की अंगूठी ली और जंगल में पहुंच [illegible]ड़ता और मन्सूबे करता जाता था कि बहुत बड़ा महल

बनवाऊंगा और उसे बेच दूंगा। देर तक मैं एक इंडियन की तरह काम पर जुटा रहा और पसीने-पसीने हो गया, पर नतीजा कुछ न निकला। मैं समझ गया कि सब बकवास है और टाम सायर की यह भी एक गप ही थी। वह भले ही विश्वास करता रहे कि अरबों, स्पेनियों, हाथियों और ऊंटों का कारवां था। मैं उससे जरा भी सहमत नहीं। मैंने अपनी आंखों देखा था कि वे रविवासरीय स्कूल के छोटे-छोटे बच्चे ही थे।

अध्याय ४

यों ही तीन-चार महीने बीत गए और सर्दियां आ लगीं। इस बीच मैं स्कूल भी जाने लगा था। वहां कुछ हिज्जे करना, पढ़ना, लिखना और थोड़ा-बहुत पट्टी-पहाड़ा भी सीख गया था। पहाड़ों में मैं छह सत्ते पैंतीस तक पहुंच कर रुक गया और सोचने लगा कि अब इससे आगे लिखने की जरूरत नहीं है; वैसे सीखने की कोशिश करता भी तो जिन्दगी-भर इससे आगे शायद ही बढ़ पाता। गणित में कुछ भी नहीं सीख पाता था, उसमें अपनी गति ही नहीं थी।

शुरू में तो मुझे स्कूल के नाम से चिढ़ थी और वहां जाने बुखार चढ़ता था, मगर धीरे-धीरे आदत होती गई। कभी स्कूल जाते-जाते उकता जाता तो तड़ी मार दिया करता था। फिर दूसरे दिन जो पिटाई होती कि छठी का दूध याद आ जाता। पर इससे एक फायदा भी होता था। अकड़ाहट मिट जाती और मन प्रसन्न हो जाया करता था। इस तरह मैं स्कूल का अभ्यस्त होता गया और विधवा के तौर-तरीकों का भी। अब वे उतने बुरे नहीं लगते थे। घर के अन्दर रहना और बिस्तरे पर सोना अटपटा तो जरूर लगता था, लेकिन ऐसा नहीं कि सहा न जा सके। इसलिए जब तक सर्दियां शुरू न हुईं मैं बीच-बीच में आराम पाने के लिए घर से भाग कर जंगल में सोने चला जाया करता था। वैसे तो मुझे रहन-सहन का पुराना तरीका ही पसन्द था, लेकिन यह भी सच है कि नया तरीका भी थोड़ा-बहुत पसन्द

आता जा रहा था। विषया की मेरे बारे में यह राय थी कि मैं धीरे-धीरे सुधरता जा रहा हूं और कुल मिला कर प्रगति सन्तोषजनक है। वह मुझ पर नाज़ करने लगी थी और कहती थी कि मेरी वजह से उसे किसी के आगे अपना सिर नीचा नहीं करना पड़ता।

एक दिन नाश्ते पर यह हुआ कि मेरे हाथ से नमकदानी गिर पड़ी। मैंने फौरन झुकते हुए नमक पर हाथ बढ़ाया कि थोड़ा-सा लेकर बाएं कन्धे के पीछे फेंक दूं; इस तरह अपशकुन का निवारण हो जाता। मगर मिस वाटसन फौरन बीच में आ कूदी और बोली, "हटाओ, हटाओ, हकलबेरी! अपना हाथ हटाओ। जब देखो कुछ-न कुछ गड़बड़झाला किया ही करते हो।" वह तो और भी जली-कटी सुनाती, पर विधवा ने रोक दिया और थोड़ी मेरी तारीफ भी कर दी। लेकिन इससे अपशकुन का निवारण तो हो नहीं सकता था। डरता रहा कि आज ज़रूर कोई बुरी बात होगी। नाश्ता करके उठा तो मन में इसी का खुटका लगा हुआ था और घबरा रहा था कि अपशकुन जाने क्या रंग लाए! कुछ मुसीबतों को आने से रोका जा सकता है, लेकिन यह उनमें से थी जिन्हें किसी भी तरह रोका नहीं जा सकता। इसलिए मैंने भी कोई कोशिश नहीं की और बुझे मन से, लेकि सतर्क, इधर-उधर भटकता रहा।

मैं घर के सामने वाले बगीचे को पारकर उस जगह पहुंचा जहां लकड़ी के तख्तों वाली ऊंची बाड़ के पार जाने के लिए अड़डण्डा (सीढ़ी) बन हुआ था। उस समय ज़मीन पर बर्फ की करीब एक इंच मोटी तह पड़ी हुई थी। अड़डण्डे पर चढ़कर मैंने देखा तो बर्फ में किसी के जूतों के निशान बने हुए थे। आनेवाला खदान की तरफ से आया, अड़डण्डे के पास खड़ा रहा और फिर बाड़ के साथ-साथ चलता चला गया था। देखकर मुझे बड़ा अचरज हुआ कि कोई अड़डण्डे तक आया, यहां खड़ा रहा, परन्तु बाड़ पार करके अन्दर नही दाखिल हुआ। कारण समझ मे नही आया और सारी बात बड़ी विचित्र लगती रही। मैं उन निशानों का पता लगाने के लिए आगे जाने की सोच ही रहा था कि खयाल आया, क्यों न इन्हे पहले ध्यान से देख लिया जाए। मैं बाड़ पार करके नीचे उतरा और झुककर देखने लगा। पहले तो कुछ समझ में नहीं आया, फिर फौरन एक बात ध्यान में

आगई। बाएं जूते की एड़ी में बड़ी कीलों का सलीब बना था, जो भूत-प्रेत को दूर रखने का टोटका था।

पलक झपकते तो मैं सामने की पहाड़ी चढ़कर उस पार उतर भी गया। हर कदम पर मुड़-मुड़कर पीछे देखता जाता था कि कोई आ तो नहीं रहा है। यों समझ लीजिए कि उड़ता हुआ जज थेचर के यहां पहुंचा था।

देखते ही उन्होंने कहा, "बेटे, तुम्हारा तो दम फूल रहा है! क्या बा है? अपना ब्याज लेने आए हो क्या?"

"जी नहीं!" मैंने कहा, "लेकिन क्या ब्याज कुछ हुआ है?"

उन्होंने कहा, "हां-हां, छमाही ब्याज की रकम अभी पिछली रा ही अदा हुई है। पूरे डेढ़ सौ डालर हैं। समझ लो कि मालामाल हो गए मगर इस रकम को भी अपने छह हजार के साथ मुझे कहीं उठा लेने दो तुमने ले लिया तो सब खर्च हो जाएगा।"

"नहीं, जज साहब!" मैंने कहा, "मैं एक भी सेंट खर्च करना न चाहता। और मुझे न यह ब्याज चाहिए और न यह छह हजार मूलधन आप रख लीजिए; मैं आपको देना चाहता हूं—छह हजार भी और य ब्याज भी। आप सब ले लीजिए।"

जज साहब चकित मेरी ओर देखने लगे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि बात क्या है। बोले, "तुम कह क्या रहे हो बेटे?"

मैंने कहा, "साहब, सवाल-जवाब तो रहने दीजिए और जैसा कहा कीजिए। यह सब आप ले लीजिए।"

वे बोले, "मेरी तो बुद्धि चकराने लगी। समझाकर कहो कि बात क्या है?"

"जी, आप ले लीजिए।" मैंने कहा, "कुछ पूछिए मत। आपकी ब हरबानी होगी और मैं झूठ बोलने से बच जाऊंगा।"

वे थोड़ी देर मेरी ओर गौर से देखते रहे, फिर बोले, "अच्छा, त ात है। अब मैं समझा। तुम अपनी सारी जायदाद मुझे बेचना चाहते तो मेरे नाम बय करना चाहते हो, देना नहीं। यही ठीक रहेगा।"

फिर उन्होंने कागज पर बयनामा लिखा, पढ़कर मुझे सुनाया ग

बोले, "यह देखो, मैंने लिया है 'बदले में'; मतलब यह कि मैंने तुमसे खरीदा और पैसा चुकाया। यह लो एक डालर और यहां अपने दस्तखत करो।"

मैंने दस्तखत किए और लौट आया।

मिस वाटसन के हब्शी जिम के पास बालों का एक बड़ा गोला था, जो किसी बैल के चौथे पेट को चीरकर निकाला गया था। वह उससे जादू किया करता था। उसका कहना था कि इस गोले में एक ऐसी प्रेतात्मा है जो भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों का हाल बता सकती है। इसलिए रात हो जाने पर मैं उसके पास गया और कहा कि पिताजी आ गए हैं, मैंने उनके जूते के निशान बर्फ में देखे हैं। अब यह जानना चाहता हूं कि आगे उनका इरादा क्या है? वे यहीं रहेंगे या चले जाएंगे?

जिम ने गोला उठा लिया और उसके पास मुंह ले जाकर कुछ कहता रहा, फिर दोनों हाथों में उठाकर उसे ज़मीन पर गिरा दिया। गोला फट्-से गिरा और सिर्फ एक इंच लुढ़ककर रह गया। जिम ने दो-तीन बार कोशिश की और हर बार गोला एक इंच लुढ़ककर रह गया। तब जिम घुटनों के बल बैठ गया और गोले के पास कान ले जाकर सुनने लगा।

"बेकार है, गोला कुछ बोल ही नहीं रहा।" उसने कहा, "कई बार यह पैसे के लिए अड़ जाता है और जब तक पैसा नहीं दिया जाता कुछ नहीं बोलता।"

मैंने कहा, "एक पुराना खोटा क्वार्टर सिक्का तो ज़रूर मेरे पास है, जो कहीं चल नहीं सकता; चांदी की पालिश में से पीतल साफ दिखाई देता है और इतना चीकट हो गया है कि कोई छूने को भी राज़ी नहीं होता।" मेरी जेब में जज साहब का दिया डालर पड़ा था, लेकिन मैंने तय कर लिया था कि जिम को उसका सुराग भी न लगने दूंगा। आगे मैंने कहा, "चीकट और खोटा तो ज़रूर है, मगर गोला शायद लेने को राज़ी हो जाए, क्योंकि उसके लेखे खरा भी हो सकता है।"

जिम ने सिक्का ले लिया। उसे बजाया, उलटा-पलटा और घिसकर परख लिया तब बोला, "मैं घिस-मांजकर ऐसा चमका दूंगा कि गोला लेने से कभी इनकार नहीं करेगा। सिर्फ रात-भर आलू में घुसेड़कर रखना

होगा। सवेरे सूरत ही बदल जाएगी। न पीतल झांकेगा और न चीकटपन रह जाएगा। फिर तो कोई भी ले लेगा।"

आलू चीरकर सिक्के को रात-भर उसमें रखने की बात जानता तो मैं भी था, लेकिन इस समय कैसे भूल गया था। मगर अब क्या हो सकता था।

जिम ने सिक्के को बालों के गोले के नीचे रख दिया और झुककर सुनने लगा। अब सिक्का बोलने लगा था। जिम ने कहा कि चाहो तो तुम्हारा सारा भविष्य बता सकता है। मैंने कहा, अच्छा सुनाओ। गोला बोलने लगा और जिम सुनकर मुझे बताने लगा।

जिम ने कहा, "तुम्हारे बूढ़े बाप को खुद ही नहीं मालूम कि वह कहां जाएगा और क्या करेगा! कभी कहता है कि चला जाऊंगा और कभी कहता है कि नहीं जाऊंगा, यहीं रहूंगा। उसकी फिकर छोड़ो और वह जो चाहे उसे करने दो। उसके सिर पर दो देवदूत सवार हैं। एक उजला और चमकीला है और दूसरा काला। उजलेवाला उससे अच्छे काम करवाता है। मगर जैसे ही कोई अच्छा काम करने लगता है काला बीच में आ कूदता है और बुरे काम की ओर धकेल ले जाता है। यह कोई नहीं बता सकता कि आखीर में जीत किसकी होगी और वह किसके हाथ में रहेगा। लेकिन तुम्हारा सब ठीक होगा। तुम्हें जिन्दगी में बहुत तकलीफें उठानी होंगी और सुख भी बहुत मिलेगा। कभी चोट लगेगी और कभी बीमार पड़ोगे, लेकिन हर बार अच्छे हो जाओगे। तुम्हें जिन्दगी में दो लड़कियां मिलेंगी। एक गोरी होगी और दूसरी काली। एक अमीर होगी और दूसरी गरीब। पहले तुम गरीब से शादी करोगे और फिर अमीर से। पानी से जितना हो सके दूर रहना और खतरा कोई मोल मत लेना, क्योंकि लिखा है कि तुम फांसी टांगे जाओगे।"

उस रात जब मैं जलती मोमबत्ती लेकर अपने कमरे में पहुंचा तो पिताजी वहां बैठे हुए थे—हां, खुद मेरे पिताजी!

अध्याय ५

दरवाज़ा बन्द करके मैं जैसे ही मुड़ा कि वे दिखाई दे गए। मैं उनसे बहुत डरता था। इस बुरी तरह पीटते थे कि याद करके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सोचने लगा कि अभी डर हावी हुआ जाता है और कांपने लगूंगा। लेकिन आश्चर्य कि इस बार ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। अकस्मात् उनको देखकर धक्का ज़रूर लगा और सांस अधर में टंगी रह गई, लेकिन थोड़ी देर बाद जब धक्के का प्रभाव कम हुआ और सांस ठीक से चलने लगी तो मैंने पाया कि उनसे मुझे ज़रा भी डर नहीं लग रहा है।

उम्र उनकी पचासेक के करीब रही होगी और शक्ल-सूरत से इतने लगते भी थे। बाल लम्बे, उलझे हुए और चीकट हो रहे थे। लटों के पीछे चमकती हुई आंखें ऐसी लगती थीं मानो लता-जाल के पीछे से देख रहे हों। बाल बिलकुल काले थे, भूरा या सफ़ेद एक भी नहीं। मूंछों में भी कोई बाल सफ़ेद नहीं था। दाढ़ी-मूंछों के जटाजूट में जितना चेहरा दिखता था वह सब सफ़ेद था, और लोगों की तरह गोरा नहीं, बिलकुल सफ़ेद—इतना सफ़ेद कि देखकर डर लगता, मछली के पेट की सफ़ेदी ही समझ लीजिए। कपड़े फटे, पुराने और चीथड़े। बस, यह था उनका हुलिया। वे इस समय एक पांव के घुटने पर दूसरे पांव का टखना रखे आराम से बैठे थे। इस पांव का जूता फट गया था और अन्दर से दो अंगुलियां दीख रही थीं, जिन्हें वे बैठे-बैठे चला रहे थे। टोपी उनकी ज़मीन पर पड़ी थी—काला रंग, कोने मुड़े-तुड़े और ऊपर का हिस्सा ढकने की तरह अन्दर बैठा हुआ।

मैं खड़ा उनकी ओर देखता रहा और वे कुर्सी को पास से थोड़ा पीछे की ओर ठेलकर बैठे हुए मुझे। मैंने मोमबत्ती को मेज़ पर रख दिया। देखा तो खिड़की खुली थी, समझ गया कि वे सायबान की छत पर चढ़कर अन्दर आए हैं। वे काफ़ी देर तक मुझे घूर-घूरकर देखते रहे। फिर बोले, "[illegible] कपड़े—हूं! तू अपने को बहुत बड़ा आदमी

"खबरदार !" उन्होंने कहा, "जबान लड़ाने की कोशिश की तो मुझसे बुरा कोई न होगा। मेरी गैरहाजिरी में बड़ा घमण्ड हो गया है, खूब सज-सवर कर रहने लगा है। सारी मगरूरी झाड़ दी जाएगी, समझता क्या है ! सुना है कि तू पढ़-लिख भी गया है, ए ? बाप को करिया अच्छर भैंस बराबर और बेटे पढ़क्कू राम ! घमण्ड तो होगा ही, अब बाप बेचारा किस गिनती में ! लेकिन इस अकड़ में भूले मत रहना ! एक थप्पड़ में सारी पढ़ाई-लिखाई निकालकर रख दूंगा। यह पढ़ने-लिखने की बेवकूफी तुझे सुझाई किसने ? किसने कहा कि जाओ बेटे, पढ़ो ?"

"विधवा ने। उन्होंने कहा।"

"हूं वह राड ! उस खसमखानी से किसने कहा कि दूसरों के घरे में पांव धरे ? उसे हमसे क्या मतलब ?"

"मतलब तो शायद कोई नहीं और कहा भी किसी ने नहीं।"

"उसे तो ऐसा सबक सिखाऊंगा कि दूसरों के बीच टांग अड़ाना भूल जाएगी। और देख, स्कूल से फूट जाओ, फौरन ! सुना ? वहां जाने की जरूरत नहीं। लौंडे के दिमाग में जाने क्या-क्या खुराफातें भर दी हैं लोगों ने—बाप निकम्मा है, तुम अच्छे हो ! सबको समझूंगा, किसी को नहीं बख्शूंगा। सगे बेटे को बाप के खिलाफ उभाड़ते हैं पाजी कहीं के। और तू सुन ले, स्कूल की तरफ जाता हुआ भी देख लिया तो टांग तोड़ दूंगा। सुन लिया ? तेरी मां न पढ़ सकती थी और न लिख सकती थी; वह अपढ़ ही मरी। हमारे कुनबे का एक-एक आदमी बेपढ़ा रहा और अपढ़ मरा। तेरा बाप, मैं भी पढ़ना-लिखना नहीं जानता। और तू चला है कुलकी रीति मिटाने ! पढ़ेंगे, और बाप की छाती पर मूंग दलेंगे ! और बाप से दो अंगुल ऊंचे और अच्छे होने की अकड़ लेकर चलेंगे। मैं उन आदमियों में नहीं हूं जो बेटों के ये नखरे और ऐसी अकड़ बर्दाश्त कर लें। डण्डा तो चमड़ी उधेड़कर रख देगा। सुन लिया ? अच्छा, जरा पढ़कर तो सुना।"

मैंने किताब उठा ली और जनरल वाशिंगटन और उनकी लड़ाइयों का थोड़ा-सा हाल पढ़कर सुनाया। आधे मिनट बाद उन्होंने झपटकर किताब छीन ली और जोर से एक कोने में फेंककर बोले, "बस-बस ! देख

गिया। हां, तुझे पढ़ना आता है। मैं समझा, यों ही बकवास कर रहा है! अब आज से पढ़ना, लिखना, मदरसे जाना सब बन्द! ये नक्शे मेरे यहां नहीं चलेंगी। कहे देता हूं, बचकर रहना; मदरसे की ओर जाते भी देख लिया तो हड्डी-पसली एक कर दूंगा। पहले अपने घराने का धरम-करम तो सीख ले, मदरसे फिर जाना। ऐसा कपूत बेटा तो हमने देखा नहीं।"

उन्होंने वहां रखी नीले-पीले रंग की तसवीर उठा ली, उसमें गायें और लड़का बना था। पूछा, "यह क्या है?"

"सबक अच्छी तरह याद करने का इनाम।"

उन्होंने तसवीर फाड़ फेंकी और बोले, "इनाम मैं दूंगा तुझे हण्टरों-पर-हण्टर, भूतड़ों की खाल उधड़ जाएगी।"

फिर थोड़ी देर बैठे जाने क्या भुनभुनाते और बड़बड़ाते रहे और तब बोले, "बड़े ऐश में पल रहे हो! खुशबू की लपटें उठ रही हैं। बिस्तरा है। चद्दरें और पलगपोश है। आइना है। फर्श पर कालीन बिछा है। और बाप को चमड़ा रंगाई के कारखाने में सूअरों के साथ सोना पड़ता है। शरम नहीं आती? ऐसे बेटे से तो बाप सौ जनम निपूता भला! वाह रे तेरी मगरूरी! अगर सारी अकड़ झाड़ न दी तो मेरा नाम नहीं। सुना कि तू अमीर हो गया है, आजकल पांचों घी में और सिर कड़ाही में है! क्यों बे, सच है? लोगों के मुंह तो यही सुनता आ रहा हूं।"

"नहीं, वे झूठ कहते हैं।"

"झूठ वो कहते हैं कि तू? सच-सच बता, असलियत क्या है? बाप को देना पड़ेगा न इसलिए झूठ तो बोलेगा ही। मैंने बहुत दुःख उठा लिए, अब नहीं उठाने का। दो दिन से सारे कस्बे में सबके मुंह से यही सुन रहा हूं कि तू अमीर हो गया। पांच मील नीचे भी यही सुनने को मिला और तू कहता है कि झूठ है! हमीं को चरा रहा है! अबे, मैं आया ही इसलिए हूं, नहीं तो क्यों आता! कल सारा रुपया लाकर हमारे हवाले करो। मुझे रुपयों की सख्त ज़रूरत है।"

"मेरे पास तो कानी कौड़ी भी नहीं।"

"झूठ बोलता है! सारा रुपया जज थैचर के पास रखा है। जाकर ले आओ फौरन; हमें चाहिए।"

"मेरे पास कुछ नहीं है। सच कह रहा हूं। चाहे आप थेचर साहब से पूछ लीजिए। वह भी यही कहेंगे।"

"ठीक है, उसीसे पूछूंगा और सारा रुपया उगलवा लूंगा। मेरा पैसा वह दाब नहीं पाएगा। अच्छा, अभी तेरी जेब में कितना है, बता? मुझे जरूरत है।"

"सिर्फ एक डालर है और वह मुझे चाहिए···"

"तुझे क्यों चाहिए? नहीं, तुझे नहीं चाहिए! ला, इधर ला!"

उन्होंने डालर मुझसे झटक लिया और परख कर देखा कि खरा है या खोटा, फिर बोले, "चलूं, थोड़ी दारू पी आऊं, सवेरे से मारे गला खुश्क हो रहा है!"

इतना कहकर वे खिड़की की राह सावधान की छत पर उतर गए, लेकिन दूसरे ही क्षण अन्दर झांककर बोले, "तेरी ऐसी-की-तैसी, अपने को अफलातून और लाट बहादुर समझता है; बाप की कोई कीमत ही नहीं!" मैंने सोचा, अब चले गए; लेकिन दुबारा फिर अन्दर सिर डालकर बोले, "याद रखना, स्कूल गया तो दोनों टांगें तोड़ दूंगा, हां!"

दूसरे दिन शराब के नशे में धुत् वे थेचर साहब के यहां गए और खूब गालियां बकीं और कहा कि सारा रुपया निकालकर रख दो। लेकिन थेचर साहब ने एक न सुनी, तब अदालती कारवाई की धमकी देकर चले गए।

इस पर जज साहब और विधवा ने अदालत में दरख्वास्त दे दी कि मुझे अपने पिता के अधिकार से छुड़ाकर उन दोनों में से किसी एक को अभिभावक नियुक्त कर उसके संरक्षण में दे दिया जाए। लेकिन कोई नये जज साहब आ गए थे और वे मेरे पिताजी से वाकिफ नहीं थे इसलिए उन्होंने फैसला दिया कि अदालतों को पारिवारिक मामलों में दखलन्दाजी और परिवार तोड़ने और बेटे को बाप से जुदा करने का काम जहां तक हो सके नहीं करना चाहिए। इस तरह थेचर साहब और विधवा की दरख्वास्त नामंजूर हो गई और उन्हें इस मामले में चुप मारकर बैठ जाना पड़ा।

अब तो पिताजी की खुशी का क्या पूछना! बाहें चढ़ाकर लगे गरजने-तरजने और मुझसे बोले कि अगर अभी कुछ रुपये लाकर नहीं दिये तो चमड़ी उधेड़कर रख दूंगा। मुझे थेचर साहब से तीन डालर उधार लेकर

देने पड़े। पिताजी ने तीनों की शराब पी डाली और गले में कनस्तर बांध कर आधी रात तक गालियां बकते, और शोर मचाते और अपनी जीत के बाजे बजाते सारे कस्बे को सिर पर उठाए रहे। कोई चारा न देख उन्हें रात में जेल भेज दिया गया। दूसरे दिन अदालत में पेशी हुई और हंगामा करने के अपराध में एक हफ्ते कैद की सजा दी गई। मगर वे खुश और सन्तुष्ट थे और बढ़-बढ़ कर कहते जा रहे थे कि सजा मिली, कोई बात नहीं, यह तो फैसला हो गया कि मैं अपने बेटे का बाप हूं और अब उस कम्बख्त बेटे को अक्ल ठिकाने लाकर ही रहूंगा।

रिहा होने पर नये जज साहब ने पिताजी को सुधारने का बीड़ा उठाया। वे जेल से सीधे उन्हें अपने घर ले गए, साफ-सुथरे और बढ़िया कपड़े पहनने को दिए। सारे परिवार के साथ बिठाकर नाश्ता, दुपहर का भोजन और ब्यालू करवाया। स्नेह-कृपा, खातिरदारी और देख-भाल की जज साहब ने हद ही कर दी। ब्यालू के बाद जज साहब ने उन्हें पास बिठाकर शराब के दुर्गुण बताना शुरू किया। सुनते-सुनते पिताजी रोने लगे और सिसकियां भर-भरकर बोले कि हाय, इतनी जिन्दगी बदफैली में गुजार दी, मगर अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है, जब जागे तभी सवेरा, शराब-अराब छोड़ देंगे और नये सिरे से जिन्दगी बसर करेंगे और इस तरह रहेंगे कि किसी को उनके लिए शर्मिन्दा न होना पड़े; उम्मीद है कि मेहरबान जनाब जज साहब गिरकर उठते हुए एक गरीब भाई का हाथ जरूर थामेंगे और उसकी पूरी मदद करेंगे और हिकारत की निगाह से नहीं देखेंगे। जज साहब ने सुना तो उनका दिल भर आया और आंखों से आसू बह चले और उनकी मेम साहब भी दयार्द्र होकर रो उठीं। पिताजी ने कहा कि मेरी कैसी बदकिस्मती कि हमेशा गलत ही समझा जाता रहा; और जज साहब ने फरमाया कि जी, आप सच कहते हैं और मुझे आप पर पूरा यकीन है। फिर पिताजी ने कहा कि एक गिरे हुए आदमी को सिर्फ थोड़ी-सी हमदर्दी चाहिए, और जज साहब ने समर्थन किया कि जी, आप बिलकुल सच कह रहे हैं। और फिर दोनों रोने लगे। इतने में सोने का वक्त हो गया और पिताजी उठ खड़े हुए और हाथ बढ़ाकर बोले :

"भाइयो और बहनो! इस हाथ को देखिए, इसे थामिए और इससे

य मिलाइए। यह एक सूअर का हाथ था, अव्वल नम्बर के एक हाथ, गन्दा हाथ; मगर अब वैसा नहीं रहा। अब यह एक ऐसे र हाथ है जो नये सिरे से जिन्दगी शुरू कर रहा है और मर गर कदम पीछे नहीं हटाएगा। आप उसकी इस बात को नोट ए—भूलिएगा नहीं कि यह बात मैं कह रहा हूं। अब यह एक ा हाथ है, इसे अपने हाथ में लीजिए और इससे अपना हाथ वखेर के मिलाइए, डरने की कोई बात नहीं।"

र वहां जितने भी लोग थे सबने बारी-बारी पिताजी से हाथ और खूब-खूब झिंझोड़ा और कइयों के तो आंखों में आंसू भी आ साहब की बीवी ने तो करुणोद्रेक में पिताजी को चूम भी लिया। पिताजी ने शराब न छूने की कसम खाई और इस आशय के एक ा पर अपना अंगूठा भी लगाया। जज साहब अपने प्रयत्नों की ा पर फूले नहीं समाए; उन्होंने कहा कि आज का यह समय का, अद्भुत और पवित्र है और यह प्रतिज्ञा-पत्र कितना महान । अन्त में उन लोगों ने ऊपर की मंजिल के एक सुन्दर और कमरे में पिताजी के सोने की व्यवस्था कर दी। यह कमरा खास ायद उच्चवर्ग के मेहमानों के काम आता था। रात में कभी प्यास लगी और गला जोरों से सूखने लगा। वे बरसाती की ते हुए एक खम्भे के सहारे नीचे उतर आए। वहां से सीधे शराब ोर अपना नया कोट देकर चालीसेक पैग का बड़ा कैंटर शराब । खूब छककर पीया और बरसाती की राह कमरे में दाखिल नसारे उनकी नींद टूटी तो फिर उतरे और चौथा-भर दारू रसाती की छप्पर चढ़ने लगे। नशे में मतवाले तो हो ही रहे न पाए, लड़खड़ाकर नीचे गिरे और बाएं हाथ की हड्डियां तुड़ा बैठे। सवेरा होने तक वहीं पड़े रहे और ठण्ड में ठिठुरकर ।, परन्तु सवेरा हो गया था, लोगों ने देख लिया और आज बस के बुरे हाल हो गए थे। चन्दों की सफाई के बाद यह दुबारा लायक हो सका।

ज साहब के गुस्से और निराशा का पार न था। वह रहे थे

देते रहे। शिवाजी ने तीनों को सरदार की पगड़ी और गले में तलवार बांध कर अपनी रात तक कविता करते और शोर मचाते और अपनी जीत के बाजे बजाते गाते करते भी सिर पर उठाए रहे। कोई पहरा न देता उ रात में चैन से [illegible] दूसरे दिन प्रातःकाल से [illegible] हुई और हुल्लड़ करने के अपराध में एक हजार [illegible] को सजा दी गई। मगर वे खुश और मस्ती में और बढ़ बढ़ कर कहते जा रहे थे कि सजा मिले, कोई बात नहीं, [illegible] होता कि [illegible] था। [illegible] और अब [illegible] रहा।

फिर [illegible] पर [illegible] ने शिवाजी को सुधारने का बीड़ा [illegible]। [illegible] और [illegible] [illegible] से [illegible]। [illegible] आदत, [illegible] और [illegible] और [illegible] पास की

ने डांट दिया और कड़ी कार्रवाई करने की धमकी दी। बस,
के गुस्से का क्या पूछना ! खूब लाल-पीले हुए और सारे गांव को
कहा कि मैं भी दिखा दूंगा, इस दिन का बाप और वारसी कौन है।
। से वे मौके की तलाश में रहने लगे। जैसे ही बसन्त ऋतु शुरू हुई
ाव लग गया। एक दिन मुझे पकड़ा, डोंगी से नदी में तीन मील
ाकर उतारा और घसीटते हुए ठेठ इलिनोइस के किनारे तक
। वहां घने जंगल मे लट्ठों का एक झोंपड़ा था और जगह इतनी
ः अनजान आदमी तो जिन्दगी-भर भटकता रहे।
ां हर समय मुझे अपनी निगाह के सामने रखते। कहीं जाते तो
ार बन्द कर बाहर ताला लगा जाते। रात को सोते तो अन्दर ताला
चाभी अपने सिरहाने रखते। भागने का कोई भी मौका नहीं देते
ः पास एक बन्दूक थी, जो मेरा खयाल है कि कहीं से चुरा लाये
हां मछलियां मार कर और शिकार खेलकर अपनी गुजर-बसर
बीच-बीच में वे मुझे झोंपड़ी में बन्द कर और बाहर ताला लगा-
चले जाया करते। नदी के ही रास्ते नाव से तीन मील जाना
। वे अपने साथ मछलियां और शिकार ले जाते और बदले में
' पीपा भरवा लाते। घर आकर खूब पीते, बदमस्त हो जाते और
ाई करते। विधवा को जाने कैसे मेरे यहां होने का पता चल गया
दिन उसने एक आदमी को मुझे छुड़ाने के लिए भेजा। पिताजी
। बन्दूक तानकर खड़े हो गए। उस बेचारे को सिर पर पांव रख
ा पड़ा। धीरे-धीरे मुझे भी यहां अच्छा लगने लगा। अब सिर्फ

कि बूढ़े का सुधार का सिर्फ एक ही रास्ता है, उसे गोली मार देनी चाहि
और तो कोई तरीका समझ में नहीं आता।

अध्याय ६

पिताजी जल्दी ही अच्छे हो गए और मेरे और थैचर जज के पीछे हाथ धोकर पड़ गए। थैचर साहब पर उन्होंने अदालत में रुपए के लिए मुकद्दमा दायर कर दिया। मेरा रुपया जज साहब के पास रहे, यह उन्हें किसी भी शर्त पर गवारा नहीं था। मुझसे इसलिए नाराज थे कि उनकी मनाही के बावजूद मैंने स्कूल जाना छोड़ा नहीं था। कई बार उन्होंने मुझे पकड़ा और बुरी तरह पीटा, मगर फिर भी मैं स्कूल जाता था। अक्सर उन्हें चकमा देकर या काफी लम्बा चक्कर लगाकर स्कूल पहुंच जाता था। जहां तक होता उनकी पकड़ में नहीं आता था। पहले मुझे स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था, मगर अब सिर्फ उन्हें चिढ़ाने के लिए जाता था।

अदालती कारवाइयां तो चींटी की चाल से चलती ही हैं और अभी मुकद्दमा शुरू भी नहीं हुआ था; जल्दी शुरू होने के आसार भी नहीं दिखाई देते थे। इसलिए मुझे पिटाई से बचने के लिए अक्सर जज साहब से दो-तीन डालर उधार लेकर पिताजी को देते रहना पड़ता था। रुपया हाथ में आते ही वे उसकी शराब पी जाते। पीने के बाद मतवाले होकर ऊधम जहर मचाते और सारे कस्बे को सिर पर उठा लिया करते। तब हंगामा करने की उन्हें सजा मिलती और कुछ समय के लिए जेल भेज दिये जाते। यह उनका नियम ही बन गया था— शराब पीना, ऊधम करना और जेल जाना। इसका उन्हें कोई रंज-गम नहीं था; शायद आदत में शुमार हो गया था।

विमला के यहां सुबह शाम दिन दुपहर, रात बिरात जब जी में आता, हद्द-बेहद्द का विचार किए बिना आ धमकते। जब इस तरह उनका आना जाना बहुत बढ़ गया और बर्दाश्त के बाहर हो गई तो एक दिन

विधवा ने डपट दिया और कड़ी कारवाई करने की धमकी दी। बस, पिताजी के गुस्से का क्या पूछना! खूब लाल-पीले हुए और सारे गांव को सुनाकर कहा कि मैं भी दिखा दूंगा, हक किन का बाप और वारी कौन है! उस दिन से वे मौके की तलाश में रहने लगे। जैसे ही बसन्त ऋतु शुरू हुई उनका दाव लग गया। एक दिन मुझे पकड़ा, डोंगी से नदी में तीन मील ऊपर लाकर उतारा और घसीटते हुए ठेठ इलिनोइस के किनारे तक ले आए। यहां घने जंगल मे लट्ठों का एक झोपड़ा था और जगह इतनी बीहड़ कि अनजान आदमी तो जिन्दगी-भर भटकता रहे।

यहा हर समय मुझे अपनी निगाह के सामने रखते। कहीं जाते तो मुझे अन्दर बन्द कर बाहर ताला लगा जाते। रात को सोते तो अन्दर ताला लगाकर चाभी अपने सिरहाने रखते। भागने का कोई भी मौका नहीं देते थे। उनके पास एक बन्दूक थी, जो मेरा खयाल है कि कहीं से चुरा लाये थे। हम वहां मछलियां मार कर और शिकार खेलकर अपनी गुजर-बसर करते थे। बीच-बीच मे वे मुझे झोंपड़ी मे बन्द कर और बाहर ताला लगा-कर कस्बे चले जाया करते। नदी के ही रास्ते नाव से तीन मील जाना पड़ता था। वे अपने साथ मछलियां और शिकार ले जाते और बदले में शराब का पीपा भरवा लाते। घर आकर खूब पीते, बदमस्त हो जाते और मेरी पिटाई करते। विधवा को जाने कैसे मेरे यहा होने का पता चल गया था। एक दिन उसने एक आदमी को मुझे छुड़ाने के लिए भेजा। पिताजी ने देखा तो बन्दूक तानकर खड़े हो गए। उस बेचारे को सिर पर पाव रख कर भागना पड़ा। धीरे-धीरे मुझे भी यहां अच्छा लगने लगा। अब सिर्फ एक ही दुःख था और वह पिताजी के हाथों पिटने का।

आराम से दिन गुजरने लगे। काम-धाम कुछ नहीं। सारे दिन टांगें पसारे पड़े रहो, जी-भर तमाकू पियो और मछलियां फसाओ; न पढ़ना, न लिखना, न किताबें, न मदरसा! इस तरह दो महीने गुजर गए और मेरे बदन पर के कपड़े फट कर चिथड़े और गन्दे हो गए। अपनी इस जिन्दगी से विधवा के यहां के जीवन की तुलना करता तो आप ही हैरत में रह जाता था। सोचने लगता, वह नियमबद्ध जीवन, रोज का नहाना-धोना, बाल ओछना, कुर्सी-मेज लगाकर प्लेट में खाना, बखत पर सोना,

मेज पर खाना, किताबों में सिर मारना और दिन-भर बुढ़िया मिस वाटसन की चख-चख सुनते रहना मैं बर्दाश्त कैसे कर पाता था! लौटकर वहां जाने को जी ही नहीं होता था और न मैं किसी कीमत पर वहां जाने को तैयार था। विधवा के यहां मैंने गाली बकना और कसमें खाना छोड़ दिया था, क्योंकि यह सब उसे पसन्द नहीं था। यहां फिर शुरू कर दिया, क्योंकि पिताजी को कोई एतराज नहीं था। कुल मिलाकर जंगल का यह जीवन, एक पिटाई को छोड़कर, अच्छा था—बहुत ही अच्छा।

पिटाई के मारे मेरे नाक में दम था—गाहे-ब-गाहे बेभाव की पड़ने लगती थी। यहां तक कि पिताजी की हिकरी की सोंटी मेरी पीठ पर बरसने के लिए हर घड़ी बेताब रहने लगी। जिन्दगी अजाब हो गई। मारे बदन पर मार के निशान बन गए। इधर पिताजी का बाहर जाना भी बहुत बढ़ गया था। मुझे अकेले घण्टों ताले में बन्द रहना पड़ता था। एक बार वे ताला मारकर जो गए तो पूरे तीन दिन हो गए। मैं अन्दर अकेला बुरी तरह घबराता रहा। बार-बार यही ख्याल आता था कि वे डूब गए हैं और मैं यहां से कभी बाहर निकल नहीं पाऊंगा। इस विचार के आने पर पहले तो मैं बहुत डर गया, फिर हिम्मत करके अपने छुटकारे का उपाय सोचने लगा और निश्चय किया कि इसबार तो जैसे भी हो भागना ही होगा। भागने की कोशिशें पहले भी कई बारकर चुका था लेकिन सफलता नहीं मिली। खिड़की कोई इतनी बड़ी नहीं थी जिसकी राह मैं बाहर निकल पाता—सब इतनी छोटी कि कुत्ता भी अन्दर न आ सके। चिमनी इतनी संकड़ी कि बाहर निकलने के लिए उसका भी इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था। दरवाजा बलूत के मोटे और भारी पटियों का बनाया था। पिताजी कहीं जाते तो अन्दर चाकू, कुल्हाड़ी या ऐसी कोई चीज छोड़ नहीं जाते थे जिसका उपयोग मैं बाहर निकलने के लिए कर सकूं। सैकड़ों बार कोना-कोना छान मारा था कि बाहर निकलने का कोई रास्ता हाथ लग जाए। अन्दर बन्द किए जाने पर मेरा सारा समय इसी उधेड़-बुन और ढूंढ-खोज में बीतता था, नहीं तो समय शायद काटे [illegible] मैं पागल हो जाता। आखिर इसबार मेरा ढूंढना-खोजना

र्थक हो गया। एक पुरानी-धुरानी जंग लगी और बिना हत्थे की आरी
ट हाथ पड़ गई। छत की निस्तरणियों और एक धरण के बीच वह फँसी
ई थी। मैंने आरी को पोंछ-पोंछकर तेल लगाया और फौरन काम में
ट गया। एक कोने में मेज के पीछे पोड़े का पुराना कम्बल कीलों से ठोका
रा था। यह लट्ठों की सेंध से अन्दर आनेवाली हवा को रोकने के लिए
गाया गया था, जिससे मोमबत्ती को बुझने से बचाया जा सके। मेज के
चे घुस गया, कम्बल उठा दिया और नीचे के मोटे लट्ठों को काटने लगा।
ना बड़ा सूराख काट लेना चाहता था, जिसकी राह आसानी से बाहर
कला जा सके। काम काफी मुश्किल था और समय भी बहुत लग गया।
रन्त जैसे ही काम खत्म होने को आया जंगल में पिताजी की बन्दूक की
ावाज सुनाई दी। मैंने फौरन लकड़ी का बुरादा रफा-दफा किया, कम्बल
ाया और आरी छिपाकर रख दी। बहुत गौर से देखने पर भी वहां
ी को मेरी कारस्तानी का कोई निशान दिखाई नहीं दे सकता था।
र मैं मेज के नीचे से बाहर निकला और उधर पिताजी के ताले में चाभी
ने की आवाज सुनाई दी।

पिता जी इस समय पिए हुए नहीं थे, इसलिए उनका स्वभाव बहुत
चिढ़ा हो रहा था। अन्दर आकर उन्होंने बताया कि वे कस्बे गए थे
वहां सारे ही काम उलटे पड़ रहे हैं। वकील कहता तो है कि मुकदमा
जाएंगे और रुपया भी मिलेगा, लेकिन सुनवाई शुरू हो तब न! वह
ाश जज थेचर पेशियां बढ़वाने और तारीखें लगवाने में माहिर है।
लोग तो यह भी कह रहे हैं कि दूसरा मुकदमा चलेगा और उसमें उन
ोगों को जीत होगी और तुम्हें उस विधवा के हवाले कर दिया जाएगा
वह तुम्हारी वाली बन जाएगी। मैंने सुना तो घबराया। बुढ़िया के
मैं किसी भी शर्त पर जाने को तैयार नहीं था। उनकी वह 'सभ्यता'
'नियमबद्धता' अब मुझे काटने लगी थी।

फिर पिता जी लगे कोसने और गालियां बकने। उन्होंने एक सिरे से
ीज और हर आदमी को गालियां सुना डालीं। इससे जी नहीं भरा
ालियों का दूसरा दौर शुरू किया। दूसरे दौर के बाद अनजाने और
हचाने लोगों को भी चुन-चुनकर गालियां दीं। आज उन्होंने तय कर

वक्त पर जागना, किताबों में सिर खपाना और दिन-भर खूसट बुढ़िया मिस वाटसन की चख-चख सुनते रहना मैं बर्दाश्त कैसे कर पाता था! लौटकर वहां जाने को जी ही नहीं होता था और न मैं किसी कीमत पर वहां जाने को तैयार था। विधवा के यहां मैंने गाली बकना और कसमें खाना छोड़ दिया था, क्योंकि यह सब उसे पसन्द नहीं था। यहां फिर शुरू कर दिया, क्योंकि पिताजी को कोई एतराज नहीं था। कुल मिलाकर जंगल का यह जीवन, एक पिटाई को छोड़कर, अच्छा था—बहुत ही अच्छा।

बाकी सामान अन्दर पहुंचाते-पहुंचाते अंधेरा हो गया। मैं खाना पकाने लगा और पिताजी पीपा खोलकर शराब खींचने लगे। शराब उन्होंने कल कस्बे में भी पी थी और ज़रूर सारी रात गटर में पड़े रहे थे, क्योंकि सिर से पाव तक कीचड़ और गन्दगी मे सने बिलकुल पलीत लग रहे थे। दो चुक्कड़ के बाद वे सरूर मे आ गये और लगे बहकने। नशा चढ़ते ही वे सरकार की ऐसी-तैसी करने लगते थे। इस बार बोले :

"यह भी कोई सरकार है, हुह ! ऐसी-तैसी इस सरकार की ! कानून बना दिया कि बेटे को बाप से छीन लिया जाए ! सगे बेटे को छीन लो और बाप से, जिसने मर-खप कर उसे पैदा किया, तकलीफें उठाकर बड़ा किया, पाला-पोसा और खरचा किया। और अब बड़ा हुआ, कमाने-धमाने लायक हुआ तो कानून बीच में टपक पड़ा। मरे ससुरा बाप, बना रहे उमर-भर घानी का बैल, उसे आराम नहीं मिलना चाहिए। यह है सरकार ! वाह रे तेरी सरकार ! और वाह रे इस सरकार के कानून ! क्या खूब कानून बनाए हैं ! कानून उस दुनिया-भर के चोर और लफ़ंगे थेचर जज की मदद करता है और वह कानून की मदद से मेरी सारी जायदाद हड़पे बैठा है। यह है इस सरकार का कानून ! लानत है उस कानून पर जिसने मेरे छह हज़ार से भी ज़्यादा डालर छीन लिए और मुझे बियाबान जंगल की इस झोंपड़ी मे ला पटका और चीथड़े पहनने को मजबूर कर दिया ! वाह, क्या खूब कानून है कि इन्सान को जंगल का जानवर बना दिया ! और सरकार भी क्या खूब है ! इस सरकार में आदमी अपना हक नहीं पा सकता ! जी चाहता है कि इस मुल्क को लात मारकर हमेशा के लिए चला जाऊं। हां, चला जाऊं और कभी न लौटूं ! क्या मैं किसी से डरता हूं ! किसी का हवेलदार हूं ! मैंने तो भरी अदालत मे सबके मुंह पर यह बात कही है। थेचर के मुंह पर मार आया हूं इस बात को। जी हां थेचर के मुंह पर। सबने सुना; मर्द मुंह पर कहते हैं, किसी की पीठ पीछे नहीं ! बन्दे ने खुले चौगान कहा कि इस दो कौड़ी के मुल्क को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़-कर चला जाऊंगा और हाथ जोड़ने पर भी नहीं लौटूंगा। बिलकुल यही शब्द कहे थे। सबको सुनाकर कहा था कि देखो मेरी इस टोपी को—यह टोपी है या फूटी पतीली या अबाबीलों का घोंसला ! किनारे लटक कर लम्बो-

बाकी सामान अन्दर पहुंचाते-पहुंचाते अंधेरा हो गया। मैं खाना पक
लगा और पिताजी पीपा खोलकर शराब खींचने लगे। शराब उन्होंने क
कस्बे में भी पी थी और ज़रूर सारी रात गटर मे पड़े रहे थे, क्योंकि सि
से पांव तक कीचड़ और गन्दगी में सने बिलकुल पलीत लग रहे थे। द
धुक्कड़ के बाद वे सरूर मे आ गये और लगे बहकने। नशा चढ़ते ही वे
सरकार की ऐसी-तैसी करने लगते थे। इस बार बोले :

"यह भी कोई सरकार है, हुंह ! ऐसी-तैसी इस सरकार की ! कानून
बना दिया कि बेटे को बाप से छीन लिया जाए ! सगे बेटे को छीन लो
और बाप से, जिसने मर-खप कर उसे पैदा किया, तकलीफें उठाकर बड़ा
किया, पाला-पोसा और रखा किया। और अब बड़ा हुआ, कमाने-धमाने
लायक हुआ तो कानून बीच में टपक पड़ा। मरे ससुरा बाप, बना रहे उमर-
भर घानी का बैल, उसे आराम नहीं मिलना चाहिए। यह है सरकार !
वाह रे तेरी सरकार ! और वाह रे इस सरकार के कानून ! क्या खूब
कानून बनाए हैं ! कानून उस दुनिया-भर के चोर और लफंगे थैचर की
की मदद करता है और वह कानून की मदद से मेरी सारी जायदाद हड़पे
बैठा है। यह है इस सरकार का कानून ! लानत है उस कानून पर जिसने
मेरे छह हजार से भी ज्यादा डालर छीन लिए और मुझे बियाबान जंगल
की इस झोंपड़ी में ला पटका और चीथड़े पहनने को मजबूर कर दिया !
वाह, क्या खूब कानून है कि इन्सान को जंगल का जानवर बना दिया !
और सरकार भी क्या खूब है ! इस सरकार मे आदमी अपना हक नहीं पा
सकता ! जी चाहता है कि इस मुल्क को लात मारकर हमेशा के लिए चला
जाऊं। हां, चला जाऊं और कभी न लौटूं ! क्या मैं किसी से डरता हूं ?
किसी का हवेलदार हूं ! मैंने तो भरी अदालत में सबके मुंह पर यह बात
कही है। थैचर के मुंह पर मार आया हूं इस बात को। जी हां थैचर के मुंह
पर। सबने सुना; मर्द मुंह पर कहते हैं, किसी की पीठ पीछे नहीं। बन्दे ने
खुले चौगान कहा कि इस दो कौड़ी के मुल्क को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़-
कर चला जाऊंगा और हाथ जोड़ने पर भी नहीं लौटूंगा। बिलकुल यही लफ्ज़
कहे थे। सबको सुनाकर कहा था कि देखो मेरी इस टोपी को—यह,
है या फूटी पतीली या अबाबीलों का घोंसला ! किनारे सटक कर

लिया था कि अपनी गालियों में किसी को भी खाली नहीं रखेंगे। जिनका नाम नहीं मालूम था उन्हें गाली देते समय वह कहते 'उस फलाने की' और 'उस ढिमाके की' और 'जिसका क्या नाम है उस कमीने की' और 'जिसका नाम याद नहीं आ रहा है उस उल्लू के पट्ठे की' आदि-आदि; और एक-से-एक बढ़ती चढ़ती और ज़ोरदार गालियां दनादन दागे जा रहे थे।

फिर कहने लगे कि देखता हूं वह रांड तुझे मेरे पास से कैसे ले जाती है! एक पलक के भी लिए तुझे अपनी आंखों से ओट न होने दूंगा। आ तो जाए कोई ले जाने वाला, उसकी और अपनी जान एक कर दूंगा। यहां से छह-सात मील बयाबान में एक ऐसी जगह छिपा दूंगा कि ढूंढ़नेवाले जनम-भर ढूंढ़ते रहें, तेरा सुराग नहीं पा सकेंगे। उन्होंने समझ क्या रखा है मुझे! मैं फिर घबरा गया। लेकिन दूसरे ही क्षण संभल गया। सोचा, तब तक यहां रहेगा ही कौन?

अन्त में उन्होंने मुझसे कहा, "जाओ, डोंगी में जो सामान रखा है उठाकर ले आओ।" वे वहां से अपने साथ अनाज का पचास पौंड का बोरा, सूअर का नमक लगा बहुत-सा मांस, बारूद और छर्रे, शराब का चार गैलन का पीपा, डाट लगाने के लिए एक पुरानी किताब और दो अखबार एवं भरी बन्दूक के साथ सीधने की थोड़ी-सी रस्सी भी लेते आए थे। मैं एक बोझा झोंपड़ी में पहुंचा आया और लौट कर थोड़ी देर सुस्ताने के लिए नाव की अगली नोक पर बैठ गया। वहां बैठे बैठे मैंने अपने भागने की पूरी योजना बना डाली—बन्दूक और मछली पकड़ने की कुछ डोरियां लेकर जंगल में निकल जाऊंगा, किसी एक जगह मुकाम बनाकर नहीं रहूंगा, सारे जंगल में भटकता फिरूंगा, अक्सर रात को ही चला करूंगा; शिकार और मछलियों पर गुज़ारा करूंगा, और इतनी दूर निकल जाऊंगा कि बुड्ढा या [illegible] दोनों में से कोई मेरे पांवों की धूल को भी न पा सकेंगे। अगर [illegible] ने रात में शराब पी, और मेरा ख्याल था कि ज़रूर [illegible], तो उसी रात [illegible] निकल भागने का मेरा इरादा पक्का हो चुका था। अपने विचारों में मग्न मुझे वहां बैठे कुछ बहुत देर हो गई थी, तभी [illegible] को यह कहते सुना कि, "अरे कम्बख्त! [illegible], या मर गया या डूब मरा?" मैं चौंक कर हड़बड़ाकर उठ बैठा।

है ! देखलो इस लेंडी सरकार को, जो अपने को सरकार कहती है और अपने को सरकार समझती है और जो बराबर सरकार बनी हुई है मगर छह महीने से पहले एक चोर, बदमाश, आवारे, कमीने, सफेद कमीज पहनने वाले और गोरों की छाती पर मूंग दलने वाले हबशी के खिलाफ अंगुली भी नहीं उठा सकती; और···"

लेकिन पिताजी को ध्यान नहीं रहा कि सामने मांस का भगोना पड़ा है। वे अपनी धुन में बहकते-बमकते चलते ही रहे और धडाम से उस बरतन पर जा गिरे दोनों टांगों में जोर की चोट आ गई। अब तो उन्होंने वो गरमा-गरम गालियां मुंह से निकालना शुरू किया कि कुछ न पूछो। वह आजाद हबशी लेंडी सरकार और कम्बख्त भगोना अगर सुनपाते तो यकीन मानिए सौ जनम किसी को अपना मुंह न दिखा पाते। मारे दर्द के वे सारी झोपड़ी में चक्कर-घिन्नी की तरह नाचते रहे, कभी एक पांव पर और कभी दूसरे पांव पर और बारी-बारी से दोनों टांगों को सहलाते जाते थे। फिर उन्होंने उस भगोने में लपककर बाएं पांव से जोर की लात मारी। भगोना भन्ना उठा, पर अपनी जगह से हिला तक नहीं। उधर पिताजी के बुरे हाल ! इस पांव का जूता अंगुलियों के यहां से फटा हुआ था और दो-तीन अंगुलियां बाहर निकल रही थीं। चोट सीधी अंगुलियों पर पड़ी और वे मारे दर्द के चीख-पड़े। कुछ देर धरती पर लोटते हुए इतने जोर से चीखते चिल्लाते रहे कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए। बार-बार पांव की अंगुलियों को पकड़ते, फूंकते और मुंह में रखने की कोशिश करते थे। फिर गन्दी, फूहड़, फीश और गरमागरम गालियों की वह बौछार शुरू हुई कि न वैसी मैंने कभी सुनी थी और न आगे सुनूंगा। बाद में खुद उन्होंने कहा कि उनके जमाने में बूढ़ा सोवेरी हगन गालियों का बादशाह था और मीलों तक उसकी गालियों का मुकाबला करनेवाला कोई नहीं था, परन्तु आज तो बन्दे ने उसे भी मात कर दिया। मेरा ख्याल है कि उन्होंने सच ही कहा था।

ब्यालू के बाद पिताजी फिर शराब का पीपा सामने रखकर बैठ गए और बोले, "आज दारू खूब है. दो नहीं पूरे तीन दौर हो जाएंगे और हम मरो में धुत् !" शराब लेकर बैठने से पहले वे हमेशा इसी तरह कहा करते थे। मैंने सोचा कि घन्टे-भर में ये धुत् हो जाएंगे और तब मैं या तो

तरे हो गए हैं और सिर का ढकना गुम्बद की तरह ऊंचा उठ गया है। पहनता हूं तो लगता है जैसे सिर किसी पोने बेलन में घुसता चला जा रहा है। बिल्कुल ठुड्डी तक चली आती है। गोया टोपी न हुई टोकनी हो गई! और ये हाल हैं उस आदमी के जिसे अगर अपने हक हासिल हो जाएं तो कस्बे का सबसे मालदार आदमी होगा।

"इस सरकार की जितनी तारीफ की जाए थोड़ी है। क्या खूब है यह सरकार और इसके कानून! अभी कुछ दिन हुए ओहियो से एक आजाद हब्शी इधर आ गया था। दोगला था पूरा। गोरेपन में असली गोरों को भी मात करता था। सफेद बुर्राक कमीज पहने था और नई चमकती हैट लगाए था। उसके-जैसे कपड़े-लत्ते तो सारे गांव में किसी के पास न होंगे। बेटा सोने की घड़ी और चेन और चांदी की मूठ की छड़ी भी लिए था। और इस तरह अकड़कर चलता था मानो नवाब का नाती हो। लोगों ने कहा कि कालेज में प्रोफेसर है और तरह-तरह की भाषाएं बोलता है और आलिम-फाजिल है। और भी न जाने क्या-क्या। उन्होंने तो यहां तक कह मारा कि अपने प्रदेश में वह वोट भी देता है। मेरे तन-बदन में आग लग गई और सोचने लगा कि हमारा यह मुल्क कहां जा रहा है और इसका क्या हो रहा है! वह चुनाव का दिन था और मैं खुद वोट डालने जा रहा था। उस दिन बहुत दारू पिए हुए भी नहीं था। मगर जब मैंने यह सुना कि इस मुल्क में एक जगह ऐसी भी है जहां हबशी वोट दे सकते हैं तो मैंने कहा, जहन्नुम में जाए यह मुल्क, अब मैं कभी वोट न दूंगा—बिलकुल नहीं, सारी जिन्दगी नहीं। और उस हबशी की मगरूरी देखो। दनदनाता सड़क पर चला आता था, मुझे रास्ता तक नहीं दिया, धक्का मारकर हटाना पड़ा। मैंने लोगों से कहा कि इस पाजी को नीलाम क्यों नहीं करा देते? जानते हो क्या जवाब मिला? उन्होंने कहा, हम इसे बेच नहीं सकते। क्यों? इसे हमारे राज्य में रहते अभी छह महीने नहीं हुए और छह महीने से पहले हम इसका नीलाम नहीं बोल सकते। यह तो मैंने एक नजीर पेश की है सरकार का निकम्मापन साबित करने के लिए। जो सरकार अपने राज्य में रहने वाले हबशी को इसलिए बेचने की इजाजत नहीं दे सकती कि उसे यहां रहते हुए छह महीने का अरसा नहीं हुआ, वह भी भला कोई सरकार

दो ! दया करो !"

फिर वे हाथ जोड़कर हा-हा खाने लगे। घुटनों पर गि
नाक भी घिसी। बड़े करुण स्वर मे कहते रहे, "मुझे छोड़ दो, म
दया की भीख मांगता हूं !" फिर कम्बल ओढ़कर मेज के नी
और वहां भी प्राणों की भीख मांगते रहे। उसके बाद वे
कम्बल में दुबका सुन रहा था।

इसके बाद वे लुढ़ककर बाहर आए और एकदम उछ
गए। चेहरा उनका डरावना हो गया और आखों से अंगारे नि
फिर मुझे देख बेतहाशा मेरी ओर झपटे। मैं अपने को बचाने के
से-उधर दौड़ने लगा, क्योंकि वे खुला चाकू हाथ में लिए मे
रहे थे और कहते जाते थे कि यही है मौत का दूत, अभी इसे
हूं फिर मुझे कैसे ले जाएगा ! ठहर ! मैंने बहुत कहा, विनत
मैं तो सिर्फ हक हूं, हकफिन, लेकिन उन्होंने एक न सुनी। ठ
पागलों-सा कहकहा लगाते, गरजते, दहाड़ते और गालियां
पीछा करते रहे। एक बार मैं कावा काटकर जैसे ही मुड़ने को
झपट्टा मारकर दोनो कंधों के बीच से मेरा कोट पकड़ लिया
अब प्राण गए, और अगर ज़रा-सी भी देर हो जाती तो बेट
आर-पार निकल जाता। लेकिन मैंने गजब की फुर्ती से कोट
और कन्नी काटकर परे हो गया। जान बच गई। इस भाग-दौ
कर चूर हो गए और दरवाजे के पास पड़कर बोले, "थोड़ा सु
तुमसे समझूंगा ! बचकर जाएगा कहां। चाकू पार-उतार कर
चाकू उन्होंने चूतड़ के नीचे दबा लिया और कहा, "ज़रा
फिर ताज़ा दम होकर बताऊंगा कि कौन भारी है मैं या मौत

जल्दी ही उनकी नाक बजने लगी। बहुत सावधानी से
मैंने कुर्सी अपनी जगह से हटाई और ऊपर चढ़कर बन्दूक
अगर ज़रा-सा भी खुटका हो जाता तो मेरी जान जाने में
थी। गज अन्दर डालकर मैंने इत्मीनान कर लिया कि बन्दूक
है। फिर शलजम के पीपे पर नली को ठीक पिताजी की

ताला तोड़कर या लट्ठे काटकर निकल भागूंगा। वे बैठे मुक्काड़-पर-मुक्का चलाते रहे और मन ही घण्टे-भर में अपने कम्बलों पर औंधे हो गए, मगर भागना मेरे भाग्य में बदा नहीं था। क्योंकि न वे बेहोश हुए और न उन्हें गहरी नींद आई। बड़ी देर तक बर्राते, कराहते और हाथ-पांव पटकते रहे। मैं इन्तज़ार करते-करते थक गया और नींद ने कब आ दबोचा कुछ खयाल नहीं रहा। सिर्फ इतना याद है कि मोमबत्ती जल रही थी और मैं बैठा था और फिर एकदम गहरी नींद मे बेसुध हो गया।

जितनी देर सोया रहा कुछ याद नहीं। सहसा एक ज़ोर की चीख सुनकर जाग पड़ा। आंखें मलकर देखा तो पिताजी बुरी तरह डरे हुए झोंपड़ी में भागे-भागे फिर रहे थे और चिल्लाते जाते थे—सांप! सांप! "हाय! मेरी टांगों पर चढ़ रहे हैं!" उन्होंने ज़ोर की चीख मारी और उछल पड़े। फिर चीखे, 'हाय बाप! गाल पर काट खाया!" लेकिन मुझे एक भी सांप नहीं दिखाई दिया। होता तो दिखाई देता। और पिता जी झोंपड़ी में इधर-से-उधर दौड़ते और फुदकते हुए चिल्ला रहे थे, "हटाओ! हटाओ! यह गले में लिपट गया! चूड़ कस रहा है; यह काटा! बचाओ!" उनकी आखें फट गई थी और चेहरा मारे डर के ऐंठा जा रहा था। इस कदर डरा हुआ आदमी मैंने पहले कभी नहीं देखा था। फिर वे थके-से ज़मीन पर गिर पड़े और कांपते हुए लोटने लगे। अब वे बड़ी फुर्ती से हाथ-पांव चला रहे थे और हवा में मुक्कियां मारते और किन्ही अदृश्य जीवों को पकड़कर दबोचते हुए चिल्लाने लगे थे, "अरे बाप रे! भूत-प्रेत पकड़े लिये जा रहे हैं, बचाओ! बचाओ!!" फिर वे एकदम शान्त हो गए। बिलकुल सन्नाटा छा गया। मुझे जंगल में घुघुआते उल्लू और गुर्राते भेड़ियों की आवाज सुनाई दे गई। उस भयंकर सन्नाटे में डर-सा लगने लगा। वे कुछ देर एक कोने में शान्त पड़े रहे। फिर उन्होने सिर थोड़ा ऊंचा किया और कान लगाकर सुनते रहे; और तब घुटे घुटे स्वर में बोले, "ट्रैम्प, ट्रैम्प, ट्रैम्प—यह मुर्दा आ रहा है; ट्रैम्प, ट्रैम्प, ट्रैम्प! वे मुझे लेने आ रहे हैं, पर मैं नहीं आऊंगा। हाय, वे तो आ गए। लो, सिर पर सवार हो गए। मत छुओ, मुझे मत छुओ! हटालो, अपने ठण्डे हाथ हटालो। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा। बख्श दो, मुझ गरीब को बख्श

हाथ लग जाए। किस्मत जरूर सिकन्दर थी। तेरह-चौदह फुट लम्बी एक खूबसूरत-सी नाव, धारा में बतख की तरह तैरती चली आ रही थी। मैंने कपड़े सहित नदी में मेंढक की तरह सिर के बल गोता मारा और पानी काटता हुआ नाव की ओर बढ़ चला। सोचता जा रहा था कि नाव में कोई हुआ तो बुद्धू बनाया जाऊंगा। कई लोग नाव की पेंदी में पड़ रहते और जब मेरी तरह कोई खींचकर किनारे ले आता तो खड़े होकर खिलखिलाने लगते थे। लेकिन इस नाव मे कोई नही था। जाने किस घाट से छूटकर बहती चली आई थी। मैं ऊपर चढ़ गया और चप्पुओं से खेकर किनारे की ओर ले चला। सोचता जा रहा था कि बुढऊ देखकर खुश हो जाएंगे—बाजार मे इसके कम-से-कम दस डालर तो मिल ही जाएगे। लेकिन किनारे पहुंचा तो पिताजी अभी आए नही थे। मैंने नाव को बेंत और लताओं से ढके एक छोटे नाले मे मोड़ दिया और तभी यह खयाल बिजली की तरह कौंध गया कि क्यों न इसे छिपा दिया जाए। भागकर जंगल में जाने के बदले नाव से नदी-नदी पचास मील नीचे जाकर किसी जगह स्थायी रूप से पड़ाव डाल देंगे। खुश्की के रास्ते पैदल भटकने से यह बहुत अच्छा रहेगा।

यह नाला झोपड़ी के बहुत करीब था और मुझे हर क्षण लग रहा था कि बुढ्ढऊ अब आए और अब आए। लेकिन आखिर मैंने उस नाव को छिपा ही दिया। फिर किनारे पर चढ़कर बेंत के एक झुरमुट के पार आया तो देखा कि पिताजी एक चिड़िया पर निशाना साध रहे थे। मैं निश्चिन्त हुआ। उन्होंने मुझे देखा नहीं था।

अन्त में जब देखा तो लगे गालियां बकने और कोसने कि इतनी देर कहां कर दी—सुस्त, निकम्मा कहीं का! मैंने कहा, नदी में गिर पड़ा था, इसलिए इतनी देर हो गई। कपड़े तो भीगे हुए थे ही, उनसे छिपा न रहता और तब वे सवालों की झड़ी लगा देते! मैंने इस एक जवाब से दो मुसीबतें टालीं। जाल में पांच मछलियां फंसी थीं। हम उन्हें लेकर घर लौट आए।

कलेवे के बाद हम दोनों सोने की कोशिश करने लगे, थके हुए तो थे ही। मैं लेटा-लेटा सोचने लगा कि कोई ऐसा रास्ता अपनाना चाहिए जिससे विधवा और पिताजी दोनों गुमराह हो जाएं और मेरा पीछा न कर सकें।

समय जैसे स्थिर हो गया था, काटे नहीं कट रहा था और मैं उकताने लगा…।

अध्याय ७

"अबे, उठ ! यह सब क्या है ?"

मैंने हड़बड़ाकर आँखें खोलीं और अपने चारों ओर देखने लगा। पहले तो समझ में नहीं आया कि कहां हूं ! दिन निकल आया था। मैं जरूर गहरी नींद सोया हुआ था। पिताजी मुझ पर झुके हुए थे। वे अनमने और उखड़े हुए-से लग रहे थे। उन्होंने कहा, "बन्दूक से तुझे मतलब ? इसे क्यों उतारा ?"

मैं समझ गया कि इन्हें रात की घटना कुछ भी याद नहीं है। बोला, "रात में किसी ने अन्दर घुसने की कोशिश की थी, इसलिए मैं दरवाजे का निशाना साधकर बैठ गया।"

"मुझे क्यों नहीं जगाया ?"

"कोशिश तो बहुत की, पर आप जागे नहीं—हां-हूं भी नहीं किया तो किसे जगाता ?"

"अच्छी बात है। अब बकवास बन्द ! जाकर देख, कोई मछली फंसी है नाश्ते के लिए। मैं भी पहुंचता ही हूं।"

उन्होंने ताला खोला और मैं उछलकर बाहर आ गया और सीधा लपकता चला गया नदी किनारे। नदी की धारा में टहनियां, पेड़ की छालें और ऐसी ही चीजें बहती दिखाई दीं। समझ गया कि पानी बढ़ रहा है। अगर आज कस्बे में होता तो खूब फायदे में रहता। जून की बाढ़ में खूब लकड़ियां और लट्ठे बहकर आते हैं। उन्हें बटोरकर आटा मिल या लकड़ी पीठा वालों के हाथ बेचकर काफी-कुछ कमाया जा सकता था।

मैं किनारे-किनारे नदी के ऊपर की ओर बढ़ चला। एक आंख पिता-जी की ओर लगी थी और दूसरी नदी की धारा पर—यहां भी शायद कुछ

में जितनी कॉफी और शक्कर और बारूद और छर्रे थे वे सब भी
र मैं नाव में रख आया। बन्दूक में डाट लगाने के लिए वह पुरानी
और दोनों अखबार, बालटी, और तुम्बा, डुबोना और टीन का
पुरानी आरी और दोनो कम्बल, पतीली और कॉफी बनाने का
दियासलाइयां और मछली पकड़ने की डोरियां—गरज यह कि
ारा सामान झाड-पोछकर नाव मे पहुंचा दिया। जो भी सामान
े लायक था और ले जाया जा सकता था वह मैंने ले लिया, वहा
ड़ा। कुल्हाड़ी भी ले जाना चाहता था, लेकिन झोपड़ी मे तो
ी नही, बाहर ईंधन के ढेर पर पड़ी थी और सारे घर मे वही
ड़ी थी और मैं उसे एक खास मतलब से यहीं छोड़ जाना चाहता
मैंने बन्दूक उठा ली और इधर का मेरा काम खत्म हुआ।
की राह बार-बार आने-जाने और इतना सामान निकालकर ले
ां की जमीन कुट-पिटकर कड़ी और हमवार हो गई थी। उसे
जाना ठीक न होता। मैंने उस पर धूल-मिट्टी बिखेर कर ऐसा
के सहसा दिखाई न दे। इससे लकड़ी के बुरादे, पांव के निशान
पेटी हमवार जमीन के चिकनेपन पर पर्दा पड गया। उसके बाद
ा काटे हुए टुकडे को दो-तीन पत्थरों की मदद से उसकी पुरानी
दिया। पत्थर इसलिए लगाने पड़े कि वह एक ओर से थोड़ा मुड़
र अपनी जगह ठीक से बैठ नही पा रहा था। मैंने सबसे नीचे
काटा था, इसलिए यदि चार-पाच फुट के फासले से देखा जाता
चल सकता था कि वहा लट्ठा काटा गया है; फिर वह जगह
दरवाड़े की ओर पड़ती थी और उधर कोई जाता नहीं था।
नाव तक रास्ता घास में होकर जाता था, इसलिए उधर पांव
े छिपाने का सवाल ही नही उठता। फिर भी मैंने एक जगह
ारों और ध्यान से देख लिया। नदी के किनारे पर भी जाकर
ोई नही था। अब मैं बन्दूक लेकर जंगल में निकल गया कि
ार लाऊं। इतने मे मुझे एक बनैला सूअर दिखाई दे गया।
ां वह ग्रेरी के खेतघरों का, लेकिन फुट्टल होकर जंगल में
ा और इधर के पनीले गड्ढों मे रहने लगा था। इसी तरह

अगर दोनों को भटकाने की बढ़िया चाल सूझ गई तो निश्चिन्त होकर छिपा रह सकूंगा और भागकर पकड़ा न जाना भाग्य भरोसे नहीं रह जाएगा। देर तक सोचता रहा, लेकिन कोई तरकीब सुझाई नहीं दी।

इतने में पिताजी दुबारा पानी पीने के लिए उठे और बोले, "अगर फिर कोई आदमी इधर मंडराता दिखाई दे तो मुझे फौरन जगा देना। सुन लिया न ? मुझे उस आदमी के इरादे अच्छे नहीं मालूम पड़ते। मैं देखते ही गोली मार दूंगा। समझ गया न ? फौरन जगा देना।"

इतना कहकर वे लेट गए और खर्राटे भरने लगे। लेकिन मेरी आंखों में नींद कहां। तेजी से दिमाग काम करने लगा था। पिताजी ने आदमी का उल्लेख करके मुझे बढ़िया तरकीब सुझा दी थी। अब तो वह चाल चलूंगा कि कोई पीछा कर ही नहीं सकता।

करीब बारह बजे हम उठे और नदी पर गए। पानी तेजी से बढ़ता आ रहा था और बहुत-सी लकड़ियां और लट्ठे बहकर आने की उम्मीद बंधती जाती थी। हम देर तक बैठे इन्तजार करते रहे। लट्ठों के बेड़े का एक हिस्सा बहकर आता दिखाई दिया जो बड़े-बड़े लट्ठे साथ बंधे हुए थे। हम डोंगी के सहारे उसे किनारे तक ले आए। उसके बाद हमने खाना खाया। दूसरा कोई होता तो दिन-भर बैठा नदी ताका करता और काफी माल बटोरता। लेकिन पिताजी में इतनी धीरज कहां। वे तो झट मंगनी पट ब्याह वाले आदमी थे। उनके लिए तो नौ लट्ठे ही बड़ी न्यामत थी— जब शहर ले जाएं और सब बेचकर वारा-न्यारा करें। साढ़े तीन बजे उन्होंने मुझे ताले में बन्द किया और लट्ठों को नाव से बांधकर खेते हुए शहर ले चले। मैं समझ गया कि आज की रात तो वे आने से रहे। मैं कुछ देर तो रुका रहा, फिर मेरे हिसाब से जब वे काफी दूर निकल गए तो मैंने आरी निकाली और लट्ठे को काटने लगा। अभी पिताजी नदी पार कर दूसरे किनारे पहुंच भी नहीं पाए थे कि लट्ठा कट गया और मेरे निकलने लायक छेद बड़ा बन गया। बाहर आकर देखा तो नदी के किनारे [illegible] उनकी नाव और बेड़ा छोटे-से काले धब्बे की तरह दिखाई दे रहा था।

मैंने बन्दूक का बोरा पीठ पर लादा और अपनी नाव में आकर उस [illegible]

[illegible] को ले गया। उसके बाद सामान के ढेरे को पहुंचाता

झोपड़ी में जितनी कॉफी और शक्कर और बारूद और छर्रे थे वे सब भी ले जाकर मैं नाव में रख आया। बन्दूक में डाट लगाने के लिए वह पुरानी किताब और दोनों अखबार, बालटी, और तुम्बा, डुबौना और टीन का प्याला, पुरानी आरी और दोनों कम्बल, पतीली और कॉफी बनाने का बरतन, दियासलाइयां और मछली पकड़ने की डोरियां—गरज यह कि घर का सारा सामान झाड़-पोंछकर नाव में पहुंचा दिया। जो भी सामान काम आने लायक था और ले जाया जा सकता था वह मैंने ले लिया, वहां कुछ न छोड़ा। कुल्हाड़ी भी ले जाना चाहता था, लेकिन झोपड़ी में तो कुल्हाड़ी थी नहीं, बाहर ईंधन के ढेर पर पड़ी थी और सारे घर में वही एक कुल्हाड़ी थी और मैं उसे एक खास मतलब से यहीं छोड़ जाना चाहता था। फिर मैंने बन्दूक उठा ली और इधर का मेरा काम खत्म हुआ।

सेंध की राह बार बार आने-जाने और इतना सामान निकालकर ले जाने से वहां की जमीन कुट-पिटकर कड़ी और हमवार हो गई थी। उसे यों ही छोड़ जाना ठीक न होता। मैंने उस पर धूल-मिट्टी बिखेर कर ऐसा कर दिया कि सहसा दिखाई न दे। इससे लकड़ी के बुरादे, पांव के निशान और कुटी-पिटी हमवार जमीन के चिकनेपन पर पर्दा पड़ गया। उसके बाद मैंने लट्ठे के काटे हुए टुकड़े को दो-तीन पत्थरों की मदद से उसकी पुरानी जगह लगा दिया। पत्थर इसलिए लगाने पड़े कि वह एक ओर से थोड़ा मुड़ गया था और अपनी जगह ठीक से बैठ नहीं पा रहा था। मैंने सबसे नीचे वाला लट्ठा काटा था, इसलिए यदि चार-पांच फुट के फासले से देखा जाता तो पता नहीं चल सकता था कि वहां लट्ठा काटा गया है; फिर यह जगह झोपड़ी के पिछवाड़े की ओर पड़ती थी और उधर कोई जाता नहीं था।

यहां से नाव तक रास्ता घास में होकर जाता था, इसलिए उधर पांव के निशानों को छिपाने का सवाल ही नहीं उठता। फिर भी मैंने एक जगह खड़े होकर चारों ओर ध्यान से देख लिया। नदी के किनारे पर भी जाकर देखा। वहां कोई नहीं था। अब मैं बन्दूक लेकर जंगल में निकल गया कि कुछ चिड़ियां मार लाऊं। इतने में मुझे एक जंगली सूअर दिखाई दे गया। यों असल में वह खेतों के बाड़ों का था, लेकिन छुट्टा होकर जंगल में चला आया था और इधर के दलदली गड्ढों में रहने लगा था। इसी तरह

मगर दोनों को भटकाने की बढ़िया चाल सूझ गई तो निश्चिन्त होकर छिपा रह सकूंगा और भागकर पकड़ा न जाना भाग्य भरोसे नहीं रह जाएगा। देर तक सोचता रहा, लेकिन कोई तरकीब सुझाई नहीं दी।

इतने में पिताजी दुबारा पानी पीने के लिए उठे और बोले, "अगर फिर कोई आदमी इधर मंडराता दिखाई दे तो मुझे फौरन जगा देना। सुन लिया न ? मुझे उस आदमी के इरादे अच्छे नहीं मालूम पड़ते। मैं देखते ही गोली मार दूंगा। समझ गया न ? फौरन जगा देना।"

इतना कहकर वे लेट गए और खर्राटे भरने लगे। लेकिन मेरी आंखों में नींद कहां। तेजी से दिमाग काम करने लगा था। पिताजी ने आदमी का उल्लेख करके मुझे बढ़िया तरकीब सुझा दी थी। अब तो वह चाल चलूंगा कि कोई पीछा कर ही नहीं सकता।

करीब बारह बजे हम उठे और नदी पर गए। पानी तेजी से बढ़ता जा रहा था और बहुत-सी लकड़ियां और लट्ठे बहकर आने की उम्मीद बंधती जाती थी। हम देर तक बैठे इन्तजार करते रहे। लट्ठों के बेड़े का एक हिस्सा बहकर आता दिखाई दिया तो बड़े-बड़े लट्ठे साथ बंधे हुए थे हम डोंगी के सहारे उसे किनारे तक ले आए। उसके बाद हमने खाना खाया। दूसरा कोई होता तो दिन-भर बैठा नदी ताका करता और काफी माल बटोरता। लेकिन पिताजी में इतनी धीरज कहां। वे तो चट मंगनी पट ब्याह वाले आदमी थे। उनके लिए तो नौ लट्ठे ही बड़ी न्यामत थी—कब कस्बे ले जाएं और कब बेचकर वारा-न्यारा करें। साढ़े तीन बजे उन्होंने मुझे ताले में बन्द किया और लट्ठों को नाव से बांधकर खेते हुए कस्बे ले चले। मैं समझ गया कि आज की रात तो वे आने से रहे। मैं कुछ देर तो रुका रहा, फिर मेरे हिसाब से जब वे काफी दूर निकल गए तो मैंने आरी निकाली और लट्ठे को काटने लगा। अभी पिताजी नदी पार कर दूसरे किनारे पहुंच भी नहीं पाए थे कि लट्ठा कट गया और मेरे निकलने लायक छेद वहां बन गया। बाहर जाकर देखा तो नदी के विस्तार में उनकी नाव और बेड़ा छोटे-से, काले धब्बे की तरह दिखाई दे रहा था।

मैंने अनाज का बोरा पीठ पर लादा और अपनी नाव में जाकर रख आया। फिर मांस-खण्ड को ले गया। उसके बाद शराब के पीपे को पहुंचाया

झोपड़ी में जितनी कॉफी और शक्कर और बारूद और छर्रे थे वे सब भी ले जाकर मैं नाव में रख आया। बन्दूक में डाट लगाने के लिए वह पुरानी किताब और दोनों अखबार, बालटी, और तुम्बा, डूबौना और टीन का प्याला, पुरानी आरी और दोनों कम्बल, पतीली और कॉफी बनाने का बरतन, दियासलाइयां और मछली पकड़ने की डोरियां—गरज यह कि घर का सारा सामान झाड़-पोंछकर नाव में पहुंचा दिया। जो भी सामान काम आने लायक था और ले जाया जा सकता था वह मैंने ले लिया, वहां कुछ न छोड़ा। कुल्हाड़ी भी ले जाना चाहता था, लेकिन झोपड़ी में तो कुल्हाड़ी थी नहीं, बाहर ईंधन के ढेर पर पड़ी थी और सारे घर में वही एक कुल्हाड़ी थी और मैं उसे एक खास मतलब से यहीं छोड़ जाना चाहता था। फिर मैंने बन्दूक उठा ली और इधर का मेरा काम खत्म हुआ।

सेंध की राह बार-बार आने-जाने और इतना सामान निकालकर ले जाने से वहां की ज़मीन कुट-पिटकर कहीं और हमवार हो गई थी। उसे यौंही छोड़ जाना ठीक न होता। मैंने उस पर धूल-मिट्टी बिखेर कर ऐसा कर दिया कि सहसा दिखाई न दे। इससे लकड़ी के बुरादे, पांव के निशान और कुटी-पिटी हमवार ज़मीन के चिकनेपन पर पर्दा पड़ गया। उसके बाद मैंने लट्ठे के काटे हुए टुकड़े को दो-तीन पत्थरों की मदद से उसकी पुरानी जगह लगा दिया। पत्थर इसलिए लगाने पड़े कि यह एक ओर से थोड़ा मुड़ गया था और अपनी जगह ठीक से बैठ नहीं पा रहा था। मैंने सबसे नीचे वाला लट्ठा काटा था, इसलिए यदि चार-पांच फुट के फासले से देखा जाता तो पता नहीं चल सकता था कि यहां लट्ठा काटा गया है; फिर यह जगह झोंपड़ी के पिछवाड़े की ओर पड़ती थी और उधर कोई जाता नहीं था।

यहां से नाव तक रास्ता घास में होकर जाता था, इसलिए उधर पांव के निशानों को छिपाने का सवाल ही नहीं उठता। फिर भी मैंने एक जगह खड़े होकर चारों ओर ध्यान से देख लिया। नदी के किनारे पर भी जाकर देखा। कहीं कोई नहीं था। अब मैं बन्दूक लेकर जंगल में निकल गया कि कुछ चिड़ियां मार लाऊं। इतने में मुझे एक जंगली सूअर दिखाई दे गया। ये तो असल में वह पेरी के खेतघरों का, लेकिन छुट्टल होकर जंगल में निकल आया था और इधर के पनीले गड्ढों में रहने लगा था। इसी तरह

बहुत-से पालतू सूअर बनैले हो जाया करते थे। मैंने सूअर को मार डाला और उठाकर नाव में रख लाया।

अब मैंने कुल्हाड़ी उठाई और झोंपड़ी के दरवाज़े को चीर-फाड़कर रख दिया। फिर नाव में से सूअर को ले आया और टूटे दरवाज़े की राह अन्दर जाकर उसे मेज़ पर रख कुल्हाड़ी से उसकी गरदन काट दी। खून मैंने ज़मीन पर बह जाने दिया ज़मीन इसलिए कह रहा हूं कि झोंपड़ी का फर्श पटरों का नहीं था। इसके बाद मैंने एक पुराने बोरे में कुछ पत्थर भरे और उसे सूअर के खून पर रखकर वहां से घसीटता हुआ दरवाज़े के बाहर जंगल के रास्ते नदी किनारे तक ले गया और पानी में फेंक दिया। छपाक की आवाज़ के साथ वह बोरा नदी में डूब गया। कोई भी देख सकता था कि किसी को मारकर लाश नदी तक घसीटी जाकर पानी में फेंकी गई है। *मन में आया, काश, इस वक्त टामसायर यहां होता। इस तरह के कामों में उसका दिमाग खूब चलता था और वह ज़रूर इस सारे* काम को और भी निखार देता। ऐसे मामलों में उसके जैसी सफाई और सूझ-बूझ किसी में नहीं थी।

इसके बाद मैंने कुल्हाड़ी को खून में अच्छी तरह सान दिया और उसके आले पर अपने सिर के कुछ बाल उखाड़कर चिपका दिए और कुल्हाड़ी को एक कोने में फेंक दिया। इतना करने के बाद मैंने सूअर को सावधानी से उठा लिया, जिससे खून की बूंदें ज़मीन पर न गिरें और ले जाकर उसे नदी में फेंक आया। *तभी मुझे एक नई बात सूझ गई। मैं भागा नाव तक गया और उसमें से अनाज के बोरे और आरी को झोंपड़ी में उठा लाया। बोरे को मैंने उसकी पुरानी जगह रख दिया और आरी से उसका निचला* हिस्सा थोड़ा-सा चीर दिया। अब मैंने बोरे को उठा लिया और झोंपड़ी से कोई सौ-एक गज़ के फासले पर, पूरब की ओर जो पाचेक मील चौड़ी छिछली झील थी उसकी ओर चल पड़ा। मेरा रास्ता घास के टुकड़े और बेंतों के झुरमुट से होकर जाता था। इस झील में नरकुलों और मौसम पर बतखों की भरमार रहती थी। *झील में से निकलकर उस पार एक संकरा-सा दलदली नाला मीलों तक चला जाता था। वह नाला कहां जाता* था, मुझे मालूम नहीं, इतना जानता था कि नदी की ओर नहीं

जाता। झील के किनारे मैंने पिताजी की धार लगानेवाली सिल्ली इस तरह फेंक दी मानो अनजाने अकस्मात् वहां गिर गई हो। अब झोपड़ी से झील के किनारे तक अनाज के दानों की एक लकीर-सी बन गई थी। यहां मैंने बोरे के छेद को एक पतली डोरी से बांध दिया, जिससे अनाज नीचे न गिरे और बोरे तथा आरी दोनों को ले जाकर नाव में रख दिया।

अंधेरा होने लगा था, इसलिए मैंने नाव को किनारे पर छाए बेंत वृक्षों के तले नदी में उतार दिया और चांद के उगने का रास्ता देखने लगा। नाव को मैंने बेंत की एक टहनी से बांध दिया था। इस बीच मैंने कुछ खा-पी लिया और तब आराम से नाव में टांगें पसार कर पड़ गया और तम्बाकू पीता हुआ आगे की योजना बनाने लगा। पत्थरों का बोरा घसीटे जाने के निशानों के साथ-साथ वे किनारे तक जाएंगे और वहां नदी में मेरे लिए जाल और कांटे डालेंगे। अनाज के दानों के साथ-साथ वे झील तक पहुंचेंगे, और कीचड़वाला नाला खूदते हुए उन डाकुओं की तलाश में बढ़ते जाएंगे, जिन्होंने मेरी हत्या की। नदी की खोज-बीन वे सिर्फ मेरी लाश के लिए करेंगे, जो उन्हें नहीं मिलेगी और तब वे निराश होकर बैठ जाएंगे। इस बीच मैं काफी दूर निकल जाऊंगा और तब जहां जी चाहेगा ठहर सकूंगा। इस तरह मैंने जेकसन द्वीप जाने और वहीं रहने का निश्चय किया। यह द्वीप मेरा देखा-भाला था और मुझे यह भी मालूम था कि वहां कोई आता-जाता नहीं। फिर इस द्वीप से कस्बा ज्यादा दूर भी नहीं था। मैं रात में नाव से बड़े मजे में कस्बे तक जाकर वहां से जरूरत की चीजें चोरी और छीनाझोरी से ले आ सकता था। सभी दृष्टियों से जेकसन द्वीप उत्तम था। मैंने वहीं जा बसने का फैसला किया।

मैं बहुत थक गया था, इसलिए बैठे बैठे कब आंख लग गई कुछ पता ही न चला। जब जागा तो पहले क्षण-भर तो यह समझ में ही नहीं आया कि कहां हूं। आंखें फाड़े अपने चारों ओर कुछ भय और विस्मय से देखता रह गया। फिर एकदम सबकुछ याद आ गया। नदी का पाट ऐसा लग रहा था मानो कई मील चौड़ा हो। चांद उग आया था और चांदनी इतनी साफ और चटकीली थी कि मैं अपनी जगह से नदी में बहकर आए और किनारे से सैंकड़ों गज के फासले पर बेतरतीब पड़े लट्ठों को देख ही नहीं एक-

बहुत-से पालतू सूअर बनैले हो जाया करते थे। मैंने सूअर को मार डाला और उठाकर नाव में रख आया।[1]

अब मैंने कुल्हाड़ी उठाई और झोंपड़ी के दरवाज़े को चीर-फाड़कर रख दिया। फिर नाव में से सूअर को ले आया और टूटे दरवाज़े की राह अन्दर जाकर उसे मेज़ पर रख कुल्हाड़ी से उसकी गरदन काट दी। खून मैंने ज़मीन पर बह जाने दिया ज़मीन इसलिए कह रहा हूं कि झोंपड़ी का फर्श पटरों का नहीं था। इसके बाद मैंने एक पुराने बोरे में कुछ पत्थर भरे और उसे सूअर के खून पर रखकर वहां से घसीटता हुआ दरवाज़े के बाहर जंगल के रास्ते नदी किनारे तक ले गया और पानी में फेंक दिया। छपाक की आवाज़ के साथ वह बोरा नदी में डूब गया। कोई भी दे सकता था कि किसी को मारकर लाश नदी तक घसीटी जाकर फेंकी गई है। मन में आया, काश, इस वक्त टामसायर यहां होत तरह के कामों में उसका दिमा

भी कितनी साफ और पास सुनाई देती हैं। घाट पर बतियाते मल्लाहों की आवाज मुझे साफ सुनाई दे रही थी, यहां तक कि मुझे उनका एक-एक शब्द सुनाई दे गया। एक आदमी ने कहा कि अब दिन लम्बे और रातें छोटी होने ही ही वाली हैं। किसी दूसरे ने कहा कि मेरे खयाल से यह तो छोटा नहीं है। उसकी इस बात को सुनकर सब ठहाका मारकर हंस पड़े। उसने फिर इस बात को दुहराया और फिर सबने ठहाका लगाया। तब उन्होंने किसी और को सोते से जगाकर यह बात कही और ठहाके लगाए। लेकिन जिसे जगाया गया था वह हंसा नहीं, उलटे नाराज होकर चिड़चिड़े स्वर में बोला, 'क्यों नींद खराब कर रहे हो। सोने क्यों नहीं देते हरामियो !' और उसने लगे हाथों एक जोरदार गाली भी सुना दी। इस पर पहले आदमी ने कहा कि जाकर जरा अपनी जोरू को सुनाना; जब वह दाद देगी तो पता चलेगा कि बात कितनी मजेदार है। तब जगाए जाने वाले आदमी ने कहा कि हम अपने जमाने में इससे भी मजेदार बातें और फिकरे कह चुके हैं, यह तो उनके आगे कुछ भी नहीं। फिर किसी आदमी ने कहा कि करीब तीन बजे होंगे और अब उजेला होने में तीन हफ्ते से ज्यादा देर नहीं होनी चाहिए। उसके बाद आवाजें दूर होती गईं और मुझे शब्दों को समझने में दिक्कत होने लगी। केवल बातों की भनक आती रही और कभी-कभी हंसने की आवाज सुनाई दे जाती थी, सो भी इस तरह मानो बहुत दूर से आ रही हो।

मैं घाट से काफी दूर निकल आया था। अब देखे और पुकारे जाने का खतरा नहीं रह गया था। उठकर बैठ गया तो सामने, नीचे की ओर, कोई ढाई मील के फासले पर जैकसन द्वीप चांदनी रात में नदी के बीचोबीच सिर उठाये खड़ा दिखाई दिया। वह किसी बड़े, भारी भरकम और चुपचाप स्टीमबोट-जैसा लग रहा था, जिसकी सब बत्तियां बुझा दी गई हों और उसका सामने वाला बेड़ा खींचकर पानी के अन्दर कर दिया गया हो। रे द्वीप पर खूब ऊंचे, मोटे और बड़े-बड़े पेड़ सैकड़ों की तादाद में उगे हुए।

मुझे द्वीप तक पहुंचते ज्यादा देर नहीं लगी। जल्दी ही वहां पहुंच या। द्वीप के सिरे से मेरी नाव तीर की त

एक-एक कर गिन भी सकता था। चारों ओर मौत का-सा सन्नाटा था और रात भी काफी हो गई थी।

मैं अंगड़ाई लेकर उठ बैठा और नाव को खोलकर अपनी यात्रा आरम्भ करने जा ही रहा था कि नदी से छपाछप की आवाज आती सुनाई दी। मैं कान लगाकर सुनने लगा और तुरत ही उस आवाज को पहचान गया। कोई सन्नाटेभरी रात में चप्पुओं से डोंगी खेता चला आ रहा था। मैंने बेंत की टहनियों में से झांक कर देखा, सच ही एक डोंगी नदी के आर-पार चली आ रही थी। यह तो नहीं दिखाई दिया कि उसमें कितने आदमी हैं, पर वह चली आ रही थी मेरी ही ओर। जब ठीक मेरे सामने आ गई तो मैंने देखा, उसमें सिर्फ एक आदमी था। पहला खयाल यही आया कि पिताजी होने चाहिए, यद्यपि उनके इतने जल्दी लौट आने की मुझे आशा नहीं थी। धारा को काटकर वे उधर ही आ रहे थे जहां मैं अपनी नाव को बांधे पड़ा था। अपनी डोंगी को नदी के ठहरे हुए पानी में लेकर वे किनारे की ओर बढ़े और मेरे इतने पास से गुजरे कि चाहता तो बन्दूक से उन्हें छू सकता था। जिस तरह उन्होंने डोंगी को किनारे लगाया और चप्पू ऊपर खींचे उससे लगता था कि शराब बिलकुल ही पिए हुए नहीं थे।

मैंने समय गंवाना उचित नहीं समझा। तुरत नाव खोल दी और किनारे की छाया में तेजी-तेजी नीचे की ओर बढ़ने लगा। इस तरह नीचे की ओर ढाई मील जाने के बाद मैंने नाव को किनारे से चौथाई मील पर धारा में डाल दिया, क्योंकि थोड़ा ही आगे घाट पड़ता था, जहां मल्लाहों द्वारा देखे और पूछ-ताछ किए जाने का अन्देशा था। अब मैं धारा में बहते लट्ठों आदि के साथ चल रहा था। मैंने चप्पू खींच लिए और नाव के फर्श पर चित्त लेट गया और नाव को धारा के साथ स्वच्छन्द गति से बहने के लिए छोड़ दिया। इस तरह लेटने से मुझे काफी आराम मिला। मैं तम्बाकू पीते हुए आसमान की ओर देखने लगा। ऊपर एक भी बादल नहीं था। आसमान बिलकुल साफ और गहरा और नीला दिखाई दे रहा था। आसमान का ऐसा रूप तभी दिखाई देता है जब किसी नाव में चित्त लेटकर चांदनी रात में देखा जाए। मैंने ऐसा आसमान पहले कभी नहीं देखा था।

भी कितनी साफ़ और पास सुनाई देती हैं। घाट पर बतियाते मल्लाहों की आवाज़ मुझे साफ सुनाई दे रही थी, यहां तक कि मुझे उनका एक-एक शब्द सुनाई दे गया। एक आदमी ने कहा कि अब दिन लम्बे और रातें छोटी होने ही ही वाली हैं। किसी दूसरे ने कहा कि मेरे खयाल से यह तो छोटा नहीं है। उसकी इस बात को सुनकर सब ठहाका मारकर हंस पड़े। उसने फिर इस बात को दुहराया और फिर सबने ठहाका लगाया। तब उन्होंने किसी और को सोते से जगाकर यह बात कही और ठहाके लगाए। लेकिन जिसे जगाया गया था वह हंसा नहीं, उलटे नाराज़ होकर चिड़चिड़े स्वर में बोला, 'क्यों नींद खराब कर रहे हो। सोने क्यों नहीं देते हरामियो!' और उसने लगे हाथों एक ज़ोरदार गाली भी सुना दी। इस पर पहले आदमी ने कहा कि जाकर ज़रा अपनी जोरू को सुनाना; जब वह दाद देगी तो पता चलेगा कि बात कितनी मज़ेदार है। तब जगाए जाने वाले आदमी ने कहा कि हम अपने ज़माने में इससे भी मज़ेदार बातें और फ़िकरे कह चुके हैं, यह तो उनके आगे कुछ भी नहीं। फिर किसी आदमी ने कहा कि करीब तीन बजे होंगे और अब उजेला होने में तीन हफ्ते से ज़्यादा देर नहीं होनी चाहिए। उसके बाद आवाज़ें दूर होती गईं और मुझे शब्दों को समझने में दिक्कत होने लगी। केवल बातों की भनक आती रही और कभी-कभी हंसने की आवाज़ सुनाई दे जाती थी, सो भी इस तरह मानो बहुत दूर से आ रही हो।

मैं घाट से काफ़ी दूर निकल आया था। अब देखे और पुकारे जाने का खतरा नहीं रह गया था। उठकर बैठ गया तो सामने, नीचे की ओर, कोई ढाई मील के फ़ासले पर जेक्सन द्वीप चांदनी रात में नदी के बीचोबीच सिर उठाये खड़ा दिखाई दिया। वह किसी बड़े, भारी भरकम और धुंधले अगन बोट-जैसा लग रहा था, जिसकी सब बत्तियां बुझा दी गई हों और जिसका सामने वाला बेड़ा खींचकर पानी के अन्दर कर दिया गया हो। पूरे द्वीप पर खूब ऊंचे, मोटे और बड़े-बड़े पेड़ सैंकड़ों की तादाद में उगे हुए थे।

मुझे द्वीप तक पहुंचते ज़्यादा देर नहीं लगी। जल्दी ही वहां पहुंच गया। द्वीप के सिरे से मेरी नाव तीर की तरह आगे निकल गई, क्योंकि

यहां धारा बहुत तेज थी। मैंने नाव को बाजू के ठहरे हुए पानी में लिया और इलिनोइस वाले किनारे पर उतर पड़ा। यहीं किनारे पर एक गहरे गड्ढे की जानकारी मुझे थी, जो बेत की टहनियों से पूरी तरह ढका हुआ था। मैंने नाव को इस गड्ढे में उतार दिया और बेत की टहनियों से बांध दिया। बाहर से किसी को पता नहीं चल सकता था कि इस गड्ढे में नाव बंधी हुई है।

मैं ऊपर चढ़ गया और द्वीप के सिरे की ओर एक लट्ठे पर बैठकर उस बड़ी नदी, उसमें बहे जाते काले लट्ठों और वहां से तीन मील दूर कस्बे की ओर देखने लगा। कस्बे में उस समय भी तीन-चार जगह दीये टिमटिमा रहे थे। फिर मुझे नदी की बीच धारा में एक बड़ा-सा भारी-भरकम लट्ठों का बेड़ा दिखाई दिया। वह उस समय करीब एक मील ऊपर रहा होगा और उसके बीचोंबीच एक दीया भी जल रहा था। जब वह बेड़ा ठीक मेरे सामने आ गया और वहां से गुजरा तो मैंने किसी को कहते सुना, "यहां सीधे काटो, एकदम सीधे; धारा बहुत तेज है।" आवाज इतनी साफ सुनाई दे रही थी मानो बोलने वाला मेरी बगल में खड़ा हो।

अब पूरब की ओर कुछ धुंधलका होने लगा था। मैं उठा और सोने के लिए जंगल में चला गया। नाश्ते के पहले मैं एक झपकी ले लेना चाहता था।

अध्याय ८

जागा तो सूरज काफी ऊपर चढ़ आया था। उस समय कोई आठ-साढ़े आठ बजे होंगे। मैं घास की हरियाली और ठण्डी छांह में आराम और इत्मीनान से पड़ा रहा। न कुछ सोच रहा था और न किसी तरह की चिन्ता थी। वह जगह चारों ओर उगे हुए बड़े-बड़े पेड़ों की घनी डालियों से छाई हुई होने के कारण काफी ठण्डी और कुछ अंधेरी भी थी। दो चार जगह टहनियों से छनकर सूरज की किरणें घास पर उतर आई थीं और धूप के वे

टेढ़े-तिरछे चकत्ते हिल-डोल रहे थे, जिससे पता चलता था कि ऊपर हवा धीरे-धीरे चल रही थी। कुछ गिलहरियां एक पेड़ की शाखा पर बैठी मेरी ओर दोस्ताना ढंग से देखती हुई कटर-कटर बोल रही थीं।

मैं इतना उनींदा और अलसाया हुआ था कि उठकर नाश्ता करने का भी जी न हुआ। दुबारा झपकी लगने जा रही थी कि मैंने नदी की ओर से तोप का गोला दागे जाने की आवाज सुनी। सोचा, कहीं मेरा भ्रम तो नहीं है। हाथ की टेक लगाकर आधा उठ आया और सुनने लगा। नहीं, मेरा भ्रम नहीं था। थोड़ी देर बाद फिर वैसी ही आवाज सुनाई दी। मैं फौरन उठ बैठा और पत्तियों की ओट से देखने लगा। ठेठ घाट तक नदी पर धुआं-ही-धुआं हो रहा था। फिर कुछ धुएं में से एक नाव निकलती दिखाई दी। वह नाव लोगों से खचा-खच भरी थी। फिर गोला दगा। सफेद धुआं नाव में से निकलकर नदी पर फैलने लगा। सारी बात मेरी समझ में आ गई। वे पानी पर तोप के गोले दाग रहे थे, जिससे मेरी लाश नदी की पेंदी में से ऊपर आ जाए।

भूख खूब जोर की लगी थी, लेकिन खाना पकाने के लिए आग इस डर से नहीं जला सकता था कि कहीं वे देख न लें। बस वहीं बैठा तोप के गोलों के धमाके सुनता और धुआं देखता रहा। नदी का पाट वह कोई मील-भर चौड़ा था और गरमियों का सवेरा होने के कारण मौसम इतना साफ कि मुझे अपनी जगह से सब-कुछ दिखाई दे रहा था। मेरी लाश की तलाश में उन्हें नदी को यों छानते देखकर मुझे बड़ा मजा आ रहा था; दुःख सिर्फ इतना ही था कि भूख जोर की लगी थी और खाने को कुछ नहीं था। तभी मुझे याद आया कि डूबे हुओं का पता लगाने वाले डबल रोटियों में पारा रखकर इस विश्वास से बहा दिया करते हैं कि जहां लाश डूबी पड़ी होगी ठीक वहां जाकर रोटी रुक जाएगी। जरूर इन लोगों ने भी रोटियां छोड़ी होंगी। मैंने निश्चय किया कि चलकर देखना चाहिए; अगर कोई मिल जाए तो आराम से पेट पूजा का सामान हो जाएगा। मैं इलिनोइस वाले किनारे की ओर उतर गया तो सच ही एक बड़ी रोटी बहती चली आ रही थी। एक लम्बी, पतली छड़ी से मैंने उसे अपने पास खींच लिया, लेकिन तभी मेरा पांव फिसल गया और पानी के हलकोरे से वह दूर चली गई। मैं

ऐसी जगह गड़ा था जहां नदी की धारा किनारे के पास से होकर जाती थी। मैंने इस जगह को इसलिए चुना था कि हर बहती हुई चीज यहां से गुजरे बिना आगे नहीं जा सकती थी। थोड़ी देर बाद फिर एक रोटी बहती हुई आई और इसे मैं पा गया। मैंने फौरन डाट खोला, अन्दर का पारा झटककर गिराया और रोटी को दांतों से तोड़कर खाने लगा। यह नानबाई के यहां की बढ़िया रोटी थी, जिसे अमीर लोग खाते हैं—हमारे-तुम्हारे-जैसे गरीब लोगों के खाने की मोटे-झोटे अनाज की रोटी नहीं थी।

पत्तियों की ओट में एक लट्ठे पर आराम से बैठा मैं स्वाद से रोटी खाता और नाव वालों को मेरी लाश की तलाश में नदी में धूम मचाता हुआ देखता रहा। कुल मिलाकर मैं सन्तुष्ट और प्रसन्न था। तभी मुझे एकाएक खयाल आया कि इस रोटी को बहाते समय विधवा या पादरी ने जरूर प्रार्थना की होगी कि यह मुझ तक पहुंचे और आखिर यह मुझ तक पहुंच ही गई। तो इसका यह मतलब हुआ कि प्रार्थना में जरूर कुछ बल है—खासकर विधवा या पादरी-जैसे भले लोगों की प्रार्थनाएं। उनकी प्रार्थना जरूर काम करती है, लेकिन मेरी प्रार्थना तो कभी फलवती नहीं हुई और मैंने जो मांगा और चाहा वह मुझे कभी नहीं मिला।

रोटी खाने के बाद मैंने 'पाइप' सुलगाया और देर तक तम्बाकू पीता और नाव वालों को देखता रहा। अब नाव धारा के साथ चली आ रही थी। मैं जानता था कि वह बिलकुल किनारे के पास से गुजरेगी, जिस तरह रोटी बहती हुई आई थी; और मैं उन लोगों को देख सकूंगा। जब नाव काफी करीब आ गई तो मैंने पाइप बुझा दिया और वहां पहुंच गया जहां रोटी उठाई थी। वहां किनारे पर एक बड़ा लट्ठा पड़ा हुआ था। मैं उसके पीछे लेट गया और छिपकर देखने लगा।

नाव क्रमशः पास आती आ रही थी। वह किनारे के इतनी पास आ गई कि वे लोग चाहते तो सिर्फ एक पटरा लगाकर किनारे पर उतर सकते थे। उसमें सिडनी, थैचर साहब, उनकी बीवी बेकी थैचर, जो हारपर, टाम सायर, उसकी मौसी पोली, सिड और मेरी और दूसरे भी बहुत से ... लोग थे। करीब-करीब सारा कस्बा ही नाव में सवार होकर ... थे।

इतने में कप्तान साहब ने कहा, "यहां धारा किनारे से सटकर ब है और बहाव तेज भी है। मुमकिन है वह किनारे फिक गया हो और आ पास की झाड़ियों में उलझा पड़ा हो। जरा गौर से देखते चलिए। मेरा यही खयाल है।"

कप्तान का भले ही ऐसा खयाल हो मेरा तो नहीं था। खैर! वे र जंगले पर झुक गए और आखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। मैं बिलकुल उ लोगों की नाक के नीचे था और उन्हें अच्छी तरह देख रहा था, पर वे मु नहीं देख पा रहे थे।

तभी कप्तान साहब का हुक्म सुनाई दिया, "जरा पीछे हटकर ख हो जाइए!"

और दूसरे ही क्षण 'अरें र् र् र-धम्!' ठीक मेरी आखों के साम बिजली-सी कौंधी और जोर का धमाका सुनाई दिया। मेरे कानों के पर्दे फट गए, आखें धुए से अन्धी हो गईं और मैंने समझा कि अब जान गई। अगर गोले में छर्रे हुए तो जिस लाश की उन्हें तलाश है वह अब उन्हें जरूर मिल जाएगी। लेकिन मैं तो सही सलामत था। मेरा बाल भी बाका नहीं हुआ था। मैंने मन-ही-मन कहा, चलो, जान बची और लाखों पाए! फिर नाव आगे निकल गई और द्वीप के मुजवर उभार का चक्कर काटती हुई आखों से ओझल हो गई। गोलों के धमाकों की आवाज धीमी और दूर होते-होते घण्टे-भर में बिलकुल सुनाई पड़ना बन्द हो गई। द्वीप कोई तीन मील लम्बा था, इसलिए मैं समझा कि उसके आखरी सिरे पर पहुंचकर उन्होंने ढूढ़-खोज बन्द कर दी होगी। लेकिन नहीं वे अब भी ढूढ़ रहे थे। इस बार तोप के धमाके द्वीप के दूसरी ओर मिसौरी वाले किनारे की तरफ से सुनाई दे रहे थे। मैं उधर जाकर उन्हें देखने लगा। इधर की धारा में गोले दागते हुए वे द्वीप के ऊपर वाले सिरे तक आए और फिर निराश होकर कस्बे की ओर चल दिए।

अब मुझे कोई डर नहीं रह गया था, क्योंकि इसके बाद कौन खोजने आता! उनके लेखे मैं मारा गया था और लाश भी बहकर जाने कहा चली गई थी। मैं निश्चिन्त होकर अपने बसेरे का इन्तजाम करने में लग गया। नाव में से एक-एक कर मैं अपना सारा सामान ऊपर द्वीप में ले आया।

फिर घने जंगल में मैंने एक तम्बू खड़ा किया। रस्सियों और दोनों कम्बलों के सहारे अच्छा-खासा तम्बू बन गया। मैंने सारा सामान तम्बू के अन्दर रख दिया। आंधी-पानी से अपने और सामान की सुरक्षा का अच्छा प्रबन्ध हो गया था। फिर मैं एक बड़ी मछली पकड़ लाया और आरी से उसका पेट चीरकर साफ किया। जब सूरज अस्त हो गया तो मैंने आग जलाकर मछली पकाई और खा-पीकर टंच हो गया। फिर सवेरे के नाश्ते के लिए नदी किनारे जाकर बन्सी लगा आया।

अंधेरा घिर गया था और तम्बू के आगे आग के पास बैठा तम्बाकू पी रहा था। खूब खुश और मगन था। लेकिन धीरे-धीरे अकेलापन अखरने लगा और समय काटना दूभर हो गया। तब मैं उठकर नदी किनारे चला गया और वहां बैठा लहरों का तट से टकराना सुनता और आसमान के तारों और धारा मे बहे जाते लट्ठों और बेड़ो को गिनता रहा। अकेलेपन मे समय काटने का इससे बढ़िया तरीका और कोई नही हो सकता। खाली बैठा तो आदमी पागल हो जाएगा।

इस तरह तीन दिन और तीन रातें बीत गईं। कहीं कोई परिवर्तन नहीं स-कुछ ठीक पहले ही दिन की तरह। तब चौथे दिन मैं द्वीप की खोज-बर लेने निकला। अब मैं इस द्वीप का मालिक, राजा, बादशाह सब कुछ ा; यह द्वीप मेरा था। इसकी पड़ताल करना और इसके बारे मे जानकारी ना मेरा कर्त्तव्य था। लेकिन असल मे तो मैं समय काटना चाहता था। के बेर, झरबेरी, बेरियां, करौंदे, जंगली अंगूर और कई तरह के वन-रों के पौधे और लताएं मिली। सभी फलों से लदी हुईं—कुछ पके, कुछ पके, और कई कच्चे। मैंने सोचा, अच्छा है, सब खाने के काम आएंगे।

इस तरह भटकता हुआ मैं जंगल-जंगल द्वीप के आखरी सिरे तक पहुंच ा। बन्दूक मेरे पास थी, लेकिन मैंने कोई शिकार मारा नही था। असल से आत्मरक्षा के लिए लेता आया था; और मोटानी मे यदि कोई कार दिख गया तो शायद मार भी लेता। तभी एक बड़ा-सा सांप सा पांवों के बीच से सर्राता हुआ निकल गया। वह तेजी से घास औ ों के पौधों में भागा जा रहा था। मैं बन्दूक लेकर उसके पीछे दौड़ा क का घोड़ा चढ़ाए, निशाना साधे और सांप पर आंखें गड़ाए उसे ज

मे लेने के लिए तेजी से भाग रहा था कि सहसा मेरे पांव जलती आग जा गिरे। वहां किसी ने अलाव जलाया था और उसमें धुआं अब भी नि रहा था।

मेरे पांव वहीं-के-वहीं रुक गए और छाती जोरों से धड़कने लगी। सा देखने और आगे जाने की मेरी हिम्मत न हुई। बन्दूक की लबलबी उस और वहां से फौरन उलटे पांवों लौटा। हर चार कदम पर रुककर सुन जाता था कि कोई पीछा तो नहीं कर रहा है। लेकिन धौंकनी की त चलती हुई अपनी ही सांस के अलावा और कुछ भी सुनाई नहीं देता था ठूंठ देखकर आदमी का भ्रम होता था; अपने ही पांव के नीचे टहनी टूट पर लगता था जैसे किसी ने मेरी सांस के दो टुकड़े कर दिए और गि आधा ही मेरे पल्ले पड़ा, बाकी आधा जाने कहां चला गया!

बसेरे तक पहुंचते-पहुंचते बुरे हाल हो गए। लगता था जैसे जान हूं निकल गई। लेकिन खतरे की उस घड़ी में वहां बैठा भी नहीं रह सकता था। फौरन तम्बू गिराया, सामान समेटा और ले जाकर नाव में रख दिया। सबसे पहले उसी को बचाना जरूरी था। उसके बाद मैंने आग बुझाई और राख को इस तरह फैला दिया कि वह एक साल पुराना अलाव दिखाई दे। फिर मैं पेड़ पर चढ़ गया।

पेड़ पर मैं करीब दो घण्टे बैठा रहा, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। न कोई आ रहा था, न किसी की आवाज सुनाई दी; वैसे हजारों आवाजों को सुनने और हजारों लोगों को देखने का भ्रम जरूर होता रहा। फिर पेड़ पर तो मैं हर घड़ी बैठा नहीं रह सकता था, इसलिए आखिर नीचे उतरना ही पड़ा। लेकिन खुले में आने की हिम्मत न हुई। घने जंगल में छिपा चारों ओर सावधानी से देखता रहा। भूख लगी तो कुछ जंगली फल और सवेरे का बचा नाश्ता खाकर काम चलाया; मेरे सिरे से पकाने का खतरा मोल लेना मैंने उचित नहीं समझा।

दिन छिपते छिपते भूख के मारे बुरे हाल हो गए। जब आंतें कुल-बुलाने लगीं तो मैं अंधेरा हो जाने पर किनारे पर उतर आया और चांद उगने से पहले नाव को इनियोक्स वाले तट की ओर खेकर ले चला। कोई चौथाई मील जाकर मैं जंगल में घुस पड़ा और वहीं खाना पकाकर खाया।

रात वहीं बिताने का निश्चय करने आ ही रहा था कि मुझे घोड़ों के टापों की आवाज आती सुनाई दी। कान लगाकर सुना तो सच ही कुछ घोड़े मेरी ओर चले आ रहे थे। दूसरे ही क्षण लोगों के बोलने-बतियाने की आवाजें सुनाई दीं। मैंने सारा सामान बटोरकर नाव में डाला और रेंगता हुआ जंगल में चला गया ताकि वहां से छिपकर देख सकूं।

अभी कुछ ही दूर गया हूंगा कि एक आदमी कहता सुनाई दिया, "घोड़े बहुत थक गए हैं; अगर अच्छी जगह दिखाई दे तो यहीं मुकाम कर देना चाहिए। आओ देखें।"

उसके बाद मैं वहां एक क्षण भी नहीं रुका। लपक कर नाव में सवार हुआ और तेजी से चप्पू चलाता हुआ भागा। रात नाव में ही बिताने का फैसला कर मैं उसे गड्ढे वाली पुरानी जगह ले आया और वहीं बांध दिया। लेकिन ठीक से नींद नहीं आई। सारी रात बुरे सपने देखता रहा। बार-बार चौंक कर जाग पड़ता था। हर बार ऐसा लगता था मानो कोई दोनों हाथों से मेरा गला दबोच रहा है। जाहिर है कि ऐसी नींद से कोई फायदा नहीं होता। फिर मैंने सोचा कि इस तरह जीने से क्या फायदा? क्यों न चलकर पता लगाया जाए कि द्वीप में मेरे साथ कौन है? कब तक भागता फिरूंगा? इस विचार के आते ही मन थोड़ा स्थिर हुआ और डर-भय जाता रहा।

मैं नाव को द्वीप के किनारे लाया और छाया में धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। बाहर खूब चांदनी छिटकी हुई थी और खुले में बिलकुल दिन के-जैसा उजेला मालूम पड़ता था। मैं कोई घण्टे-भर यहां-वहां देखता, भटकता और आगे बढ़ता रहा। चारों ओर सन्नाटा था और पेड़-पौधे तक गहरी नींद सोए हुए थे। इस तरह मैं द्वीप के आखरी सिरे पर पहुंच गया। सहसा ठण्डी हवा बहने लगी, जो इस बात का संकेत था कि रात बीत चली है। मैंने चप्पू की मदद से नाव का रुख मोड़कर उसे किनारे लगाया और बन्दूक लेकर जंगल में घुस गया। वहां पत्तियों की ओर एक लट्ठे पर बैठ कर सामने की ओर देखने लगा। चन्द्रमा धीरे-धीरे डूब गया और नदी पर अंधेरे की चादर-सी फैल गई। लेकिन थोड़ी ही देर में पेड़ों की फुनगियों पर पीताभा झांकने लगी; यह इस बात का संकेत था कि दिन उगने ही वाला है। मैंने बन्दूक उठाली और सीधा उस ओर चल पड़ा जहां मुझे आग देखने

को मिली थी। मैं बहुत संभलकर, पग-पग पर टोह लेता और चारों ओर ध्यान से देखता हुआ आगे बढ़ रहा था। लेकिन किस्मत ने साथ नहीं दिया; बहुत खोजने पर भी वह जगह मुझे नहीं मिली। खड़ा सोच ही रहा था कि पेड़ों के बीच अंगारे-से चमकते दिखाई दिए। मैं बहुत सावधानी से और धीरे-धीरे उस ओर बढ़ा। पास जाकर देखा तो एक आदमी कम्बल ओढ़े पड़ा था और ठीक उसके सिर के पास आग जल रही थी। बड़ी हैरानी हुई। आदमी का मुंह ढपा था, इसलिए देख नहीं सका कि वह कौन है। मैं उससे कोई छह फुट के फासले पर एक झाड़ी की ओट में बैठ गया और आखें गड़ाए उसकी ओर देखने लगा। जैसे ही सूरज ऊगा वह आदमी कुन-मुनाया और कम्बल खींचकर अंगड़ाई लेता हुआ उठ बैठा। मैंने देखते ही पहचान लिया। वह मिस वाटसन का हबशी जिम था। मेरी खुशी का क्या पूछना!

"अरे जिमा तुम यहां कैसे?" मैंने कहा और झाड़ी की ओर से बाहर दौड़ आया।

वह एकदम उछल पड़ा और डरी हुई आखों से देखने लगा। फिर घुटनों के बल बैठ गया और दोनों हाथ जोड़ कर बोला, "मुझे बख्श दो! मेरे ऊपर रहम करो! मैंने तो मरे हुओं को नाराज करने वाला कभी कोई काम नहीं किया। हमेशा मरनेवालों की तारीफ ही करता रहा हूं; उनके लिए जो भी करते बना किया है। जाओ, फिर नदी के पेट में चले जाओ! तुम्हारी जगह यहीं है। गरीब जिम को मत सताओ! उसने तो तुम्हारा कभी कुछ नहीं बिगाड़ा। मुझ गरीब को बख्श दो, दुहाई है।"

बड़ी मुश्किल से मैं उसे विश्वास दिला पाया कि मरा नहीं हूं।

अब मैं अकेला नहीं था; जिम को पाकर मुझे बहुत खुशी हुई थी। मैंने उसे यहां तक कह दिया कि अगर लोगों को मेरे बारे में बता भी दो तो मुझे कोई डर नहीं। मैं इसी तरह की बातें करता रहा, लेकिन जिम मेरे पास नहीं आया, दूर बैठा मेरी ओर देखता रहा; और बोला तो एक शब्द भी नहीं।

अन्त में मैंने उसे कहा, "उठो जिम, काफी दिन चढ़ आया है। अब कलेवे का कोई बन्दोबस्त करना चाहिए। तुम अपने अलाव की आग तेज

करो।"

"आग दहका कर पकाएंगे क्या-बेरी-फ़र बेरी? उन्हें तो ऐसे ही खाया जा सकता है। लेकिन तुम्हारे पास बन्दूक है। क्यों न उसमें कोई शिकार मारा जाए?"

"अच्छा तो तुम बेरी-फ़रबेरी ही खाते रहे हो?" मैंने पूछा।

"इसके सिवाय और तो कुछ मिला नहीं।" उसने कहा।

"इस टापू पर कितने दिनों से हो?"

"तुम मारे गए उसकी दूसरी रात से।"

"और इतने दिनों केवल बेरी-फ़रबेरी ही खाते रहे हो?"

"जी हां।"

"इसके सिवा कुछ नहीं मिला?"

"जी, कुछ भी नहीं!"

"तब तो जिम, तुम बहुत भूखे होगे?"

"यह मत पूछो भैया! पूरा घोड़ा खा जाऊं और फिर भी भूखा-का-भूखा! अच्छा, यह बताओ, तुम यहां कब से हो?"

"जिस दिन मारा गया उसी रात से।"

"अरे नहीं, सच? फिर तुम खाते क्या रहे हो? मगर तुम्हारे पास बन्दूक है। हां,बन्दूक है और यह अच्छी बात है। चलो, कोई शिकार मार लाएं और फिर आग जला कर भून लेंगे।"

मैं उसे लेकर वहां आया जहां नाव लगी थी। उसने पेड़ों के बीच खुली जगह में आग जलाई और मैं अनाज, सूअर का गोश्त, कॉफ़ी, चीनी, पतीली कॉफ़ी बनाने का बरतन, टिन के प्याले आदि सारा सामान ले आया। वह बेचारा आंखें फाड़े देखता रह गया। पहले तो उसे यही लगा कि सब-कुछ भूत-प्रेतों और जादू मन्तर का जोर है। मैं एक बड़ी मछली भी पकड़ लाया जिम ने अपने चाकू से उसे साफ़ किया और पकाने का सारा काम भी उसी-ने किया।

खाना पककर तैयार हुआ। हम घास पर पलथी मारकर बैठ गए और गरमा-गरम पदार्थ फूंक मार-मारकर और चटखारे लेते हुए खाने लगे। जिम ने खूब बढ़-बढ़ कर हाथ मारे; वह ज़रूर बहुत भूखा था। पेट भर

कर छा चुके तो हम थोड़ी देर वहीं अलसाये हुए पड़े रहे।

कुछ देर बाद जिम ने कहा, "हक, एक बात बताओ। उस झोपड़ी में तुम नहीं तो आखिर कौन मारा गया? बात कुछ मेरी समझ में नहीं आ रही।"

मैंने उसे सारा किस्सा शुरू से आखीर तक बता दिया।

वह उछल पड़ा और बोला, "वाकई, कमाल कर दिया तुम ने! इतनी बढ़िया तरकीब तो टाम सायर भी नहीं सोच पाता।"

फिर मैंने उससे पूछा, "अच्छा यह बताओ कि तुम यहां क्यों और कैसे आए?"

वह एकदम घबरा गया और काफी देर गुमसुम बैठे रहने के बाद बोला, "न भैया, यह मत पूछो; मैं नहीं बताऊंगा?"

"क्या बात है जिम? क्यों नहीं बताओगे?"

"एक वजह है। लेकिन अच्छा, अगर मैं बता दूं तो तुम किसी से कहोगे तो नहीं?"

"तुम्हें मेरा इतना विश्वास भी नहीं, जिम?"

"है, विश्वास है भैया; पूरा विश्वास है। तो सुनो, मैं भाग आया हूं।"

"जिम, क्या कह रहे हो?"

"किसी से कह मत देना हक; तुमने वादा किया है कि कहोगे नहीं।"

"हां, जिम मैंने वादा किया है और मैं किसी से नहीं कहूंगा। तुम बेफिक्र हो जाओ। लोग मुझे गाली देंगे, बुरा बताएंगे, कमीना और दोगला कहेंगे—इस भेद को छिपाने के लिए मुमकिन है नफरत भी करें। दास-प्रथा का विरोधी तो खैर कहेंगे ही, पर मैं अपने मुंह से तुम्हारे बारे में एक शब्द न कहूंगा। मैं यहां से जाऊंगा ही नहीं तो किसी से कहने का सवाल भी नहीं उठता। अब तुम पूरा किस्सा विस्तार से सुनाओ।"

"अच्छा सुनो। बात यह है कि मिस वाटसन है मेरी मालकिन। दिन-भर कोंचती रहती है और बर्ताव भी अच्छा नहीं करती, मगर एक बात अच्छी है। हमेशा दिलासा देती रहती थी कि किसी ओरलियन्स वाले के हाथ मुझे बेचेगी नहीं। मगर इधर कुछ दिन हुए हबशियों का एक सौदागर आया और मेरी जान सूखने लगी। एक रात मैं उनके कमरे के सामने से

निकला तो दरवाजा पूरा बन्द नहीं था और मैंने ठिठककर सुना तो मालकिन अपनी बहिन से कह रही थी कि जिम को ओरलियन्स वाले के हाथ बेचना तो नहीं चाहती, मगर सौदागर पूरे आठ सौ डालर दे रहा है और यह बहुत ज्यादा रकम है, तो क्या करूं ? आठ सौ डालर छोड़ कैसे दूं ? विधवा ने उसे समझाया कि बेचना ठीक नहीं और लोभ बुरा होता है। मगर भैया, मैं तो आगे की बात सुनने के लिए वहां रुका नहीं, फौरन घर छोड़कर निकल भागा।

"लपकता हुआ पहाड़ी चढ़ा, झपटता हुआ पहाड़ी उतरा और पहुंच गया नदी किनारे। किसी की डोंगी चुराकर उससे नदी की राह भागना चाहता था। इस तरह चला आया कस्बे तक। लेकिन लोग अभी जाग रहे थे और आना-जाना लगा हुआ था, इसलिए किनारे पर पीपों का जो पुराना कारखाना है उसमें छिप गया कि सन्नाटा हो और मैं अपना काम करूं। सारी रात वहीं बैठा रहा, क्योंकि घाट खाली ही नहीं मिला, हर समय वहां कोई-न-कोई बना रहा। सवेरे छह बजे से डोंगियां जाने लगीं और कोई आठ-नौ बजे तक सब डोंगियां चली गईं और हर डोंगी वाले जोर-जोर से बातें करते जाते थे कि तुम्हारे पिता जी शहर आए थे और बता रहे थे कि तुम मारे गए ! सब डोंगियां औरतों और आदमियों से भरी हुई थीं और सब-के-सब वहीं जा रहे थे जहां तुम्हारा खून हुआ था। यों समझो कि देखने के लिए सारा शहर उमड़ पड़ा था। बहुत से डोंगी वाले थोड़ी देर कारखाने के पास सुस्ताने के लिए रुक भी जाते थे। इस तरह मुझे तुम्हारे मारे जाने की बात मालूम हुई। सुनकर बड़ा रंज हुआ हक, बहुत रंज हुआ; मगर अब जरा भी रंज नहीं है।

"उस कारखाने में सारा दिन छिपा बैठा रहा। भूख लग रही थी, मगर मन में डर जरा भी नहीं था। जानता था न कि मालकिन और उनकी विधवा बहिन नाश्ते के तुरन्त बाद प्रार्थना सभा में चली जाएंगी और दिन-भर नहीं लौटेंगी ; और मेरे बारे में उन्हें मालूम था कि सवेरे से ढोर चराने गया हुआ और दिन डूबने के बाद लौटूंगा, इसलिए अब रात में दिखाई न देता तभी मेरी ढूंढ़-खोज करेंगी। दूसरे नौकरों का ध्यान भी इसलिए नहीं जाता कि मालकिनों के [illegible] न रहने से वहीं मना रहे होंगे और मटर-

गश्ती करने इधर-उधर निकल जाएंगे। किसको पड़ी होगी जिम के वहां न होने की!

"जैसे ही अंधेरा हुआ मैं अपने छिपने की जगह से निकला और नदी-किनारे वाली सड़क-सड़क चलने लगा। इस तरह ढाई मील चला आया और ऐसी जगह पहुंचा जहां न बस्ती थी, न मकान। अब तक मैंने फैसला कर लिया था कि कैसे भागूंगा। पैदल तो भाग नहीं सकता था, क्योंकि कुत्ते पीछा करके पकड़वा देते। डोंगी चुराकर पार जाता तो उन्हें पता चल जाता कि डोंगी चुराई गई है; और पार उतरने के लिए उसे कहीं तो लगाना ही पड़ता, उन्हें जरूर दिखाई दे जाता और वहां से वे मेरा पीछा करते। बस, एक बेड़ा मेरे काम की चीज़ थी। वह अपने पीछे कोई निशान नहीं छोड़ता और उन्हें कुछ भी पता नहीं चलता।

'इतने में एक बेड़ा आता दिखाई दिया। उस पर दीया जल रहा था। मुझे मुंहमांगी मुराद मिली। एक बहते लट्ठे के सहारे तैरता और धारा को काटता हुआ मझधार में पहुंच गया और अपने को बहते लट्ठों में छिपाए रहा। जैसे ही बेड़ा सामने से गुजरा मैं गोता मार कर आहिस्ता से उसके पिछले हिस्से पर चढ़ गया। बादल छा गए थे इसलिए अंधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं देता था। मैं निढाल होकर वहीं पिछले हिस्से में पड़ा रहा। बेड़े वाले मुझसे काफी दूर, बीच में, जहां लालटेन टंगी थी वहां थे। नदी का पानी बढ़ रहा था और धारा का बहाव काफी तेज था, सो मैंने हिसाब लगाया कि सवेरा होते-होते पच्चीस मील दूर निकल जाएंगे; और तब मुंह अंधेरे ही चुपके-से खिसक जाऊंगा और तैरकर किनारे लग जाऊंगा और इलिनोइस की बाजूवाले जंगलों में घुस जाऊंगा।

'मगर किस्मत ने साथ नहीं दिया। हम टापू के माथे के पास से गुजर रहे थे तो एक आदमी लालटेन लिये बेड़े के पिछले हिस्से की ओर आता दिखाई दिया। मैं घबराया। अब बेड़े पर रहना खतरे से खाली नहीं था। फौरन पानी के अंदर गया और चुपके-चुपके तैरता हुआ टापू की तरफ चला। कहां चला हूं, कुछ मालूम नहीं था। कई टक्करें खाईं पर किनारा हाथ नहीं लगा। टापू के माथे से पैंताने के पास तक ऊंची-ऊंची कगारें हैं। बहुत कोशिशों के बाद पैंताने पर किनारा हाथ लगा और मैं किनारे को

दुआ देता हुआ ऊपर चढ़ गया। वहां से फौरन जंगल का रुख किया और दोनों हाथों से कान पकड़े कि आगे भूलकर भी किसी पेड़ पर नहीं चढ़ूंगा —कम्बख्त यहां से वहां लालटेन घुमाते रहते हैं! थककर चूर हो गया था, भूख लग रही थी, पर इतनी गनीमत हुई कि मेरी टोपी में पाइप था और तम्बाकू और दियासलाइयां थीं; और यह कुछ भी भीगा नहीं था। मैंने इतमीनान की सांस ली।"

"यानी तुम्हें उस दिन मे न गोश्त खाने को मिला और न रोटी। भले आदमी, भीगे ही पकड़ लेते उनको तो यहां कोई कमी नहीं।"

"कहां से पकड़ लेता? क्या पत्थर फेंककर मारता या लपक कर पकड़ लेता? रात में कोई भीगों को भी कैसे पकड़े! और दिन के उजाले में तो मैं मर भी जाता, पर किनारे न जाता।"

"हां, बात तो तुम्हारी ठीक है। दिन मे तो तुम जंगल में से निकल नहीं सकते थे। छिपकर रहना जरूरी था। अच्छा, तुमने उन्हें तोप के गोले दागते सुना था?"

"हां, जरूर सुना था। मैं समझ गया था कि वे तुम्हारी लाश को ढूंढ़ रहे हैं। मैंने उन्हें यहां से गुजरते हुए देखा भी था। झाड़ियों के पीछे से सब-कुछ देखता रहा था।"

तभी चिड़ियों के बच्चों का एक टुल्लर उड़ता हुआ उधर आ निकला। वे दो-एक गज उड़तीं और फिर बैठ जातीं। जिम ने उन्हें देखकर कहा कि इन्हें देखकर लगता है, पानी बरसेगा। जब चूजे इस तरह उड़ान भरते हैं तब जरूर पानी बरसता है और चूंकि चिड़ियों के बच्चे भी चूजों की ही तरह उड़ान भर रहे हैं इसलिए जरूर पानी बरसना चाहिए। मैं उनमें से कुछ चिड़ियों को पकड़ने के लिए उठा तो जिम ने रोक दिया। बोला, "ऐसा मत करो, इससे मौत आती है। मेरा बाप बीमार पड़ा था, लोगों ने इसी तरह एक चिड़िया को पकड़ लिया। दादा ने कहा, यह बुरा किया, मौत को बुलावा दे दिया, अब यह जीता न बचेगा; और सच ही मेरा बाप

और अपशकुन हुआ और तुम किसी मुसीबत में फंसे। इसी तरह सूर्यास्त के बाद मेज़पोश को झटकना नहीं चाहिए; इससे भी इल्लत गले पड़ जाती है। उसने यह भी बताया कि अगर किसी के शहद का छत्ता हो और वह मर जाए तो दूसरे दिन सवेरा होने से पहले-पहले यह बात मधुमक्खियों को बता देनी चाहिए, नहीं तो वे कमज़ोर हो जाएंगी, काम छोड़ देंगी और मर जाएंगी। जिम का यह भी कहना था कि मधुमक्खियां पागलों को नहीं काटतीं। लेकिन मैं उसकी इस बात से सहमत नहीं। मैंने खुद कई बार आज़मा के देखा, लेकिन उन्होंने मुझे भी नहीं काटा।

इस तरह की कुछ बातें मैं पहले भी सुन चुका था, लेकिन जिम ने तो पूरा दफ़्तर ही खोल दिया। उसे भले-बुरे सभी शकुन मालूम थे। उसका कहना था कि वह टोने-टोटके भी खूब जानता है। उसने जितना भी बताया वह सब अपशकुनों, मुसीबतों और इल्लतों के ही बारे में था। मैं सोचने लगा कि क्या दुनिया में शुभ शकुन और किस्मत चमकाने वाली बातें हैं ही नहीं।

मेरे पूछने पर उसने जवाब दिया, "हैं क्यों नहीं, मगर बहुत कम। और फिर उनसे किसी का फायदा नहीं। आनेवाले सौभाग्य की बात कोई भला क्यों जानना चाहेगा? क्या उसे टालने के लिए? अब इसी को लो, जिसकी छाती और हाथों पर बाल होते हैं वह आगे चलकर अमीर होता है। इतना जानना अच्छा है, क्योंकि इससे आगे कभी फायदा हो सकता है। अगर यह बात मालूम न हो तो आदमी ग़रीबी के दुःख से हिम्मत हारकर मुमकिन है आत्महत्या कर ले। लेकिन इस बात के मालूम हो जाने से उसकी हिम्मत बनी रहती है और वह इस आस पर जीता रहता है कि आगे चलकर कभी-न-कभी अमीर होगा।"

"क्यों जिम, क्या तुम्हारी भी छाती और हाथों पर बाल हैं?

"बेकार पूछ रहे हो। क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि मेरी छाती और हाथ दोनों पर बाल हैं।"

"तो क्या तुम अमीर हो?"

"नहीं। मगर कभी था और आगे फिर हो जाऊंगा। एक बार मेरे पास चौदह डालर थे, मगर मैंने धन्धे में लगा दिया।"

नहीं हूं। आजाद हूं और अपना मालिक आप हूं और मेरी कीमत आठ सौ डालर है। यानी आठ सौ डालर की मिल्कियत का मालिक हूं। काश वह आठ सौ डालर मेरे पास आ जाएं; इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं चाहता।"

अध्याय ९

उस दिन जांच-पड़ताल करते समय मुझे द्वीप के ठीक बीच में एक जगह दिखाई दी थी। मेरा मन वहां जाने का हुआ। मैंने यह बात जिम से कही और दोनों फौरन चल पड़े। जल्दी ही वह जगह मिल भी गई, क्योंकि द्वीप लम्बाई में तो जरूर तीन मील था, लेकिन चौड़ाई मुश्किल से चौथाई मील होगी।

यह जगह द्वीप के बीचोंबीच कोई चालीसेक फुट ऊंचा पहाड़ी टीला था। चढ़ाई एक दम तीखी और रास्ता घनी कंटीली झाड़ियों में होकर जाता था। बड़ी मुश्किल से ऊपर चढ़ पाए। चारों ओर घूम-फिरकर देखा तो इलिनोइसवाली दिशा में खोह का एक मुंह-सा बना हुआ था। हम बेधड़क अन्दर घुस गए। कन्दरा तीन-चार कमरों के बराबर और इतनी ऊंची थी कि जिम आराम से सीधा खड़ा हो सकता था। अन्दर काफी ठण्डक थी। जिम तो यही चाहता था कि फौरन अपना सामान लाकर यहां रख दिया जाए; लेकिन मैं इसके पक्ष में नहीं था। बोला, कहां हर घड़ी चढ़ना-उतरना करते रहेंगे।

जिम ने कहा, "इससे बढ़िया जगह नहीं मिलेगी। नाव को कहीं छिपा देंगे और सारा सामान यहां लाकर रख देंगे। अगर कोई द्वीप पर आ भी गया तो बिना कुत्तों के हमें ढूंढ़ न सकेगा। और फिर उन नन्हीं चिड़ियों का दिया शकुन याद करो; उन्होंने कहा नहीं था कि पानी बरसेगा? सब चीजें भिगो देना चाहते हो, क्या?"

कन्दरा में पहुंचा दिया। नाव को पास ही बेत की घनी झाड़ी
दिया। बन्सी में कुछ मछलियां फस गई थी उन्हें ले आए और नई
के लिए फिर चारा लगा कर डोर फेंला दी।

कन्दरा का दरवाजा इतना बडा था कि आराम से पूरे बा
का पीपा उसमें से लाया-ले जाया जा सकता था। दरवाजे के बाह
सी समतल जमीन एक ओर को निकली हुई थी। हमने वहां अ
कर खाना पकाया।

कन्दरा के फर्श पर कम्बल बिछाकर हमने अन्दर ही खान
सामान हमने सारा कन्दरा के पिछले हिस्से में रख दिया था। थो
बाद बादल घिर आए, बिजली चमकने और कौंधा कड़कने लगा
का शकुन सच निकला। फिर जोर से पानी बरसने लगा—मूस
झड़ी लग गई और अन्धड़ पूरी ताकत से हहराने लगा। ग्रीष्मका
की यह पहली झड़ी थी और पूरे वेग से बरस रही थी। बाह
घटाटोप अंधेरा हो गया था और बरसते पानी में पेड़-पौधों
गुल्मों की आकृतियां धुंधला गई थीं। जोर की आंधी में पेड़ आधे
और फिर अन्धड़ उनकी टहनियां और शाखाओं को इस तरह हि
झकझोरने लगता मानो पागलों का समूह हाथों को उछाल-उछाल
रहा हो। फिर काले-नीले अंधेरे को चीरती हुई बिजली पेड़ों की
पर कभी इधर, कभी उधर, कभी पास, कभी दूर, पलभर के
कर अलोप हो जाती और दूसरे ही क्षण सारी चर-अचर सृष्टि
विलीन हो जाती। सहसा कान के पर्दे फाड़नेवाली कड़कड़ाहट
और वह गरजती, गूंजती आसमान से धरती तक इस तरह
जाती मानों ऊंची सीढ़ियों पर से एक साथ बहुत-से खाली पी
जा रहे हों।

"जिम, दुनिया में इससे बढ़िया जगह दूसरी नहीं हो सक
कहा, "मैं यहां से कहीं भी जाना नहीं चाहूंगा। जरा मछली का
और गरमागरम रोटी तो इधर बढ़ाना।"

"इसके लिए जिम के गुण गाओ और उसकी सूझ-समझ
करो लल्ला! यह आराम और चैन तुम्हें जिम की ही बदौलत

लकड़ी के लट्ठे भी बहकर जाते हुए दिखाई दे जाते थे, लेकिन हम उन्हें निकल जाने देते, क्योंकि दिन में नदी पर न आने का हमने नियम बना लिया था।

एक और रात हम द्वीप के मत्थे पर रुके हुए थे। सवेरा होने में थोड़ी ही देर थी। इतने में क्या देखते हैं कि लकड़ी का एक पूरा मकान पश्चिमी हाथ पर बहता चला आ रहा है। खासा दुमंज़िला मकान था और एक ओर को काफ़ी झुक गया था। हम नाव से उसके पास पहुंचे और एक खिड़की की राह अन्दर उतर गए। लेकिन अंधेरा होने के कारण हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया तब नाव को हमने उससे बांध दिया और बैठे दिन निकलने का इन्तज़ार करने लगे।

द्वीप के आख़िरी सिरे पर पहुंचने के पहले ही दिन निकल आया। हम ने खिड़की से झांककर अन्दर देखा। एक पलंग, एक मेज़, दो पुरानी-धुरानी कुर्सियां और फ़र्श पर बहुत-सा अटर-शटर सामान हमें दिखाई दिया। दीवाल पर कपड़े भी टंगे थे। दूर एक कोने में फ़र्श पर आदमी जैसा कुछ पड़ा हुआ था।

जिम ने पुकारा, "अरे ओ! सुनते हो!"

लेकिन किसी ने नहीं सुना और न वह हिला-डोला। मैंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर पुकारा भी, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। तब जिम ने कहा, "वह सोया हुआ नहीं है—मर चुका है। तुम यहीं रुके रहो, मैं अन्दर जाकर देखता हूं।"

उसने अन्दर जाकर खूब पास से देखा और बोला, "मरा हुआ है, हां बिलकुल मरा हुआ, और नंगा भी। पीठ में गोली मारी गई है। मेरे ख्याल से इसे मरे भी दो-तीन दिन हो गए हैं। हक, तुम भी अन्दर उतर आओ, मगर इसके चेहरे की ओर मत देखना—बहुत भयावना हो गया है।"

मैंने उधर देखा ही नहीं। जिम ने फुर्ती से कुछ पुराने चिथड़े उस पर डाल दिए, जिसकी कोई ज़रूरत नहीं थी; क्योंकि मैं तो उसे देखना ही नहीं चाहता था। फ़र्श पर ताश के बहुत-से पुराने पत्ते बिखरे पड़े थे, व्हिस्की की पुरानी बोतलें और काले कपड़े की नकाबें भी दिखाई दी थीं। दीवाल पर कोयले से गन्दे चित्र ही नहीं बनाए गए थे, हर तरह की

हो रहा है। नहीं तुम तो किसी पेड़ के नीचे भूखे, पानी में भीगते, दांत कटकटाते रहे होते; अजब नहीं कि डूब ही जाते। चूजे जानते हैं कि कब पानी बरसेगा और चिड़ियों के बच्चे भी जानते हैं। समझे भैया?"

नदी में जोरों की बाढ़ आ गई और पानी दस-बारह दिन तक बराबर बढ़ता ही गया। यहां तक कि वह किनारों पर चढ़ गया और द्वीप के निचले हिस्सों में कहीं-कहीं तो चार फुट से भी ज्यादा पानी भर गया। इलिनोइस-वाला किनारा कुछ निचाई पर था, इसलिए उधर मीलों तक बाढ़ का पानी फैल गया और जहां तक निगाह जाती पानी-ही-पानी दिखाई देता था। लेकिन मिसौरी वाली बाजू पर ऊंचे कगारे होने के कारण पानी का विस्तार पहले की ही तरह आधे मील से ज्यादा न हो सका। हां, धारा की गति और जोर दोनों ही बढ़ गए थे।

दिन में हम अपनी नाव से सारे द्वीप की सैर किया करते। दुपहरी में भी, जब सूरज की किरणें बहुत तेज हो जाती थीं, द्वीप के घने जंगलवाले भाग में छाया और काफी ठण्डक बनी रहती थी। हम नाव को सांप की तरह मोड़ते-घुमाते पेड़ों के बीच में से निकाला करते, लेकिन कहीं-कहीं मोटी लताएं हमारा रास्ता रोक देतीं और हमें दिशा बदल कर या पीछे हटकर दूसरे रास्ते से आगे बढ़ना पड़ता था। पुराने सूखे पेड़ों की शाखों और ठूंठों पर ढेर-के-ढेर खरगोश और सांप और दूसरे कई जंगली जानवर बैठे दिखाई देते थे। और जब दो-एक दिन बाढ़ का पानी द्वीप के अधिकांश भाग को डुबोता हुआ निकला तो वे सब मारे भूख के इतने निढाल हो गए कि पास जाने और छूने पर भी कुछ नहीं बोलते थे। लेकिन सांप और कछुए जरूर अपने को छूने नहीं देते थे—वे फौरन पानी में खिसक जाते। हमारी सारी कन्दरा इन जंगली जीवों से भर गई थी और चाहते तो कइयों को हिला सकते थे।

एक रात लड़की के बेड़े का करीब आधा हिस्सा बहता हुआ हमारे ... आ गया और हमने उसे रोक लिया। उम्दा किस्म के नौ बड़े-बड़े ... साथ जुड़े हुए थे। उस बेड़े की लम्बाई करीब पन्द्रह-सोलह ... फुट रही होगी। पानी की सतह से वह छह सात इंच ... ... जड़ा हुआ और हमवारा दिन में कभी इमारती

लकड़ी के लट्ठे भी बहकर जाते हुए दिखाई दे जाते थे, लेकिन
निकल जाने देते, क्योंकि दिन में नदी पर न आने का हमने नियम
था।

एक और रात हम द्वीप के मत्थे पर रुके हुए थे । सवेरा होने
ही देर थी। इतने में क्या देखते हैं कि लकड़ी का एक पूरा मकान
हाथ पर बहता चला आ रहा है। खासा दुमंजिला मकान था और
को काफी झुक गया था। हम नाव से उसके पास पहुंचे और एक
की राह अन्दर उतर गए। लेकिन अंधेरा होने के कारण हमें कुछ
नहीं दिया तब नाव को हमने उससे बांध दिया और बैठे दिन नि
इन्तजार करने लगे।

द्वीप के आखरी सिरे पर पहुंचने के पहले ही दिन निकल आ
ने खिड़की से झांककर अन्दर देखा। एक पलंग, एक मेज, दो पुरान
कुर्सियां और फर्श पर बहुत-सा अटर-शटर सामान हमें दिखाई
दीवाल पर कपड़े भी टंगे थे। दूर एक कोने में फर्श पर आदमी
पड़ा हुआ था।

जिम ने पुकारा, "अरे ओ ! सुनते हो !"

लेकिन किसी ने नहीं सुना और न वह हिला-डोला। मैंने
चिल्लाकर पुकारा भी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। तब जि
"यह सोया हुआ नहीं है—मर चुका है। तुम यहीं रुके रहो, मैं अन्
देखता हूं।"

उसने अन्दर जाकर खूब पास से देखा और बोला, "मरा हु
बिलकुल मरा हुआ, और नंगा भी। पीठ में गोली मारी गई है।
से इसे मरे भी दो-तीन दिन हो गए हैं। हां, तुम भी अन्दर आ
मगर इसके चेहरे की ओर मत देखना—बहुत भयानक हो गया

मैंने उधर देखा ही नहीं। जिम ने फुर्ती से कुछ पुराने चिथ
डाल दिए, जिसकी कोई जरूरत नहीं थी; क्योंकि मैं तो उसे
नहीं चाहता था। फर्श पर ताश के बहुत-से पुराने पत्ते बिखरे
व्हिस्की की पुरानी बोतलें और काले कपड़े की नकाबें भी दि

गन्दी गालियां भी लिखी हुई थी ! दो गन्दी, पुरानी, सूती पोशाकें, लगाने का एक जनाना टोप, औरतों के अन्दर पहनने के कुछ कपडे, दो-एक मर्दाने कपड़े भी दीवाल पर खूटियों से लटक रहे थे। हमने कपड़े समेटे और नाव में लाकर रख दिए; सोचा, किसी दिन का आएंगे। फर्श पर लड़के के पहनने का पुआल का चित्तीदार टोप पड़ मैंने उसे ले लिया। दूध की एक बोतल भी थी, जिसके मुह पर ब लिए कपडे की चुसनी लगी थी और अन्दर दूध भरा था; अगर वह न होती तो हम उसे भी ले लेते। एक खस्ता हाल पुरानी बड़ी पेटी एक बालों का बना छोटा, पुराना ट्रंक था, जिसके कब्जे टूटे हुए थे। खुले पड़े थे और उनके अन्दर कोई खास चीज नहीं थी। कमरे की अ व्यस्त हालत से पता चलता था कि लोगों को जल्दी में भागना पड़ा और न तो वे भागने से पहले सामान को करीने से लगा सके और न अधि सामान से ही जा सके थे।

हमें टीन की एक पुरानी लालटेन, कसाई से काम आने वाला बिना ह का बड़ा छुरा, एक बिलकुल नया बारलो चाकू, जो किसी भी दुकान मे डालर से कम में न मिलता, चर्बी की ढेर सारी मोमबत्तियां, टीन का मोमबत्ती दान, एक तुम्बा, टीन का प्याला, पुरानी रजाई, एक डिबिया सुई, धागे, पिनें, बटन, मोमजामे आदि चीजें, एक कुल्हाड़ी, कुछ की मछली पकड़ने की डोर, जो मेरी छोटी अंगुली जितनी मोटी थी और उ में लगे हुए बड़े-बड़े नुकीले कांटे, सामन की खालें, कुत्ते के गले का पट्टा, घोड़े की नाल, बगैर लेबल की दवाई की कुछ शीशियां और दूसर बहुत-सा सामान मिला। चलते चलते मुझे एक [illegible] और [illegible] लकड़ी का एक पुराना गज और लकड़ी की एक टांग मिली। इस टांग के जिन्हें सरते टूटे हुए थे, बाकी बहुत अच्छी हालत में थी। हां, मेरे लिए यह बहुत बड़ी थी और जिम के लिए काफी छोटी पड़ती थी और इसका दूसरा जोड़ा बहुत खोजने पर भी हमारे हाथ नहीं लगा।

इस तरह कुल मिलाकर काफी माल हमारे हाथ लगा। और जब हम [illegible] बाद के [illegible] चलने को तैयार हुए, तो [illegible] कोई [illegible] ऊपर रह गया था और दिन भी काफी चढ़ आया था। मैं जिम को

नाव में लिटा दिया और ऊपर से रजाई ओढ़ा दी। क्योंकि अगर वह बैठा रहता तो लोग दूर से ही देखकर समझ जाते कि कोई हबशी चला जा रहा है। फिर मैं नाव को खेता हुआ इलिनोइस वाले किनारे की तरफ ले गया और इस कोशिश में करीब आधा मील नीचे की ओर बह गया। फिर नदी के रुके हुए पानी में किनारे-किनारे चलता हुआ बहुत देर में और बड़ी मुश्किलों से टापू पर लगा। इतनी गनीमत हुई कि किसीने देखा नहीं और न कोई दुर्घटना हुई।

अध्याय १०

नाश्ते के बाद बैठे तो मैं उस मरे हुए आदमी के बारे में बातें करने के लिए बेताब हो गया। जानना चाहता था कि वह कौन है और कैसे मारा गया! लेकिन जिम उसके बारे में बोलना तो ठीक, सुनने के लिए भी राजी नहीं था। उसने यह कहकर बात खत्म कर दी कि मरे हुओं के बारे में बात करने से अमंगल होता है और फिर रात में वह सपने में आकर सताते हैं। उसका कहना था कि जिन लोगों को दफनाया नहीं जाता उनकी आत्मा को शान्ति नहीं मिलती और वे प्रेत बनकर भटकते रहते हैं। बात उसकी ठीक लगी, इसलिए मैं भी चुप हो गया; लेकिन मन में उसी आदमी के विचार घुमड़ते रहे। किसी तरह जान पाता कि वह कौन था, क्यों मारा गया किसने मारा!

हमने एक-एक कपड़े को उलट-पलटकर और झटक-पटक कर देखा। एक पुराने ओवर कोट के अस्तर में चांदी के आठ डालर सिले हुए मिले। जिम की राय में उस मकान वाले इस कोट को कहीं से चुरा लाए थे और उन्हें मालूम नहीं था कि इसमें डालर सिले हुए हैं। अगर मालूम होता तो वे इसे हर्गिज छोड़ न जाते। मैंने कहा कि जिन्होंने कोट चुराया उन्होंने उस आदमी की जान भी ली, मगर जिम ने इस बारे में कुछ कहने से इनकार कर दिया।

तब मैंने कहा, "तुम इसे अमंगल समझते हो। लेकिन सांप की वह

केंचुल के बारे में तुम्हारी क्या राय है, जो मुझे परसों टीले की चोटी पर मिल गई थी ? जब मैंने उसे अपने हाथों में लिया तो तुम ने यही कहा था कि इससे बड़ा बदसगुन और अमंगल दुनिया में दूसरा हो नहीं सकता। और जैसा अमंगल हुआ तुम्हारे सामने है। इतना सारा सामान और ऊपर से ये आठ डालर मिले। अगर यह अमंगल है तो जिम, ऐसा अमगल भले ही रोज-रोज होता रहे।"

"इतने उतावले मत हो मेरे मुन्ने; ज़रा सबर से काम लो ! अमंगल होगा और ज़रूर होगा; और तुम खुद अपनी आंखों से देखोगे।"

और सच ही अमंगल होकर रहा। मंगलवार को हमारी यह बात हुई और उसके तीसरे ही दिन शुक्रवार को हम दुपहर का खाना खाकर टीले की चोटी पर घास में लेटे थे कि तम्बाकू खत्म हो गई मैं उतरकर कन्दरा में तम्बाकू लेने गया तो वहां जिम के कम्बल के पैताने एक सांप गेंडुली मारे बैठा था। मैंने सांप को मार डाला और उसी तरह गेंडुली लगाकर वहीं रख दिया। सोचा, शाम को अच्छा मजाक रहेगा। रात होते-होते मैं सांप की बात सफा भूल गया। रात में नीचे आकर जिम ने कम्बल पर लेट लगाई और मैंने दीया जलाया तो वहां सांप की मादा फन फैलाए बैठी थी। कुछ करें उसके पहले तो नागिन ने जिम के पांव में डस भी लिया।

वह चीख मारकर उछल पड़ा और पांव पकड़कर कूदने लगा ! मैंने दीया उठाकर देखा तो सांपिन गेंडुली मारकर फिर वार करने जा रही थी। मैंने लपककर लाठी उठाई और एक ही बार में सांपिन को मार डाला। उधर जिम ने पिताजी का व्हिस्की का पीपा उठा लिया और भर-भर चुल्लू पीने लगा।

वह नंगे पांव था और सांपिन ने उसे ठीक एड़ी में काटा था। यह सब मेरी मूर्खता का परिणाम था। कैसे भूल गया कि सांप को मारकर वहीं छोड़ दिया जाए तो उसकी मादा ढूंढ़ती हुई आ जाती है और अपने जोड़े के पास गेंडुली मारे बैठी रहती है ! जिम ने कहा, "इसकी मुण्डी काटकर फेंक दो और चमड़ी उधेड़कर थोड़ा-सा गोश्त पकाकर मुझे दो। इससे फायदा होगा।" मैंने वैसा ही किया और वह सांप का गोश्त खाकर बोला, "इससे ज़हर चढ़ेगा नहीं।" फिर उसके कहने पर मैंने सांप की रीढ़ की

हड्डियां निकालकर उसकी कलाई में बांध दीं। सांप के काटे का यह भी एक इलाज है; और जिम बोला कि इससे भी फ़ायदा होगा। फिर मैं चुपके से सांप और सांपिन को उठाकर दूर एक झाड़ी में फेंक आया। जिम को पता नहीं लगने देना चाहता था कि यह सब मेरी गलती और नादानी से हुआ।

जिम इस बीच बराबर चुल्लू-चुल्लू शराब पीता रहा। कभी वह एकदम खड़ा हो जाता और चिल्लाता हुआ सारी गुफा में उछल-कूद करने लगता। लेकिन शान्त हो जाता और चुल्लू-चुल्लू शराब पीना शुरू कर देता। उसका पांव और पूरी टांग, दोनों ही खूब सूज गए। लेकिन धीरे-धीरे शराब का असर हुआ और उसे नशा आने लगा। तब कहीं मेरे जी-में-जी आया। शराब ने ज़हर को मार दिया था। मगर मैं तो सांप के काटने पर मरना पसन्द करता, पिताजी की व्हिस्की को हरगिज़ न छूता।

जिम पूरे चार दिन बिस्तरे पर पड़ा रहा। फिर सूजन उतर गई और वह चलने-फिरने लायक हो गया। उस दिन से मैंने कसम खाई कि भूलकर भी सांप की केंचुल को नहीं छुऊंगा! उससे होने वाले अमंगल को मैंने अपनी आंखों देख लिया था। जिम ने कहा कि अब तो तुम ज़रूर मेरी बात पर यकीन करोगे और दुबारा कुछ कहा तो हंसी में नहीं उड़ा दोगे। उसने यह भी कहा कि सांप की केंचुल को छूना इतना बड़ा अमंगल है कि सिर्फ़ सांप के काट लेने से उसका उतार नहीं हो जाता, मुमकिन है हमें अभी कुछ और भी भुगतना पड़े। फिर उसने कहा कि मैं नये चांद को चाहे हज़ार बार बाएं कन्धे की ओर से देख लूं, मगर सांप की केंचुल को कभी हाथ नहीं लगाऊंगा। मेरा भी, इस घटना के बाद, कुछ ऐसा ही विश्वास होता आ रहा था, लेकिन नये चांद को बाएं कंधे की ओर से देखना तो मैं बहुत ही बुरा और मनहूस काम समझता था—मेरी राय में सिर्फ़ पहले दर्जे का बेवकूफ़ ही ऐसा काम करेगा। एक बार हैंक बंकर नाम का बूढ़ा शेखी में आकर इस तरह की गलती कर बैठा था। दो बरस भी नहीं हुए और वह शराब के नशे में मीनार पर से गिर कर मर गया। यों समझ लो कि ज़मीन पर बिछ गया था। बरसाती घर के दो दरवाज़ों में रखकर उसे बड़ी मुश्किल से कफ़न में लपेटा गया था और फिर उसी हालत में दफ़नाया

पड़ा। मैंने तो देखा नहीं, लोगों को कहते सुना था और मेरे पिताजी कहा करते थे। मतलब यह कि नये चांद को बाएं कन्धे पर से देखने की ऐसी ही दुर्गति होती है।

दिन फिर हमेशा की तरह बीतने लगे और नदी भी अपने दो किनारों में समा गई। जैसे ही मौसम सामान्य हुआ हमने पहला काम किया कि उस मोटी वाली डोर को निकाला, उन बड़े कांटों को ठीक कि और खरगोश के गोश्त का चारा लगा कर वन्सी नदी में डाल दी। थो ही देर में एक बहुत बड़ी मछली फंस गई। वह आदमी से भी बड़ी, छ छह फुट दो इंच लम्बी और वजन में दो सौ पौण्ड से भी ज्यादा थी। उ खींचकर पानी में से बाहर लाना हम दोनों के लिए मुश्किल हो गया था अगर थोड़ा-सा भी चूक जाते तो वह दोनों को इलीनोइस के पानी में खी ले जाती। कांटा तो उसने निगल ही लिया था। हम चुपचाप उसे खी तान करते हुए देखते रहे। आखिर वह दम तोड़कर डूब गई। काटने प उसके पेट में से पीतल का एक बटन, एक गोला और बहुत सा अल्ल गल्लम् सामान निकला। गोले को हमने कुल्हाड़ी से तोड़ा तो उसके अन्द से एक फिरकी निकली। जिम का कहना था कि वह फिरकी उसके पे में बहुत दिनों से होनी चाहिए तभी तो वहां पर वह बढ़कर इतना बड़ गोला बन गया। इतनी बड़ी मछली मिसिसिपी में तो कभी पकड़ी नहीं गई थी। जिम ने भी इतनी बड़ी मछली पहले कभी देखी नहीं थी। गां में होती तो पकड़ने वाले को मालामाल कर देती। गांव के बाजार में पौंड से तोलकर बेची जाती और सबके खरीदने के बाद भी बच जाती गोश्त उसका एकदम बर्फ की तरह सफेद, आसानी से पकनेवाला और बहुत जायकेदार था।

वहां एकान्त जिन्दगी बिताते बिताते मैं ऊब चला था, इसलिए दूसरे दिन बोला, कुछ करना चाहिए और जरा घूम फिरकर आस-पास का पता लगाना चाहिए। मेरा विचार नदी के पार जाकर देख भाल कर आने का था। जिम को विचार पसन्द आया, लेकिन वह इस पक्ष में नहीं था कि दिन में जाऊं। उसने सलाह दी कि अंधेरा होने पर जाओ और खूब साव- धान रहना। फिर कुछ देर सोचते रहने के बाद उसने कहा कि क्यों न

लड़की का भेष बनाकर जाओ, जनाना कपड़े तो हमारे पास हैं ही ! उसकी यह सलाह मुझे अच्छी लगी। हमने एक सूती गाऊन को काट-छाटकर छोटा किया और मैंने पतलून के पायचों को घुटने तक मोड़कर उस गाऊन को पहन लिया। जिम ने पीछे की ओर हूक लगा दीं। वह मेरे बदन पर ठीक-ठीक बैठ गया। अब मैंने धूपवाला जनाना टोप पहनकर फीते ठुड्डी के नीचे बांध लिए। इस सज-धज के बाद मेरा चेहरा ऐसा लग रहा था मानो किसी जोड़ लगी चिमनी को ऊपर की ओर से देख रहे हों! जिम ने यह कहकर वेश परिवर्तन को 'पास' कर दिया कि दिन में भी तुम्हें कोई पहचान नहीं सकता। फिर मैं सारा दिन नई वेश-भूषा और लड़की होने का अभ्यास करता रहा। शाम तक काफी अभ्यस्त भी हो गया। जिम ने दो-चार खामियां बताईं। एक तो मैं पतलून की जेबों मे हाथ डालने के लिए गाऊन को बार-बार ऊपर चढ़ा लिया करता था और दूसरे, मेरी चाल लड़कियों-जैसी नहीं थी। मैं इन दोनों बातों पर विशेष रूप से ध्यान देने लगा।

जैसे ही अंधेरा हुआ मैं डोंगी लेकर इलिनोइस के तट की ओर चल पड़ा। नदी पार करने के लिए मैंने धार से कुछ नीचे डोंगी को पानी में डाला और धारा को तिरछे काटता हुआ गांव के छोर पर जाकर लगा। वहां मैंने डोंगी को किनारे बांध दिया। वहां से कुछ ही फासले पर एक झोपड़ा था और इस समय उसमें दीया जल रहा था। मुझे ताज्जुब हुआ, क्योंकि उसमें कभी किसीको रहते मैंने देखा नहीं था। दबे पांव झोपड़े तक आकर मैंने खिड़की की राह अन्दर झांका। कोई चालीसेक बरस की एक औरत चीड़ की मेज पर मोमबत्ती रखे बुनाई कर रही थी। चेहरा पहचाना हुआ नहीं लगा, जरूर वह किसी दूसरे गांव की औरत थी। उस कस्बे के तो हर आदमी-औरत को मैं अच्छी तरह जानता था। एक अजनबी औरत को पाकर मुझे खुशी हुई। वैसे मैं डर रहा था कि आ तो गया हूं पर लोग मेरी आवाज से पहचान जाएंगे। हिम्मत कुछ-कुछ जवाब देने लगी थी। पर इस अजनबी औरत को देखकर डर जाता रहा। इस छोटे-से कस्बे में यदि वह दो-चार दिन से आई हुई है तो मुझे यहां का सारा हाल बता सकेगी और मैं जो भी जानना चाहता हूं मालूम हो जाएगा। मैंने दर-

पाजे पर दस्तक दी। मन-ही-मन दुहराता जा रहा था कि कहीं यह न भूल जाऊं कि लड़की हूं।

अध्याय ११

"अन्दर आ जाओ!" उस औरत ने कहा।

मैं अन्दर चला गया तो बोली, "कुर्सी पर बैठो।"

मैं बैठ गया। वह अपनी नन्हीं-नन्हीं तेज और चमकीली आंखों से मुझे देखती रही, फिर बोली, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"सारा विलियम्स।"

"रहती कहां हो? यहीं कहीं पास-पड़ोस में?"

"जी नहीं। यहां से सात मील नीचे हूकर विले गांव है वहां। सारा रास्ता पैदल चलकर आ रही हूं और थककर चूर हो गई हूं।"

"और शायद भूख भी लगी है। आओ, तुम्हें कुछ खाने को दूं।"

"जी नहीं। भूखी नहीं हूं। रास्ते में ज़ोर की भूख लगी थी सो यहां से दो मील नीचे एक खेतघर में रुककर खा लिया है। अब भूख ज़रा भी नहीं है। इसीलिए तो इतनी देर हो गई। मेरी मां घर में बीमार पड़ी है। हमारे पास न पैसा है और न कोई चीज़। मामा को खबर करने आई हूं। एबनेट मूर उनका नाम है। मां ने बताया है कि कस्बे के उस छोर पर कहीं रहते हैं। मैं तो यहां पहले कभी आई नहीं। आप जानती हैं?"

"नहीं। यहां आए मुझे अभी दो ही हफ्ते हुए हैं, इसलिए ज़्यादा लोगों को नहीं जानती। कस्बे का वह छोर तो यहां से काफी दूर है। इतनी रात में कहां जाओगी! यहीं ठहर जाओ। अपना टोप उतार दो।"

"नहीं-नहीं! जी नहीं!" मैंने कहा, "थोड़ा सुस्ताकर चली जाऊंगी। अंधेरे से मैं डरती नहीं।"

"नहीं, अकेले तो मैं तुम्हें हर्गिज़ नहीं जाने दूंगी।" उस औरत ने कहा, "अभी घण्टे-डेढ़ घण्टे में मेरे पति आ जाएंगे, तो उन्हें तुम्हारे साथ

भेज दूगी।"

उसके बाद वह अपने पति के बारे मे और नदी-किनारे रहनेवाले अपने रिश्तेदारों के बारे मे और अपने अच्छे दिनो के बारे मे कि पहले वे कितने सुख-चैन से रहते थे और इस कस्बे मे आकर उन्होंने कितनी बडी गलती की, लेकिन पहले क्या मालूम था और इसी तरह की बहुत-सी बातें करती रही। मैं घबराया कि यह कहा आ फसा ! कस्बे के हाल-हवाल तो कुछ मालूम नही हो रहे, यह अपनी ही हांके जा रही है। मगर फिर वह मेरे पिताजी के बारे में और मेरे खून के बारे में और मुझसे सम्बन्धित दूसरी बातें बताने लगी और मैं ध्यान से सुनने लगा। उसने बताया कि मुझे और टाम सायर को छह-छह (उसने दस-दस कहा था) हजार डालर मिले थे और मेरे पिताजी कितने दुष्ट आदमी हैं और खुद मुझे कितना दुःख उठाना पडा। फिर वह तफसील से मेरे खून के बारे मे बताने लगी।

तब मैंने पूछा, "यह खून किसने किया ? हमने अपने गाव हूकरविले में भी इसके बारे मे बहुत बातें सुनी हैं। मगर यह पता नही चला कि हकफिन को मारा किसने !"

"यहां भी सभी यही जानना चाहते हैं, लेकिन किसीको नहीं मालूम। कुछ लोगों का खयाल है कि बूढे फिन ने ही अपने बेटे को मार डाला।"

"अच्छा ! नहीं-नही, ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"पहले लोगों का यही खयाल था। और लोग उसे जिन्दा जलाने पर तुल गए थे। लेकिन फिर उनका विचार बदल गया और आम राय यह हुई कि जिम नाम के एक भगोड़े हबशी ने यह खून किया है।"

"अरे वह..."

लेकिन मैं तुरन्त चुप हो गया। आगे कुछ भी कहना मुसीबत को न्योता देना था। मगर खैरियत हुई कि उसने सुना नही, वह अपनी ही धुन मे कहे जा रही थी।

"यह हबशी उसी रात भागा जिस दिन हकफिन का खून हुआ था। उसे पकड़ने वाले को तीन सौ डालर का इनाम देने की घोषणा की गई है। और दो सौ डालर का इनाम बूढे फिन को पकड़वाने के लिए रखा गया है। बात यह हुई कि दूसरे दिन सवेरे बूढे फिन ने यहां आकर बताया कि

हकफिन का खून हो गया; और उसकी लाश की तलाश में वह भी नाव में साथ-साथ गया था। फिर रात में कहीं चला गया। लोगों को उसपर शक हो गया था और पा जाते तो जिन्दा जला देते, पर वह उस रात यहाँ था ही नहीं। दूसरे दिन पता चला कि हबशी भी गायब है और जिस दिन खून हुआ उस रात दस बजे के बाद से वह देखा नहीं गया। बस लोगों ने उसी को खूनी करार दे दिया। इतने में बूढ़ा फिन लौट आया और बुरी तरह थेचर जज के पीछे पड़ गया कि रुपया दो तो हत्यारे हबशी को ढूँढ़ निकालूँ। उसने इतना शोर मचाया कि थेचर ने कुछ दे दिलाकर अपना पिण्ड छुड़ाया। शाम को उसने खूब शराब पी और आधी रात तक कस्बे में ही बना रहा; उसके साथ बदमाश किस्म के कुछ लोग भी थे। फिर वे सब ऐसे गए कि अभी तक लौटकर नहीं आए। अब लोग कहते हैं कि यह सब बूढ़े फिन की चाल थी। हत्या उसीने की और ऐसा ढोंग रचाया कि सब यही समझें कि डाकुओं ने हत्या की और किसीको उसपर शक न हो और वह सफा निकल जाए। लोगों का यह भी कहना है कि एक-आध साल कहीं छिपा बैठा रहेगा और जब बात ठण्डी हो जाएगी तो बिना मामले-मुकदमे के थेचर से सारा पैसा वसूल कर लेगा। कुछ लोगों का कहना है कि उसमें इतनी अक्ल नहीं। पर मैं नहीं मानती। वह एक ही शैतान है और पैसे के लिए सब-कुछ कर सकता है।"

"आपका कहना सच है। मुझे भी यही लगता है। अच्छा, हबशी के बारे में [अब लोगों का क्या ख्याल है? क्या अब भी वे उसे हत्यारा समझते हैं?"

कि वह हबशी दूर नहीं गया है, पास ही कहीं होना चाहिए। मैं भी ऐसा ही मानती हूं, हालांकि मैंने अभी तक किसीसे कहा नहीं है। मेरे पड़ोस वाले उस लम्बोतरे झोंपड़े में दो जन बूढ़े पति-पत्नी रहते हैं। एक दिन बातों-ही-बातों में उन्होंने कहा कि उस टापू में कोई नहीं रहता और उन्होंने उसका नाम भी बताया —जेक्सन द्वीप। मैंने पूछा, क्या सच ही कोई नहीं रहता ? उन्होंने कहा, वहीं कोई भी नहीं रहता। फिर मैं चुप हो गई और मेरा दिमाग जोरों से काम करने लगा। अच्छी तरह याद है कि उनसे बात करने के चारेक दिन पहले मैंने उस टापू के इधर वाले सिरे से धुआं उठते देखा था। मेरे मन ने कहा कि हो-न-हो, वह हत्यारा हबशी वहीं छिपा हुआ है; क्यों न जाकर देख लिया जाए। इधर कुछ दिनों से धुआं दिखता नहीं है; हो सकता है कि वह हबशी कहीं चला गया हो। मेरे पति देखने गए हैं। मैं तो पहले ही जाने को कहती, लेकिन वे बाहर गए हुए थे और आज ही लौटे। जैसे ही घर आए मैंने कहा और वे एक आदमी के साथ अभी दो घण्टे पहले गए हैं।"

मेरे काटो तो खून नहीं। बुरी तरह घबरा गया। चुपचाप बैठे रहना दुश्वार हो गया। ध्यान को बटाए रखने के लिए कुछ करना जरूरी था। मैंने मेज पर रखी सुई उठाली और उसमें धागा पिरोने लगा। हाथ बुरी तरह कांप रहे थे और धागा सुई के छेद में जाता नहीं था। इस बीच औरत ने बोलना बन्द कर दिया था। मैंने सिर उठाकर उसकी ओर देखा तो वह बड़े अचरज से मेरी ओर ताके जा रही थी और चुपचाप मुस्कराती भी जाती थी।

मैंने सुई-धागा मेज पर रख दिया और उसकी बातों में रस लेता हुआ बोला, "तीन सौ डालर वाकई बड़ी रकम है। काश इतना रुपया मेरी मां को मिल जाए! क्या आपके पति आज ही रात वहां जा रहे हैं ?

"हां ! एक आदमी के साथ, जैसा कि मैंने बताया, वे कस्बे में गए हैं, नाव का इन्तजाम करने और हो सके तो किसीसे एक बन्दूक और मांगने। फिर आधी रात के बाद वे वहां जाएंगे।"

"रात में उन्हें वहां क्या दिखेगा ? दिन में क्यों नहीं जाते। उजाले में

हकफिन का खून हो गया; और उसकी लाश की साथ-साथ गया था। फिर रात में कहीं चला गया। लोगों को उसपर शक हो गया था और पा जाते तो ज़िन्दा जला देते, पर वह उस रात यहां था ही नहीं। दूसरे दिन पता चला कि हबशी भी गायब है और जिस दिन खून हुआ उस रात दस बजे के बाद से वह देखा नहीं गया। बस लोगों ने उसी को खूनी करार दे दिया। इतने में बूढ़ा फिन लौट आया और बुरी तरह थेचर जज के पीछे पड़ गया कि रुपया दो तो हत्यारे हबशी को ढूंढ निकालूं। उसने इतना शोर मचाया कि थेचर ने कुछ दे दिलाकर अपना पिण्ड छुड़ाया। शाम को उसने खूब शराब पी और आधी रात तक कस्बे में ही बना रहा; उसके साथ बदमाश किस्म के कुछ लोग भी थे। फिर वे सब ऐसे गए कि अभी तक लौटकर नहीं आए। अब लोग कहते हैं कि यह सब बूढ़े फिन की चाल थी। हत्या उसीने की और ऐसा रास्ता रचाया कि सब यही समझें कि डाकुओं ने हत्या की और किसीको उसपर शक न हो और वह सफा निकल जाए। लोगों का यह भी कहना है कि एक-आध साल कहीं छिपा बैठा रहेगा और अब [illegible] के थेचर से सारा

गुजारने पड़ रहे हैं, और यहां चूहे कितने ढीठ हैं—इस तरह भगदड़ मचाया करते हैं मानो उन्हींका राज हो। उसकी इन बातों ने मुझे फिर निश्चिन्त कर दिया। चूहों के बारे में वह सच ही कह रही थी। वास्तव में उसके यहां के चूहे बड़े ढीठ थे। कभी कोई इस छेद में से झांकता तो कभी कोई उस बिल में से और ऐन नाक के नीचे से दौड़ते हुए निकल जाते थे। उसने कहा कि चूहों को मारने के लिए कोई-न-कोई चीज हमेशा अपने पास रखती हूं, खासकर जब अकेली होती हूं, नहीं तो ये दुष्ट मुझे शान्ति से बैठने भी न दें। यह कहकर उसने मुझे सीसे की एक छड़ दिखलाई जिसे मोड़-माड़कर गठान की तरह ऐंठ दिया गया था। वह बोली, इससे खूब निशाना मार लेती हूं, लेकिन दो-एक दिन पहले चूहे को मारने में हाथ झटका खा गया और ऐंठन-सी आ गई, इसलिए कह नहीं सकती कि निशाना सीधा बैठेगा भी। फिर भी उसने कोशिश की और जैसे ही चूहा दिखाई दिया ताककर छड़ फेंकी, पर निशाना चूक गया और वह कराह उठी, 'हाय !' वाकई उसके हाथ में दर्द होने लगा था। तब वह बोली, अब की तुम मारना। मैं तो वहां से सटकने की फिक्र में था और चाहता था कि उसके पति के आने से पहले खिसक जाऊं, पर गया नहीं। मैंने सीसे का वह टुकड़ा अपने हाथ में ले लिया और जैसे ही एक चूहा दिखाई दिया ताककर उसे मारा। अगर वह बिल में दुबक न जाता तो जरूर उसकी कचूमर निकल जाती, इतना सधा निशाना बैठा था। उसने खूब तारीफ की और कहा कि वाह, कितना सही निशाना है और अगली बार तो जरूर मार लोगी, बचकर जाने नहीं पाएगा। वह जाकर सीसे के उस टुकड़े को ले आई और साथ ही सूत की एक गुण्डी भी और बोली कि जरा इसे खोलने-लपेटने में मेरी मदद कर दो। मैंने दोनों हाथ फैला दिए और गुण्डी उसने मेरे हाथों में पिरो दी और धागा लपेटती हुई अपने पति और अपनी घर-गृहस्थी के बारे में बतलाती रही। फिर अपनी ही बात काटकर सहसा बोली, "एक निगाह चूहों पर भी रखो और सीसे का यह टुकड़ा अपनी गोद में रख लो, जिससे फौरन काम आ जाए। लो।"

टुकड़ा मेरी गोद में गिरा दिया और मैंने उसे अपनी टांगों

अच्छी तरह देख तो सकोगे।"

"बलिहारी तुम्हारी अक्ल की ! अरे, दिन के उजाले में क्या वह हबशी आंखें मूंदकर बैठा रहेगा ? दिन में वह भी तो देख सकता है कि कौन किधर से आ रहा है। रात में सोया पड़ा रहेगा और ताप-अलाप कुछ जलाकर रखा होगा तो आसानी से दिखाई दे जाएगा।"

"हाय, यह मैंने पहले क्यों नहीं सोचा !"

वह औरत मुझे आंखें गड़ाकर देखने लगी। उन तेज निगाहों के नीचे मेरे होश गुम होने लगे। सहसा उसने पूछा, "तुमने अपना नाम क्या बताया था बिटिया ?"

"म-मेरी विलियम्स।"

और फौरन मुझे खयाल आ गया कि यह नाम तो मैंने पहले नहीं बताया था। मैंने तुरत आंखें नीची कर लीं। उस औरत की ओर देखने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ रही थी। सोचने लगा, मेरी, मेरी···अरे, मैंने तो अपना नाम सारा बताया था। बुरे फसे ! मारे घबराहट के बुरा हाल हो गया। चेहरे का रंग उड़ गया और पसीने की बूंदें छलक आईं। उस औरत का चुप रहना और भी अखरने लगा। वह कुछ बोलती क्यों नहीं ? उसकी चुप्पी आरे की तरह मेरी छाती को चीरने लगी।

तभी उसने कहा, "क्यों बिटिया, अगर भूलती नहीं हूं तो पहले तुमने अपना नाम सारा बताया था।"

"जी हां, बताया था; ठीक ही बताया था। मेरा पूरा नाम है सारा मेरी विलियम्स। सारा मेरा पहला नाम है; जी, नाम का पहला हिस्सा। कुछ मुझे सारा कहकर बुलाते हैं और कुछ मेरी।"

"ओह, तो यह बात है।"

"जी हां।"

तब कहीं मेरे जी-में-जी आया। लेकिन मनाने लगी कि यहां से जितनी जल्दी निकला जा सके उतना ही अच्छा। आंखें तो मेरी अब भी नहीं उठ रही थीं।

और वह औरत फिर अपना किस्सा ले बैठी कि दिन कितने खराब हैं, और वे लोग कितनी मुसीबत में हैं, और कैसी गरीबी में उन्हें अपने दिन

गुजारने पड़ रहे हैं, और यहां चूहे कितने ढीठ हैं—इस तरह भगदड़ मचाया करते हैं मानो उन्हीं का राज हो। उसकी इन बातों ने मुझे फिर निश्चिन्त कर दिया। चूहों के बारे में वह सच ही कह रही थी। वास्तव में उसके यहां के चूहे बड़े ढीठ थे। कभी कोई इस छेद में से झांकता तो कभी कोई उस बिल में से और ऐन नाक के नीचे से दौड़ते हुए निकल जाते थे। उसने कहा कि चूहों को मारने के लिए कोई-न-कोई चीज हमेशा अपने पास रखती हूं, खासकर जब अकेली होती हूं, नहीं तो ये दुष्ट मुझे शान्ति से बैठने भी न दें। यह कहकर उसने मुझे सीसे की एक छड़ दिखलाई जिसे मोड़-माड़कर गठान की तरह ऐंठ दिया गया था। वह बोली, इससे खूब निशाना मार लेती हूं, लेकिन दो-एक दिन पहले चूहे को मारने में हाथ झटका खा गया और ऐंठन-सी आ गई, इसलिए कह नहीं सकती कि निशाना सीधा बैठेगा भी। फिर भी उसने कोशिश की और जैसे ही चूहा दिखाई दिया ताककर छड़ फेंकी, पर निशाना चूक गया और वह कराह उठी, 'हाय!' शायद उसके हाथ में दर्द होने लगा था। तब वह बोली, अब की तुम मारना। मैं तो वहां से सटकने की फिक्र में था और चाहता था कि उसके पति के आने से पहले खिसक जाऊं, पर गया नहीं। मैंने सीसे का वह टुकड़ा अपने हाथ में ले लिया और जैसे ही एक चूहा दिखाई दिया ताककर उसे मारा। अगर वह बिल में दुबक न जाता तो जरूर उसका कचूमर निकल जाता, इतना सधा निशाना बैठा था। उसने खूब तारीफ की और कहा कि वाह, कितना सही निशाना है और अगली बार तो जरूर मार लोगे, बचकर जाने नहीं पाएगा। वह जाकर सीसे के उस टुकड़े को ले आई और साथ ही सूत की एक गुण्डी भी और बोली कि जरा इसे खोलने-लपेटने में मेरी मदद कर दो। मैंने दोनों हाथ फैला दिए और गुण्डी उसने मेरे हाथों में पिरो दी और धागा लपेटती हुई अपने पति और अपनी घर-गृहस्थी के बारे में बतलाती रही। फिर अपनी ही बात काटकर सहसा बोली, "एक निगाह चूहों पर भी रखो और सीसे का यह टुकड़ा अपनी गोद में रख लो, जिससे वक्त पर फौरन काम आ जाए। लो।"

उसने वह टुकड़ा मेरी गोद में गिरा दिया और मैंने उसे अपनी दोनों

टांगों में दबा लिया; और वह बातें करती रही। लेकिन कोई मिनट-भर बाद उसने मेरे हाथों में से गुण्डी ले ली और बहुत खुश-खुश मेरी आंखों में आखें डालकर बोली, "अब बताओ, तुम्हारा असली नाम क्या है?"

"जी···जी···!"

"मैं पूछ रही हूं तुम्हारा असली नाम? तुम बिल हो, टाम हो, बाब हो या क्या हो? क्या नाम है तुम्हारा?"

मैं बुरी तरह कांपने लगा और समझ में नहीं आया कि क्या करूं और क्या कहूं। आखिर किसी तरह हिम्मत बटोर कर बोला, "श्रीमती जी, मुझ गरीब की मज़ाक क्यों उड़ाती हैं? अगर मेरी वजह से आपको दिक्कत हो रही हो तो मैं यह···"

"नहीं-नहीं! जाओ मत! बैठ जाओ। उसी कुर्सी पर बैठ जाओ। मैं तुम्हारा नुकसान नहीं करूंगी और किसी को तुम्हारा भेद भी नहीं दूंगी। बस, तुम मुझे सारी बात सच-सच बता दो। मेरा विश्वास करो। मैं तुम्हें ज़रा भी नुकसान नहीं पहुंचाऊंगी। तुम्हारी बात मुझी तक रहेगी और मैं तुम्हारी मदद भी करूंगी और चाहो तो मेरे पति भी तुम्हारी मदद करेंगे। मेरे खयाल में तुम किसीके पास काम सीखने के लिए रखे गए थे और वहां से भाग आए हो। क्यों, है न यही बात? इसमें कोई बुराई नहीं। मालिक ने तुम्हारे साथ बुरा सलूक किया होगा, अच्छी तरह रखा नहीं होगा तो तुम उस मुसीबत से भाग छूटे। एक तरह से अच्छा ही किया। मैं तुम्हारी यह बात किसीसे भी नहीं कहूंगी। लेकिन तुम एक अच्छे लड़के की तरह सब-कुछ मुझे सच-सच बता दो। देखो, छिपाना मत और झूठ मत बोलना।"

अब छिपाने में कोई लाभ नहीं था; यानी यह कि लड़की बनने का ढोंग चल नहीं सकता था। इसलिए मैंने उससे कहा कि मैं आपको सब-कुछ सच-सच बता दूंगा, मगर देखिए, आप किसीसे कहिएगा नहीं और मेरे भेद को अपने तक रखने के वादे से मुकर न जाइएगा। और मैंने उसे एक मन गढ़न्त कहानी सुना दी कि मां-बाप मर चुके हैं और देश के कानून के अनुसार मुझे नदी से तीस मील दूर देहात में एक बूढ़े, कमीने और अत्याचारी किसान का अपरेंटिस (शिशिक्षु) बनने के लिए मजबूर होना

पड़ा है। जब बर्दाश्त की हद हो गई तो मैंने भागने का फैसला किया और
मौके की तलाश में रहने लगा। जल्दी ही मौका मिल भी गया। जैसे
ही किसान कुछ दिनों के लिए बाहर गया मैंने उसकी लड़की के पुराने
कपड़े चुरा कर पहन लिए और भाग छूटा। तीन रातों में यहां तक पहुंचा
हूं। केवल रात में ही चलता था। दिन में कहीं भी छिप जाना और सोता
रहता। चलते समय घर में मांस और रोटी का एक झोला ले लिया था।
सारे रास्ते उससे काम चला और कुछ अब भी बच गया है। अब मामा जरूर
मेरी मदद करेंगे और मुझे अपने साथ रख लेंगे और देख-भाल भी करेंगे।
इसीलिए तो इतना रास्ता चलकर और इतना सब खतरा मोल लेकर इस
कस्बे के लिए चला था और अब तो गोशेन पहुंच भी गया हूं।"

"गोशेन? नहीं, मेरे बच्चे, यह कस्बा गोशेन नहीं है। यह तो सेंट
पीटर्सबर्ग है। गोशेन यहां से दस मील दूर, नदी किनारे ऊपर की ओर
है। तुमसे किसने कह दिया कि यह गोशेन है?"

"मुझे तो सवेरे एक आदमी ने बताया कि यही गोशेन है। धुंधलका
होते ही मैं छिपने और आराम करने के लिए जंगल में घुस रहा था कि
वह मिल गया। मैंने पूछा तो उसने बताया कि यह सड़क आगे जाकर
तिराहे पर दाएं-बाएं मुड़ जाएगी, दाहिनी वाली सड़क पर पांच मील के
फासले पर गोशेन है।"

"जरूर वह शराब पिए होगा। होश-हवास वाला तो कोई ऐसी बात
कहेगा नहीं। पाजी ने तुम्हें गलत बता दिया।"

"हां, लगता तो पिए हुए ही था। लेकिन कोई बात नहीं। मैं चलता
हूं। दिन उगने-उगते तो गोशेन पहुंच भी जाऊंगा।"

"एक मिनट ठहरो। तुम्हारे खाने के लिए कुछ ले आऊं। रास्ते में
खा-पी लेना।"

उसने मुझे खाने को दिया और बोली, "अच्छा बताओ, बेटी हुई
गाय खड़े होने में अपना कौन-सा हिस्सा पहले उठाती है? सोचो मत,
जल्दी बताओ। गाय का कौन-सा हिस्सा पहले उठता है?"

"जी, उसका पिछला हिस्सा—दुम की ओर वाला भाग।"

"और घोड़े —— ?"

"अगला हिस्सा—मुंह की तरफ का भाग।"

"पेड़ के किस बाजू पर काई ज्यादा जमती है?"

"उत्तरवाले भाग पर।"

"अगर पन्द्रह गाएं किसी पहाड़ी ढाल पर चर रही हों तो कितनों के सिर एक ही दिशा में होंगे?"

"सभी के।"

"ठीक है। मेरा खयाल है कि तुम जरूर देहात में रहे हो। ये सवाल मैंने इसलिए पूछे कि कहीं तुम दुबारा तो मेरी आंखों में धूल नहीं झोंक रहे हो। अब बताओ, तुम्हारा असली नाम क्या है?"

"जार्ज पीटर्स!"

"देखो जार्ज, अपना यह नाम ठीक से याद रखना। दुबारा पूछे जाने पर कह मत देना कि जी, मेरा नाम अलेक्ज़ेण्डर है। क्योंकि पकड़े जाने पर जार्ज-अलेक्ज़ेण्डर कहकर गला छुड़ाने की कोशिश करनी पड़ेगी। और लड़की का यह भेष तो तुरत बदल डालो। तुम्हें लड़कियों के तौर-तरीके बिलकुल नहीं आते। हो सकता है कि आदमी धोखा खा जाए, पर किसी भी औरत को तुम धोखा नहीं दे सकते। और जब सुई में धागा पिरोना हो तो सुई को थामकर धागा उसके छेद के पास ले जाओ। सब औरतें इसी तरह सुई में धागा पिरोती हैं। तुम्हारी तरह नहीं कि धागा थामे हुए हैं और सुई को उसके पास ले जा रहे हैं। इस तरह तो केवल आदमी ही धागा पिरोते हैं, औरतें और लड़कियां नहीं; समझे? औरतें चूहे को कोई चीज फेंककर मारती हैं तो पंजों के बल थोड़ा उचककर और हाथ को सिर के ऊपर थोड़ा-सा भोंडे ढंग से लेजाकर और कन्धे के यहां से पूरी बांह घुमाकर मारती हैं और उनका पहला निशाना तो कभी सही नहीं बैठता—चूहे से छह या सात फुट इधर ही गिरता है। कभी भी लड़कों की तरह बांह को थोड़ा-सा तानकर कुहनी और कलाई के जोर से फेंककर मत मारना। यह भी याद रखो कि लड़कियों को कोई चीज दी जाती है तो वे उसे गोद में घुटने फैलाकर लोकती हैं, तुम्हारी तरह घुटने समेटकर नहीं, जैसाकि तुमने सीसे का टुकड़ा लेते समय किया था। तुम्हें धागा पिरोते देख मैं समझ गई थी कि तुम लड़की नहीं, लड़का हो। बाद में और भी

परीक्षा लेकर मैंने अपना इत्मीनान कर लिया। अब तुम अपने मामा के पास जा सकते हो। सारा मेरी विलियम्स, जार्ज अलैक्ज़ेंडर पीटर्स, या जो भी तुम्हारा नाम हो। और अगर किसी मुसीबत में फंस जाओ तो मुझे खबर कर देना। मेरा नाम है मिसेज़ जुडिथ लाफ्टस। मैं जैसे भी बनेगा तुम्हें छुड़ा लूंगी। यहां से सीधे नदी किनारे वाली सड़क-सड़क चले जाओ। कहीं मुड़ने की ज़रूरत नहीं। दुबारा कभी चलना पड़े तो जूते और मोज़े पहनकर निकलना। नदी वाली यह सड़क बहुत पथरीली है और गोशेन तक पहुंचते-पहुंचते तुम्हारे पाव लहू-लुहान हो जाएंगे।"

झोंपड़ी के बाहर आकर मैंने छुटकारे की सांस ली। वहां से पचास गज़ तो मैं ऊपर किनारे की तरफ गया और फिर सिर पर पांव रखकर भागा नीचे की ओर जहां मेरी डोंगी बंधी थी। रस्सा खोलकर डोंगी में कूद पड़ा और ज़ोर-ज़ोर से चप्पू चलाने लगा। पहले धारा की विपरीत दिशा में काफी दूर ऊपर तक गया और फिर डोंगी का मुंह सामनेवाले किनारे की ओर घुमाकर तिरछे कटाव से द्वीप के सामनेवाले सिरे की ओर बढ़ने लगा। टोप मैंने उतार दिया था, क्योंकि अब उसकी कोई ज़रूरत नहीं रह गई थी। जब मझधार में पहुंचा तो कस्बे के घंटाघर की घड़ी बजने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने हाथ रोककर सुना—धीमी पर साफ आवाज़ में ग्यारह बजने के टोके सुनाई दिए। द्वीप पर आकर लगा तो दम फूल रहा था, मगर मैं सांस लेने के लिए रुका नहीं। लपकता हुआ सीधा उस जगह पहुंचा जहां मैंने पहले दिन अपना तम्बू लगाकर आग जलाई थी। वहां आकर मैंने इधर-उधर से कुछ टहनियां और ईंधन बटोर-कर अलाव जला दिया।

फिर मैं डोंगी में सवार हो गया और तेज़ी से अपनी कन्दरा की ओर चला। वह जगह यहां से कोई डेढ़ मील नीचे की ओर थी। मैंने अपनी तेज़ नाव पहले कभी नहीं चलाई थी। जैसे ही डोंगी किनारे लगी उसे छोड़कर जंगल पार किया और लपकते हुए टीला चढ़कर कन्दरा में दाखिल हुआ। जिम ज़मीन पर गहरी नींद सोया पड़ा था।

मैंने उसे जगाकर कहा, "उठो जिम, चलने की तैयारी करो। हमारे पास एक मिनट भी बेकार खोने को नहीं है। हमें पकड़ने वाले दौड़े चले आ

रहे हैं ।"

जिम ने न कुछ कहा, न कुछ पूछा। बहुत डर जाने के बावजूद वह फौरन काम में जुट गया। आधे घण्टे में तो सारा सामान बेड़े पर रखा जा चुका था और हम उसे बेतों के झुरमुट की ओर से नदी में ठेलने के लिए तैयार हो गए थे। पहला काम हमने यह किया कि कन्दरा के मुंह पर जो आग जल रही थी उसे बुझाया और जलती हुई मोमबत्ती तो उसके बाद बाहर लाये ही नहीं।

रवाना होने से पहले मैं डोंगी में किनारे से कुछ दूर जाकर देख आया। नाव कोई रही भी हो तो मुझे दिखाई नहीं दी, क्योंकि किनारे की छाया और तारों के झिलमिल उजाले में बहुत साफ दिखाई नहीं दे रहा था। फिर हमने बेड़े को ठेलकर नदी में उतारा और किनारे-किनारे छाया में द्वीप के आखिरी सिरे की ओर धारा के साथ-साथ बढ़ चले। चारों ओर अब भी बिलकुल सन्नाटा था और हम दोनों भी एकदम चुप थे, कुछ भी बोल-बतिया नहीं रहे थे।

अध्याय १२

द्वीप को पार कर उसके आखिरी सिरे तक पहुंचते-पहुंचते करीब एक गया। अब हम उसे पीछे छोड़कर आगे बढ़ रहे थे, परन्तु हमारा बेड़ा ब धीमी गति से, लगभग चींटी की चाल से चल रहा था। अगर कोई आती दिखाई दे जाती तो हमारा विचार डोंगी से इलिनोइस के कि उतर जाने का था। लेकिन नाव कोई आई नहीं और यह अच्छा ही हुआ क्योंकि डोंगी में बन्दूक, मछली पकड़ने की डोरी या खाने-पीने का साम आदि कुछ भी नहीं रखा था। यों ही भागना पड़ता तो हम काफी मुसीब में पड़ जाते। अपना सारा सामान हमने बेड़े पर ही जमा कर दिया था यह कोई अच्छी बात नहीं थी, परन्तु उस समय इतना सोचने-विचारने क वक्त ही किसके पास था। भागने की जल्दी जो पड़ी थी।

अगर वे लोग द्वीप पर आए होंगे तो जहां मैंने आग जलाई थी वहीं ठिठक गए होंगे और अब रात-भर जिम के लौटने का इन्तज़ार करते रहेंगे। मेरे लिए तो यही बहुत था कि वे हम तक पहुंच नहीं पाए थे। उस आग से यदि वे भुलावे में न भी पड़े हों तो मेरा क्या कसूर ! उन्हें चकमा देने में मैंने तो अपनी जान कोई कसर छोड़ी नहीं थी।

जैसे ही पूरब में लाली फैली हमने अपने बेड़े को इलिनोइस की तरफ काटनवुड की घनी झाड़ियों से आच्छादित एक बड़े-से घुमाव वाले रेतीले पट में उतार दिया और कुल्हाड़ी से बहुत सा काटन-वुड (चिनार) काटकर उसे इस तरह ढक दिया कि दूर से देखने पर वहां एक खोह-सी मालूम पड़े।

जहां हम रुके थे वहां इलिनोइस वाले किनारे घना जंगल था और मिसौरीवाले किनारे पहाड़ियां। धारा भी मिसौरी-तट को छूती हुई बहती थी, इसलिए हमारी तरफ किसी नाव या अगनबोट के आने की सम्भावना कम ही थी। इस तरफ किसी द्वारा देखे या रोके-टोके जाने से निश्चिन्त हम सारे दिन वहां पड़े रहे और नदी में आते-जाते अगनबोटों और नावों को देखते रहे। एक अगनबोट हमें नदी के बीचोंबीच ऊपर की ओर जाता हुआ भी दिखाई दिया था। मैंने जिम को उस औरत के यहां जाने का सारा किस्सा बताया और यह भी कि वह क्या बक-बक करती रही थी। जिम ने कहा कि वह औरत ज़रूर तेज़-तर्रार रही होगी, इतनी तेज़ कि अगर खुद हमारा पीछा करती तो धुएं और आग के भरोसे रहने के बदले कुत्तों को लेकर आती। इस पर मैंने कहा कि यह बात उसने अपने पति को क्यों नहीं बता दी ? जिम बोला कि बताई क्यों न होगी ! ज़रूर बता दी होगी। मेरा तो ख़याल है कि जैसे ही वे इन्तज़ाम करके चलने को हुए होंगे उसने कुत्तों को साथ ले जाने की बात कही होगी और वे कस्बे में कुत्तों का इन्तज़ाम करने चले गए होंगे। तभी उनको इतनी देर हो गई और हमें भागने का मौका मिल गया ; वर्ना इस समय गांव से सोलह-सत्रह मील दूर यहां बैठे न होते, बांध-पकड़कर उसी पुराने कस्बे में पहुंचा दिए जाते। तब मैंने यह कहकर बात ख़त्म कर दी कि कारण जो भी रहा हो, वे जानें ; समय पर पहुंच नहीं पाए यह निश्चित है और हमें भागने का मौका मिल गया।

जब अंधेरा घिरने लगा तो हमने काटनवुड की झाड़ियों से बाहर आकर दाएं, बाएं और सामने भी देखा—कहीं कोई नहीं था, सारी नदी सूनी पड़ी थी। अब जिम तेजी से काम में लग गया। उसने बेड़े के फर्श के कुछ पटरे उखाड़कर वहां एक टपरिया-सी बनाई, जिसके नीचे हम धूप और वर्षा में सिर छुपा सकते थे और समान को भी भीगने से बचाया जा सकता था। टपरिया का फर्श उसने बेड़े के फर्श से करीब एक फुट ऊंचा रखा ताकि अगनबोट के हलकोरों से कम्बल और दूसरा सामान गीला न होने पाए। टपरिया के बीचोबीच हमने चौखट बांधकर मिट्टी की चार-पांच इंच मोटी तह चढ़ा दी। यहां ठण्ड-शीत में मजे से आग जलाई जा सकती थी और टपरिया के अन्दर होने से बाहर दिखाई देने का अन्देशा भी नहीं था। एक डांडा भी हमने और बना लिया कि यदि कोई-एक कहीं फंसकर टूट-टाट जाए तो हमारा काम न रुके। फिर एक दुशाखी लकड़ी खड़ी कर हमने उसमें पुरानी लालटेन को टांग दिया। यह इसलिए कि जब कोई अगनबोट बहाव की ओर आता दिखाई दे तो लालटेन जलाकर उसे सचेत करदें कि वह हम पर चढ़ न जाए। बहाव की विपरीत दिशा में जाने वाले अगनबोटों के लिए लालटेन जलाना इसलिए जरूरी नहीं था कि नदी का पानी अब भी कहीं-कहीं किनारों पर फैला हुआ था और उलटी दिशा में जाने वाले अगनबोट मंझधार के बदले थोड़ा हटकर अपेक्षाकृत शान्त और स्थिर पानी में चलना पसन्द करते थे।

दूसरी रात हम चारेक मील प्रति घण्टे की रफ्तार से बहनेवाली धारा में करीब सात-आठ घण्टे चलते रहे। यह समय हमने मछलियां पकड़ने, बातें करने और नींद न आ जाए इसलिए बीच-बीच में तैरते रहकर बिताया। नदी की शान्त धारा, बेड़े की मन्थर गति और हम पीठ के बल लेटे आसमान के तारों को देखते चले जाते थे। कुल मिलाकर वातावरण बड़ा ही रहस्यात्मक हो उठा था। रात के उस सन्नाटे-भरे मौन को भंग करने का मन ही नहीं होता था। बातें हम कनफुसकियों में करते और हंसी को ओठों के बाहर भी नहीं निकलने दे रहे थे। डरते थे कि कहीं वह पवित्र शान्ति भंग न हो जाए। मौसम भी सब मिलाकर बढ़िया था, बहुत ही बढ़िया। उस रात और उसके बाद की रात और उसके भी बाद की

रात मौसम को लेकर हमें कोई परेशानी नहीं हुई।

हर रात हम नये-नये कस्बों और शहरों के आगे से गुज़ से दूर ऊंची, काली पहाड़ियों पर बिजली बत्तियों की सिर्फ कतारें दिखाई देती थीं, मकान तो हम एक भी नहीं देख स रात हम सेंट लुई के सामने से गुज़रे तो लगा जैसे दुनिया-भर बत्तियां यहीं जमा कर दी गई हों। सेंट पीटर्स बर्ग में लोगों था कि सेंट लुई में बीस या तीस हज़ार लोग रहते हैं। मुझे इस विश्वास नहीं हुआ था, मगर इस समय रात करीब दो बजे यहां रोशनियों की जगमगाहट देखकर इस बात की सच्चाई को मान सारा शहर नींद में बेसुध पड़ा था, कहीं कोई भी जाग नहीं रहा तरह की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

अब मैं हर रात करीब दस बजे किसी गांव के किनारे उत दस-पन्द्रह सेंट खर्च कर पाने के लिए, सूअर का मांस, बेकन, पि खाखाने की ऐसी ही कोई चीज़ खरीद लाता था। कभी दड़बे से कोई मुर्गी हाथ लग जाया करता था। पिताजी हमेशा कहा मुर्गी अब भी मिलता हो ज़रूर ले लेना चाहिए, अव्वल तो मु खा जाएगा और न खाया तो किसी को भी देकर परोपका सकता है, और कोई भी अपने साथ किए गए उपकार को नहीं है। मैंने तो पिताजी को कभी परोपकार करते हुए देखा हमेशा अपने ही काम रख लिया करते थे; मगर बात सदा क कार की और दूसरों पर अहसान की।

सूर्योदय से पहले, रात के आखिरी पहर में मैं खेतों में घू कभी तरबूज़, कभी खरबूजा, कभी कुम्हड़ा तो कभी भुट्टे पिताजी इसे उधार माना करते थे और मैं भी इसी मुहावरे का था। जिस से कहना, कभू, उधार में डाकू। पिताजी कहा करकर कभी भी पैसा चुकाने का विचार हो तो इस लेने में कोई हर्ज नहीं। मगर किस्मत को रास थी कि यह बे समय बदल दिया गया है और कोई भी बगर अपनी जरूरत

पर आधी-आधी; पूरी बात दोनों में से किसी ने नहीं कही। तब हमने बैठकर फैसला किया कि उधार लानेवाली सूची में से आधे न सही, कुछ चीजों के नाम तो निकाल ही देना चाहिए, जिससे आधे सत्य का पालन किया जा सके और तब उधार लेने में कोई बुराई नहीं रह जाएगी। एक पूरी रात हम बेड़े में चलते हुए चीजों के नाम सोचते रहे—तरबूज का नाम निकालें या कंटेलोप (फूट?) का या खरबूजा का या और किसी चीज का? सोचते-सोचते सवेरा हो गया, पर हम इस नतीजे पर भी पहुंच गए थे कि परसियन[1] और जंगली सेब का नाम उधार ली जानेवाली चीजों की सूची में से निकाल देना चाहिए। हमने सन्तोष की सांस ली। खासकर मुझे बहुत खुशी हुई, क्योंकि जंगली सेब अच्छे नहीं होते, खट्टे लगते और गला पकड़ते थे और परसियनों के पकने में अभी दो-तीन महीनों की देर थी।

कभी-कभी हम मुर्गाबी का शिकार कर लेते थे। आमतौर पर उसी को अपनी गोली का निशाना बनाते जो या तो सवेरे बहुत जल्दी उठ जाती या रात देर से सोती थी। इस तरह कुल मिलाकर हमारे दिन बड़े चैन से कट रहे थे।

पांचवी रात, सेंट लुई के आगे, आधी रात के बाद हम जोर के तूफान में फंस गए। भयंकर गरजन-तरजन के साथ आसमान फट पड़ा। मूसलाधार वर्षा होने लगी। चारों ओर पानी-ही-पानी हो गया। बादलों का गरजना और बिजली का कड़कना-कौंधना दिल दहलाने लगा। हम टपरिया में जा बैठे और बेड़े को भाग्य भरोसे छोड़ दिया। जब बिजली चमकती तो हमें क्षण-भर के लिए अपने सामने दूर तक फैली हुई नदी और दोनों किनारों के ऊंचे-ऊंचे पहाड़ी कगारे दिखाई दे जाते थे। एक बार इसी तरह बिजली चमकी तो मैंने कहा, "जिम, वह देखो, वहां।" एक अगनबोट था जो किसी चट्टान से टकराकर टूट गया था। वह नदी की धारा में बहता हुआ सीधा हमारी तरफ चला आ रहा था। बिजली चमकी तो वह अन्दर-बाहर से एक ही नजर में बिलकुल साफ-साफ दिखाई दे गया। वह अगनबोट एक ओर को काफी झुक गया था और उसके ऊपरवाले डेक का कुछ ही हिस्सा पानी के ऊपर था। जब भी बिजली कौंधती उसकी चिमनियां

---

१. एक [illegible]।

और रस्से वगैरह साफ दिखाई दे जाते थे। बड़ी घण्टी के पास रखी एक कुर्सी और उसकी पीठ से टंगी पुरानी-धुरानी टोपी दिखाई दे जाती थी।

उस तूफानी रात में वह टटा हुआ अगनबोट नदी की बीच धारा में इतना अकेला, उदास और रहस्यात्मक लग रहा था कि मेरी करुणा सहसा जाग्रत हो गई और उस तक जाने और उसे अन्दर से देखने की बालसुलभ जिज्ञासा और कुतूहल जोर मारने लगे। आखिर मैं अपने को जब्त न कर सका और बोला, "आओ जिम, चलकर उसे देखें।"

जिम पहले तो बिलकुल तैयार न हुआ। उसने विरोध किया, "उस टूटे अगनबोट के अन्दर जाने की बात तो दूर मैं उसके पास भी नहीं फटकूंगा। यों ही मुसीबतें क्या कम हैं कि एक और ओढ़ी जाए। हम अपने हाल में मस्त हैं, वह अपने हाल में रहे, हमें उससे क्या! कोई रखवाला हुआ तो उलटे लेने के देने पड़ जाएंगे।"

"रखवाला होगा तुम्हारा सिर!" मैंने कहा, "टूटे अगनबोट में वह काहे की रखवाली करेगा? सूने कमरों, खाली गलियारों और पाइलट-घर का? कौन मूर्ख होगा जो इसके लिए तूफानी रात में टूटे हुए और कभी भी डूब जाने वाले अगनबोट में रखवाली करता हुआ अपनी जान जोखिम में डालेगा? तुम्हीं बताओ, इसके टुकड़े उड़ने में अब देर कितनी है?" जिम के पास मेरे इस तर्क का कोई जवाब ही नहीं था, वह क्या कहता! मैं आगे बोला, "मुमकिन है वहां काम की कोई चीज हमारे हाथ लग जाए। कप्तान के कमरे में कुछ न होगा तो सिगार तो होंगे ही, बढ़िया सिगार—पांच-पांच सेंट वाले; और शायद कुछ नकदी भी हाथ लग जाए। अगनबोट के कप्तान कितने मालदार होते हैं, यह शायद तुम्हें नहीं मालूम। साठ डालर महीना तनखा पाते हैं और पैसे को तो कुछ समझते ही नहीं—पानी की तरह बहाते हैं। जिस चीज पर मन आ गया खरीदकर छोड़ेंगे, चाहे दाम कुछ भी हो। मेरे अच्छे भले जिम, जेब में मोमबत्तियां रखकर उठ खड़े हो। मैं अब रुक नहीं सकता। उसकी अन्दर से जांच-पड़ताल किए बिना मुझे चैन नहीं मिलेगा; चलो जिम, चलो! जल्दी करो! आंखों के सामने यह अगनबोट डूब गया तो जनम-भर पछतावा बना रहेगा। क्या टाम सायर होता तो इस मौके को यों ही चला जाने देता? हरगिज नहीं। वह

कहता, लो 'एडवेंचर' का—साहस-भरा काम करने का मौका मिल रहा है और तुरन्त पहुंच जाता और सो भी अपने खास अन्दाज़ से। चाहे मौत भी सामने क्यों न हो, वह कदम पीछे न हटाता। और जानते हो क्या कहता? कहता कि मैं क्रिस्टोफर कोलम्बस हूं और अपने भावी साम्राज्य की खोज में जा रहा हूं! अगर आज टाम सायर यहां होता तो मुझे तुम्हारे निहोरे न करने पड़ते!"

जिम बड़बड़ाता तो रहा, मगर आखिर राजी हो गया। उसने यह ज़रूर कहा कि हमें इतने ज़ोर-ज़ोर से नहीं बोलना चाहिए, जब धीरे बोलने से काम चल जाए तो ज़ोर से क्यों बोलना चाहिए।

फिर बिजली चमकी और अगनबोट दिखाई दिया। अब वह हमारे बहुत करीब आ गया था। हमने फौरन अपने बेड़े को एक रस्सी के सहारे बोट के क्रेन से बांध दिया।

जिधर हम खड़े थे उधर से डेक बहुत ऊंचा था। अंधेरे में हम ऊपर चढ़ने के लिए कोई छड़ या जंजीर टटोलने लगे। सहसा अगनबोट के पेटे का उभरा हुआ पटरा हमारे हाथ आ गया और हम फिसलते और रेंगते हुए ऊपर जाने की कोशिश करने लगे। तभी ऊपरवाले रोशनदान का बाहर की ओर निकला हुआ हिस्सा मिल गया और हम उसकी राह अन्दर पहुंच गए। सामने दो ही कदम पर कप्तान का कमरा था और उसका दरवाज़ा खुला हुआ था। मगर दूसरे ही क्षण हमने चकित होकर देखा कि बीच वाले हाल में उजेला हो रहा था और वहां से लोगों के धीमे स्वर में बातें करने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी।

जिम ने मेरे कान के पास मुंह लाकर कहा, "खतरा है। मैं जाता हूं। तुम लौट चलो।"

मैंने कहा "अच्छा!" और मौटने जा ही रहा था कि एक रुआंसी आवाज़ सुनाई दी "भाइयो, दया करो! कसम खाता हूं, कभी किसी से नहीं कहूंगा।"

और डरती हुई एक दूसरी आवाज़ सुनाई दी, "तेरी सब कसमें झूठी हैं जिम टर्नर! तेरी बात का कोई भरोसा नहीं। लूट के माल में हमेशा तुझे ज्यादा हिस्सा चाहिए और इसी तरह डरा-धमकाकर तू सबाया

ड्योढा और दूना माल ऐंठता रहा है। हमेशा तूने यही कहा कि दो नहीं तो भेद खोल दूगा। जा, खोल भेद! इस बार धरा गया झूठे! बेईमान!"

मैंने मुडकर देखा तो जिम जा चुका था और इधर मैं बांध तोड़ रहा था। सोचा कि टाम सायर होता तो क्या वह और इतना सब सुनने के बाद लौट जाता? अन्दर से ज हरगिज नहीं। तो मैं भी नहीं लौटूंगा और देखूंगा कि माजरा मैं फौरन रेंगता हुआ उस ओर चल दिया जहां उजेला था औ आवाजें सुनाई दे रही थीं। भण्डार-घर के सामने से रेंगकर बड़े हाल में पहुंचा तो एक आदमी हाथ-पांव बांधे जमीन और दो आदमी उसके पास खडे थे। एक के हाथ में धुंधली-सी और दूसरा नीचे पड़े आदमी के सिर पर पिस्तौल ताने हुए था।

मेरे वहां पहुंचने पर पिस्तौल वाले आदमी ने कहा, "जी कि इस नीच कमीने के भेजे में गोली उतार दूं। इसे तो कब खतम कर देना चाहिए था। बेईमान कहीं का!"

नीचे पड़े हुए आदमी ने घिघियाकर कहा, "बिल, तुम्हारे हूं। इस बार बख्श दो! कसम खाता हू, कभी किसी से नहीं क

देर तक यह क्रम चलता रहा। जब वह नीचे पड़ा आद कसमें खाने लगता तो लालटेन वाला ठठाकर हंसता और कह ससुरा अब कैसा घिघिया रहा है! और बटवारे के समय कैसा हो रहा था। अब कैसे हो बच्चू! सारी अकड़ उलटे रास्ते निक और एक बार उसी लालटेन वाले ने कहा" अब लगा है हाथ- और अगर उस समय हमने झपटकर काबू न कर लिया होता कर पटक न देते तो यह कसाई हम दोनों को ही जिबह कर सिर्फ इसलिए कि हम अपना हक और हिस्सा मांग रहे थे। मेहनत हम करें, पर इसे चाहिए मलीदा और हमें सिर्फ खुरच करो तो कमीना कहता क्या है कि भेद खोल दूगा। जा, खोल अच्छा बिल, पिस्तौल हटा लो।"

बिल ने कहा, "नहीं हटाऊंगा जेक पैकर्ड! मैं इस

की जान लेकर ही रहूंगा। जानते हो इसने बूढ़े बेचारे हेर फ्रीन्ड को मारा है और सो भी बिल्कुल बेक़सूर ! अब यह जी नहीं सकता।"

"मगर मैं नहीं चाहता कि यह मरे ! जानते हो क्यों ?"

"भगवान तुम्हारा भला करें जेक पैकर्ड ! ज़िन्दगी-भर तुम्हारी इस बात को भूलूंगा नहीं।" ज़मीन पर पड़े आदमी ने बिसूर कर कहा।

लेकिन पैकर्ड ने उसके कहे पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने लालटेन को एक खूंटी पर टांग दिया और अंधेरे में उस ओर आने लगा जहां मैं छिपा हुआ था। उसने बिल को भी इशारे से अपने साथ आने के लिये कहा। मैं घबरा कर कोई दो गज परे खिसक गया। तभी अगनबोट डगमगाया और एक तरफ को तिरछा होकर झुक गया। अगर उस समय ज़रा-सा भी चूक जाता तो उन दोनों आदमियों के पावों में लुढ़ककर पहुंच जाने में कोई कसर नही थी। फिर तो ज़रूर पकड़ लिया जाता। मगर गज़ब की फुर्ती से मैं ऊपर वाले गोदाम के अन्दर रेंग गया।

दूसरे ही क्षण पैकर्ड मेरे गोदाम के सामने आकर बोला, "इधर चले जाओ यहां।"

गोदाम के अन्दर पहले पैकर्ड आया और उसके पिछे बिल। लेकिन तब तक मैं ऊपर वाली बर्थ पर पहुच गया था और पछता रहा था कि यह कहां आ फसा ! वे दोनों अन्दर आकर मेरी बर्थ के ठीक सामने खड़े हो गए और उसी बर्थ की कगार पर हाथ रखकर बातें करने लगे। अंधेरे में मैं उन्हें देख तो नही सकता था, लेकिन उनके मुह से आती शराब की बू से जान गया था कि वे कहां खड़े हैं। मेरा शराब न पीना उस रात बहुत काम आया, वर्ना सांस की गन्ध से फौरन पकड़ लिया जाता। सांसों की आवाज़ से वे यों भी पकड़ सकते थे, परन्तु मैं बिलकुल कदम साधे पड़ा था। एक तो बुरी तरह डर गया था और फिर सांस लेता या उनकी बातें सुनता ? दोनों काम तो एक साथ किये नहीं जा सकते थे। ऐसा आदमी तो दुनियां में विरला ही होगा जो सांस भी लेता रहे और दूसरों की कनफुसकियां भी सुनले। वे बहुत मन्द स्वर में और जल्दी-जल्दी बोल रहे थे।

[illegible]

धमका दे चुका है और सोनकर रहेगा । वह हम दोनों का हिस्सा भी हड़पना चाहता है, इसीलिए उसने झगड़ा किया । हमारी मदद, हमारे लिहाज और हमारी सेवाओं का उसने कोई ख्याल नहीं किया । तुम मेरी बात गांठ बांध लो, चाहे आज अपना पूरा हिस्सा उसे दे दो वह मौका मिलते ही सरकारी गवाह बन जायेगा और हमें-तुम्हें फंसा देगा । अव्वल नम्बर का कमीना और दोगला है वह । ऐसे आदमी को हर्गिज नहीं छोड़ना चाहिये । मार-पूर कर झगड़ा खत्म करो ।"

"झगड़ा तो मैं खत्म करना चाहता हूं ।" पंडंक ने यह बात बहुत शान्ति से कही थी ।

"लो, और मैं समझ रहा था कि तुम इस बात के खिलाफ हो । चलो, अच्छा हुआ । अब चलकर उसे ठिकाने लगा दें ।"

"एक मिनट ठहरो ! पहले मेरी पूरी बात सुनलो । अभी मैंने बताया ही कहां है कि क्या करना चाहिए । गोली से मारना एक तरीका है और बुरा भी नहीं है, मगर दूसरे भी तरीके हैं । अगर गुड़ से काम बनता हो तो जहर क्यों देना चाहिए, बताओ ? मारना ही है तो मारो, पर इस तरह मारो कि किसी को पता न चले, शोर-गुल न हो और हम खतरे से बचे रहें । एक दोगले को मारो भी और खतरा भी मोल लो, यह तो अपने को पसन्द नहीं । बोलो, ठीक कह रहा हूं न ?"

"बिलकुल ठीक । मगर करना क्या है, यह तो बताओ ?"

"बताता हूं । सुनोः यहां जो भी सामान बचा रह गया है उसे झाड़-पोंछकर ले चलो और किनारे उतरकर सारा माल जंगल में छिपा दो । हम भी वहीं पड़े रहेंगे । इस मुर्गे को यहां बंधा छोड़ जाएंगे । दो घण्टे से ज्यादा यह अगनबोट चलने का नहीं । कुछ डूब जाएगा । कुछ टूट-टाटकर बह जाएगा । साथ ही वह टर्नर का बच्चा भी डूब मरेगा । और मरेगा अपनी करनी से । इस तरह जब सांप भी मर रहा है और लाठी भी नहीं टूट रही है तो हम उसके नापाक खून से अपने हाथ गन्दे क्यों करें ? गोली मारने और छुरा घोंपने से क्या यह बेहतरीन तरीका नहीं है ? अगर किसी आदमी को बगैर मारे ठिकाने लगाया जा सकता है तो मैं कभी नहीं चाहता कि वह मारा जाए—ऐसे समय खून करना न अक्लमन्दी की बात

है कौन सा बच्चो [illegible]। बोलो, ठीक तो रहे हुक ?"

"बिलकुल ठीक। वापस आया और पाया सभी ठीक। मगर हां, हमें तुम्हारी [illegible] को ! मगर यार, एक बात बताओ अगर अगनबोट डूबा नहीं तो ?"

"तो क्या ! अगले में तुम्हारे अपना [illegible] है ही। वह यहां [illegible] है ? लेकिन पहले तो एक बार झांक कर देख तो लो, या अब नहीं मरते ?"

"झांक सकते हैं। तो आओ, चलें।"

वे दोनों चले गए। मैं पसीने-पसीने हो उठा था। फिर भी कोशिश कर के नजर और मन अंधेरे में टटोलता हुआ आगे बढ़ा। किसी तरह घुटे हुए स्वर में बोला, "जिम !" जवाब में फौरन जिम की कराहट-सी सुनाई दी। मानो मेरी बगल में ही खड़ा था।

मैंने कहा, "जिम, यह बेकार सहराने और कराहने का वक्त नहीं है। यहां, इस अगनबोट पर अभी हत्यारों की डाकास चौकड़ी जमी हुई है। अगर हमने उनकी नाव को कब्जे में करके बहा नहीं दिया तो इस टोली का एक आदमी खासी मुसीबत में पड़ जाएगा। अगर नाव हमारे कब्जे में आगई तो फिर उन सबकी एक ही गत होगी और तीनों पुलिस के हवाले किए जा सकेंगे। जल्दी करो। खड़े देखो मत ! मैं नाव को इधर ढूंढता हूं, तुम उधर ढूंढो। ढूंढते हुए तुम बेड़े पर मिलना मैं भी वहीं……"

मेरी बात अधूरी ही रह गई। जिम का दुःख में डूबा, निराशा से भरा स्वर सुनाई दिया, "बेड़ा ? अब बेड़ा रहा ही कहां ? रस्सी टूट गई और वह बह कर चला गया—और हम यहां इस चूहेदानी में फंस गए !"

अध्याय १३

मेरी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गई। एक क्षण लगा कि बेहोश होकर गिर पड़ूंगा। खूनी लुटेरों के साथ नदी की बीच धारा में ऐसे [illegible] कता था ! परिणाम

की कल्पना-मात्र से मुझे चक्कर आने लगे। लेकिन रोकर भी क्या होता? और रोने सोचने का वक्त ही कहां था? अबतो जैसे भी बने उस नाव को खोजना होगा—नदी में बहाने के लिए नहीं, अपनी मुक्ति के लिए। कांपते और लड़खड़ाते हुए हम डोंगी की तलाश में चले। बड़ी मुश्किल से और बहुत देर में हम डेक के ऊपर से होकर अगनबोट के पीछे वाले हिस्से तक पहुंचे। लगता था जैसे युग गुजर गए हों। लेकिन डोंगी वहां नहीं थी। जिम इतना डर गया था कि वहां से आगे बढ़ने की उसकी हिम्मत ही नहीं हो रही थी। बोला, मेरी तो ताकत जवाब दे गई। मैंने कहा, मांदे आदमी, चलो, आगे बढ़ो, हिम्मत से काम लो! यहां फंसे रह गए तो बे मौत मरना होगा! किसी तरह वहां से आगे बढ़े। छेदों में पांव फंसाते, खिड़कियों से लटकते और अंधेरे में टटोलते हुए चले जा रहे थे। इस तरह उस रोशनदान के पास पहुंचे जिसकी राह अगनबोट में उतरे थे। उसका छोर पानी में डूब चुका था। वहां से खिसकते हुए बड़े हाल के दरवाजे के पास पहुंचे तो नीचे डोंगी-सा कुछ दिखाई दिया। मैंने अंधेरे में आंखें फाड़कर देखा: हां, डोंगी ही थी। जी-में-जी आया। मेहनत सकारथ हुई। मैं डोंगी में उतरने जा ही रहा था कि दरवाजा खुला और एक आदमी ने अन्दर से अपना सिर निकाला। वह मुझसे कुछ ही फुट के फासले पर रहा होगा। मैंने सोचा, अब मरे! लेकिन तभी उसने सिर अन्दर कर लिया और कहता सुनाई दिया, "बिल, अपनी लालटेन को तो सामने से हटा लो; आंखों में घुसी जा रही है।"

फिर उसने डोंगी में बोरी या गठरी-सी कोई चीज गिराई और आप भी उतरकर बैठ गया। वह पैकर्ड था दूसरे ही क्षण बिल दरवाजे में से निकला और वह भी नाव में पैकर्ड के पास आ बैठा।

अब पैकर्ड ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा, "सब ठीक है। चलो, चलें!"

मुझे लगा कि खिड़की का खोमचा मेरे हाथ से छूट जाएगा और मैं नदी में जा गिरूंगा!

तभी बिल ने कहा, "जरा ठहरो! तुमने उसकी तलाशी तो ले ली?

है और न अच्छी नीति। बोलो, ठीक कह रहा हूं न?"

"बिलकुल ठीक। बावन माशा और पाव रत्ती ठीक। मान गए उस्ताद तुम्हारी खोपड़ी को! मगर यार, एक बात बताओ अगर अगनबोट टूटकर डूबा नहीं तो?"

"तो क्या! अखीर मे तुम्हारे वाला तरीका तो है ही। वह कहां जाता है? लेकिन पहले दो एक घण्टे रुककर देख तो लो; या रुक नहीं सकते?"

"जरूर रुक सकते हैं। तो आओ, चलें।"

वे दोनों चले गए। मैं पसीने-पसीने हो उठा था। फिर भी फौरन बर्थ पर से उतरा और घुप्प अंधेरे में टटोलता हुआ आगे बढ़ा। किसी तरह घुटे हुए स्वर में बोला, "जिम!" जवाब में फौरन जिम की कराहट-सी सुनाई [illegible]

...न से भर रोंगटे खड़े हो गए।

...ने जिम से कहा, "जैसे ही रोशनी दिखाई दे उससे सौ गज इधर या ...सी जगह किनारे लगना जहां तुम नाव सहित आराम से छिप सको। ...उन्हें बचा लाने के लिए किसी को भेजने की कोशिश करूंगा। कोई ...मा गढ़ लूंगा। डूब मरने से तो बचें, फिर भले ही फांसी चढ़ा दिए ...मारी बला से।"

"नहीं तो। क्या तुमने नहीं ली ?"

"ऊं हूं !…अरे, तब तो उनके हिस्से का रुपया उनके पास रह गया।"

"चलो, चलो ! उनपर रुपया छोड़ना बेकार है। अब सारा माल-ताल ले लिया तो रुपया क्यों छोड़ा जाए ?"

"उसे शुबहा हो जाएगा और हमारी चाल भी उजागर हो जाएगी।"

"शुबहा क्या होगा खाक ! और हो तो होता रहे। रुपया हम उनपर छोड़ नहीं सकते। आओ, चलें।"

और वे दोनों फिर अन्दर चले गए।

दरवाजा आप ही धड़ाम से बन्द हो गया, क्योंकि वह झुकाव की तरफ था। मैं उसी क्षण डोंगी में उतर गया और मेरे पीछे जिम भी। केवल चाकू से रस्सा काटने की देर थी, नाव मरं से बह चली।

न हमने डाड़ों को छुआ, न बोले-बतियाये। कनफुसकियां करने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी। बस, दम साधे चुप बैठे रहे। नाव चुपचाप तीर की तरह चली जा रही थी। कब अगनबोट का पेडल बाक्स आया, कब उसके पिछले हिस्से के आगे से गुजरे, कुछ पता ही न चला। तीनेक सेकण्ड में तो हम उससे सौ गज दूर निकल आए थे। वह हमारे पीछे अंधेरे में अलोप हो गया। धुंधली-सी आकृति भी नहीं दिखाई दे रही थी। हम सही-सलामत निकल ही नहीं आए थे, खतरे से बाहर भी हो गए थे।

जब चारेक सौ गज दूर निकल आए तो हमें अगनबोट के दरवाजे पर लालटेन के उजाले का धुंधला-सा धब्बा एक क्षण के लिए दिखाई दिया समझ गए कि उन बदमाशों को नाव के गुम होने का पता चल गया है अब तो जो गति जिम टर्नर की होने वाली थी वही उनकी भी होगी, औ इस बात को वे भी जान ही गए होंगे।

जिम ने चप्पू संभाले और हम अपने बेड़े की तलाश मे दौड़ पड़े लेकिन अब मुझे उन अभागों के लिए अफसोस हो रहा था। अभी तक तो उनके संकट का खयाल ही नहीं आया था, पर अब चिन्ता होने लगी। खूनी और लुटेरे हुए तो क्या, मौत तो उनके सामने भी मुंह बाए खड़ी थी ! मानलो कि मैं ही खूनी होता और ऐसे संकट में फंस जाता तो क्या होता ?

"टूटा हुआ कौन-सा अगनबोट ?"

"वह एक ही तो अगनबोट टूटा हुआ है।"

"तुम्हारा मतलब 'वाल्टर स्काट' से तो नहीं है ?"

"जी हां, वही।"

"तो हो गया कल्याण ! वो लोग उधर में काहे को मरने को गया ?"

"जान-बूझकर थोड़े ही गए।"

"अरे, इतना तो अपुन भी समझते हैं। जान-बूझकर तो वोही जाएगा जिसका भेजा फिरेला होगा ! फौरन से पेश्तर उधर में से निकलना नहीं गया तो सबका राम-नाम सत हो जाएगा न ! मगर पहले यह बताओ कि उधर में गया तो गया कैसे ?"

"जी, बात यह है कि मिस हूकर गई हुई थी शहर···"

'यानी कि बूथ्स लैंडिंग, गई होगी सैर-सपाटे के लिए। फिर ?"

"वह गई थी बूथ्स लैंडिंग मिलने-जुलने के लिए। शाम को रवाना हुई घोड़े वाले बड़े बजरे से अपनी दोस्त के यहां जाने के लिए। अच्छा भला-सा नाम है, उन्होंने बताया भी था, पर याद नहीं आ रहा। रात वे अपनी सहेली के यहां बिताना चाहती थीं। साथ में उनकी हब्शी नौकरानी भी थी। मगर बदकिस्मती से पतवार कहीं गिर गई और बजरा उल्टे मुंह धारा में पड़ गया और दो मील बहने के बाद जा टकराया उस टूटे अगनबोट से। बजरे के टुकड़े उड़ गए, मल्लाह, घोड़ों और हब्शी नौकरानी का कहीं पता नहीं चला। लेकिन मिस हूकर बच गईं। टूटे अगनबोट का एक कड़ा उनके हाथ आ गया था। वे उसी के सहारे उस पे चढ़ गईं। अंधेरा होने के कोई घण्टे-भर बाद हम अपनी तिजारती डोंगी में लौट रहे थे। अगनबोट दीखा नहीं और सीधे जा टकराए उससे। हमारा सिर्फ एक आदमी लापता हुआ, बिल व्हिपल—बहुत नेक इन्सान था, काश, मैं मर जाता उसकी जगह !"

"बाप रे ! बड़ा दर्दनाक हादसा हुआ। फिर तुम लोगों ने उधर में क्या किया ?"

"चिल्लाते रहे, बहुत देर मदद के लिए पुकारते रहे, मगर कोई-सुनता और हम बीच धारा में थमे हुए; किनारे दोनों बहुत दूर, ऐसे में

उसका कन्धा झिंझोड़ा और मुक्का फाड़कर रोने लगा।

वह हड़बड़ा कर जाग पड़ा और घबराया-सा आंखें फाड़े चारों ओर देखने लगा कि माजरा क्या है; मुझे देखकर उसने इत्मीनान से अंगड़ाई ली और जमाई लेने के बाद बोला, "क्या बात है, बच्चे ? रोओ मत ! जो बात हो बताओ।"

मैंने कहा, "पिताजी और अम्मा जी और बहिन और···"इतना कहकर मैं फिर रोने लगा।

उसने कहा, " रोओ मत ! बताओ, क्या बात है ? मुसीबतें तो सभी पर आती हैं और चली भी जाती हैं। सब ठीक हो जाएगा। तुम बताओ तो, बात क्या है ?"

"वे···वे···क्या इस बजरे के चौकीदार तुम्ही हो ?"

"हां !" उसने बड़े गर्व के साथ कहा, "कप्तान और मालिक, खलासी, और नाविक, चौकीदार और मुकादम सभी कुछ अपुन ही हैं। यहां तक कि कभी-कभी तो माल-असबाब और मुसाफिर भी अपुन ही होते हैं। यह सच है कि जिम ह्यानंबैक जितना अपुन अमीर नहीं हैं और न अपुन के पास उसकी तरह हर ऐरे-गैरे और नत्थू खैरे को लुटाने के लिए फालतू पैसा ही है। तो भी अपुन ने कई बार उसके मुह पर कह दिया है कि मरते मर जाऊंगा, पर तेरे साथ कारबार नही करूंगा। अपुन ठहरे पैदाइशी मल्लाह और सिर्फ मल्लाही के कामो मे अपुन को मजा आता है। वह हजार डालर दे तो भी अपुन शहर छोड़ कर और नदी-नाव छोड़कर उसके काम के वास्ते जाने का नही। अपुन सफा बोल दिया है, उधर में कुछ नहीं धरा है। तुम चाहे···"

मैंने उसकी बातो के सिलसिले को खत्म करते हुए कहा, "वे सब ब··· में हैं और···"

"कौन ?"

"बताया न—पिता जी और अम्मां जी और बहिन और मिस वगैरह। अगर आप बजरा लेकर ऊपर की ओर चले जाएं···"

"ऊपर ? ऊपर किधर में ? किधर में हैं बोलो न ?"

"टूटे हुए अगनबोट में।"

रमा हुआ भी था। मैं इंजन वाले बजरे को अपने सामने रवाना होते देख लेना चाहता था, तभी निश्चिन्त होकर आगे बढ़ सकता था। वैसे कुल मिलाकर मैं सन्तुष्ट था, क्योंकि उस टोली के लिए जितना करते बन सकता था, मैंने कर दिया था। दूसरे लोग तो शायद इतना भी नहीं करते। मन ही मन मना रहा था कि मेरी यह बात किसी तरह विधवा को मालूम हो जाए। मैंने बदमाशों को बचाया है यह जानकर वह जरूर खुश होती। विधवा और दूसरे भी बहुत-से भले लोग बदमाशों और मरे हुओं में काफी दिलचस्पी लेते हैं। बदमाशों को वे पतित और भटके हुए समझकर हमेशा उनके उद्धार की बात सोचते रहते हैं।

थोड़ी देर बाद मुझे उस टूटे हुए अगनबोट की धुंधली आकृति धारा में बहकर आती दिखाई दी। देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए, फिर भी मैं डोंगी लेकर उसकी तरफ बढ़ा। अब उसका काफी हिस्सा डूब चुका था। देखते ही समझ गया कि अब इसमें कोई जिन्दा नहीं बचा होगा। एक बार डोंगी से उसका पूरा चक्कर लगाया और चिल्ला-चिल्लाकर पूछा भी। कोई जवाब नहीं मिला। बिलकुल मौत का-सा सन्नाटा छाया रहा। उस बदमाश टोली के लिए थोड़ा दुःख हुआ लेकिन ज्यादा नहीं; बस क्षण-भर के लिए जी भर आया। सोचा, यदि वे इस तकलीफ को सह सके तो मैं भी सह सकूंगा।

इतने में इंजन-बजरा आता दिखाई दिया। मैं लम्बा चक्कर काटकर नदी के बीच में आ गया। जब विश्वास हो गया कि कोई देख नहीं सकता तो चप्पू उठाकर पीछे की ओर देखने लगा। इंजन-बजरा टूटे अगनबोट का चक्कर लगाकर मिस हूकर को साथ ढूंढ़ रहा था। कप्तान साहब जानते थे कि हार्न बैंक चाचा अपनी भतीजी की लाश के बदले अच्छा मेहनताना दे मरेंगे। थोड़ी देर बाद कप्तान साहब निराश होकर किनारे की ओर मुड़ गए। मैंने भी चप्पू संभाले और डोंगी को तीर की तरह बहाव की ओर ले उड़ा।

फिर बहुत देर बाद जिम की रोशनी दिखाई दी; इस बीच लगा जैसे युग बीत गए हों। और वह रोशनी भी हजारों कोस दूर लग रही थी। जब उसके पास पहुंचा तो पूरब में उजाला होने लग गया था। हमने एक द्वीप पर मुकाम किया, बेड़े को छिपा दिया, डोंगी को पानी में उतार दिया

कौन सुनता ! तब पिताजी ने कहा कि कोई किनारे जाकर लोगों को खबर करे और मदद के लिए बुला लाए तो बात बन सकती है। अकेले मुझीको तैरना आता था, सो मैं आया। मिस हूकर ने कहा कि अगर जल्दी मदद न मिले तो मैं यहां उनके चाचा की तलाश करूं और वे फौरन इन्तजाम कर देंगे । मैं कोई एक मील नीचे किनारे लगा और तब से लोगों की चिरौरी-विनती कर रहा हूं, लेकिन सब बेकार। कोई जाने को राजी नहीं होता। कहते हैं, 'बरखा-तूफान की इस रात बाढ़ चढ़ी नदी में जाकर कौन जान गवाए ! जाकर इन्जन के बजरेवाले से कहो, कभी वह राजी हो जाये।' अब मैं तुम्हारे पास आया हूं, अगर तुम चले चलो…"

"चलेगा, अपुन चलेगा, जरूर से चलेगा । मगर हमारा खर्चा-पानी का पैसा और मजूरी का पैसा उधर में कौन देगा ? तुम्हारा बाप देगा ?"

"हां, पिताजी जरूर दे देंगे और मिस हूकर कह रही थी कि उनके चाचा मिस्टर हार्न बैक……"

"ऐंय ! वो बुड्ढा उसका चाचा लगता है ? सच ? तो बेटा, एक काम करो। वो जो उधर में रोशनी दिखता है न उससे पश्चिम को मुड़कर चलते जाना। कोई पांच मील जाने का बाद दारूखाना मिलेगा। उधर में किसीसे पूछ लेना कि जिम हार्न बैक किधर में रहता है। कोई भी तुम्हें उस बुड्ढे के उधर पहुंचा देगा। और वह अकेला ही सारा पैसा दे देगा। उससे यह भी जरूर कह देना कि अपुन बजरा लेकर गया है और जब तलक वो इधर में आएगा अपुन उसका भतीजी को उधर से निकालकर ले भी आएगा। देखो, बिजली का मालिक उधर से आता और हवा का मालिक इधर में आता । रास्ते में रुकने का काम नहीं। जल्दी, अब हो आओ वन, टू, थ्री। अपुन भी जाता है उधर में ड्राइवर को बुलाने। जगाना पड़ेगा उसको।"

मैंने बिजली बत्ती का रुख किया लेकिन जैसे ही वह ड्राइवर को जगाने के लिए 'इधर में मुड़ा मैं फिर वापस आया अपनी डोंगी की तरफ। उसे फौरन [illegible] कदम के पास से निकाला और वहां से आगा वहां [illegible] लकड़ियों से भरी हुई नावें खड़ी थीं। यह जगह कोई [illegible] के [illegible] दर [illegible] की तरह थी और किनारे के पास होने के कारण यहां का पानी

पहनते और किन अदब-कायदों का पालन करते थे। जब मैंने उसे बता कि वे आपस में एक-दूसरे को 'मिस्टर' कहकर पुकारने के बदले 'जहांपना 'हुजूरेआला', 'बादशाह सलामत,' 'आला हजरत,' आदि कहकर पुका करते थे तो उसकी आखें कपाल में चढ़ गईं, और वह बोला, "मुझे मालू नहीं था कि इतने सारे बादशाह हुआ करते थे। मैंने तो अभी तक सि एक बादशाह, शाह सुलेमान (सोलोमन) का नाम सुना था। हां, ताश पत्तों के बादशाह की बात अलग है। हर जोड़ी ताश में चार बादशाह हो हैं। अच्छा, बताओ, एक बादशाह को मिलता कितना है?"

"मिलने की क्या बात है?" मैंने कहा, "जितना चाहें लें, हजार डालर महीना भी ले सकते हैं और ज्यादा भी। सब कुछ उन्हींका है।"

"अरे, वाह! तब तो उनके मजे ही मजे हैं। अच्छा हक, उन्हें करना क्या पड़ता है?"

"कुछ नहीं! बैठे रहते हैं।"

"सच?"

"बिलकुल सच। दिन-भर बैठे रहते हैं। हां, लड़ाई छिड़ जाए तो बात दूसरी है। तब वे लड़ाई में जाते हैं। बाकी तो सारे समय बैठे रहते हैं; पड़े-पड़े ऊब गए तो शिकार खेलने चले जाते हैं। और......यह आवाज कैसी आ रही है? सुना तुमने?"

हम अपनी जगह से उठकर चारों ओर देख आए। दूर से आते किसी स्टीमबोट के इंजन की आवाज थी। हम फिर आकर लेट गए।

"हां, तो मैं कह रहा था," मैंने बात आगे चलाई, 'जब कुछ काम नहीं रहता तो वे पार्लामेण्ट बुला लेते हैं; अगर कोई कहना न माने या ठीक काम न करे तो उसकी गरदन उड़ा देते हैं। लेकिन उनका ज्यादातर वक्त हरम में ही बीतता है।"

"कहां बीतता है?"

"हरम में।"

"हरम क्या?"

"रनिवास! वह जगह जहां वे अपनी बेगमों और रानियों को रखते हैं। क्या तुम्हें नहीं मालूम? शाह सुलेमान का एक हरम था और उसमें उसकी

और जंगल में जाकर ऐसे सोए कि तन-बदन की सुध न रही—मुर्दों से बाजी मार ले गए।

अध्याय १४

उठने के बाद हमने लूट के उस माल की जांच-पड़ताल शुरू की जिसे उन बदमाशों ने टूटे हुए अगनबोट से चुराया था। जूते, कम्बल, कपड़े और दूसरा बहुत सा सामान था। कई किताबें थीं; एक छोटा दूरबीन और सिगार के तीन डिब्बे भी थे। हम मालामाल हो गए। इतनी दौलत हमने जिन्दगी में कभी जानी नहीं थी। और सबसे बढ़िया थी सिगारें! उस दिन तीसरे पहर तक हम जंगल में पड़े बातें करते रहे और मैं किताबें पढ़ता रहा। कुल मिलाकर समय बहुत आराम और मजे से कटा। मैंने जिम को बताया कि टूटे अगनबोट में क्या देखा और इंजन-बजरे के कप्तान को कैसा बुद्धू बनाया। मैंने उसे यह भी बताया कि इस तरह के कामों को ऐडवैंचर यानी साहसिक काम कहते हैं। उसने तुरन्त कुहनियों तक हाथ जोड़कर कहा, "भर पाए तुम्हारे ऐडवैंचर से! भगवान बचाए!" उसने यह भी बताया कि जब मैं रेंगता हुआ अगनबोट के गलियारे में चला गया और उसने बाहर आकर देखा कि बेड़ा जा चुका है तो उसकी क्या हालत हुई। बोला, "समझ लो कि अपना तो बेड़ा गर्क ही हो गया था! बचाए न जाते तो डूबे थे और बचा लिए जाते तो भी डूबना ही था। क्योंकि बचानेवाला पकड़कर घर भेजता, इसीलिए कि उसे इनाम मिलता और मिस वाटसन दक्षिणी सौदागर के हाथ बेचकर आठ सौ रुबल खड़े कर लेती। हम तो तुम्हारे 'एडवैंचर' की बदौलत दोनों तरफ से जाते!"

बात उसकी सच थी। आम तौर पर वह बात सच और पते की कहता था। आम हब्शियों की तुलना में उसकी अक्ल तेज और पैनी थी।

...ो किताबों में से बादशाहों, नवाबों, सरदारों आदि के किस्से ...कि वे किस शान-शौकत से रह...

तुम्हीं बताओ, नोट का आधा टुकड़ा तुम्हारे या दूसरे किसी काम का ? उससे क्या खरीदा जा सकता है ? उसी तरह बच्चे हिस्सा किसीके किस काम का ? दस लाख डालर दिए जा तो उसे न लू !"

"मई जिम, तुम बात का मतलब समझे नहीं। असल मकर दूर रह गए।"

"क्या खूब ! मैं मतलब नहीं समझा ? रखे रहो अ अपने पास। मतलब अगर कोई हुआ तो मैं खूब समझ लेता किसी बात का मतलब ही न हो तो कोई क्या समझे ! उन झगड़ा क्या था ? वे पूरा बच्चा चाहती थीं ; आधा बच्चा पूरे बच्चे का है, आधे बच्चे का नहीं। फिर सुनो, मतलब पूरे आधे बच्चे से नहीं। और जो आदमी यह सोचता-समझता है बच्चे का झगड़ा आधे बच्चे से निपटा सकता हू वह अकलमन सकता, अहमक जरूर है। शाह सुलेमान की समझदारी की बात मत करो, हक ! मैं उनकी नस-नस से वाकिफ हू।"

"नहीं जिम, मुद्दा तुम्हारी समझ मे नहीं आया।"

"भाड़ मे जाए तुम्हारा मुद्दा ! जो जानने-समझने की बा जानता-समझता हू। असल मुद्दा कुछ और ही है और वह है कि की परवरिश कैसे हुई। किसी आदमी के दो ही बच्चे हैं तो कदर करेगा, बेकदरी नहीं कर सकता, कभी भी नहीं। अब जि पचास लाख बच्चे चिल्ल-पों मचा रहे हों उसके लिए दो-चार कीमत ही क्या ? वह एक बच्चे को बड़ी आसानी से काट कर सकता है और उसका रोआं भी नहीं फटकेगा। तो असल, यह है कि शाह सुलेमान के लिए दो बच्चे कम या दो बच्चे फर्क नहीं पड़ता और इसीलिए वह एक बच्चे के दो टुकड़े करने हो गया था।"

ऐसा हबशी तो मैंने कोई देखा नहीं जो बात एक बार उ मे बैठ जाती, पत्थर की लकीर हो जाती थी। फिर किसीकी कि उसे उससे हटा सके। शाह सुलेमान का तो बदतर विरोधी

दस लाख बेगमें रहती थीं।"

"हां-हां ठीक है। मैं भूल गया था। हरम मेरे ख्याल में तो बोर्डिंग हाउस होना चाहिए। वहां रात-दिन बच्चों की चिल्ल-पों मची रहती होगी और बेगमें भी आपस में खूब लड़ती होंगी—झोटे पकड़-पकड़कर। इससे शोर गुल भी बढ़ जाता होगा। और सुलेमान दुनिया का सबसे समझदार आदमी कहा जाता है। मैं इस बात को मानने को तैयार नहीं। कोई भी समझदार आदमी इस तरह के शोर-गुल, धमचख और चिल्ल-पों में हर समय क्यों रहेगा? नासमझ भी नहीं रह सकता तो समझदार कैसे रहेगा और क्यों रहेगा? किसी समझदार आदमी को शोर-गुल ही चाहिए तो वह भाप से चलनेवाला कारखाना खोल लेगा ताकि जब आराम करना चाहा कारखाना बन्द कर दिया।"

"लेकिन शाह सुलेमान दुनिया का सबसे समझदार आदमी था, इसमें तो कोई शक नहीं। विधवा ने खुद मुझे यह बात बताई थी।"

"विधवा कुछ भी कहती रहे, मैं उसकी बात नहीं मानता। वह न समझदार था, न अक्लमन्द, अव्वल नम्बर का बेवकूफ था। उसके कुछ काम तो ऐसे हैं जिन्हें समझदारी कहा ही नहीं जा सकता। वह किस्सा तो तुम्हें याद होगा [illegible]
था?"

"तो उसे यह बात सीधे-सीधे कहनी चाहिए। उलटबांसी की क्या जरूरत?"

"सीधे ही तो कहा गया है ! अरे भाई, यह बात कहने का फ्रान्सिसी तरीका है।"

"बड़ा बेहूदा तरीका है। बस्स, मैं नहीं सुनना चाहता ! बेकार की बकवास है।"

'समझने की कोशिश करो जिम ! क्या बिल्ली हमारी तरह बात करती है?"

"नहीं करती।" "गाय करती है?" "नहीं, गाय भी नहीं करती।" "अच्छा तो क्या बिल्ली गाय की तरह या गाय बिल्ली की तरह बोलती है?" "नहीं।" "दोनों अलग-अलग तरीके से बोलती हैं और यह एक कुदरती बात हुई न?" "हां।"

"और यह बात भी कुदरती हुई न कि न बिल्ली और न गाय हमारी तरह बोल सकती है?"

"हां, बिलकुल कुदरती।"

"तो अब इस बात का जवाब दो कि अगर एक फ्रान्सिसी हमसे जुदी तरह बोले तो यह कुदरती क्यों नहीं है?"

"क्यों हक। क्या बिल्ली आदमी है?"

"नहीं।"

"तो फिर बिल्ली आदमी की तरह बोले इसमें तुक ही क्या है? क्या गाय आदमी है या गाय बिल्ली है?"

"न गाय आदमी है और न गाय बिल्ली है।"

"फिर गाय आदमी की तरह या बिल्ली की तरह बात करेगी कैसे और करे भी क्यों ! क्या फ्रान्सिसी आदमी है?'

"बेशक है।'

"तो फिर वह कम्बख्त आदमी की तरह बात क्यों नहीं करता? मुझे इसका जवाब दो।"

जवाब देना बेकार ही होता। साफ दिखता था हब्शी को तर्कसंगत बात करना कभी आ नहीं सकता। मैंने बहस ही खतम कर दी।

ही कोई दूसरा हबशी उसका इतना विरोधी रहा हो। मैंने सुलेमान को धता बनाई और दूसरे बादशाहों का किस्सा छेड़ दिया ! मैं उसे सोलहवें लुई का हाल बताने लगा, जिसका बरसों पहले फ्रान्स में सिर काटा गया था। फिर उसके बेटे के भी बारे में बताया, जिसे कायदे से तो फ्रान्स का राज्य मिलना चाहिए था, मगर जो जेल में बन्द कर दिया गया और कुछ लोगों की राय में वहीं मर गया।

"बेचारा गरीब लड़का !"

"लेकिन कुछ लोगों की राय में वह फ्रान्स की जेल से भाग निकला और अमरीका आ गया।"

"यह अच्छा हुआ। लेकिन यहां बेचारे को अकेलापन अखरा होगा, क्योंकि यहां तो उसकी मोहब्बत के लिए बादशाह लोग हैं नहीं; क्यों हक ? या हैं ?"

"ना, नहीं हैं।"

"फिर यहां रुतबा तो उसे कोई हासिल नहीं हुआ होगा। तो करेगा क्या ?"

"यह तो मुझे भी नहीं मालूम। कुछ पुलिस में भर्ती हो जाते हैं और कुछ लोगों को फ्रेंच भाषा बोलना, पढ़ना और लिखना सिखाते हैं।"

"तो क्या फ्रांसिसी लोग हमारी तरह नहीं बोलते-बतियाते ?"

"नहीं जिम; तुम तो उनकी बोली का एक शब्द भी नहीं समझ सकते।"

"ऐसा क्यों हक ? यह तो बड़ी अजीब बात है !"

"क्यों का कारण तो मुझे नहीं मालूम, पर बात ऐसी ही है ! मैंने एक किताब में उनकी भाषा के कुछ शब्द पढ़े थे। मान लो कि कोई आदमी आकर तुमसे कहे 'पाली-वू-फ्रांजी' तो तुम क्या समझोगे ?"

"मैं मतलब तो कुछ नहीं समझूंगा, पर उस आदमी को खूब समझ लूंगा। अगर वह गोरा न हुआ तो उसका खोपड़ा फोड़ दूंगा। कोई हबशी मुझे यह गाली दे और मैं सुनता रहूं ? हर्गिज नहीं।"

"दुर् ! यह गाली थोड़े है। इसका मतलब हुआ, क्या तुम्हें फ्रांसिसी में बात करना आता है ?"

ाथ बुरी तरह कांप रहे थे और फन्दा खुलने का नाम नहीं लेता थ
जैसे ही नाव की रस्सी खुली, मैं तीर की तरह बेड़े के पीछे
ह उपनदी कोई साठेक गज लम्बी रही होगी, और यहां तो फिर भी
ी, कुहरा इतना घना नहीं था, लेकिन जैसे ही उपनदी में
नकला आगे-पीछे, दाएं-बाएं कुहरे की सफेद चादर-सी तन गई
ाथ को हाथ नहीं सुझाई देता था, सामने क्या दीखता ! कुछ प
ा कि किधर जा रहा हूं। बस अन्धे की तरह चला जा रहा था !
चप्पू मैंने उठाकर रख लिए। सोचा, डोंगी को लेकर ले चलन
। खाली नहीं—या तो किनारे से अथवा बालू के द्वीप से टकरा
ा किसी उपनदी या गड्ढे में फंस जाऊंगा ! हाथ-पांव सिकोड़
ठ गया और डोंगी को उसकी मर्जी से बहने के लिए छोड़ दिया।
से समय हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना कितना मुश्किल होता
क भुक्तभोगी ही जान सकता है। मैंने 'हो-ए-हो-ऽ-ऽ-ऽ' करके
गाई और कान खड़े करके सुनने लगा। सामने कहीं से वैसी
ावाज सुनाई दी। मेरा हौसला कुछ बढ़ा और मैं चप्पू थामकर
ावाज की दिशा में दौड़ा। आवाज फिर सुनाई दी और इस ब
के मैं ठीक दिशा में नहीं जा रहा हूं। आवाज बाईं ओर से आ
और मैं दाहिनी ओर लपका जा रहा था। फिर आवाज सुनाई
इस बार लगा, वह दाहिनी ओर से आ रही है और मैं बाईं ओर
रहा हूं। बड़े असमंजस में पड़ गया कि किधर जाऊं—कभी बाएं
कभी दाहिने और फिर कभी बाएं, जबकि आवाज सीधी आगे ब
निरन्तर दूर होती जा रही थी।
जिम पर झुंझला रहा था कि वह गदहा कनस्तर क्यों नहीं पी
बराबर कनस्तर पीटता रहे तो मुझे उसका पता लगाने में इतनी
न हो। पर उस बेवकूफ ने एक बार भी कनस्तर नहीं पीटा। सब
मुश्किल तो यह थी कि दो आवाजों के बीच के सन्नाटे में मैं भ्रम
जाता था और समझ नहीं आता था कि किधर जाना चाहिए
भी मैं चलता रहा और इस बार जिम की आवाज मुझे अपने पीछे
सुनाई दी। खासी उलझन में पड़ गया। पीछे से आनेवाली आवाज

अध्याय १५

तीन रात चलने के बाद हम लोग कैरो पहुंच जाते। यह जगह इलिनोइस के छोर पर है, जहां ओहियो नदी मिलती है। हमने सोचा यह था कि वहां पहुंचकर बेड़े को बेच देंगे और अगनबोट से ओहियो के रास्ते फ्री (स्वतन्त्र) स्टेट्स में निकल जाएंगे और इस तरह खतरे के बाहर हो जाएंगे।

दूसरी रात की बात है। कुहरा होने लगा था। हमने तय किया कि कहीं किनारे बेड़े को बांधकर पड़े रहें, क्योंकि कुहरे में चलने से कोई फायदा नहीं था। एक जगह नदी रेतीला घेरा काटकर काफी अन्दर तक घुस गई थी और वहां एक उपनदी ही बन गई थी। हमने इस उपनदी में रात काटने का फैसला किया। डोंगी में रस्सी लेकर मैं आगे बढ़ा कि बेड़े को किनारे के पेड़-पौधों से बांध दूं। लेकिन वहां कोई बड़ा पेड़ या घनी झाड़ियां तो थी नहीं, केवल थोड़े-से नये बिरवे यहां-वहां उगे हुए थे। मैंने किनारे के कटाववाले एक छोटे बिरवे में रस्सी का फन्दा अभी लगाया ही था कि उपनदी की तेज धारा में खड़े बेड़े ने जोर का खिंचाव महसूस किया और बिरवे को एक झटके में जड़-मूल से उखाड़ रस्सी सहित यह जा और वह जा। मैं किनारे बैठा देखता ही रह गया और बेड़ा तेजी से बहकर निकल गया।

कुहरा प्रतिक्षण घना होता जा रहा था। मेरे काटो तो खून नहीं। मारे घबराहट के हाथ-पांव फूल गए और क्षण-भर तो समझ में ही नहीं आया कि क्या करूं।

बेड़ा देखते-देखते आंखों से ओझल हो गया और कुहरे के यह हाल कि बीस गज सामने भी मुश्किल से दिखाई दे। मैं किनारे से उछलकर फौरन डोंगी में सवार हो गया। झपटकर चप्पू उठाए और डोंगी को जोर का झन-कोरा दिया, पर वह हिल-डुलकर रह गई, अपनी जगह से एक अंगुल भी आगे नहीं बढ़ी। बात यह हुई कि हड़बड़ी में मैं उसका रस्सा खोलना भूल गया था। फिर किनारे आया और रस्सा खोलने लगा, परन्तु घबराहट के कारण

से दस मिनट मे बाहर निकल आता। टूटे-फूटे किनारे और कई उपनदियों वाले इस हिस्से के पार जाना घने कुहरेवाली रात में आसान काम नहीं था।"

मैं पन्द्रह मिनट तक चुप बैठा कान लगाए सुनता रहा। इस समय मेरी डोंगी कोई चार-पांच मील प्रति घण्टे की रफ्तार से बही जा रही थी, लेकिन मुझे लग रहा था जैसे एकदम स्थिर खड़ी हो। ऐसे समय किसीको गति का भान नहीं रहता। यही लगता है, मानो हम पानी की सतह पर मुर्दे की तरह अचल पड़े हैं; किसी टोर के सामने से गुजरने पर ऐसा लगता है जैसे हम नहीं चल रहे वह टोर ही भागा जा रहा है; और हमें उसकी तेज चाल पर आश्चर्य होने लगता है। अगर आपको मेरी बात का विश्वास न आए तो कभी कुहरे-भरी रात मे किसी बड़ी नदी पर चलकर स्वयं देख लीजिए, आपको पता चल जाएगा कि उस समय कितनी उदासी और अकेलापन लगता है!

उसके बाद मैं कोई आधे घण्टे तक रुक-रुककर आवाजें लगाता और सुनता रहा। आखिर मुझे जवाबी आवाजें सुनाई देने लगीं। वे बहुत दूर से आ रही थीं। मैंने पीछा करने की कोशिश की, मगर कर न सका। कुहरे के धुंधलके मे भी मुझे दिखाई दे रहा था कि दोनों ओर इतनी धाराएं, उपधाराएं, और रेती के टीबे थे कि अगर उस भूल-भुलैया मे फस जाता तो निकलना मुश्किल हो जाता। कुछ टीबे बहुत बड़े थे और कुछ बहुत छोटे। उनके बीच धारा के टकराने और किनारे लगे झाड़-झंखाड़ और टोटे-कचरे से उलझकर बहने की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। लेकिन जिम की आवाज सुनाई पड़ना बन्द हो गई थी। फिर भी मैं उस भूल-भुलैया मे आगे बढ़ने की कुछ देर कोशिश करता रहा, यद्यपि वह अंधेरी रात में जुगनुओं के पीछे भागने जैसा था। पता नहीं चल रहा था कि किस हाथ पर रुकावट होगी और कहां उलझन खड़ी हो जाएगी।

चार-पांच बार मैं किनारे से टकराते-टकराते बचा और अगर जरा-सा भी ध्यान चूक जाता तो रेतीले टीबों में फंस जाता। समझ गया कि बेड़ा भी मेरी ही तरह किनारे-किनारे टक्करें मार रहा होगा, नहीं तो उसे कायदे से दूर निकल जाना चाहिए था, क्योंकि उसके बहने की गति मुझसे

थी हो नहीं सकती। या तो किसी और की आवाज़ थी या दांए-बाएं की चक्करघिन्नी में मेरा ही मुंह उल्टी दिशा में हो गया था।

मैंने चप्पू पटक दिए और सुनने लगा। आवाज पीछे से ही आ रही थी, परन्तु अब उसकी जगह बदल गई थी। आवाज बराबर सुनाई देती रही, परन्तु हर बार नई-नई जगह से। आवाज मैं भी लगाता रहा और फिर वह आवाज सामने की ओर से आने लगी। अब मैं समझा कि बात क्या थी। घूमा-फेरी में नाव का मुंह बदल गया था। धारा ने उसे फिर सीधा कर दिया और इसी-लिए अब आवाज सामने से आने लगी थी। लेकिन फिर खयाल आया कि पीछे से पुकारने वाला कोई दूसरा बेड़ेवाला तो नहीं था! कुहरे में सुनी जाती आवाजों का कोई भरोसा नहीं। कुहरे में न तो कुछ अपने स्वाभाविक रूप में दिखाई देता है और न स्वाभाविक रूप में सुनाई पड़ता है। अगर आवाज देने वाला जिम ही था तो नाव का मुंह पलट जाने की बात सच माननी चाहिए, नहीं तो नहीं।

आवाज सुनाई देती रही, मैं उसका पीछा करता रहा और दूसरे ही क्षण तीर की तरह एक उपनदी में घुस गया। सामने ऊंचे-ऊंचे पेड़ों की धुंधली आकृतियां प्रेतों की तरह लग रही थीं। तेज धारा ने मुझे जोर से बाईं ओर धकेलकर ठोरों में फंसा दिया था। यहां धारा का वेग बहुत जोर का था और ठोरों से टकराने के कारण खलखलाहट की तेज आवाज भी हो रही थी।

दो-तीन क्षण बाद मैं फिर कुहरे की सफेद मोटी चादर में था और अब आवाज भी नहीं सुनाई दे रही थी। चारों ओर सन्नाटा था और मैं भी बिलकुल शान्त और चुप बैठा था, केवल मेरा दिल सरपट भागे जाते घोड़े की तरह जोरों से धड़क रहा था; और उस धड़कन को सुनने में मुझसे सांस लेते भी नहीं बन रहा था।

मैंने जिम की आवाज सुनने या बेड़े का पीछा करने की सारी कोशिशें छोड़ दीं, क्योंकि अब सारी बात मेरी समझ में आ गई थी। किनारे के कटाव के कारण जिसे हमने रेती का टीला समझा था असल में वह पांच-छह मील लम्बा और करीब आधा मील चौड़ा एक द्वीप था, जिस पर सागवान के बड़े-बड़े पेड़ों का घना जंगल उगा हुआ था। जिस उस द्वीप के दूसरी . , यदि रेती के टीले वाली उपनदी होती तो मैं उसमें

कहीं तेज थी।

फिर मैं धीरे-धीरे खुली नदी में आ गया, या ऐसा ही मुझे लगा, परन्तु अब जिम की आवाज बिलकुल ही नहीं सुनाई दे रही थी। आशंका होने लगी कि कहीं वह किसी टोरे से टकराकर मर-मरा तो नहीं गया! मैं जरूर सही-सलामत था, मगर बुरी तरह थक गया था, इसलिए यह सोचते हुए डोंगी में लेट गया कि अब किसी बात की चिन्ता नहीं करूंगा। मैं सोना नहीं चाहता था। सिर्फ लेटकर कुछ देर कमर सीधी करने का विचार था। परन्तु पलकें भारी हो रही थीं और आंखें आपही मुंदने लगीं। मैंने सोचा, चलो एक झपकी ले ही लूं, सिर्फ एक झपकी!

लेकिन वह झपकी बहुत लम्बी हो गई और मैं काफी देर सोता रहा। आंख खुली तो कुहरा छट गया था और आसमान में तारे साफ चमकते दिखाई दे रहे थे। पहली बात यही ध्यान में आई कि नाव का मुंह पलट गया है और किसी बड़े घुमाव पर धारा में उलटे मुंह बहा जा रहा हूं। देर तक समझ में नहीं आया कि कहां हूं। लगा शायद सपना हो! फिर धीरे-धीरे स्मृति लौटी भी तो इस तरह मानो पिछले सप्ताह की घटनाएं हों।

नदी का पाट बहुत चौड़ा और दूर तक फैला हुआ था। तारों के धुंधले प्रकाश मे जहां तक दृष्टि जाती दोनों किनारों पर आसमान तक फुनगियां उठाए सागवान के भारी-भरकम पेड़ खड़े थे। मैंने सामने देखा तो बहाव की दिशा मे एक काला-सा धब्बा दिखाई दिया। लपकता हुआ पास पहुंचा तो सिर्फ कुछ बड़े लट्ठे एक साथ बंधे बहे जा रहे थे। फिर दूसरा धब्बा दिखाई दिया; उसका पीछा करना भी व्यर्थ रहा। तीसरी बार फिर एक धब्बा-सा दीखा, उसका पीछा करना सार्थक रहा। वह हमारा बेड़ा ही था।

जब पास पहुंचा तो जिम घुटनों में सिर दिए बैठा ऊंघ रहा था। और उसका दाहिना हाथ पिछली पतवार के ऊपर से नीचे को लटका हुआ था। डांडे टूट चुके थे और बहुत-सी पत्तियां, टहनियां और कूड़ा उसपर जमा हो गया था। देखने ही लगता था कि उसे काफी आपदाओं का सामना करना पड़ा है।

मैंने डोंगी को बेड़े से बांधा और ठीक जिम की नाक के नीचे लेट गया और ... ...हू ठाना कि मेरी मुट्ठियां जिम को

छू गई। वह हड़बड़ाकर जाग पड़ा और मैंने कहा, "अरे जिम, क्या मैं सो गया था? तुमने जगाया क्यों नहीं?"

वह आँखें मलते हुए बोला, "भगवान तेरी मेहर! तुम हो हक? सच तुम्हीं हो? मरे नहीं, डूबे भी नहीं? सही-सलामत लौट आए? मुझे तो आंखों से देखकर भी यकीन नहीं हो रहा। ज़रा गौर से देख लेने दो। छूकर इतमीनान कर लेने दो, भैया! सच, तुम ज़िन्दा हो, लौट आए हो! अरे! तुम्हारा तो बाल भी बांका नहीं हुआ। बिलकुल सही-सलामत और सुध सुरंग हो। मेरे भैया, मेरे हक! भगवान तेरी मेहर!"

"क्या बात है जिम? शराब तो नहीं पिए हो?"

"शराब? क्या मैं पिया हुआ लगता हूं; पीने का मौका ही यहां किस मरदूद को मिला?"

"फिर इस तरह बहक क्यों रहे हो?"

"बहक कैसे रहा हूं?"

"यह बहकना नहीं तो क्या है? इस तरह मेरे लौट आने की बातें कर रहे हो मानो मैं कहीं दूर चला गया था और इतने बाद लौटा हूं।"

"हक, हकफिन, मेरी आंखों में देखो, देखो मेरी आंखों में और अब कहो कि तुम कहीं गए नहीं थे। बोलो, नहीं गए थे?"

"कहां गया था? कैसी बात करते हो? मैं तो कहीं नहीं गया। जाना भी कहां?"

"नहीं भैया, बात कुछ गड़बड़ मालूम पड़ती है। समझ में नहीं आ रहा कि मैं हूं या कोई और? न यही समझ में आ रहा है कि यहां हूं या कहीं और? अब तुम्हीं बताओ तो पता चले।"

"इसमें तो कोई शक नहीं जिम, कि तुम यहीं हो और इसमें भी कोई शक नहीं कि तुम्हारा दिमाग एकदम खराब हो गया है।"

"मानो यह कि मैं मैं हूं। तो अब यह बताओ कि तुम डोंगी में बैठकर रेतीले टीले पर बेड़े को बांधने नहीं गए थे?"

"नहीं, मैं तो नहीं गया। कैसा टीला और कहां का टीला? मैंने तो कोई टीला इतने में नहीं देखा।"

"तुमने कोई टीला नहीं देखा? याद करो, धारा के खिंचाव में बेड़े के

कहीं तेज थी।

फिर मैं धीरे-धीरे खुली नदी में आ गया, या ऐसा ही मुझे लगा, परन्तु अब जिम की आवाज बिलकुल ही नहीं सुनाई दे रही थी। आशंका होने लगी कि कहीं वह किसी टोरे से टकराकर मर-मरा तो नहीं गया! मैं जरूर सही-सलामत था, मगर बुरी तरह थक गया था, इसलिए यह सोचते हुए डोंगी में लेट गया कि अब किसी बात की चिन्ता नहीं करूंगा। मैं सोना नहीं चाहता था। सिर्फ लेटकर कुछ देर कमर सीधी करने का विचार था। परन्तु पलकें भारी हो रही थीं और आंखें आपही मुंदने लगीं। मैंने सोचा, चलो एक झपकी ले ही लूं, सिर्फ एक झपकी!

लेकिन वह झपकी बहुत लम्बी हो गई और मैं काफी देर सोता रहा। आंख खुली तो कुहरा छट गया था और आसमान में तारे साफ चमकते दिखाई दे रहे थे। पहली बात यही ध्यान में आई कि नाव का मुंह पलट गया है और किसी बड़े घुमाव पर धारा में उलटे मुंह बहा जा रहा हूं। देर तक समझ में नहीं आया कि कहां हूं। लगा शायद सपना हो। फिर धीरे धीरे [illegible] मानो पिछले सप्ताह की घटनाएं हों।

छू गई। वह हड़बड़ाकर जाग पड़ा और मैंने कहा, "अरे जिम, क्या मैं सो गया था ? तुमने जगाया क्यों नहीं ?"

वह आंखें मलते हुए बोला, "भगवान तेरी मेहर ! तुम हो हक ? सच तुम्हीं हो ? मरे नहीं, डूबे भी नहीं ? सही-सलामत लौट आए ? मुझे तो आंखों से देखकर भी यकीन नहीं हो रहा। जरा गौर से देख लेने दो। छूकर इतमीनान कर लेने दो, भैया ! सच, तुम जिन्दा हो, लौट आए हो ! अरे ! तुम्हारा तो बाल भी बांका नहीं हुआ। बिलकुल सही-सलामत और खुश खुर्रम हो। मेरे भैया, मेरे हक ! भगवान तेरी मेहर !"

"क्या बात है जिम ? शराब तो नहीं पिए हो ?"

"शराब ? क्या मैं पिया हुआ लगता हूं; पीने का मौका ही यहां किस मरदूद को मिला ?"

"फिर इस तरह बहक क्यों रहे हो ?"

"बहक कैसे रहा हूं ?"

"यह बहकना नहीं तो क्या है ? इस तरह मेरे लौट आने की बातें कर रहे हो मानो मैं कहीं दूर चला गया था और इतनी बाद लौटा हूं।"

"हक, हक किन, मेरी आंखों में देखो, देखो मेरी आंखों में और अब कहो कि तुम कहीं गए नहीं थे। बोलो, नहीं गए थे ?"

"कहां गया था ? कैसी बात करते हो ? मैं तो कहीं नहीं गया। जाता भी कहां ?"

"नहीं भैया, बात कुछ गड़बड़ मालूम पड़ती है। समझ में नहीं आ रहा कि मैं हूं या कोई और ? न यही समझ में आ रहा है कि यहां हूं या कहीं और ? अब तुम्हीं बताओ तो पता चले।"

"इसमें तो कोई शक नहीं जिम, कि तुम यहीं हो और इसमें भी कोई शक नहीं कि तुम्हारा दिमाग एकदम खराब हो गया है।"

"यानी यह कि मैं मैं हूं। तो अब यह बताओ कि तुम डोंगी में बैठकर रेतीले टीबे पर बेड़े को बांधने नहीं गए थे ?"

"नहीं, मैं तो नहीं गया। कैसा टीबा और कहां का टीबा ? मैंने तो कोई टीबा इतने में नहीं देखा।"

"तुमने कोई टीबा नहीं देखा ? याद करो, धारा के सिवाय में बेड़े ने

झटका खाया, रस्सी टूट गई, बेड़ा नदी में बह गया और तुम और डोंगी पीछे कुहरे में रह गए। ठीक है न?"

"कैसा कुहरा?"

"अरे बाबा, वह कुहरा जो यहां सारी रात छाया रहा, और कैसा कुहरा! फिर तुम आवाजें लगाते रहे, मैं आवाजें लगाता रहा और हम लोग टीबों और टापुओं में फंस गए, और तब एक आदमी खो गया और दूसरा भी खोए जैसा ही था, क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहां है और क्या करे! मैं टापुओं और किनारों से टकराता रहा। हर कदम पर मुसीबतों का सामना था; यों समझ लो कि डूबते-डूबते बचा! बताओ, ठीक कह रहा हूं न?"

"नहीं जिम, तुम्हारी कोई बात मेरी समझ में नहीं आती। न मैंने कुहरा देखा, न टीबे और टापू देखे, न मुसीबतों से वास्ता पड़ा। कुछ भी तो नहीं हुआ। मैं सारी रात यहीं बैठा तुमसे बातें करता रहा, कोई दस मिनट पहले तुमने सोना चाहा और शायद मेरी भी आंख लग गई। इतनी देर में तुम शराब तो जरूर नहीं पी सकते, इसलिए सपना ही देख रहे होगे।"

"तुम्हीं बताओ, इतना बड़ा सपना मैं दस मिनट में कैसे देख सकता हूं?"

"यह तुम जानो! मैं तो इतना ही जानता हूं कि तुमने सपना देखा है और जरूर देखा है। मेरे सामने तो कुछ हुआ नहीं है।"

"लेकिन हक, मुझे तो सब इतना साफ···"

"कई सपने बहुत साफ होते हैं, पर क्या वे इस कारण हकीकत हो सकते हैं? तुम जो कह रहे हो वह सपना ही है, क्योंकि मैं तो बराबर यहीं बैठा हूं और मैंने कुछ नहीं देखा।"

जिम पूरे पांच मिनट चुप बैठा सोचता रहा, फिर बोला, "तो फिर मैंने जरूर सपना ही देखा है, हक। लेकिन इतना जोरदार और इतनी बुरी तरह थकाने वाला सपना तो यह पहला ही देखा।"

"इसमें क्या! कई बार सपने थका भी देते हैं और पोर-पोर दुखने लगता है। जरूर दौड़-भाग का सपना रहा होगा। बताओ, क्या था?"

जिम ने सारा हाल शुरू से लेकर आखीर तक बड़े विस्तार के साथ

सुनाया। अपनी ओर से उसने नमक-मिर्च भी खूब लगाया। 'सपना' सुनाने के बाद बोला, "इसका भी एक मतलब है, वह हमें समझ लेना चाहिए, क्योंकि हमें सावधान किया गया है।" फिर उसने बताया कि पहला टीला जहां हमने बेड़े को बांधने की कोशिश की थी भला आदमी है, जो हमारी मदद करेगा; धारा बुरा आदमी है जो हमें भले आदमी से अलग कर देगा। आवाजें चेतावनियां हैं जो हमें बीच-बीच में सुनाई देंगी; अगर हमने उन पर ध्यान नहीं दिया तो मुसीबतों में पड़ जाएंगे, ध्यान दिया तो मुसीबतों से बच जाएंगे। जो बहुत-से टीले थे वे ऐसे झगड़ालू और दुष्ट लोग होंगे जो हमें हर कदम पर मुसीबतों में फंसाने की कोशिश करेंगे; अगर उनसे दूर रहे, झगड़ा मोल न लिया तो झंझटों के कुहासे से निकलकर साफ, सुथरी बड़ी नदी में यानी स्वतन्त्र स्टेट्स में पहुंच जाएंगे। फिर तो हमारी सब परेशानियों का खात्मा हो जाएगा।

मैं बेड़े पर पहुंचा तो घटाएं फिर आई थीं और घुप्प अंधेरा हो गया था। अब बादल छटने लगे थे। मैंने कहा, "सपने का तुमने जो मतलब लगाया वह ठीक हो सकता है जिम, मगर बताओ, इन सब चीजों का क्या मतलब है?"

मेरा अभिप्राय बेड़े पर जमा पत्तियों और टहनियों आदि कूड़े तथा टूटे हुए चप्पू से था, जिन्हें अब साफ देखा जा सकता था।

जिम बारी-बारी मेरे और कूड़े के ढेर की ओर देखने लगा। सपने की बात उसपर इस कदर हावी हो गई थी कि सच को सच मानना अब उसके लिए बहुत मुश्किल हो रहा था। सचाई को सचाई के रूप में समझने में उसे कुछ समय लगा। लेकिन जब बात उसकी समझ में आ गई तो उसने मुझे कड़ी निगाहों से देखते हुए कहा, "इन चीजों का क्या मतलब है? मैं बताता हूं। जब बेड़े को खेते-खेते और तुम्हें पुकारते-पुकारते थक गया और नींद मुझपर हावी होने लगी तो मेरा दिल टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो गया, क्योंकि तुम खो गए थे। फिर मैंने यह ध्यान ही छोड़ दिया कि मेरा और इस बेड़े का क्या होता है। मैंने सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ दिया। लेकिन जब नींद खुली और तुम्हें अपने सामने सही सलामत बैठे देखा तो आंखों से खुशी के आंसू बह आए और दिल चाहा कि झुककर तुम्हारे कदम

चूम लूं। इतना कृतज्ञ हो उठा था मैं। और तुम थे कि सफेद झूठ बोलक मुझे बेवकूफ बनाने की बातें सोच रहे थे! यह कूड़ा है और वे लोग भी कू हैं जो अपने दोस्तों पर गन्दगी उछालते और उन्हें शर्मिन्दा करते हैं।

इतना कह कर वह उठा और चुपचाप टपरिया मे जा बैठा। इस अधिक उसने कुछ नहीं कहा, लेकिन मेरा पानी उतारने के लिए यही बहुत था। अपने को मन-ही-मन धिक्कारने लगा कि यह मैंने क्या क डाला! कहा वह हबशी और कहा मैं? वह काला होकर भी मन का कितना उजला और मैं गोरा होकर भी मन का कितना काला! तुरन्त निश्चय किया कि उसके चरण भी क्यों न चूमना पड़े, मनाकर ही रहूंगा।

परन्तु इस निर्णय को कार्यान्वित करने में पूरे पन्द्रह मिनट लग गए। आखिर मैं उठकर टपरिया में गया और उसे मना ही लिया। न तब और न आज मैं इस बात पर लज्जित हूं कि एक हबशी से माफी मांगी। उसके बाद कान पकड़ लिए और आगे कभी उसके साथ कोई बुरी हरकत नहीं की। अगर जानता कि वह इतना बुरा मान जाएगा तो उस समय भी वैसी हरकत न करता।

नहीं था।

नदी के एक बड़े मोड़ में हम चले जा रहे थे। सहसा बादल घिर आए और मौसम बहुत गरम हो गया। नदी का पार काफी चौड़ा था और दोनों किनारों पर सागौन के वृक्षों की घनी पातें अभेद्य दीवालों की तरह खड़ी थी। उनके पार न तो आसमान दीखता था और न कोई रोशनी। अब हमारी सारी बातों का विषय कैरो था और सोचते जा रहे थे कि पहुंचने पर उस जगह को पहचान भी पायेंगे या नहीं। मैंने कहा कि मुश्किल ही है; क्योंकि सुन रखा था कि वहां मुश्किल से एक दर्जन मकान होंगे और यदि उनमें बिजली न जलती रही तो क्या पता चलेगा कि हम किसी कस्बे के आगे से गुजर रहे हैं? जिम का ख्याल था कि दोनों नदियों के संगम के कारण आसानी से पता चल जाएगा। मैं इससे सहमत न हो सका। यह भ्रम भी हो ही सकता था कि हम किसी द्वीप के तले होकर फिर उसी नदी में आ गए हैं। इस बात ने मुझे और जिम, दोनों को ही काफी परेशान कर दिया। दोनों मिलकर लगे सिर खपाने कि कैरो का पता मालूम करने के लिए क्या करना चाहिए। मैंने एक तरकीब सुझाई। जैसे ही किनारे पर रोशनी दिखाई दे मैं डोंगी में वहां जाऊं और लोगों से कहूं कि पिताजी पीछे तिजारती नाव में आ रहे हैं और इधर से वाकिफ नहीं हैं इसलिए जानना चाहते हैं कि कैरो कितनी दूर है। विचार जिम को पसन्द आया। बात पक्की हो गई। हम रोशनियों का इन्तज़ार करने लगे।

सिवाय इसके कि आंखें फाड़े देखते चलें और तो कुछ कर नहीं सकते थे। यह आशंका तो लगी ही हुई थी कि कहीं कस्बा चुपचाप निकल न जाए। जिम का कहना था कि वह जरूर देख लेगा, क्योंकि कस्बे के देखे जाने पर ही तो उसकी आजादी निर्भर करती है। जिस क्षण देखेगा वह आज़ाद हो जाएगा। अगर न देख सका और कस्बा निकल गया तो आज़ाद होने के सब मौके खत्म हो जायेंगे और फिर गुलामी के मुल्क में सड़ना पड़ेगा। इसलिए थोड़ी-थोड़ी देर में वह चिल्ला पड़ता था, "वह रहा, वह!"

लेकिन नहीं, वह दीये की रोशनी नहीं होती थी; हरबार किसी

जुगनू की चमक को दीये का उजाला समझकर वह चिल्ला उठता था। और दूसरे ही क्षण निराश होकर फिर आंखें फाड़े देखने लग जाता था। आज़ादी के इतने करीब आकर जिम बहुत उत्तेजित हो उठा था और अपने आपे में नहीं रह गया था। उसकी चिन्ता बहुत बढ़ गई थी; और उसकी बातें सुन-सुनकर मैं भी कम चिन्तित नहीं था। अब उसके आज़ाद होने में कोई कसर नहीं रह गई थी; और उसके लिए दोषी कौन था? मैं! मेरे दिल में यह बात घर कर गई थी और किसी भी तरह मन पर से उतारे न उतरती थी। इस विचार ने मुझे इतना परेशान कर दिया कि न सोये चैन मिलता था न बैठे। अभी तक तो इस बात की ओर मेरा ध्यान ही नहीं गया था कि क्या कर रहा हूं। लेकिन अब मुझे अपने अपराध की भावना कचोटने लगी थी। लाख मन को समझाता कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं, जिम को मैंने नहीं भगाया, पर मन का समाधान नहीं होता था। हर बार अन्दर से यह जवाब मिलता, 'लेकिन तुझे मालूम तो था कि वह अपने मालिक के घर से भागा जा रहा है; क्या किनारे जाकर किसी को इसकी सूचना नहीं दे सकता था?' और अपने ही इस तर्क के आगे मुझे निरुत्तर रह जाना पड़ता था। अन्तरात्मा जैसे हण्टर जमाते हुए पूछती, 'उस गरीब बेचारी मिस वाटसन ने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तू उसके हबशी को अपनी आंखों के आगे भागता हुआ देखता रहा और ज़बान तक न खोली? उस बेचारी बुढ़िया ने तो तुझपर अहसान ही किए थे। पढ़ना सिखाया, तौर-तरीके सिखाए, हर तरह से आराम में रखा, अच्छा व्यवहार किया और तूने उसका यह बदला दिया! अहसानफ़रामोश!'

मारे ग्लानि के यह हाल था कि नदी में कूद पड़ूं और इस अभागे, अपराधी जीवन का हमेशा के लिए अन्त कर दूं। आन्तरिक पीड़ा के कारण एक क्षण भी स्थिर होकर बैठ नहीं पाता था। उधर जिम भी उतना ही व्यग्र था। शान्ति दोनों में से किसी के भी मन में नहीं थी। जब-जब वह खुशी से उछल कर कहता, 'वह रहा कैरो' तो लगता जैसे खंजर कलेजे के आर-पार उतर गया हो! मैं तड़प उठता और सोचने लगता कि यदि कैरो आ गया तो अपराध के बोझ से मेरी छाती ही फट देगी।

जिम अपनी खुशी को बोल-बोलकर बिखेर रहा था। मैं मन-ही-मन घुटा जाता था; अपने बोझ को कहकर हलका करने का उपाय भी नहीं रह गया था। जिम कह रहा था कि स्वतन्त्र स्टेट में जाते ही कैसे वह पाई पाई करके पैसा बचाएगा और अपनी औरत को, जो मिस वाटसन के पास वाले फार्म पर थी, खरीद लाएगा। फिर वे दोनों मिलकर तन तोड़ मजूरी करेंगे, एक सेंट भी फालतू खर्च न होने देंगे और जरूरी पैसा जोड़कर अपने दोनों बच्चों को छुड़ा लाएंगे, अगर उनके मालिक ने बेचने से इनकार किया तो किसी दास-प्रथा-विरोधी के द्वारा चोरी करवाकर ले आएंगे।

जिम के मुंह से इन बातों को सुनकर मेरा खून जमने लगता। पहले वह ऐसी बातें कहना तो ठीक, सोचने की भी हिम्मत नहीं कर सकता था। लेकिन अपनी मुक्ति का विश्वास होते ही वह बढ़-चढ़कर बातें करने लगा था। आजादी के पास पहुंचते ही उसमें इतना अधिक परिवर्तन हो गया था। पुरानी कहावत सच ही है कि हबशी को अंगुली पकड़ाओ तो वह हाथ पकड़ने लगेगा। यह सब मेरी ही मूर्खता का दुष्परिणाम था। मैंने इस हबशी को भागने में मदद की, यह करीब-करीब भाग निकला और अब कहता है कि अपने बच्चों को—उन गुलाम बच्चों को जिनके मालिक का नाम भी मैं नहीं जानता और जिस बेचारे ने मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ा, उसके पास से चुराकर मंगवा लेगा।

विश्वास ही नहीं होता था कि यह वही जिम है जो सचाई और विनम्रता की मूर्ति हुआ करता था। अब देखो तो कैसी निकृष्ट और हीन बातें करने लगा था। यहां तक कि सुनते-सुनते मेरा धीरज छूट चला और मन विद्रोह कर उठा। गुस्से में आकर मैंने तय कर डाला कि अभी भी क्या बिगड़ा है! जैसे ही किनारे कोई रोशनी दिखाई दी नाव में जाकर सारा भेद खोल दूंगा और इसे पकड़वा दूंगा। इस निश्चय से मेरी सारी व्यथा एकदम दूर हो गई और मैं चिड़िया के पंख की तरह हलका-फुलका हो गया। मैं मन ही-मन गुनगुनाता हुआ आंखें गड़ाए रोशनी की टोह में किनारे की ओर देखने लगा।

थोड़ी ही देर में किनारे पर रोशनी दिखाई दी और जिम चिल्ला उठा, "अहो-सलामत काहिरा हम हैं, अहो-सलामत काहिरा ! फौरन जाकर पता

तो लगाओ। मेरा पक्का ख्याल है कि यह कैरो ही है!"

मैंने कहा, "नाव लेकर जाता तो हूं जिम! मगर तुम्हारा खयाल गलत भी हो सकता है।"

उसने शायद सुना ही नहीं; उछलता हुआ डोंगी को तैयार करने में लग गया था। मेरे बैठने के लिए उसने डोंगी में अपना पुराना कोट बिछा दिया और चप्पू मेरे हाथ में थमा दिए। मैं जैसे ही चलने को हुआ, वह बोला, "जल्दी ही मैं आजाद होकर खुशी की किलकारियां लगा रहा हूंगा और गला फाड़-फाड़कर कहूंगा कि यह सब हक की बदौलत है। मैं आजाद हूं तो हक की बदौलत। अगर हक न होता तो मैं आजाद भी न हो पाता। हक ने मुझे आज का दिन दिखाया। हक ने मुझे आजाद किया। जिम हक को कभी न भूलेगा। हक जिम का अच्छा दोस्त है। हक जिम का सच्चा दोस्त है। जिम का सारी दुनिया में सिर्फ एक दोस्त है और वह हक है।"

मैं जा रहा था उसका भेद खोलने, उसे पकड़वाने, लेकिन जब उसके मुंह से ये शब्द सुने तो मेरा निश्चय डगमगाने लगा। कहां तो बढ़-बढ़कर हाथ मार रहा था और अब एक दम गति धीमी हो गई। तय नहीं कर पा रहा था कि जाना ठीक हो रहा है या गलत।

कोई पचासेक कदम गया हूंगा कि जिम ने कहा, "वह जा रहा है हक, मेरा सच्चा दोस्त; अकेला गोरा, शरीफ गोरा जिसने जिम को दिया वचन निभाया, जिसने आखीर तक जिम की मदद की।"

मन खिन्न हो उठा; लेकिन सोचा, जो निश्चय किया है उसे पूरा तो करना ही होगा, अब विचार बदलना ठीक नहीं। तभी सामने से एक किश्ती आती दिखाई दी। उसमें दो आदमी बैठे थे। दोनों के पास बन्दूकें थीं। वे रुक गए; मैं भी रुक गया। एक ने पूछा, "वह क्या है वहां?"

"बेड़ा है।" मैंने जवाब दिया।

"किसका है? तुम्हारा?"

"जी?"

"और कितने आदमी हैं?"

"सिर्फ एक।"

"उधर नदी के मोड़ पर से आज रात पांच हबशी भागे हैं। तुम्हारा गोरा है या काला ?"

मैंने तुरंत जवाब नहीं दिया। दे ही न सका। कोशिश की, लेकिन शब्द मुंह से निकल न सके। दो-एक क्षण कोशिश करता रहा, हिम्मत बटोरता रहा कि खोल दूं सारा भेद; लेकिन निश्चय डगमगा गया। ऐसे कामों के लिए जो दिलेरी चाहिए वह मुझमें नहीं है, शायद खरगोश का दिल पाया है मैंने। हिम्मत टूटने लगी तो मैंने कोशिश ही छोड़ दी और बोला, "गोरा है।"

"मेरे खयाल से चलकर देख लेना चाहिए।"

"बड़ी खुशी से।" मैंने कहा, "पिताजी बीमार हैं, आप हमारे बेड़े को खींचकर किनारे, जहां दीया जल रहा है, लगाने की मेहरबानी कर दीजिए। पिता जी बीमार हैं।—और अम्मां भी और मेरी एन भी।"

"हम बड़ी जल्दी में हैं, फिर भी चलते हैं; चलो, मारो कसकर हाथ।"

मैंने अपने चप्पू थामे और उन्होंने अपने दो ही हाथ मारे होंगे कि मैंने कहा, "पिताजी आपको देखकर बहुत खुश होंगे। जिससे भी कहता हूं सुनकर चला जाता है। कोई मदद नहीं करता। और मैं अकेला बेड़े को खींचकर किनारे लगा नहीं सकता।"

"यह तो बहुत बुरी बात है। कमीनेपन की हद होगई। कैसा जमाना आ गया कि दु:ख में कोई किसी की मदद भी नहीं करता। हां,यह तो बताओ लड़के, तुम्हारे बाप को हुआ क्या है ?"

"जी, हुआ है···यही···कोई ऐसी बीमारी नहीं है।"

वे फौरन रुक गए। बेड़ा अब कुछ ही दूर रह गया था।

एक आदमी बोला, "लड़के, सच-सच बताओ, तुम्हारे बाप को क्या बीमारी है ? झूठ बोले तो समझ लेना खैर नहीं !"

"जी···सच कहूंगा···बिलकुल सच। मगर हमें छोड़कर चले न जाइएगा। बीमारी है···तो···पर आप चलिए न। मैं रस्सी आपकी नाव से बांध दूंगा, आपको बेड़े के पास आना भी न पड़ेगा। बस, चले चलिए; बड़ी मेहरबानी होगी।"

"दूर रहना, जान, उनसे दूर ही रहना। और पीछे हटालो अपनी किश्ती।" उन्होंने किश्ती को पीछे हटाते हुए कहा, "लड़के, तुम्हें दूर ही रहना। अबे लफर, बहाव की तरफ रह, जरा कहां बहा जाता है? हवा उपर से ही आ रही है और साफ बताए दे रही है कि तेरे बाप को माता है। तुम्हें यह बात मालूम थी, फिर बताया क्यों नहीं? दुनिया-भर में चेचक फैलाना चाहता है क्या?"

"जी," मैंने रोनी आवाज में कहा, "पहले जिसे भी बताया वह सुन-कर भगता बना। मदद करने को नहीं आया।"

"सुनकर दुःख होता है और दया भी आती है; लेकिन क्या करें, चेचक तो मोड़ नहीं सकते! देखो, तुम अपने से तो किनारे उतरने की कोशिश भूलकर भी मत करना। बेड़े के परखचे उड़ जाएंगे। एक काम करो। यहां से बीस मील नीचे इसी तरह बहते चले जाओ। बाएं हाथ पर एक कस्बा मिलेगा। सूरज निकलने के बाद पहुंच पाओगे। वहां मदद मांगना। लेकिन यह मत कहना कि तुम्हारे बाप को चेचक है। यही कहना कि मां, बाप और बहिन को ठण्ड देकर बुखार आता है और इस समय जोर का बुखार चढा है। इस तरह मत बोलना कि लोगों को शुबहा हो जाए और वे सही बात ताड़ लें। हम तुम्हारे भले के लिए कह रहे हैं। हमने तुम्हारी इतनी मदद कर दी, इसलिए तुम फौरन हमसे बीस मील दूर चले जाओ, समझे! वह जो रोशनी दीख रही है, वहां उतरने की कोशिश मत करना। वह केवल लकड़ियों का पीठा है, बस्ती नहीं। लगता है कि तुम लोग गरीब हो और अभी तुम्हारा बाप मुसीबत में है। लो, मैं यह बीस सोने के डालर इस पटरे पर रखकर बहा रहा हू। तुम्हारे पास पहुंचे तो उठा लेना। तुम लोगों को इस तरह बेसहारा छोड़कर जाते बुरा तो हमें बहुत लग रहा है, लेकिन क्या करें। चेचक का मामला ठहरा। इसकी तो हवा से भी छूत लगती हैं, समझे?"

"ठहरो पारकर!" दूसरे आदमी ने कहा, "मेरी ओर से भी ये बीस डालर पटरे पर रख दो। अच्छा लड़के, अब जाओ; और जैसा मिस्टर पारकर ने बताया वैसा ही करना, भगवान ने चाहा तो सब ठीक होगा।"

"हां बच्चे, भगवान सब अच्छा ही करेगा। अब जाओ, हम भी जाते हैं। अगर वे भगोड़े हबशी दिखाई दें तो शोर मचाकर या लोगों को बुलाकर उन्हें पकड़वा देना, इस तरह कुछ डालर और मिल जाएंगे।"

"अच्छा साहब, पारकर साहब, सलाम। और दूसरे साहब को भी सलाम।" मैंने कहा, "अपना बस चलते उन हबशियों को भागने न दूंगा।"

वे अपने रास्ते चले गए और मैं बेड़े पर लौट आया। मन बहुत उदास हो गया था और यह सोचकर तबीयत गिरी जा रही थी कि मैंने गलत काम किया और बहुत कोशिश करके भी अपनी गलती को न सुधार सका। बराबर यही खयाल आता था कि अच्छा काम मैं कभी कर ही नहीं सकूंगा। इसका कारण शायद यह था कि बचपन से गलत ढर्रे पर लग गया और केवल बुराइयां सीखना और बुरे काम करना रहा, अच्छाइयों से कभी वास्ता ही नहीं पड़ा, इसलिए जब अच्छा काम करने का इरादा किया तो ऐन वक्त पर लड़खड़ाने लगा जो अच्छी बात का सहारा न होने से चारों खाने चित आ गिरा। बुरी बात ने ऐसा धक्का दिया कि फिर उठ ही न सका। लेकिन तभी यह विचार आया कि मान लो, जिम को पकड़वा देता तो क्या आत्मा धिक्कारती नहीं, मन लानत-मलामत न करता? जरूर करता; तब भी वही हालत होती जो इस समय है। अपनी ही आंखों में गिर जाता। तो फिर अच्छाई सीखने और अच्छा काम करने में फायदा? जब अच्छा काम करने से मन को कष्ट हो और बुरा काम करने से कष्ट न हो तो अच्छा काम किया ही क्यों जाए? मैंने बहुत सोचा, पर जब इसका मुझे कोई जवाब नहीं मिला, तो मैंने कहा, हट, मारो गोली, जब जो सामने आ पड़े करके छुट्टी पा लिया करो, क्यों बेकार का सिर दर्द मोल लेते हो। और उस दिन के बाद मैं बराबर यही करता रहा हूं।

मैं टपरिया में गया। जिम वहां भी नहीं था। मैंने चारों ओर देखा, वह कहीं दिखाई नहीं दिया। मैंने पुकारा, "जिम!"

"मैं यहां हूं हक। क्या वे चले गए; आंखों से ओझल हो गए? इतने जोर से मत बोलो।"

वह शिकंजेवाली पतवार के ठीक नीचे नदी में डूबा हुआ था, सिर्फ नाक ऊपर दिखाई दे रही थी। यह सुनकर कि वे आंखों की ओट हो गए,

"दूर रहना, जान, उससे दूर ही रहना
किश्ती।" उन्होंने किश्ती को पीछे हटाते हु
दूर ही रहना। अबे उधर, बहाव की तर
आता है ? हवा उधर से ही आ रही है और
तेरे बाप को माता है। तुझे यह बात मालूम
दुनिया-भर में चेचक फैलाना चाहता है क्या।

"जी," मैंने रोनी आवाज में कहा, "पह
कर चलता बना। मदद करने को नहीं आया।

"सुनकर दुःख होता है और दया भी
चेचक तो ओढ़ नहीं सकते ! देखो, तुम अप
कोशिश भूलकर भी मत करना। बेड़े के परख
करो। यहां से बीस मील नीचे इसी तरह बह
पर एक कस्बा मिलेगा। सूरज निकलने के बा
मांगना। लेकिन यह मत कहना कि तुम्हारे बा
कि मां, बाप और बहिन को ठण्ड देकर बुख
जोर का बुखार चढ़ा है। इस तरह मत बोल
जाए और वे सही बात ताड़ लें। हम तुम्हारे
हमने तुम्हारी इतनी मदद कर दी, इसलिए तुम
दूर चले जाओ, समझे ! बहु की रोशनी
कोशिश मत करना।
लगता है कि तुम
जी, मैं

"दूर रहना, जान, उससे दूर ही रहना। और पीछे हटाते चलो किश्ती।" उन्होंने किश्ती को पीछे हटाते हुए कहा, "लड़के, तुम [illegible] दूर ही रहना। अबे उधर, बहाव की तरफ रह, ऊपर कहाँ जा [illegible] आता है ? हवा उधर से ही आ रही है और साफ बता रहे रहो [illegible] तेरे बाप को माता है। तुझे यह बात मालूम थी, फिर बताया क्यों नहीं ? दुनिया-भर में चेचक फैलाना चाहता है क्या ?"

"जी," मैंने रोनी आवाज में कहा, "पहले जिसे भी बताया वह [illegible] कर चलता बना। मदद करने को नहीं आया।"

"सुनकर दुःख होता है और दया भी आती है; लेकिन क्या करें, चेचक तो ओढ़ नहीं सकते ! देखो, तुम अपने से तो किनारे उतरने की कोशिश भूलकर भी मत करना। बेड़े के परखचे उड़ जाएँगे। [illegible] करो। यहाँ से बीस मील नीचे इसी तरह बहते चले जाओ। [illegible] पर एक कस्बा मिलेगा। सूरज निकलने के बाद पहुँच पाओगे। वहाँ [illegible] माँगना। लेकिन यह मत कहना कि तुम्हारे बाप को चेचक है। [illegible] कि माँ, बाप और बहिन को ठण्ड देकर बुखार आता है और [illegible] ओर का बुखार चढ़ा है। इस तरह मत बोलना कि लोगों को [illegible] आए और वे सही बात ताड़ लें। हम तुम्हारे भले के लिए [illegible] हमने तुम्हारी इतनी मदद कर दी, इसलिए तुम फौरन हमसे [illegible] दूर चले जाओ, समझे ! वह जो रोशनी दीख रही है, वहाँ उतरने की कोशिश मत करना। वह केवल लकड़ियों का बाड़ा है। [illegible] लगता है कि तुम लोग गरीब हो और अभी तुम्हारा बाप [illegible]
[illegible]

जिम ने भी कहा कि जाना बेकार है, कैरो ऊंचाई पर नहीं बसा है। मैं यह बात भूल ही गया था। वह दिन हमने एक रेतीले टीले पर बिताया, जो नदी के बाएं किनारे के काफी करीब था। अब मुझे कुछ सन्देह होने लगा था और जिम को भी।

मैंने कहा, "कहीं कैरो उस कुहरेवाली रात पीछे तो नहीं छूट गया ?"

उसने कहा, "अब उसकी बात करना भी बेकार है हक ! बदकिस्मत हबशियों की तकदीर में आजादी लिखी ही कहां है ? सांप की केंचुल-वाला बदशगुन लगता है कि अब भी आड़े आ रहा है।"

"अभी तक पछता रहा हूं उस गलती के लिए जिम। ये कम्बख्त आंखें उस समय फूट क्यों न गईं ?"

"तुम्हारा कोई कसूर नहीं हक, तुम्हें पता ही क्या था ? नाहक दिल छोटा न करो।"

जब सवेरा हुआ तो हमने देखा कि एक किनारे ओहियो का साफ कंचन-जैसा नीर था और दूसरे किनारे वही पुराना गदलाया-सा। इसका तो साफ मतलब यह हुआ कि कैरो पीछे छूट गया था !

सोच-विचार कर हम इस नतीजे पर पहुंचे कि न तो अभी किनारे लग सकते हैं और न बेड़े को बहाव की उलटी दिशा में ही ले जा सकते हैं। रास्ता सिर्फ एक ही बचा था और वह यह कि अंधेरा हो जाने पर डोंगी से उलटी दिशा में जाकर पता लगाएं। इसलिए दिन-भर हम वन पीपल की झाड़ियों में सोए रहे ताकि ताजा दम होकर काम में लग सकें। लेकिन अंधेरा होने पर जब हम बेड़े पर गए तो डोंगी गायब मिली।

बहुत देर तक हम कुछ न बोले। आखिर कहते भी क्या ? जानते ही थे कि यह सब सांप के उस केंचुल का प्रताप है ! इस सम्बन्ध में कुछ कहना दुर्भाग्य को चिढ़ाना और नई मुसीबत को न्योता देना था। इस तरह तो एक के बाद एक मुसीबतें बढ़ती ही जातीं। इसलिए बस सिर्फ एक ही उपाय था, चुप रहना।

अब हम यह सोचने बैठे कि आगे क्या करना चाहिए ! जो परिस्थिति थी उसमें बिना इसके कुछ भी नहीं किया जा सकता था कि बेड़े के सहारे बहते जाएं और जहां भी नाव मोल मिल सके ले लें और तब उसमें

वह ऊपर चढ़ आया और बोला, "मैं सब सुन रहा था। नदी में उतर गया था। अगर वे बेड़े पर आते तो तैरकर किनारे चला जाता। उनके चले जाने पर फिर लौट आता। लेकिन तुमने उन्हें खूब चकमा दिया हक, शाबाश! खूब दूर की सोची तुमने। जितनी तारीफ की जाए कम है। तुमने जिम को बचा लिया। जिम तुम्हारा अहसान कभी नहीं भूलेगा।"

फिर हम रुपयों के बारे में बातें करने लगे। एकदम और अनायास गाढ़ी रुपया मिल गया था। दोनों के हिस्से बीस-बीस डालर और हमको भी सोने ः। जिम ने कहा कि अब तो अगनबोट में डेक पर चल सकेंगे और स्वतन्त्र टेट में जाने के बाद भी रुपया काफी रह जाएगा। उसने यह भी कहा क बीस मील ज्यादा नहीं होते, बेड़ा जल्दी ही पहुंचा देगा, हालांकि जी हता है, उड़कर पहुंच जाएं।

दिन उगने के पहले हमने बेड़े को किनारे बांधा। जिम ने उसे खूब अच्छी तह छिपा दिया था। फिर वह दिन-भर गठरी-पोटली बांधने में लगा रहा। इ बेड़े से वह जल्दी-से-जल्दी छुट्टी पा लेना चाहता था। इसी की तैयारियों जुट गया था।

उस रात करीब दस बजे नदी के बाए हाथ वाले घुमाव पर हमें एक ती के दिये टिमटिमाते दिखाई दिये।

मैं नाव लेकर पता लगाने चला। कुछ दूर जाने पर एक डोंगी वाला छली फंसाने की डोरी फैलाता मिला। मैंने उसके पास जाकर पूछा, यों मिस्टर, क्या यह कैरो है?"

"कैरो? नहीं! निरे अहमक मालूम पड़ते हो!"

"फिर यह कौन-सी जगह है?"

"मालूम करना चाहते हो तो जाकर पता लगाओ! बेकार सिर मत ते! आधे मिनट में चलते फिरते नजर नहीं आए तो उठाकर फेंक दूंगा!"

"मैं लौट आया। जिम को बड़ी निराशा हुई। मैंने दिलासा दिया, घब-रे मत, यह नहीं तो अगली बस्ती कैरो होगी।"

सवेरा होने से कुछ पहले हम दूसरे कस्बे के आगे से गुजरे। मैं जाना ---- था, लेकिन बस्ती काफी ऊंचाई पर थी, इसलिए नहीं गया

ता। चारों ओर छोटे-छोटे द्वीपों की कतार दिखाई दे रही थी। और एकदम तूफान की तरह पानी पर आ गया। भट्टी के खुले दरवाजे लाल-लाल दहकते दांतों-जैसे लग रहे थे। उसका अगला ओर आगे को निकला हुआ जहाज हमारे ऊपर इस तरह झुक रहे थे मानों दबोच ही लेंगे। किनारे-पर उन लोगों ने हमसे कुछ कहा, इंजन बन्द करने की घंटियां सुनाई दीं, लाल बत्तियों की एक बौछार-सी पड़ी और भाप की फुफकार-भरी सीटी बज उठी। जिम एक बाजू से ओर मैं दूसरी ओर से नदी में जा गिरे। जोर की टक्कर नदी की ओर अगनबोट बेड़े को तोड़ता-फोड़ता सीधा निकल गया था।

मैं गोता मारकर नदी के पेंदे में उतरता चला गया, क्योंकि मेरे ऊपर पानी के अन्दर अगनबोट का पैंतीस फुट चक्का तलवारों की तरह घूमता हुआ था। उसे चूकने के लिए काफी जगह चाहिए। मैं पानी के अन्दर सांस रोक-कर एक मिनट तो रह ही सकता हूं। इस बार मेरा ख्याल है कि कम-से-कम डेढ़ मिनट रहा हूंगा। फिर फुर्ती से ऊपर आया, क्योंकि दम घुटने लगा था। हाथों से पानी को दबाता हुआ बोतल के डाटे की तरह एकदम ऊपर आ गया और नाक-मुंह से पानी थूकता हुआ जोर-जोर से सांस लेने लगा। धारा भी तेज थी और अगनबोट के पहिए ने पानी को इस तरह मथ दिया था कि जोर की हिलोरें उठ रही थीं। वे लोग मुश्किल से दस सैकण्ड रुके होंगे, क्योंकि अगनबोट धारा को चीरता, नदी को मथता चला गया था। उस अंधेरी रात में दिखाई तो नहीं देता था, लेकिन आवाज से पता चलता था कि काफी दूर निकल गया है। टक्कर से बेड़े वालों पर क्या गुजरी, मरें या जीयें, उनकी बला से; अगनबोट चालक ऐसी बातों की कोई फिक्र नहीं करते।

मैंने जिम को बीसियों बार पुकारा कोई जवाब नहीं मिला। तब मैंने किनारा पकड़ने की फिक्र की। एक पटरा मेरे बदन को छू रहा था। मैंने उसे थाम लिया और उसके सहारे तैरता हुआ किनारे की ओर चला। जल्दी ही मुझे पता चल गया कि धारा का रुख बाएं हाथवाले किनारे की ओर है और मैं उलटी दिशा में जा रहा हूं। मैंने फौरन अपना रुख बदल दिया और धारा को तिरछा काटता हुआ तैरने लगा।

कोई दो मील का घुमाव देकर काफी देर के बाद मैं किनारे लगा।

वापस लौटें। पिताजी की तरह कहीं से नाव 'उधार' भी ले सकते थे, परन्तु लेना नहीं चाहते थे, क्योंकि तब लोग हमारे पीछे लग जाते।

इसलिए रात होते ही हम बेड़े के सहारे फिर आगे बढ़े।

सांप केंचुल के अमंगलकारी प्रभाव का जिन्हें अब भी विश्वास न हुआ हो वे आगे का हाल पढ़ें कि उसने हमें किन-किन मुसीबतों में फंसाया और तब उन्हें जरूर विश्वास हो जाएगा।

नावें आमतौर पर वहां बिका करती हैं जहां किनारे बेड़े लगे रहते हैं। लेकिन पूरे तीन घण्टे तक चलते रहने के बाद भी हमें इस तरह के बेड़े कहीं दिखाई नहीं दिए। इसलिए हम बराबर चलते ही रहे। सहसा रात अंधेरी हो गई; ऐसा मौसम भी कुहरे के ही जितना बुरा और खतरनाक होता है। न आपको नदी की शक्ल सूरत का पता चलता है और न आप दूर तक देख ही सकते हैं। रात काफी हो गई थी और सन्नाटा भी खूब था। बहाव की तरफ से एक अगनबोट ऊपर की ओर आता दिखाई दिया। हमने अपना लालटेन जला दिया और निश्चिन्त हो गए कि वह देख ही लेगा। आमतौर पर बहाव की उलटी दिशामें जानेवाले अगनबोट हम से दूर ही रहते थे; अक्सर मझधार से हटकर धीमे पानी में चलना पसन्द करते थे। लेकिन जब रातें अंधेरी होतीं तो वे सारी नदी को छोड़कर बीच धारा में आ जाते थे।

अगनबोट नदी के पानी को मथता और धड़धड़ाता चला आ रहा था। आवाज हर क्षण समीप आती जा रही थी। लेकिन वह हमें दिखाई तभी दिया जब बिलकुल सिर पर आ गया। कई बार अगनबोट वाले सिर्फ यह जताने के लिए कि वे कितना पास आ सकते हैं ऐसी हरकतें किया करते थे। बिलकुल पास आ जाते, पर छूते नहीं थे; सिर्फ उनका पहिया किसी-किसी को अपनी लपेट में ले लेता था; फिर पायलट खिड़की में से सिर निकाल कर हंसने लगता, मानो अपनी कारगुजारी की दाद चाहता हो। हमने सोचा अगनबोट आ तो रहा है, पर हमें नुकसान नहीं पहुंचाएगा, ज्यादा-से-ज्यादा छूता हुआ निकल जाएगा। लेकिन उसने बगली काटने की कोई कोशिश नहीं की। बिलकुल सीधा चला आ रहा था। डील-डौल में काफी बड़ा, काले ... था। आग भी काफी तेज था। बहुत जल्दी में लगता

तब बुढ़िया ने कहा, "बेट्सी (यह हब्शी दासी थी), ज़रा भागकर जल्दी से कुछ खाने के लिए ले आ। बेचारा भूखा है। और लड़कियो, तुम जाकर बक को जगाओ—लो, वह आप ही आ गया। बक, बेटे, तुम इस नन्हे अजनबी को अपने साथ ले जाओ, इसके गीले कपड़े उतरवा देना और अपने सूखे कपड़े इसे पहनने को देना।"

बक मेरी ही उम्र का लगता था—तेरह या चौदह बरस का, लेकिन मुझसे कुछ लम्बा और तगड़ा लग रहा था। वह सिर्फ एक कमीज़ पहने था और उसके सिर के बाल बहुत गन्दे और बुरी तरह उलझे हुए थे। वह जंभा-इयां लेता और एक हाथ से आँखें मसलता चला आ रहा था। उसके दूसरे हाथ में बन्दूक थी। आते ही बोला, "क्या शेपर्ड लोग नहीं आए?"

उन्होंने कहा कि नहीं आए, यों ही शुबहा हो गया था; खतरे की सूचना गलत निकली।

"कोई बात नहीं।" उसने कहा, "अगर आते तो मैं एक को तो ज़रूर ही मार गिराता।"

सब के सब हंस दिए और बाब ने कहा, "अभी तक तो वे हम सबको मारकर लौट भी जाते; तुमने आने में कितनी देर कर दी बक!"

"एक तो मुझे किसीने जगाया नहीं और ऊपर से यह ताना! बहुत बुरी बात है। जब देखो मेरी खिल्ली उड़ाई जाती है और मौका बिलकुल ही नहीं दिया जाता।"

"इतने उतावले मत बनो, बक बेटा!" बूढ़े ने उसे दिलासा दिया, "तुम्हें अपनी जवांमर्दी दिखाने के बहुत मौके मिलेंगे। वक्त आने दो! अब राजा बेटे की तरह इसे साथ ले जाओ और अपनी अम्मा का कहा कर दिखाओ। जाओ।"

हम ऊपर उसके कमरे में आए। मुझे गाढ़े की कमीज़, पतलून और छोटा कोट पहनने को दिए। जब मैं कपड़े पहन रहा था तो उसने मेरा नाम पूछा, लेकिन जवाब सुनने के लिए रुका नहीं; उसी सांस में कहता चला गया कि कल जंगल में से एक नीलकण्ठ और खरगोश का बच्चा पकड़ा है, देखोगे? और फिर उसने पूछा कि जब मोमबत्ती बुझी तो मूसा कहां था? मैंने कहा, मुझे नहीं मालूम; क्योंकि इसके बारे में मैंने कभी

ढोले जाने की आवाज सुनाई दी। मैंने किवाड़ों पर हाथ रखकर ज़रा-सा
ढेला, फिर थोड़ा-सा, और··· अन्दर से किसी ने कहा, "बस-बस ! बहुत
ही गया ; अब अपना सिर अन्दर करो।" मैंने सिर अन्दर तो किया, पर
डरा कि कहीं वे मेरा सिर ही काट न लें।

मोमबत्ती फर्श पर रखी थी और वे सब वहां खड़े मेरी ओर देख रहे
। मैं भी उनकी ओर देखने लगा। कोई चौथाई मिनट यह देखा-देखी
चलती रही। तीन आदमी बन्दूकें ताने मेरे सामने खड़े थे। सच, मेरे रोंगटे
खड़े हो गए। एक सब से बड़ा, सफेद बालोंवाला कोई साठेक बरस का
होगा, दूसरे दोनों अपनी तीसी में। तीनों ही अच्छे डीलडौल के और दिख-
टे थे। एक अच्छी-भली-सी प्यारी-प्यारी बुढ़िया भी थी ; उसके पीछे
ो जवान लड़कियां, मगर मैं उन्हें ठीक से देख नहीं पा रहा था।

बूढ़े ने कहा, "मेरे खयाल में सब ठीक है। अन्दर चले आओ।"

जैसे ही मैं अन्दर दाखिल हुआ बूढ़े ने किवाड़ भेड़ दिया और फौरन ताला
न्द कर सिटकनी, आगल, कुण्डी वगैरह लगा दी। अब उसने उन जवानों
कहा कि वे अपनी बन्दूकों सहित बैठके में चलें। बैठका काफी बड़ा था
ौर उसके फर्श पर लाल रंग का नया कालीन बिछा हुआ था। वे सब
ामने वाली खिड़कियों से काफी दूर एक कोने में जा खड़े हुए। उस बैठके
अगल-बगल एक भी खिड़की नहीं रखी गई थी। फिर वे सब मोमबत्ती
ठाकर मुझे खूब गौर से देखने लगे और सबने एक ही बात कही, 'नहीं,
ाई तो नहीं है ; शेपर्डों का एक छींटा भी इसके नाक-नक्शे पर नहीं
खाई देता ! इसके बाद बूढ़े ने कहा कि वे मेरी तलाशी लेंगे ; घबराने
 कोई बात नहीं। सिर्फ इत्मीनान कर लेना चाहते हैं कि मेरे पास कोई
थियार तो नहीं ! इतनी गनीमत हुई कि जेबें नहीं टटोली गई, ऊपर-
पर से छूकर बूढ़े ने कह दिया, ठीक है ; हथियार-वथियार कुछ नहीं
। फिर मुझसे बोला, "अब तुम आराम से बैठ जाओ और अपना किस्सा
ान करो।"

बूढ़ी बुढ़िया ने कहा, "सौल, भगवान के नाम पर ज़रा यह तो देखो

सुना ही नहीं।

उसने कहा, "अच्छा सोचकर बताओ।"

"क्या सोचूं, जब कुछ मालूम ही नहीं और न पहले कभी सुना।"

"सोच तो सकते ही हो, सोचो। कितना आसान है!"

"कौन-सी मोमबत्ती?" मैंने पूछा।

"मोमबत्ती का क्या? कोई-सी भी मोमबत्ती!" उसने कहा।

"कहां था, मुझे नहीं मालूम।" मैंने कहा, "तुम्हीं बताओ।"

"इतना भी नहीं बता सके! अंधेरे में था, और कहां होता!"

"जब तुम्हें मालूम था तो मुझसे क्यों पूछा?"

"बुरा क्यों मानते हो यार, बुमोवन जोंस। इतना भी नहीं समझ सके? अच्छा, अब तुम यहां से जाना मत। यहीं रह जाओ। हम साथ-साथ खेलेंगे और खूब धमाचौकड़ी करेंगे! स्कूल तो अब यहां लगता नहीं। तुम्हारे पास कुत्ता है? मेरे पास है। बहुत होशियार है। कोई चीज उसे दिखाकर नदी में फेंक दो, तैरता हुआ जाएगा और मुंह में भरकर ले आएगा। इतवार को नहाना-धोना, सफाई करना, बाल ओछना, यह तुम्हें पसन्द है? मुझे तो बिलकुल नहीं। सब बकवास है। पर अम्मां नहीं मानतीं। करवा-कर छोड़ती हैं। ये पुरानी बिरजिस बहुत खराब है। लाओ, पहन लूं; मगर नहीं पहनूंगा, इस गर्मी में बदहवास हो जाऊंगा। तुम तैयार हो गए? तो आओ पट्ठे, चलें नीचे।"

नीचे उन्होंने मुझे मक्का की ठण्डी रोटी, मक्का के दलिये के साथ पकाया गोमांस, मक्खन और छाछ खाने के लिए दिया। कड़ाके की भूख लग रही थी। सब चीजें बहुत स्वादिष्ट लगीं। मैं खाना खाता रहा और वक, उसकी मां और बाकी के लोग बैठे मिट्टी के पाइप पीते रहे। हब्शी नौकरानी वहां से पहले ही जा चुकी थी। हम बातें भी करते जाते थे। दोनों लड़कियां लिहाफ ओढ़े थीं, और लम्बे-लम्बे बाल उनकी पीठ पर लहरा रहे थे।

सभीने मुझसे मेरे माता, पिता और परिवार के बारे में पूछा। मैंने एक मनगढ़न्त कहानी सुना दी कि मेरे माता-पिता पूरे परिवार के साथ ... की घाटी में एक छोटे खेत पर रहते थे। बहिन मेरी एन ने

... और फिर उसका पता न चला। भाई बिल

उन लोगों का कहना था कि यह मेजपोश ठेठ फिलाडेलफिया से लाया गया था ! मेज के हर कोने पर किताबें रखी थीं । एक कोने पर खूब सारे चित्रों वाली परिवार के नित्य पाठ की बाइबिल थी । दूसरे कोने पर 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस',[1] जिसमें एक व्यक्ति के अपने परिवार को छोड़कर चले जाने का किस्सा था, मगर यह कहीं नहीं बताया गया था कि उसने ऐसा क्यों किया ? मैं अकसर इस किताब को पढ़ा करता । इसके वर्णन दिलचस्प पर जरा मुश्किल थे । एक किताब 'फ्रेण्डशिप्स आफरिंग' थी, इसमें कविता लिखी थी, पर कविता पढ़ने में मेरी दिलचस्पी नहीं थी । हेनरी क्ले[2] के भाषणों की एक प्रति और एक प्रति डाक्टर गुन के पारिवारिक चिकित्सक की भी थी । इस पारिवारिक चिकित्सक में सभी तरह के रोगों के नुस्खों के साथ-साथ यह भी बताया गया था कि यदि कोई आदमी बीमार पड़े या मर जाए तो क्या करना चाहिए । एक प्रार्थना की पोथी और दूसरी भी कई किताबें उस मेज पर रखी हुई थीं । बैठने के लिए बेंत की बुनाई वाली बढ़िया कुर्सियां थीं; सब की सब अच्छी हालत में—पुरानी टोकरी की तरह बीच में से लटकी हुई नहीं ।

दीवालों पर तस्वीरें टंगी थीं—कुछ वाशिंगटन की, कुछ लफाएत[3] की, कुछ लड़ाइयों की और कुछ हाईलैंड मेरी[4] की । एक तस्वीर 'स्वतन्त्रता के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर' की भी थी । और भी कुछ तस्वीरें थीं जिन्हें वे लोग 'क्रेयान'[5] कहते थे । इन क्रेयान तस्वीरों को घर की ही एक लड़की, उन दोनों लड़कियों की बहिन ने, जब वह सिर्फ पन्द्रह वर्ष की थी, बनाया था । वह चित्रकार लड़की बहुत पहले ही मर चुकी थी । उसकी ये तस्वीरें मेरी अभी तक देखी हुई सभी तस्वीरों से अलग तरह की थीं । इनमें काले

---

१. अंग्रेज़ी लेखक जान बनयान की सुप्रसिद्ध कृति ।

२. अमरीकी वक्ता और राजपुरुष (१७७७–१८५२)

३. मेरी जॉन पाल राच यीम्स गिल्बर्ट मोटियर, फ्रांसीसी सेनाध्यक्ष और राजपुरुष, जिसने अमरीका की अनेक वर्षों तक सेवाएं कीं । (१७५७–१८३४)

४. मैरी कैम्पबेल : सुप्रसिद्ध स्कॉटिश कवि बर्न्स की प्रेयसी और उसके बड़े गीतों की प्रेरणा ।

५. सादी पेन्सिल अथवा कोयले से अंकित रेखाचित्र ।

लोहे का ताला या काठ और चमड़ा पट्टी का फन्दा नहीं था, बिलकु शहराती मकानों की तरह पीतल की चमचमाती मुठिया लगी हुई थी- घुमा दिया और ताला बन्द। सारे बैठके में एक भी पलंग या बिछौना न था, जबकि शहर के भी कई बैठकघरो में दो-चार पलग या बिछौने र मिल जाते हैं। बैठके को बिलकुल बैठक ही बनाकर रखा गया था। बड़ी सी अंगीठी थी, जिसका निचला हिस्सा ईंटों का बना था। इन ईंटों क पानी और ईंट से रगड़-धोकर या शहरवालों की तरह लाल रंग, जिसे वे लो स्पेनिश ब्राउन कहते थे, पोतकर साफ-सुथरा और चमकीला रखा जात था। अंगीठी मे लट्ठे थामने के लिए पीतल का इतना बड़ा आंकड़ा था कि पेड़ का एक पूरा तना उसमे फंसाया जा सकता था। मेंटलपीस के बीचो बीच एक घड़ी रखी थी। इस घड़ी के नीचेवाले आधे कांच पर किसी शह की तसवीर बनी थी और बीच मे सूरज की जगह खाली गोला छोड़ दिया गया था, जिसके पार घड़ी का लटकन (पेंडुलम) चलता हुआ दिखाई देता था। इस घड़ी की टिक्-टिक् की आवाज कानो को बड़ी भली लगती थी। जब कोई घर-घर घूमने वाला फेरिया आ निकलता तो वह बिना पैसा लिए ही इस घड़ी की सफाई कर तेल लगा देता और तब यह इतनी बढ़िया हो जाती कि चाभी भरने पर एक बार मे डेढ़ सौ ठोके बजाकर ही रुकती थी।

घड़ी के दोनों तरफ खड़िया मिट्टी या उसी तरह की किसी चीज के चटक रंगोंवाले दो पहाड़ी तोते रखे हुए थे। एक तोते के पास बिल्ली और दूसरे के पास कुत्ता रखा था और दोनों ही चीनी मिट्टी के थे। दबाने पर दोनों ही बिना मुंह खोले या आंख झपकाए कूक उठते थे। और कूकने की आवाज उनके नीचे से आती थी। इन सब चीजों के पीछे जंगली मुर्गों के परों के बड़े-बड़े पंखे फैलाकर रखे हुए थे। कमरे के ठीक बीच में एक मेज पर चीनी मिट्टी की बहुत खूबसूरत डलिया में सेब, संतरे, आड़ू और अंगूरों के गुच्छे रखे थे। इन फलों का रंग असली से भी ज्यादा गहरा था, हालांकि ये सब नकली, क्योंकि कहीं-कहीं से रंग-रोगन उखड़ गया था और नीचे से खड़िया मिट्टी या इसी तरह की कोई चीज दिखाई देने लगी थी।

मेज पर मोमी कपड़े का सुन्दर मेजपोश बिछा था, जिसपर लाल नीले रंगों से पंख फैलाए गरुड़ का चित्र और चारों तरफ किनार बनी हुई थी।

कविताएं पढ़ने लगता। मैं उसके प्रति कुछ कठोर भी हो गया था। वे उस परिवार के सब लोग मुझे पसन्द थे, जीवित और मृत सभी। और उनके और मेरे बीच में कोई आए इसे मैं सहन नहीं कर सकता था। जिस ह्यूमेलीन ने अपने जीते जी सब मरनेवालों पर कविताएं लिखी थीं; मरने पर वह खुद बग़ैर कविता के रह जाए यह मुझे अच्छा नहीं लगता था, इसलिए मैंने उसपर कविता लिखने की बड़ी कोशिश की पर, एक पद भी न बना सका। ह्यूमेलीन के कमरे को वे लोग बहुत साफ़-सुथरा और वैसा ही सजा-संवारा रखते थे जैसा उसके जीवन-काल में था। जो चीज़ उसके जीते जी जहां और जैसी हालत में थी उसे ठीक वैसा ही रखा गया था। वहां किसी-को सोने भी नहीं दिया जाता था। श्रीमती ग्रैंगर फोर्ड अपने बुढ़ापे और बीसियों हबशी नौकरानियों के बावजूद खुद अपने हाथों उस कमरे को झाड़ती-बुहारती और सीने-पिरोने का सारा काम और अपना बाइबल-पाठ भी वे उसीके कमरे में करती थीं।

हां, तो मैं बैठके के बारे में बता रहा था। उसमें खिड़कियों पर सुन्दर-सुन्दर पर्दे लगे थे। पर्दे सभी सफ़ेद थे और उनपर अंगूरी बेल छाई दीवारों वाली गढ़ियां और पानी पीने के लिए जाते हुए पशुओं के चित्र बने थे। एक छोटा-सा पुराना प्यानो भी था, जिसकी पत्तियां (पर्दे) टीन की बनी थीं। और जब वे लड़कियां उसपर 'अन्तिम कड़ी भी टूट गई' (दि लास्ट लिंक इज़ ब्रोकन) गीत गातीं या 'प्राग-युद्ध' (दि बैटल आफ़ प्राग) की धुन निकालतीं तो मैं अपनी सुध-बुध भूल जाया करता था। सभी कमरों की दीवारों पर पलस्तर किया हुआ था और अधिकांश में कालीन बिछे हुए थे। बाहर से पूरे मकान की सफ़ेदी की गई थी।

मकान के दो खण्ड थे और उनके बीच की खाली ज़मीन पर छत डालकर नीचे फ़र्श बना दिया गया था। कभी दुपहर में हम वहां मेज़-कुर्सी लगाकर बैठ जाते थे। काफ़ी ठण्डक रहती और बहुत आराम मिलता था। इससे बढ़िया ज़िन्दगी की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। खाना भी बहुत अच्छा मिलता था और ढेरों से।

दाग माना क अछूते ही रहे,
पेट-पीड़ा, ज्वर ने भी उसे तोड़ा नहीं।
श्रोता सुनो, अश्रुपूरित लोचनों से—
भवितव्य, जो होना था हुआ।
निपातित हो जल भरे इक कूप में
स्टीफेन इस जगत से चलता हुआ!
गया निकाला, हुए उपचार भी,
पर प्रयत्न सभी जन के व्यर्थ ही रहे।
स्टीफेन डार्लिंग बाट्स के प्राण पखेरू
महीयसों के लोक मे उड़कर जाते ही रहे।

अगर हमेलीन ग्रेंगर फोर्ड तेरह बरस की उम्र मे ऐसी कविता कर लेती थी तो आगे चलकर वह कितना नाम कमाती! बक ने मुझे बताया था कि वह तुकबन्दी तो यो मिनटो मे करती थी। कविता लिखते समय उसे सोच-विचार के लिए रुकना नही पड़ता था। एक पंक्ति लिखती और तुक न मिलती तो उसे काट देती और उसकी जगह नई पक्ति लिखकर तुक मिलाती हुई आगे बढ़ जाती थी। उसका कोई खास विषय नहीं था, जिस विषय पर कहो उसीपर लिख देती थी; केवल बात दु:ख, पीड़ा और शोक की होनी चाहिए। मरनेवाला आदमी हो, औरत हो या बच्चा वह अपनी 'शोकांजलि-गीतांजलि' लेकर उसकी लाश के ठण्डे होने से पूर्व ही हाजिर हो जाती थी। पड़ोसियो का कहना था कि मरनेवाले के यहां पहले डाक्टर पहुंचता, फिर हमेलीन और मृतक सस्कार कराने वाला तो हमेशा उसके बाद पहुंच पाता था। सिर्फ एक बार वह मृतक सस्कार वाले से पिछड़ी थी, क्योकि उसे मरनेवाले के नाम पर—वह कोई व्हिसलर था—कविता लिखने में देर हो गई थी। इसका उसे ऐसा सदमा लगा कि बराबर घुलती ही गई और अन्त में मर गई। यह सच है कि उसने न किसीसे अपना दु:ख कहा, न कोई शिकायत की। उसकी सारी उमंग ही मर गई थी और जीवन निस्सार लगने लगा था। बेचारी जी ही न सकी। जब उसकी तस्वीरें देखते-देखते खीझ उठता तो अकसर उसके कमरे में चला जाता और उसकी उस मोट बुक को लेकर उसकी लिखी

कविताएं पढ़ने लगता। मैं उसके प्रति कुछ कठोर भी हो गया था। वैसे उस परिवार के सब लोग मुझे पसन्द थे, जीवित और मृत सभी। और उनके और मेरे बीच में कोई आए इसे मैं सहन नहीं कर सकता था। जिस ह्मेलीन ने अपने जीते जी सब मरनेवालों पर कविताएं लिखी थीं; मरने पर वह खुद बगैर कविता के रह जाए यह मुझे अच्छा नहीं लगता था, इस-लिए मैंने उसपर कविता लिखने की बड़ी कोशिश की पर, एक पद भी न बना सका। हेमलीन के कमरे को वे लोग बहुत साफ-सुथरा और वैसा ही सजा-संवारा रखते थे जैसा उसके जीवन-काल में था। जो चीज उसके जीते जी जहां और जैसी हालत में थी उसे ठीक वैसा ही रखा गया था। वहां किसी-को सोने भी नहीं दिया जाता था। श्रीमती ग्रेंगर फोर्ड अपने बुढ़ापे और बीसियों हबशी नौकरानियों के बावजूद खुद अपने हाथों उस कमरे को झाड़ती-बुहारती और सीने-पिरोने का सारा काम और अपना बाइबल-पाठ भी वे उसीके कमरे में करती थीं।

हां, तो मैं बैठके के बारे में बता रहा था। उसमें खिड़कियों पर सुन्दर-सुन्दर पर्दे लगे थे। पर्दे सभी सफेद थे और उनपर अंगूरी बेल छाई दीवालों वाली गढ़ियां और पानी पीने के लिए जाते हुए पशुओं के चित्र बने थे। एक छोटा-सा पुराना प्यानो भी था, जिसकी पत्तियां (पर्दे) टीन की बनी थीं। और जब वे लड़कियां उसपर 'अन्तिम कड़ी भी टूट गई' (दि लास्ट लिंक हैज़ ब्रोकन) गीत गातीं या 'प्राग-युद्ध' (दि बटेल आफ प्राग) की धुन निकालतीं तो मैं अपनी सुध-बुध भूल जाया करता था। सभी कमरों की दीवालों पर पलस्तर किया हुआ था और अधिकांश में कालीन बिछे हुए थे। बाहर से पूरे मकान की सफेदी की गई थी।

मकान के दो खण्ड थे और उनके बीच की खाली जमीन पर छत डाल-कर नीचे फर्श बना दिया गया था। कभी दुपहर में हम वहां मेज-कुर्सी लगा-कर बैठ जाते थे। काफी ठण्डक रहती और बहुत आराम मिलता था। इससे बढ़िया जिन्दगी की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। खाना भी बहुत अच्छा मिलता था और ढेरों से।

दाग माता के अछते ही रहे,
पेट-पीड़ा, ज्वर ने भी उसे तोड़ा नहीं।
श्रोता सुनो, अश्रुपूरित लोचनों से—
भवितव्य, जो होना था हुआ।
निपातित हो जल भरे इक कूप में
स्टीफेन इस जगत से चलता हुआ!
गया निकाला, हुए उपचार भी,
पर प्रयत्न सभी जन के व्यर्थ ही रहे।
स्टीफेन डार्लिंग बाट्स के प्राण पखेरू
महीयसी के लोक मे उड़कर जाते ही रहे।

अगर हमेलीन ग्रेंगर फोर्ड तेरह बरस की उम्र में ऐसी कविता कर लेती थी तो आगे चलकर वह कितना नाम कमाती! बक ने मुझे बताया था कि वह तुकबन्दी तो यों मिनटों मे करती थी। कविता लिखते समय उसे सोच-विचार के लिए रुकना नहीं पड़ता था। एक पंक्ति लिखती और तुक न मिलती तो उसे काट देती और उसकी जगह नई पंक्ति लिखकर तुक मिलाती हुई आगे बढ़ जाती थी। उसका कोई खास विषय नहीं था, जिस विषय पर कहो उसीपर लिख देती थी; केवल बात दुःख, पीड़ा और शोक की होनी चाहिए। मरनेवाला आदमी हो, औरत हो या बच्चा वह अपनी 'शोकांजलि-गीतांजलि' लेकर उसकी लाश के ठण्डे होने से पूर्व ही हाज़िर हो जाती थी। पड़ोसियों का कहना था कि मरनेवाले के यहां पहले डाक्टर पहुंचता, फिर हमेलीन और मृतक संस्कार कराने वाला तो हमेशा उसके बाद पहुंच पाता था। सिर्फ एक बार वह मृतक संस्कार वाले से पिछड़ी थी, क्योंकि उसे मरनेवाले के नाम पर—वह कोई व्हिस्लर था—कविता लिखने में देर हो गई थी। इसका उसे ऐसा सदमा लगा कि बराबर घुलती ही गई और अन्त में मर गई। यह सच है कि उसने न किसीसे अपना दुःख कहा, न कोई शिकायत की। उसकी सारी उमंग ही मर गई थी और जीवन निस्सार लगने लगा था। बेचारी जी ही न सकी। जब उसकी तस्वीरें देखते-देखते खीझ उठता तो अक्सर उसके कमरे में चला जाता और उसकी उस नोट बुक को लेकर उसकी लिखी

कविताएं पढ़ने लगता। मैं उसके प्रति कुछ कठोर भी हो गया था। वैसे उस परिवार के सब लोग मुझे पसन्द थे, जीवित और मृत सभी। और उनके और मेरे बीच मे कोई आए इसे मैं सहन नही कर सकता था। जिस हेमेलीन ने अपने जीते जी सब मरनेवालो पर कविताए लिखी थी, मरने पर वह खुद वगैर कविता के रह जाए यह मुझे अच्छा नही लगता था, इस-लिए मैंने उसपर कविता लिखने की बडी कोशिश की पर, एक पद भी न बना सका। हेमलीन के कमरे को वे लोग बहुत साफ-सुथरा और वैसा ही सजा-संवारा रखते थे जैसा उसके जीवन-काल मे था। जो चीज उसके जीते जी जहां और जैसी हालत मे थी उसे ठीक वैसा ही रखा गया था। वहा किसी-को सोने भी नही दिया जाता था। श्रीमती ग्रेंगर फोर्ड अपने बुढापे और बीसियों हबशी नौकरानियो के बावजूद खुद अपने हाथों उस कमरे को झाड़ती-बुहारती और सीने-पिरोने का सारा काम और अपना बाइबल-पाठ भी वे उसीके कमरे मे करती थी।

हां, तो मैं बैठके के बारे में बता रहा था। उसमे खिड़कियों पर सुन्दर-सुन्दर पर्दे लगे थे। पर्दे सभी सफेद थे और उनपर अंगूरी बेल छाई दीवालो वाली गढ़िया और पानी पीने के लिए जाते हुए पशुओ के चित्र बने थे। एक छोटा-सा पुराना प्यानो भी था, जिसकी पत्तिया (पर्दे) टीन की बनी थी। और जब वे लडकिया उसपर 'अन्तिम कडी भी टूट गई' (दि लास्ट लिंक हैज ब्रोकन) गीत गाती या 'प्राग-युद्ध' (दि बटेल आफ-प्राग) की धुन निकालती तो मैं अपनी सुध-बुध भूल जाया करता था। सभी कमरो की दीवालों पर पलस्तर किया हुआ था और अधिकाश मे कालीन बिछे हुए थे। बाहर से पूरे मकान की सफेदी की गई थी।

मकान के दो खण्ड थे और उनके बीच की खाली जमीन पर छत डाल-कर नीचे फर्श बना दिया गया था। कभी दुपहर में हम वहा मेज-कुर्सी लगा-कर बैठ जाते थे। काफी ठण्डक रहती और बहुत आराम मिलता था। इसने बढ़िया जिन्दगी की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। खाना भी बहुत अच्छा मिलता था और ढेरो से।

दाग माता क बढ़ते ही रहे,
पेट-पीड़ा, ज्वर ने भी उसे
श्रोता सुनो, अश्रुपूरित लोचनों से—
भवितव्य, जो होना थ
निपातित हो जल भरे इक कप में
स्टीफेन इस जगत से चलत.
गया निकाला, हुए उपचार भी,
पर प्रयत्न सभी जन के व्यर्थ।
स्टीफेन डार्लिंग वाट्स के प्राण पखेरू
महीयसों के लोक में उड़कर जाते हैं

अगर हमेलीन ग्रेंगर फोर्ड तेरह बरस की उम्र में लेती थी तो आगे चलकर वह कितना नाम कमाती ! ब था कि वह तुकबन्दी तो यों मिनटों में करती थी। कवि उसे सोच-विचार के लिए रुकना नहीं पड़ता था। एक पं तुक न मिलती तो उसे काट देती और उसकी जगह नई तुक मिलाती हुई आगे बढ़ जाती थी। उसका कोई खास जिस विषय पर कहो उसीपर लिख देती थी; केवल बात द शोक की होनी चाहिए। मरनेवाला आदमी हो, औरत हो अपनी 'शोकांजलि-गीतांजलि' लेकर उसकी लाश के ठण्डे ह हाजिर हो जाती थी। पड़ोसियों का कहना था कि मरने पहले डाक्टर पहुंचता, फिर हमेलीन और मृतक संस्कार क हमेशा उसके बाद पहुच पाता था। सिर्फ एक बार वह

चढ़ने को फिक्र पहले करता और कारण जानने की बाद में। शिष्टाचार पालन करने के लिए उन्हें किसीने कहना नहीं पड़ता था, उनकी उपस्थि ही दूसरों से अच्छा आचरण करवाने के लिए काफी होती थी। उनका स्वभाव सभीको पसन्द था। वे अधिकांश सूरज की धूप की तरह थे, मतलब है, मौसम (वातावरण) को हमेशा सुहावना बनाए रहते; लेकिन कभी उनकी भौंह पर बदली आ जाती तो आधे मिनट के लिए चुप्प अंधे छा जाता और फिर पूरे हफ्ते तक किसीके गलती करने की सम्भावना न रह जाती थी।

सवेरे जब वे और मालकिन नीचे आते तो परिवार के सब सदस्य कुर्सियों पर से खड़े हो जाते और उनका अभिवादन करते और जब तक दोनों बैठ न जाते खड़े रहते थे। फिर टाम और बाब अलमारी के पास जाते और कई-कई तरह की तेज शराबें मिलाकर तैयार किया हुआ एक पेग लाकर कर्नल साहब के हाथ में थमा देते थे। वे उसे तब तक लिए रहते जब तक टाम और बाब अपने पेग तैयार करके आ न जाते। फिर दोनों भाई झुककर कहते, " आप दोनों के प्रति हमारे कर्तव्य का जाम।" दोनों पति-पत्नि नाम-मात्र को झुककर उन्हें धन्यवाद देते और तब तीनों अपने-अपने पेग पी जाते थे। अन्त में बाब और टाम अपने-अपने गिलासों में बची ह्विस्की या सेब की ब्राण्डी में थोड़ा पानी मिलाकर हमें दे देते और बच्चे भी उस वृद्ध दम्पति का जाम पीते थे।

बाब उनका सबसे बड़ा बेटा था और टाम दूसरा। दोनों ही लम्बे, खूबसूरत, चौड़ी छाती और बड़े कन्धों वाले दिखलौटे जवान थे। चेहरा ताम्र वर्ण, बाल और आखें काली। पोशाक दोनों की अपने पिता की ही तरह सूती और सफेद झक-झकाट। दोनों ही लड़के चौड़ा पजामा, टोपियां लगाते थे।

लड़कियों में एक थी मिस शारलोट। उम्र होगी पच्चीस बरस की। कद लम्बा, चेहरा रोबदार, और गर्वीला। जब तक गुस्सा न आता, बहुत भली और प्यारी। लेकिन जब गुस्सा आ जाता, ठीक पिता की तरह, भौंह टेढ़ी होते ही सामने वाले के होश-हवास गुम हो जाते थे। खूबसूरत भी गजब की थी।

अध्याय १८

कर्नल ग्रेंगरफोर्ड सज्जन थे, बहुत ही सज्जन और उनके परिवार के लोग भी उतने ही भले और सज्जन थे। जन्म उनका अच्छे और ऊँचे [illegible] में हुआ था; और जैसा विधवा डगलस कहा करती थी, घोड़े की नस्ल [illegible] ही तरह आदमी के कुल का भी बड़ा महत्त्व होता है, घोड़े को अच्छी [illegible] का होना चाहिए और आदमी को कुलीन—दोनों का ऊँची जात का [illegible] जरूरी है। और इस बात से तो इनकार किया नहीं जा सकता कि [illegible] डगलस स्वयं भी कुलीन थी। हमारे कस्बे में उसका घर-घराना सबसे [illegible] और अच्छा माना जाता था, यहां तक कि मेरे पिताजी भी इस बात [illegible] स्वीकार करते थे, यद्यपि वे स्वयं कीचड़-कांदो में लोटने वाले और [illegible] बहुत ही गन्दे और निकम्मे! कर्नल ग्रेंगरफोर्ड बहुत ही लम्बे और [illegible] बदन के आदमी थे। कुछ पीलापन लिए हुए, पक्का रंग था उनका, [illegible] की तो कहीं झाईं भी नहीं थी, चेहरा पतला और सूखा हुआ, रोज़ [illegible] उठकर दाढ़ी-मूछें साफ कर लिया करते थे। ओठ भी बहुत पतले [illegible] नथुने सिकुड़े हुए, पर नाक लम्बी और ऊंची और भौंहें झबरा थीं। [illegible] की पुतलियां एकदम काली और इस तरह कोटरों में उतरी हुई कि [illegible] वाले को लगता मानो किसी गहरी कन्दरा में से देख रहे हों। कपाल [illegible] था और बाल काले, सीधे और पीछे कन्धों तक झूलते हुए। हाथ [illegible] और लम्बे थे। रोज सवेरे साफ धुला हुआ सफेद कमीज पहनते और [illegible] भी उनका सफेद बुर्राक और मूली होता था—सारी पोशाक इतनी सफेद [illegible] देखने वालों की आंखें चौंधिया जातीं। रविवार के दिन वे पीतल के [illegible] वाला नीला टेलकोट पहना करते। चांदी की मूठ वाली महोगनी की [illegible] कर्नल साहब हमेशा लिए रहते थे। [illegible] और छिछोरापन उनमें नाम को भी नहीं था और न कभी जोर से बोलते थे। दयालु बहुत थे, इतने [illegible] कि आदमियों को सहज ही मालूम हो जाता और वह उनपर विश्वास करने लगता था। कभी कभी वह मुस्कराते तो वह मुस्कराहट देखते ही बनती थी, लेकिन वह भाले की तरह तन जाते और [illegible] [illegible] आंख में [illegible]

पढ़ने की फ़िक्र पहले करता और कारण जानने की बाद में। शि
पालन करने के लिए उन्हें किसीने कहना नहीं पड़ता था, उनको
ही दूसरों से अच्छा आचरण करवाने के लिए काफ़ी होती थी।
साथ सभीको पसन्द था। वे अधिकांश सूरज की धूप की तरह
मतलब है, मौसम (वातावरण) को हमेशा सुहाना बनाए रहते;
कभी उनकी भौंह पर बदली आ जाती तो आधे मिनट के लिए
छा जाता और फिर पूरे हफ़्ते तक किसीके गलती करने की सम्भ
रह जाती थी।

सवेरे जब वे और मालकिन नीचे आते तो परिवार के
कुर्सियों पर से खड़े हो जाते और उनका अभिवादन करते और
दोनों बैठ न जाते खड़े रहते थे। फिर टाम और बाब अलमा
जाते और कई-कई तरह की तेज शराबें मिलाकर तैयार किय
पेग लाकर कर्नल साहब के हाथ में थमा देते थे। वे उसे तब
रहते जब तक टाम और बाब अपने पेग तैयार करके आ न ज
दोनों भाई झुककर कहते, "आप दोनों के प्रति हमारे कर्तव्य
दोनों पति-पत्नि नाम-मात्र को झुककर उन्हें धन्यवाद देते औ
अपने-अपने पेग पी जाते थे। अन्त में बाब और टाम अपने-अप
में बची व्हिस्की या सेब की ब्राण्डी में थोड़ा पानी मिलाकर हमे
बक भी उस वृद्ध दम्पति का जाम पीते थे।

बाब उनका सबसे बड़ा बेटा था और टाम दूसरा। दोनों
खूबसूरत, चौड़ी छाती और बड़े कन्धों वाले दिखनौटे जवान
ताम्र वर्ण, बाल और आंखें काली। पोशाक दोनों की अपने पि
तरह सूती और सफ़ेद झक-झकाट। दोनों ही लड़के थोड़ा पजाम
लगाते थे।

लड़कियों में एक थी मिस शारलोट। उम्र होगी पच्चीस
कद लम्बा, चेहरा रोबदार, और गर्वीला। जब तक गुस्सा
बहुत भली और प्यारी। लेकिन जब गुस्सा आ जाता, ठीक
तरह, भौंह टेढ़ी होते ही सामने वाले के होश-हवास गुम हो
खूबसूरत भी गजब की थी।

उसकी बहन थी मिस सोफिया, लेकिन बड़ी बहिन से बिलकुल ही भिन्न। कबूतरी-सी शान्त, विनम्र और प्यारी। और सिर्फ बीस बरस की।

हरएक की टहल के लिए अलग-अलग हबशी नियुक्त थे, यहां तक कि बक और मुझे भी अपने-अपने टहलुए मिले हुए थे। मैं अपने काम दूसरों से करवाने का अभ्यस्त नहीं था, इसलिए मेरे वाले हबशी को फुर्सत ही फुर्सत थी, लेकिन बक के हबशी को सारा ही दिन दौड़ते बीतता था।

अभी तो कुल इतना ही परिवार था, लेकिन पहले चार बच्चे और थे—तीन लड़के, जो मारे गए और एक लड़की इमेलीन, जो मर गई।

कर्नल साहब के बहुत-सी जमीन और सौ से भी ज्यादा हबशी गुलाम थे। कभी उनके यहां बहुत-से मेहमान आ जाते। ये दस-पन्द्रह मील के घेरे में रहनेवाले प्रायः रिश्तेदार होते जो घोड़ों पर सवार होकर आते और पांच-छः दिन रहते थे। इनके आने पर आमोद-प्रमोद का बाजार गरम हो जाता; जंगल में और नदी पर सैर-सपाटों की धूम मची रहती, रात में खूब गाना-नाचना होता। आदमी अपने साथ बन्दूकें भी लाते। सभी ऊंचे खानदान के, अच्छे और मस्त लोग होते थे।

पास ही पांच-छः परिवारों का एक दूसरा फिरका रहता था। वे लोग भी उतने ही कुलीन और वैसे ही सम्पन्न थे। रोबदाब भी उनका ग्रेंगरफोर्डों जितना ही था। वे शेफर्डसन कहलाते थे। ग्रेंगरफोर्ड और शेफर्डसन दोनों अगनबोट के लिए एक ही नाव-घाट का इस्तेमाल करते थे, जो हमारे घर से बहाव की उलटी दिशा में करीब दो मील के फासले पर था। जब भी मुझे घाट पर अपने लोगों के साथ जाने का मौका मिलता वहां अच्छी नस्ल के घोड़ों पर सवार बहुत-से शेफर्डसन भी दिखाई देते थे।

एक दिन मैं और बक जंगल में शिकार खेल रहे थे कि हमने दौड़कर आते हुए एक घोड़े की आवाज सुनी। उस समय हम सड़क पार कर रहे थे।

बक ने कहा, "जल्दी से जंगल में भाग चलो।"

हम फौरन जंगल में जाकर छिप गए और पत्तियों की ओट देखने

लगे। थोड़ी देर में एक बांका जवान अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता आया। वह बड़े इत्मीनान से घोड़े पर बैठा था और सिपाही की तरह लग रहा था। उसकी बन्दूक काठी पर सामने की ओर रखी थी। मैं उसे पहले भी देख चुका था। उसका नाम हार्नी शेपर्डसन था। सहसा मेरे कान के पास बक की बन्दूक गरजी और 'धाय' की आवाज के साथ हार्नी की टोपी उस के सिर से उड़कर दूर जमीन पर जा गिरी। उसने फौरन बन्दूक खींची, निशाना साधा और वहां आ धमका जहां हम छिपे हुए थे। लेकिन तब तक हम वहां से भाग चुके थे। उधर जंगल घना नहीं था इसलिए गोली से बचने के लिए मैं मुड़-मुड़कर पीछे देखता जाता था। दो बार हार्नी ने बक को अपनी बन्दूक की जद में ले लिया था फिर वह जिधर से आया था उधर लौट गया। मेरा ख्याल है कि अपनी टोपी लेने गया होगा; यह मेरा अनुमान ही है, क्योंकि मैंने उसे देखा नहीं। हम रास्ते में कहीं नहीं रुके, दौड़ते हुए सीधे घर चले आए।

सब सुनकर कर्नल साहब की आंखों में क्षण-भर के लिए लौ-सी दहक उठी—मेरे ख्याल में तो वह खुशी की ही थी—फिर उनका चेहरा कुछ कोमल हो गया और उन्होंने अपेक्षाकृत मृदु स्वर में कहा, "झाड़ी के पीछे से गोली चलाना मुझे पसन्द नहीं। तुम रास्ता रोककर बीच सड़क में क्यों खड़े नहीं हुए ?"

"शेपर्डसन लोग कब तक खड़े होते हैं बप्पा ? वे हमेशा मौके का फायदा उठाते हैं और वह भी नाजायज तरीके से।"

मिस शारलोट राजरानी की गरिमा से सिर ऊंचा किए बैठी सुन रही थी। वह शायद गुस्से से उबलने लगी थी, क्योंकि नथुने फूल गए थे और आंखों से अंगारे बरसने लगे थे। दोनों भाई भी काफी उत्तेजित हो गए थे, मगर वे बोले कुछ नहीं। मिस सोफिया का चेहरा पीला पड़ गया था, लेकिन जब उसने सुना कि घुड़सवार को चोट नहीं लगी तो उसका रंग फिर लौट आया।

जल्दी ही बक की छुट्टी हो गई और हम दोनों वहां आए जहां पेड़ों के नीचे मक्का के डंठलों की एक मड़ैया बनी हुई थी। अब हम दोनों अकेले थे। मैंने पूछा, "क्यों बक, क्या तुम उस घुड़सवार को मार डालना चाहते

थे ?"

"बेशक, इसीलिए तो गोली चलाई थी।"

"उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ?"

"बिगाड़ा तो कुछ नहीं।"

"फिर तुम उसकी जान लेने पर क्यों उतारू हो गए ?"

"यों ही; अदावत के कारण।"

"अदावत क्या ?"

"अजब आदमी हो ! कहाँ पैदा हुए हो कि यह भी नहीं जानते, अदावत क्या होती !"

"भई, मैंने तो नाम ही आज सुना। तुम्हीं बताओ अदावत क्या होती है।"

"अच्छा, सुनो।" बक ने कहा, "अदावत का मतलब है, एक आदमी की किसी दूसरे आदमी से लड़ाई हो और वह उसे मार डाले; तब जो मारा गया है उसका भाई मारने वाले को मार डाले और फिर दोनों के भाई, भतीजे, बेटे और रिश्तेदार एक दूसरे की ताक में रहने लगें और मार-काट का सिलसिला जारी रहे—जब दोनों ओर के सब लोग मार डाले जाएँ तो अदावत खत्म। जब तक एक भी आदमी रहता है, अदा-

[illegible] है।"

त किसीको भी नहीं मालूम ?"
लूम है; बप्पा को मालूम है। और मेरे खयाल से कुछ बड़े-बूढ़े
हैं। लेकिन झगड़ा किस बात पर शुरू हुआ था, इसे अब कोई
ता।"
। बहुत लोग मारे गए ?"
बहुत-से। हम तो कफ़न सिर पर लपेटे ही रहते हैं। लेकिन
हमेशा लाशें नहीं भी गिरतीं। बप्पा के कई गोलियां लग चुकी
वे ऐसी बातों की परवाह नहीं करते। बाब दुधारे से बुरी तरह
चुका है। चोटें तो कुछ टाम को भी लगी हैं।'
इस साल भी कोई मारा गया है ?"
एक हमारा आदमी मरा और एक उनका। करीब तीन महीने
चचेरा भाई बड, जो अभी चौदह बरस का था, उस पार के जंगल
घोड़े पर चला आ रहा था। उसकी बेवकूफ़ी तो देखो कि कोई
ही लिए था, घर से निहत्था ही निकल पड़ा था। एक सुनसान
अपने पीछे दौड़े आते घोड़े की टापों की आवाज़ सुनी। मुड़-
बूढ़ा बाल्डी शेफर्डसन हाथ में बन्दूक लिए, निशाना साधे,
सफ़ेद बालों को लहराता सीधा उसीपर चला आता था।
तो घोड़े से कूदकर जंगल में छिप सकता था और वो उसकी
तो, लेकिन उसने सोचा कि घोड़ा दौड़ाता निकल जाऊंगा
पा न सकेगा। पांच मील तक उन दोनों की घुड़दौड़ होती
ड ने देख लिया कि अब निकल न सकेगा तो वह घोड़ा रोक-
क में छाती खोलकर खड़ा हो गया। पीठ में गोली खाना वह
नाम समझता था। बाल्डी सनसनाता हुआ आया और उसका
कर दिया। मगर बूढ़ा भी जल्दी ही मारा गया। एक हफ़्ते में
वालों ने उसे मारकर बड की मौत का बदला भी चुका लिया।"
ख़याल है कि वह बूढ़ा बुज़दिल था। क्यों बक ?"
वह बुज़दिल नहीं था। उसे कायर नहीं कह सकते। शेफर्डसन
है, एक भी नहीं। और न ग्रेंजरफोर्डों में ही कोई कायर
वो बड़ा बहादुर और लड़ाका था। एक बार वह अकेला

वह मुझे अपने कमरे में ले गई और धीरे से दरवाज़ा बन्द करके बोली, "क्यों, मैं तुम्हें अच्छी लगती हूं ?" मैंने कहा, "हां।" वह फिर बोली, "मेरा एक काम करोगे ? किसीसे कहोगे तो नहीं ?" मैंने कहा, "हां।" तब उसने बताया कि वह गिरजाघर में टेस्टामेण्ट की अपनी प्रति भूल आई है, जो दूसरी दो किताबों के बीच में रखी होगी, मैं चुपचाप जाकर ले आऊं और यह बात किसीको न बताऊं। 'अभी जाता हूं' कहकर मैं चुपके से घर के अन्दर से निकला और सड़क-सड़क गिरजाघर की ओर चल दिया। पहुंचा तो वहां कोई नहीं था, सिर्फ दो-एक सूअर फर्श पर लोट रहे थे, क्योंकि दरवाज़े में ताला वगैरह कुछ नहीं था, और गिरजाघर के फर्श की ठण्डक सूअरों को अच्छी भी लगती थी। कितनी मज़े की बात है कि बहुत-से लोग जब जाना चाहिए तब भी गिरजाघर नहीं जाते, मगर सूअरों की बात निराली है, वे तो न जाना हो तब भी चले जाते हैं।

मैंने सोचा, कोई बात ज़रूर होनी चाहिए, नहीं तो एक लड़की टेस्टामेंट की पोथी के लिए इतनी परेशान क्यों होने लगी ? मैंने किताब लेकर उसको झिंझोड़ा तो अन्दर से फौरन कागज़ का एक टुकड़ा नीचे आ गिरा। उसपर पेन्सिल से लिखा था, 'ढाई बजे'। मैंने किताब को और भी खखोला लेकिन फिर कुछ न निकला। बहुत कोशिश करने पर भी 'ढाई बजे' का मतलब मेरी समझ में नहीं आया तो मैंने वह पुर्जा किताब में रख दिया और उसे लेकर जब घर लौटा और ऊपर गया तो मिस सोफिया अपने दरवाज़े में खड़ी इन्तज़ार ही कर रही थी। मुझे देखते ही उसने झपटकर अन्दर ले लिया और दरवाज़ा बन्द कर किताब के पन्ने उलटने लगी। जैसे ही पर्चा दिखाई दिया उसने लेकर पढ़ा और खुशी से बावली हो गई। मैं चकित उसकी ओर देख ही रहा था कि उसने लपककर मुझे बांहों में भींच लिया और बोली, "कितने अच्छे लड़के हो तुम ! मगर यह बात किसीसे न कहना।" क्षण-भर के लिए उसका चेहरा लाल गुलाल हो गया, आंखें चमकने लगीं। रूप और भी निखर आया। यह सब इतना जल्दी और एकदम हुआ कि मैं घबरा गया और दम घुटने-सा लगा। थोड़ी देर बाद जब होश ठिकाने आए तो मैंने पूछा, "इस पुर्ज़े में क्या है ?" उसने उलटकर पूछा, "तुमने पढ़ा तो नहीं ?" मैंने कहा, "नहीं।" उसने फिर

पूछा, "तुम्हें पढ़ना आता है ?" मैंने जवाब दिया, "नहीं। घसीट नहीं पढ़ सकता। छापे की लिखावट हो तो पढ़ लेता हूं।" इसपर उसने कहा कि पुर्जे में कुछ नहीं है, सिर्फ निशान के लिए रखा था, "और अब तुम जाओ, वेनो।"

मैं इस घटना पर विचार करता हुआ नदी की ओर चल दिया। तभी मेरा ध्यान इस बात पर गया कि मेरा हबशी नौकर भी पीछे-पीछे चला आ रहा है। जब घर से काफी दूर निकल आए तो उसने एक बार पीछे और अपने अगल-बगल देखा और दौड़कर मेरे पास आ गया और बोला, "जाज सा'ब ! आप दलदल में चलेगा सा'ब तो हम आपको भोतसा बरसाती मकासिन (हिरन की खाल का मुलायम जूता) दिखाऊगा, हो सा'ब!"

मुझे उसकी बात कुछ अजीव लगी और साथ ही कुतूहल भी हुआ। कल भी उसने ठीक यही बात कही थी। इतना तो वह भी जानता था कि बरसाती जूता कोई ऐसी चीज नहीं जिसे देखने या पाने के लिए आदमी दलदल खूंदता फिरे। कोई दूसरी ही बात होनी चाहिए। मैंने कहा, "अच्छा, हो आगे।"

आधा मील चलने के बाद दलदल मिला। हम दखने-टसने कीचड़ खूंदते हुए आगे बढ़े। कोई आधेक मील जाने के बाद सूखी जमीन पर पहुंचे। यहां पेड़ों, लताओं और गुल्मों की घनी झाड़ी थी।

हबशी ने कहा, "हो जाज सा'ब ! आप भीतर घुसेगा सा'ब ! थोड़ा चलेगा सा'ब ! वो मकासिन देखेगा हो सा'ब। मैंने देखा सा'ब; हो सा' पेले देखा। अब आप देखोगे सा'ब, हो सा'ब !"

फिर वह मुड़ा और दलदल खूंदता हुआ लौट चला। जब पेड़ों की ओट हो गया तो मैं हाथों से टहनियों, लताओं और गुल्मों को हटाता हुआ झाड़ी में घुसा। कोई सौ कदम चलने के बाद एक कुंज-सा मिला, जो बहुत बड़े सोने के कमरे के बराबर था। वहां एक आदमी सोया हुआ था।—और वह जिम था, सचमुच जिम !

मैंने उसे जगाया। मेरा खयाल था कि वह मुझे देखकर चकित रह जाएगा, अपने आपे में न रह सकेगा, मारे खुशी के उछलने लगेगा आदि-आदि। मगर ऐसा कुछ न हुआ। मारे खुशी के उसकी आंखों में आंसू जरूर आ गए, पर आश्चर्य उसे जरा भी न हुआ। उसने बताया कि उस

... पुकारना भी सुनता
। डर से जवाब न दिया कि कहीं कोई पकड़ न ले और
ठेल न दिया जाए।

कहा, "मुझे थोड़ी चोट आ गई थी, इसलिए तुम्हारे बराबर
कता था। आखीर-आखीर में तो काफी पीछे रह गया था।
रे पर चढ़ते देखा, सोचा, ज़मीन पर बगैर पुकारे ही सा
न इतने में मकान दिखाई दिया और मैंने अपनी चाल ब
बहुत दूर था, इसलिए उन्होंने तुमसे क्या कहा, मुझे सुनाई
कुत्तों का डर भी था। मगर जब शान्ति हो गई तो मैं मा
घर के अन्दर चले गए। फिर मैं जंगल में चला आया अ
। का रास्ता देखता रहा। बड़े सवेरे कुछ हबशी उधर से खे
लिए निकले। उन्होंने मुझे देख लिया और यहां ले आए।
तरा नहीं, क्योंकि पानी और दलदल के कारण कुत्ते यहां
वे लोग रोज़ रात को मुझे खाना दे जाते और तुम्हारे हाल
ते हैं।"

जेक से कहकर मुझे यहां पहले क्यों नहीं बुला लिया?"
बुलाकर क्या करता? मैंने तुम्हें परेशान करना ठीक न
। इन्तज़ाम में लगा रहा। अब सब इन्तज़ाम हो गया। मैं
र चीज़ें खरीदता रहा और रात में जब मौका मिल जाता
त किया करता, अब..."

या?"

ारा पुराना बेड़ा।"

तब? हमारा पुराना बेड़ा उस टक्कर में टूटा नहीं था?"
कर टुकड़े-टुकड़े नहीं हुआ था। एक कोना काफी टूट-फूट
ज़्यादा नुकसान नहीं हुआ था। हां, सामान ज़रूर बहुत-
गिरा था। अगर हम गहरा गोता न लगाते और अन्दर
दूर न निकल आते और उतना डरते-घबराते नहीं तो
दिखाई दे जाता। लेकिन हमारे हाल तो, जैसी कि मसल
और अन्धा भइया जैसे हो रहे थे। खैर, कोई बात नहीं।

अब हमारा बेड़ा मरम्मत होकर बिलकुल नये के मानिंद हो गया है। पुराने सामान की जगह बहुत-सा नया सामान भी आ गया है।"

"मगर जिम, तुम्हें वह बेड़ा मिला कैसे ? पकड़ा या क्या किया ?"

"सोचने की बात है। यहां जंगल में बैठा पकड़ता कैसे ? नदी में वह जो मोड़ है न, वहां किसी ठौर में अटका हुआ था। इन हब्शियों ने देख लिया और खींचकर एक नाले में बेंत के झुरमुट में छिपा आए। अब आपस में लड़ने लगे कि उसका मालिक कौन। मुझे पता चला। मैंने यह कहकर झगड़ा निपटा दिया कि न वह इसका है और न उसका, वह तो मेरा और तुम्हारा है। और मैंने सबको धमकाया भी कि गोरे बच्चा साहब का माल हड़पकर सजा पाना चाहते हो ? बस, सब शान्त हो गए। मैंने सभीको दस-दस सेण्ट देकर खुश कर लिया। सब कहने लगे कि ऐसे बेड़े रोज़-रोज़ मिल जाया करें तो बड़ी जल्दी मालामाल हो जाएं। यहां के सभी हब्शी बड़े अच्छे हैं, सब तरह से मदद करते हैं; और जो भी चीज़ चाहता हूं, लाकर हाजिर कर देते हैं, दुबारा कहने की तो ज़रूरत ही नहीं पड़ती। वह जैक तो बहुत ही अच्छा, समझदार और फुर्तीला है।"

"वाकई बहुत होशियार है। उसने तुम्हारे बारे में तो बताया ही नहीं। सिर्फ यही कहा कि ढेर सारे मकासिन दिखाने ले चल रहा है। कभी कुछ हो जाए तो वह उसमें फसना नहीं चाहता। कह देगा कि उसने हम लोगों को मिलते देखा ही नहीं, और उसका यह कहना सच भी होगा।"

दूसरे दिन क्या हुआ, यह विस्तार में नहीं, संक्षेप में ही बताऊंगा। सूर्योदय से पहले मेरी नींद खुल गई। सोचा, एक झपकी और ले लूं। करवट बदलकर सोने जा ही रहा था कि सहसा सन्नाटे की ओर मेरा ध्यान चला गया। बिलकुल शान्ति थी, कहीं कोई हलचल सुनाई नहीं दे रही थी। मुझे आश्चर्य हुआ। रोज तो इस समय ऐसा सन्नाटा नहीं रहता। सवेरे की चहल-पहल शुरू हो जाती है। आज क्या बात है ? देखा तो बक बिस्तरे से गायब। जाने कब उठकर चला गया था। वैसे वह दुपहर दिन चढ़े तक सोता रहता था। मैं उठ बैठा और चकित होता हुआ नीचे आया। वहां भी कोई नहीं था। घर में पूरा सन्नाटा था। बाहर आया तो वहां भी यही ... कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। आगे बढ़ा तो लकड़ियों के ढेर के पास

मेरा हबशी नौकर जेक मिल गया।

मैंने उससे पूछा, "क्या बात है ?"

उसने कहा, "हो जाज सा'ब, आपको नहीं मालूम ?"

"नहीं !" मैंने कहा, "मुझे कुछ नहीं मालूम।"

"तो जाज सा'ब, हम आपको बताता है। हो सा'ब ! सोफिया मिस सा'ब भाग गया, हो सा'ब, एकदम से भाग गया ! रात में भाग गया। कब भाग गया किसीको भी नहीं मालूम। शादी बनाने को भागा हो सा'ब ! हानी रोपडगन में शादी बनाएगा छोटा मिस सा'ब ! इधर सा'ब लोगों को भी मालूम हो गया, हो सा'ब ! अभी आधा घण्टा पहिला मालूम हुआ। सब सा'ब लोग तावड़तोड़ तैयारी हो गया। ऐसा तैयारी, तेजी-से तैयारी। बन्दूक लिया, घोड़ा चढ़ा, भागा, हो सा'ब ! मेम सा'ब लोग रिश्तेदारों में गिया, हो सा'ब, खबर करने। बड़ा सालिस सा'ब—साउल सा'ब और बड़का सा'ब, बुड्ढा सा'ब नदी किनारा का सड़क तरफ गया हो सा'ब घोड़ा चढ़कर, बन्दूक लेकर गया। छोटा मिस सा'ब और हानी सड़क पर गुजरेगा फिर तो नदी पार जाएगा। इधर का सा'ब लोग सड़क रोकेगा, सड़क पर बन्दूक मारेगा, हो सा'ब ! खूब बन्दूक फूटेगा, खूब लड़ाई चलेगा, मौत मुश्किल बहुत होगा, हो सा'ब।"

"बक मुझे बिना जगाए ही चला गया।"

"हो सा'ब, चला गया। हम आपको बताता है सा'ब। बक सा'ब बोला, जाज सा'ब को झगड़ा से दूर रखना है अकेला जाता है, बन्दूक भरा हो सा'ब, चला गया। बक सा'ब बोला, शेफर्डसन को मारेगा, गुर्री लेकर मारेगा, नहीं उधर खुद मर जाएगा। बहुत शेफर्डसन, आज बड़ा लड़ाई। बक सा'ब जरूर मारकर मरेगा—अकेला मरेगा, बढ़िया मौत, हो सा'ब !"

मैं सरपट नदी की ओर भागा। कुछ ही आगे गया हूंगा कि दूर से बन्दूकें छूटने की आवाज सुनाई दी। जैसे ही लाग-घाट का गोदाम और लकड़ियों का ढेर दिखाई दिया, मैं पेड़ों और झाड़ियों की ओट लेता हुआ आगे बढ़ने लगा। मैं ऐसी जगह ढूंढ़ना चाहता था जो सुरक्षित भी हो और जहां से सब कुछ देखा जा सके। लकड़ियों के ढेर के सामने किनारे का एक ऊंचा पेड़ था। मैं उसकी ऊंची टहनी पर बैठ गया और देखने लगा। पहले

मेरा विचार घाट के पास वाले लकड़ी के एक चारेक फुट ऊंचे
पीछे छिपकर बैठने का था। लेकिन वहां नहीं बैठा, यह अच्छा है
नहीं तो आज यह कहानी सुनाने को शायद ही जीवित रहता।

गोदाम के सामने वाले खुले मैदान में चार-पांच घुड़सवार उछ
मचा रहे थे। वे चिल्लाते और गालियां बकते हुए उन लड़कों को
चाहते थे, जो लकड़ी के मचान के पीछे छिपे गोलियां चला रहे थे।
सवारों की कोई चाल सफल नहीं हो पा रही थी। जैसे ही लकड़ियों के
के पीछे से कोई नदी की ओर बढ़ने की कोशिश करता मचान के पीछे
बन्दूक गरज उठती—धांय ! दोनों लड़के पीठ से पीठ मिलाए बैठे
इसलिए वे एक साथ अपने आगे-पीछे का मोर्चा संभाल सकते थे।

थोड़ी देर बाद उन घुड़सवारों ने चिल्लाना और उछल-कूद मचाना
बन्द कर दिया। अब वे चुपचाप गोदाम की तरफ बढ़ने लगे। उधर एक
लड़का उठा, मचान पर बन्दूक रखकर निशाना साधा और गोली दाग दी
फौरन एक घुड़सवार चक्कर खाता हुआ जमीन पर आ गिरा। बाकी घुड़
सवार नीचे कूद पड़े और जख्मी को उठाकर गोदाम की ओर ले चले।
लड़कों को भागने का मौका मिल गया। मेरे पेड़ की ओर वे आधी दूर
पहुंचे होंगे कि घुड़सवारों ने देख लिया, फौरन अपने-अपने घोड़ों पर सवार
होकर लड़कों की ओर लपके। वे लड़कों तक पहुंच भी गए थे, परन्तु कोई
फायदा नहीं हुआ। दोनों लड़के इस बीच लकड़ी के उस ढेर की ओट हो
गए जो मेरे पेड़ के सामने था। अब लड़कों की यह मोर्चेबन्दी मचान से भी
तगड़ी थी। मैंने देखते ही पहचान लिया। एक तो बक था और दूसरा
छरहरे बदन वाला उन्नीसेक बरस का कोई अपरिचित युवक।

घुड़सवार कुछ देर चारों ओर दौड़ने और गोलियां चलाते रहे, फिर
वहां से चले गए। जैसे ही वे आंखों से ओझल हुए मैंने बक को पुकारा और
कहा कि यहां बैठा हूं। पहले तो उसकी समझ में नहीं आया कि यह पेड़ से
आवाज कैसी आ रही है। फिर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि मैं वहां कैसे !
उसने कहा, "जरा चारों ओर गौर से देखते रहो और जैसे ही वे दिखाई
दें हमें बता देना। वे गए नहीं हैं। यह सिर्फ उनकी चाल है। जल्दी ही
आ जाएंगे।" मेरा मन तो कर रहा था कि पेड़ से उतरकर बक के पास चला

।कन वहीं बैठा रहा। सहसा वह चीख उठा और बोला, "अभी ा है ! अभी तो सारा दिन पड़ा है और मैं और मेरा यह चचेरा (उस छरहरे युवक का यही नाम था) आज का बदला चुकाकर फिर उसने बताया कि बप्पा और दोनों भाई मारे गए और दुश्मनों तीन आदमी खेत रहे; डेपर्डसन लोग घात लगाए बैठे थे और ार किया; बप्पा और भाइयों ने गलती की, उन्हें अपने रिश्तेदारों ने तक इन्तजार करना चाहिए था; संख्या में अधिक होने के ही डेपर्डसनों ने उस समय मैदान मार लिया। मैंने हार्नी और मिस : बारे में पूछा कि उनका क्या हुआ ? जिम ने बताया कि वे पार और उनका बाल भी बांका न हुआ। मैंने सन्तोष की सांस ली। ने उस दिन हार्नी का निशाना चूक जाने के बारे में अपने-आपको को ऐसी गालियां दीं जो मैंने अभी तक नहीं सुनी थीं।

धाय-धाय कर बन्दूकें गरज उठीं। वे लोग लौट आए थे। इस बार थे और उन्होंने चुपचाप जंगल की राह पीछे से हमला बोला लड़के घायल हो गए, और दौड़कर नदी में आ कूदे। आदमियों ने का पीछा किया। किनारे-किनारे दौड़ते हुए गोलियां छोड़ते ार चिल्ला रहे थे, "भून दो ससुरों को, भून दो ! बचकर ।" मैं इतना उद्विग्न हो उठा कि लगता था, पेड़ पर से नीचे गिर ल-दुखदर की यह कहानी दुबारा मुझसे कही न जा सकेगी, वाली पीड़ा से व्यथित होकर मैं बेहोश ही हो जाऊंगा। वहां बना रहा, उस रात इस किनारे मला ही क्यों ? क्या यही सब ? यह बीभत्स, क्रूर दृश्य आज भी मुझे भुलाए नहीं भूलता है और मैं चौंक-चौंक पड़ता हूं।

होने तक उस पेड़ पर ही टंगा रहा, नीचे उतरने की हिम्मत ी। कभी दूर जंगलों में से आती बन्दूकों की आवाज सुनाई ो बार कुछ घुड़सवार लोगों के सामने से सरपट निकल गए। ए हुए थे। मैं समझ गया कि अभी झगड़ा खत्म नहीं हुआ हुत खिन्न और उदास हो गया था। फैसला कर लिया कि पास भी नहीं फटकूंगा। जो कुछ हुआ उसके लिए सब कुछ

जाए तो मैं ही दोषी था। कागज के उस छोटे-से पुर्जे ने कितना अनर्थ कर डाला ! 'ढाई बजे' का शायद यही मतलब था कि रात ढाई बजे मिस सोफिया और हार्नी कहीं मिलेंगे और भाग जाएंगे। उस पुर्जे के बारे में और मिस सोफिया के उस समय के विचित्र व्यवहार के बारे में यदि मैंने उसके पिता को बता दिया होता तो यह नौबत ही क्यों आती ! वे उसे ताले में बन्द कर देते और तब यह खून खराबा न होता !

पेड़ से उतरकर मैं बहुत सावधानी से चलता हुआ थोड़ी दूर नदी के किनारे-किनारे गया ! दो लाशें तट के पानी में पड़ी दिखाई दीं। मैं उन्हें घसीटकर ऊपर ले आया और दोनों के चेहरों को ढककर फुर्ती से आगे बढ़ गया। जब बक का चेहरा ढक रहा था तो मेरे आंसू न थम सके। फफक-कर रो उठा। उसने शुरू से ही मेरे साथ बहुत अच्छा और स्नेह-भरा व्यवहार किया था।

अब काफी अंधेरा हो गया था। घर जाने का तो सवाल ही नहीं उठता; इसलिए जंगल-जंगल दलदल की ओर चल दिया। जिम उस कुंज में नहीं था। मैं वहां से फौरन नाले की ओर भागा। दोनों हाथों से बेंत के झुरमुटों को हटाता जा रहा था कि दिखते ही कूदकर बेड़े पर सवार हो जाऊं और इस भयावने मुल्क से भाग छूटूं। लेकिन बेड़ा वहां से गायब था ! मेरा तो जैसे दम ही निकल गया। क्षण-भर तो कुछ सुझाई ही न पड़ा; फिर गला फाड़कर चिल्ला उठा।

पच्चीसेक फुट के फासले से एक आवाज सुनाई दी, "भगवान की मेहर ! तुम हो हक ? मगर भैया, इस कदर शोर न मचाओ !"

वह जिम की आवाज थी—इतनी अच्छी आवाज मैंने पहले कोई नहीं सुनी थी। किनारे-किनारे कुछ दूर दौड़कर मैं बेड़े पर पहुंच गया। जिम ने झपटकर मुझे गले लगा लिया। उसकी खुशी का पार न था। बोला, "भगवान की मेहर भैया, भगवान की बड़ी मेहर ! मैं तो समझा कि तुम मारे गए। जैक आया था, उसने बताया कि शायद मारे ही गए, क्योंकि अ... घर पर नहीं पहुंचे। मैं बेड़े को ठेलकर नाले के मुहाने पर ले ही आ रहा था ...हां जैक के लौट आने की प्रतीक्षा करता। वह आकर मुझे तुम्हारे मा... [illegible] तब मैं बेड़े को नदी में डाल देता। भगवान

को बड़ी मेहर भया, कि तुम जीते-जागते और सही-सलामत आ गए।"

मैंने कहा, "मारे जाने की बात भी ठीक ही रहेगी। मेरे न लौटने पर वे यही समझेंगे कि मैं लड़ाई में मारा गया और नदी में बह गया। वहां किनारे कुछ लाशें पड़ी हैं जो उनके इस विचार की पुष्टि कर देंगी। अब, जिम, फौरन चल पड़ो, एक क्षण की भी देर मत करो। जितनी जल्दी हो सके बेड़े को ठेलकर नदी में पहुंचा दो।"

जब बेड़ा दो मील नीचे मिसिसिपी की बीच धारा में पहुंच गया तब कहीं जाकर मैं निश्चिन्त हुआ। हमने फिर अपनी लालटेन जलाकर टांग दी। अब हम पूरी तरह से स्वतन्त्र और सुरक्षित थे—पहले की ही तरह। कल से एक दाना मुंह में नहीं गया था। भूख के मारे आंतें कुलबुला रही थीं। जान ने मक्का की मीठी रोटियां और छाछ, सूअर का मांस और करमकल्ला और कुछ हरी सब्जियां परस दीं—अच्छी तरह पकाया गया हो तो हर खाना षड्रस व्यंजन का मजा देता है। मैं चटखारे लेकर खाता रहा और हम बातें करते रहे और समय आनन्द से बीतता रहा। मुझे जितनी खुशी उस अदावत से निकल आने की थी जान को उतनी ही दलदल से छुटकारा पाने की। हम दोनों ने मुक्त मन से स्वीकार किया कि बेड़े जैसा कोई घर नहीं। दूसरी हर जगह घुटन और जकड़न होती है। सिर्फ बेड़े पर नहीं होती। बेड़े पर हमेशा बहुत खुला, सुखद और आरामदेह लगता है।

अध्याय १९

दो दिन और तीन रातें इसी तरह हंसी-खुशी में मौज-मजे के साथ कब बीत गई, कुछ पता ही न चला। लगता था जैसे समय चुपचाप, बिना विघ्न-बाधा के, बिलकुल सहज और सुखद ढंग से उड़ा जा रहा हो। हमारे वे दिन इसी तरह बीत रहे थे। यहां इस विशाल नदी का पाट कहीं-कहीं तो डेढ़ मील से भी अधिक चौड़ा था। हम रात में चलते और दिन में बेड़े को छिपा देते और खुद भी दुबक जाते। उधर रात चुकने लगती, इधर हम धारा

[illegible] हुए [illegible] हैं। [illegible] के लिए [illegible] और [illegible] [illegible] के नीचे [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] दिये। फिर [illegible] के लिए [illegible], [illegible] नहीं है [illegible] [illegible] होकर [illegible] [illegible] करने। [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] है बना था। [illegible] [illegible] कोई भी दिखाई देने [illegible] के [illegible] की [illegible], [illegible] और कोई चीज दिखाई [illegible] नहीं [illegible] थी। [illegible] [illegible]। [illegible] में एक [illegible] [illegible] और [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] ढेर का ढेर [illegible] [illegible] दूर पर दिखाई देती [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] दूर [illegible] [illegible]

ानी के साथ ही हर चीज धूप मे मुस्कराने लगती और चिड़िया
राागिनी छेड़ देती थीं।

इस समय मामूला-से धुए की ओर किसीका ध्यान नही जाता, इसलिए
ाग जलाकर वन्सी मे फसी दो-चार मछलिया नाश्ते के लिए भून
। इसके बाद हम नदी का अकेलापन देखा करते और अलसाते
और अलसाते-अलसाते सो जाते थे। फिर सहसा हमारी नीद टूट
और हम उठकर देखने लगते कि इस विघ्न का कारण क्या है और
ा चलता कि कोई अगनबोट खासता-खखारता बहाव की उलटी
चला जा रहा है। उधर की तरफ काफी दूर होने के कारण
के बारे मे सिवाय इसके कि उसकी फिरकी (पानी काटनेवाला
) पीछे की ओर है या बाजू मे, और कुछ भी मालूम नही हो पाता था।
द पूरे एक घण्टे तक सुनसान रहता, न तो कोई आवाज सुनाई
कुछ दिखाई देता। फिर धारा मे दूर मन्थर गति से बहता कोई बेड़ा
ेता ; उसपर लकड़ी काटता हुआ शायद कोई बेढंगा आदमी भी
योंकि बेड़ो पर लोग अकसर यही काम किया करते थे। चमक
कुल्हाड़ी गिरती दिखाई देती पर कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ती
हाड़ी फिर उठती और आदमी के सिर के ऊपर तक आ जाती तब
की आवाज आती थी—उस आवाज को हमारे तक पहुचने में
त लग जाता था। इस तरह आराम से पड़े और सन्नाटे को सुनने
ा दिन बीत जाता था। एक बार घना कुहरा छा गया और बेड़ो
को कनस्तर पीटते हुए चलना पड़ा जिससे कोई अगनबोट उन-
जाए। पता नही बेड़ा था या बजरा, पर हमारे इतने पास से
हमने लोगो के हसने, बातें करने और गालिया देने की आवाजें
सुनी; मगर हम किसीको देख न सके; हवा मे से आती उन
ी सुनकर ऐसा लगा मानो भूत-प्रेत बोल रहे हो। जिम ने तो कह
र जरूर भूत-प्रेतो की ही आवाज है। मै उससे सहमत न हो सका।
भूत-प्रेत होते तो यह क्यो कहते कि भाड़ मे जाए यह कुहरा ?"
ाते ही हम बेड़े को ठेलने लगते और जब वह बीच धारा मे पहुच
न उसे उसकी मर्जी पर धारा मे बहने के लिए छोड़ देते थे। मगर

हम अपने पाइप सुलगाए, पानी में पाँव डाले बैठ जाते और दुनिया-जहान
की बातें किया करते। अगर मच्छर अधिक तंग न करने लगते तो हम दस-
दिन सारा समय नंगे बदन ही रहते थे। बक के घरवालों ने मेरे लिए जो
ये कपड़े बनवा दिए थे वे एक तो आरामदेह नहीं थे और ज्यादा कपड़े
पहनने की वैसे भी मेरी आदत नहीं थी।

कई बार तो काफी देर तक सारी नदी पर अकेले हम ही हम होते थे—
र, पानी के पार, दोनों ओर सिर्फ किनारे और द्वीप। और कभी कहीं किसी
बिन की खिड़की में जलती मोमबत्ती की टिमटिमाती जोत या कभी-
भी किसी बेड़े या डोंगे पर जलते दीये का टिमटिमाता उजाला दिखाई
जाता था। कभी-कभी हमें इन जल-वाहनों से बीन बजाने और गीत गाने
आवाज़ भी सुनाई दे जाती थी। बड़ा मज़ेदार होता है बेड़े पर का जीवन।
संख्य तारों जड़ा आसमान ऊपर फैला होता और हम पीठ के बल लेटकर
हें देखते हुए चर्चा किया करते कि उन्हें किसीने बनाया है या वे आपही
गए हैं। जिम का कहना था कि बनाए गए हैं और मेरा कहना था कि
ने से हुए हैं, क्योंकि इतने तारों को बनाने में समय कितना लगेगा !
म ने मेरे इस तर्क को यह कहकर काट दिया कि चन्द्रमा बड़े मज़े से इतने
अण्डे दे सकता है। उसकी इस दलील में बड़ा ज़ोर था और मुझे चुप
जाना पड़ा, क्योंकि मैंने मेंढकों को असंख्य अण्डे देते देखा था और यह
चन्द्रमा पर भी लागू हो सकती थी ! तारों का टूटना और प्रकाश-
बनाते हुए ओझल होना भी हम देखते थे। इस सम्बन्ध में जिम की
राय थी कि ये वे सड़े और बेकार तारे हैं जिन्हें चन्द्रमा अपने घोंसले में
क देता है।

रात में दो-एक बार कोई न कोई अगनबोट भी अंधेरे में फिसलता दिखाई
ता था। वह अपनी चिमनियों में से ढेर सारी चिनगारियां छोड़ देता
दी में गिरती हुई बहुत सुन्दर मालूम पड़ती थी। फिर वह मुड़ जाता,
रोशनियां आखरी बार टिमटिमाती, मानो पलकें झपका रहा हो,
वह आंखों की ओट हो जाता और धीरे-धीरे उसकी आवाज़ सुनाई
बन्द हो जाती। नदी एक बार फिर शान्त और अकेली रह जाती,
अगनबोट की लहरें, उसके निकल जाने के काफी देर बाद भी हम तक

आती रहती और हमारे बेड़े को हिचकोले देती रहती। इसके बाद काफी देर तक कुछ भी नहीं सुन पड़ता, बिलकुल सन्नाटा रहता, जिसे भंग करते हुए कभी-कभी मेढक टर्रा उठते थे।

आधी रात के बाद किनारों पर रहनेवाले लोग सो जाते थे और तब दो-तीन घण्टे तक किसी केबिन की खिड़की में मोमबत्ती का उजेला या दीये की जोत दिखाई नहीं पड़ती थी, घुप्प अंधेरा छाया रहता। किनारे पर के ये प्रकाश-बिन्दु हमारी घड़ी का काम देते थे। पिछली रात में जैसे ही कोई दीया फिर से जलता दिखाई देता, हम समझ जाते कि सवेरा होनेवाला है और फौरन रुकने की जगह ढूढ-ढाढ़कर बेड़े को बांध देते और छिपने का उपक्रम करने लगते।

एक दिन सवेरे सूर्योदय के समय एक छोटी डोंगी मेरे हाथ लग गई। उसमें ढलान पारकर मैं किनारे पहुंचा, जो बीच धारा से सिर्फ दो सौ गज पड़ता था। फिर मैं एक नाले में घुस गया और बेरियों की तलाश में कोई मील-भर अन्दर तक बढ़ता चला गया। यहां दोनों ओर सरो (साइप्रेस) का जंगल था। चलते-चलते ऐसी जगह पहुंचा जहां एक पगडण्डी नाले के पार जाती थी। मैं वहां पहुंचा ही था कि दो आदमी उस पगडण्डी पर बग-टुट दौड़ें आते दिखाई पड़े। मैंने सोचा, अब मारे गए; पकड़े जाने में कोई कसर नहीं है। बात यह है कि जब भी किसीको किसीका पीछा करते देखता तो यही खयाल आता कि मुझे या जिम को पकड़ने वाले चले आ रहे हैं। क्योंकि हमें तो सारी दुनिया हमारा ही पीछा करती दिखाई देती थी। मैं वहां से भागने जा ही रहा था कि वे दोनों बहुत करीब आ गए और घिघि-याकर बोले, "बचा लो, हमको बचा लो! हम बेकसूर हैं, कुछ भी नहीं किया फिर भी लोग पीछे पड़े हैं, घोड़ों पर सवार कुत्ते लिए दौड़े आ रहे हैं। हमें बचा लो!"

वे तो सीधे डोंगी में चढ़ ही जाते, मगर मैंने कहा, "ठहरो, ठहरो! इस तरह नहीं। मुझे तो कुत्तों और घोड़ों की आवाज अभी सुनाई नहीं पड़ती तब तक तुम एक काम करो। इन झाड़ियों में होते हुए नाले के किनारे कुछ दूर चले जाओ, फिर पानी में उतरकर कर डोंगी में चढ़ जाना। इससे कुत्ते भटक जाएंगे और सूंघ-सूंघकर टोह न ले सकेंगे।"

उन्होंने मेरा कहना मान लिया। उनके डोंगी में सवार होते ही मैं तीर की तरह अपने टीबे की ओर भागा। पांच या दस मिनट बाद हमें दूर से कुत्तों के भौंकने और आदमियों के चिल्लाने की आवाजें सुनाई दीं! वे आवाजें नाले की ही ओर बढ़ती चली आ रही थीं। लेकिन हमें कोई दिखाई नहीं दिया। वे शायद पगडण्डी के ही आसपास कुछ देर ढूंढ़ते-खोजते रहे। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, वे आवाजें धीमी होते-होते सुनाई पड़ना बन्द हो गईं। एक मील का फासला तय कर नदी में पहुंचे, तब तक तो पूरी शान्ति छा गई थी। हम टीबे पर लगे और चिनार के पौधों में छिप गए—अब बिलकुल सुरक्षित थे।

उनमें का एक आदमी सत्तर बरस या कुछ ज्यादा ही उम्र का था। सर गंजा और मूछें भूरी थीं। पुरानी खस्ता हाल टोपी लगाए था। उसकी नीले रंग की ऊनी कमीज बहुत गन्दी और चीकट हो रही थी। नीली जीन की बिरजिस जगह-जगह से घिस गई थी और उसके ऊंचे बूट जूतों में खोंसी हुई थी। घर का बुना हुआ पापोश सिर्फ एक जूते पर चढ़ा हुआ था। नीली जीन का काफी लम्बी दुमवाला पुराना टेल कोट वह अपनी एक बांह पर किये था। उस कोट में पीतल के चिकने, चमकीले बटन लगे थे। दोनों आदमियों के पास दरियों के बड़े-बड़े, फूले हुए बेढंगे थैले थे।

दूसरा आदमी तीसेक बरस का था। उसके कपड़े-लत्ते साधारण ढंग के थे। नाश्ते के बाद हम लेट गए और बातें करने लगे। अब पता चला कि दोनों भी एक-दूसरे को जानते नहीं थे।

"कहो जी, तुम किस मुसीबत में पड़ गए थे?" गंजे ने उस दूसरे आदमी से पूछा।

वह बोला, "मैं दांतों का मैल साफ करने की दवा बेचता हूं। उससे मैल [illegible] दांतों का एनमल भी झड़ जाता है। इस बार गलती यह हो गई कि [illegible] नियम के खिलाफ इस गांव में रात-भर टिका रह गया। सारे दिन [illegible] फिक्र में ही था कि तुम आ गए और बोले, 'भैया, भागने में मेरी [illegible] करो।' मैंने कहा, 'यहां मैं तो भागने की फिक्र में हूं, मुसीबत आन [illegible] अच्छा चाहता है, भैया, एक साथ भाग चलें।' [illegible]"

गजे ने कहा, "कोई हफ्ते-भर से मद्य-निषेध अभियान चला रखा था।
मद्य-निषेध नहीं समझते ? दारू-बन्दी, नशा-विरोध, लोगों को शराब पीने
में रोकना—कुछ तो समझते हो ? यही मद्य निषेध है। अभियान जोरों पर
था। पियक्कड़ों की मैंने मुसीबत कर रखी थी। गांव की औरतों में, क्या
बूढ़ी, क्या जवान, क्या छोटी, क्या बड़ी, सभी में अपनी पूछ थी। देवता की
तरह पूजे जाते थे। और खूब चांदी झड़ रही थी—एक-एक रात की सभा
के पांच-पांच छह-छह डालर उठ रहे थे। हर सुननेवाले से दस सेण्ट लिए
जाते थे। बच्चों और हबशियों को मुफ्त बैठने देता था, उनका कोई टिकट
नहीं था। यों समझो कि अपना कारबार धूम-धड़ाके पर था। पता नहीं,
कल रात जाने कैसे लोगों को यह बात मालूम हो गई कि हम खुद निराले
में बोतल चढ़ाते हैं और मद्य-निषेध के नाम पर लोगों को ठग रहे हैं! एक
हबशी ने सवेरे-सवेरे आकर जगाया और कहा कि गांव के लोग चुपचाप
अपने कुत्तों और घोड़ों के साथ इकट्ठा हो रहे हैं, जल्दी ही यहां पहुंच
जाएंगे, भागने के लिए आधे घण्टे का वक्त देंगे, फिर खदेड़ना शुरू करेंगे
और पकड़ पाया तो मुंह काला करके झाड़ू मारते हुए जलूस निकालेंगे। मैं
उसी दम भागा। नाश्ते के लिए भी नहीं रुका, भूख ही मर चुकी थी।"
"बुड़ऊ!" उस युवक ने कहा, "मानो तो एक सुझाव है। तुम्हारी-
हमारी बढ़िया जोड़ी बन सकती है। बोलो, क्या राय है ?"
"राय बुरी नहीं और अपने को कोई एतराज भी नहीं। मगर पहले
यह बताओ कि तुम्हारा धन्धा क्या है—खास धन्धा ?"
"अपना खास धन्धा तो है अखबार छापना। यों पेटेण्ट दवाइयों में
थोड़ा दखल रखते हैं। नाटक नौटंकी भी खेल लेते हैं, खासकर दु:खान्तिका।
मिस्मेरिज्म और नजरबन्दी भी, अगर मौका मिले तो कर लेते हैं। गाने का
गुन भी है और दिल बहलाने के लिए बच्चों के मदरसे में संगीत शिक्षक
का काम कर सकते हैं। भाषणबाजी, सेवा बाजी तो अपने बायें हाथ का
कमाल है। और भी बहुत-से काम कर सकते हैं, जब जैसा मौका लग जाए।
तुम क्या कर सकते हो ?"
"अपने जमाने में हम भी हिकमत के चमत्कार दिखा चुके हैं। सिर्फ
बन्दगी से नासूर और असाध्य रोगियों का ही इलाज करते थे—उसमें बड़ी

केन्सर और फालिज (लकवा) के बीमारों का खास तौर पर। तकदीर का हाल भी खूब बता देते हैं बशर्ते कि कोई अधिकारी पहले से पता लगाकर जानकारी ले आए। सुधार अभियान चलाने, उपदेश देने, धर्म-सभाएं करने और सेवा (मिशनरी काम) करके मेवा खाने में तो हम खास तौर पर माहिर हैं।"

थोड़ी देर तक दोनों आदमी चुप रहे। फिर युवक ने ठण्डी सांस लेकर कहा, "हाय री तकदीर!"

गंजे ने कहा, "क्यों भाई, ठण्डी सांस लेकर तकदीर को क्यों कोस रहे हो?"

"इसलिए कि ऐसी दुर्गति की बात तो कभी सोची भी नहीं थी। कहां से कहां आ गिरे और किन लोगों की मोहब्बत में आन फंसे!" उसने आंसू पोंछते हुए कहा।

"इस मोहब्बत को तुम अपने लायक नहीं समझते? क्या बुराई है, प्यारे हम भी सुनें?" गंजे ने कुछ अकड़कर बड़ी गुस्ताखी से पूछा।

"बहुत लायक है, बिलकुल मेरे लायक है, कोई भी बुराई नहीं। मैं इसी मोहब्बत के काबिल हूं, क्योंकि अपने ही हाथों अपनी दुर्गति की है। आप लोगों को मैं दोष नहीं देता, न आपका दोष है, न किसी और का। मैं अपनी ही करनी का भोग भुगत रहा हूं। [illegible] किसी [illegible] है। मैं तो एक बात जानता हूं कि तकदीर में जो एक बार लिखी है उसे मुझसे कोई छीन नहीं सकता। [illegible] मेरे [illegible] को, मेरी दौलत और [illegible] को, मेरा सब कुछ कोई मुझसे [illegible] ले जाए, मगर [illegible] मुझसे कोई नहीं छीन सकता। किसी दिन तो [illegible] और [illegible] [illegible] नसीब होगा।"

रियायत भी क्यों करूं ? क्या हक है मुझे ?"

"अपने को गिराया ! कहां से गिराया ? कैसी करनी ? कुछ बताओ भी।"

"आपको यकीन नहीं आएगा। दुनिया में किसीको यकीन नहीं आता। कोई बात नहीं। छिपा रहने दो इस राज़ को—मेरी ज़िन्दगी के, मेरी पैदाइश के राज़ को।"

"तुम्हारी पैदाइश का राज़ ? क्या तुम्हारा मतलब है…"

"बुज़ुर्गवार," उस युवक ने बड़ी गम्भीरता से कहा, "मैं बताऊंगा अपना राज़ आपको। मुझे आपपर पूरा भरोसा है और जानता हूं कि आप यकीन करेंगे। यह खाकसार पैदाइशी ड्यूक (नवाब) है !"

जिम ने सुना तो उसकी आखें कपाल पर चढ़ गईं। मेरा ख़याल है कि ख़ुद मेरी भी ज़रूर चढ़ गई होंगी। लेकिन गंजे ने कहा, "अरे नहीं ! हो ही नहीं सकता। कहीं डींग तो नहीं मार रहे हो ?"

"जी नहीं। खाकसार महज़ अपनी हकीकत बयान कर रहा है। मेरे पड़दादा ब्रिजवाटर के ड्यूक के सबसे बड़े बेटे थे। इस सदी के आख़ीर में मेरे वालिद के दादा हुज़ूर अपने मुल्क को आख़री सलाम कर यहां तशरीफ़ ले आए थे, इस मुल्क की आज़ाद हवाओं में ज़िन्दगी बसर करने। उन्होंने यहीं शादी कर ली और एक यतीम बच्चे और बेवा को छोड़कर इन्तकाल फरमा गए। इसी अय्याम उधर उनके वालिद साहब फौत (मर) हो गए तो फौरन उनके छोटे साहबज़ादे ने रियासत और ख़िलअत, हुकूमत और दौलत पर कब्ज़ा कर लिया। ब्रिजवाटर के असली वारिस के सारे हकूक मन्सूख कर दिए गए। और खाकसार ही उस असली वारिस का बदनसीब पोता है। ब्रिजवाटर का असली ड्यूक मैं हूं। पर हाय री किस्मत, और हाय रे ज़माना ! रियासत और ख़िलअत से महरूम आज दर-ब-दर की ठोकरें खा रहा हूं। कोई पुरसाहाल नहीं। हर जगह दुरदुराया जाता हूं। दुनिया लानत भेजती है, नफरत करती है। बदन पर साबुत चिथड़े भी नहीं। दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया। गिरावट की यह हद कि आख़िर बेड़ेवालों की सोहबत करनी पड़ी ! मुझे मौत ही क्यों नहीं आ जाती !"

जिम को उसपर दया आ गई। मेरे भी यही हाल थे। हम उसे दिलासा

देने लगे। वह बोला कि दिलासा देना बेकार है, उससे कोई फायदा नहीं; हां, दिल को थोड़ा सकून (चैन) मिल सकता है, बशर्ते आप मुझको तसलीम करें। हमने कहा कि जरूर कर सकते हैं अगर यह मालूम हो जाए कि तसलीम क्या है और कैसे की जाती है। इसपर उसने बताया कि बात करते समय हमें झुककर उसे आदाब बजाना चाहिए, 'हुजूर', 'श्री', 'मेरे आका', 'मालिक' वगैरह कहकर बुलाना चाहिए, नाम हर्गिज नहीं लेना चाहिए, चाहें तो सिर्फ 'ब्रिजवाटर' कहकर बुला सकते हैं क्योंकि यह नाम नहीं रुतबा है; और जब वह खाना खा रहा हो तो किसी को अर्दली में होना चाहिए और खाने को दस्तरख्वान करना चाहिए; और जो भी चीज वह मांगे फौरन हाजिर करनी चाहिए।

यह तो कुछ भी मुश्किल नहीं था, इसलिए हमने स्वीकार कर लिया। खाने के समय किम पूरे वक्त उसकी अर्दली में खड़ा पूछता रहा, 'हुजूर को यह चाहिए या हुजूर को वह चाहिए ?' इस तरीके वह मारे खुशी के फूला न समाया।

लेकिन बूढ़े गंजे को कोई खुशी नहीं हुई। वह एकदम सुस्त हो गया। हुजूर का वह मान-सम्मान उसे जरा भी नहीं सुहाया। उसकी छाती पर जैसे सांप लोटने लगे। आखिर [illegible] जब उससे रहा न गया तो वह बोला, "सुनो ब्रिजवाटर, मुझे तुम्हारे लिए रंज बहुत है, लेकिन अकेले तुम्हीं आफत के मारे नहीं हो।" [illegible] उस बूढ़े के दिल में कोई बात थी।

"अब ?"

"हां, आपकी भेंट [illegible] की मान नहीं हुई है, [illegible] तुम्हारे ही

जल्दी।"

"ब्रिजवाटर ! मैं डाल्फिन हूं।"

मैं और जिम आंखें फाड़े देखते ही रह गए।

फिर ड्यूक ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

"मैं बिलकुल सच कह रहा हूं। इस समय तुम जिसे अपने स
देख रहे हो वह वही डाल्फिन है जो गुम हो गया था—सोहलवें
मेरी एंटोनेट का बेटा, राजकुमार डाल्फिन, खुद सत्रहवां लुई।"

"क्या बात करते हो ? कहां नन्हा राजकुमार डाल्फिन
तुम इतने बूढ़े ! छः या सात सौ बरस से कम उम्र न होगी,
क्या हकीकत में तुम गुमशुदा मरहूम चार्लमेन हो ?"

"ब्रिजवाटर, यह तो मुसीबतों और दुनिया की ठोकरों ने
कर दिए और रात-दिन की चिन्ताओं से सिर गंजा हो गया,
इतना बूढ़ा नहीं हूं। जिसे तुम देख रहे हो, और जो नीली जीन
में ठोकरें खाता और मुसीबतें उठाता फिर रहा है, वह सचमुच
अधिकारी राजा है।"

यह इस कदर रोए जा रहा था कि मेरी और जिम की समझ
रहा था कि क्या करना चाहिए। उसके लिए भी हम उतने ही
जितने कि ड्यूक के लिए और साथ ही खुशी और गर्व भी हो र
फ्रान्स का राजा हमारे साथ, हमारे बेड़े पर था। अन्त में हम
पास ठीक उसी तरह बैठ गए और दिलासा देने लगे जैसा कि
समय किया था। लेकिन वह बोला कि दिलासा देने से कुछ
हो, मरकर छुट्टी पा जाए तो शांति मिल सकती है; तकलीफ
बहुत है लेकिन कुछ सन्तोष मिल सकता है अगर लोग उसकी
का ख्याल रखें और उसके साथ राजाओं जैसा व्यवहार करें
बताया कि लोगों को उसके आगे एक घुटने के बल बैठकर बोलना
'महाराजाधिराज' कहकर सम्बोधित करना चाहिए; भोजन
पहले उसकी सेवा में उपस्थित रहना चाहिए और जब तक
प्रदान न करे उसके सामने बैठना नहीं चाहिए। बस, मैं और

हम उसे 'महाराजाधिराज' कहते, उसका बताया काम करते और जब तक वह बैठने को न कहता खड़े रहते थे। इससे वह बहुत खुश हुआ और उसकी सारी उदासी मिट गई। लेकिन ड्यूक बुरा मान गया और नाराज रहने लगा। गंजे की इतनी आवभगत उसे फूटी आंखों भी नहीं सुहा रही थी। लेकिन गंजे का व्यवहार उसके साथ ज़रा भी बुरा नहीं था; वह उससे बराबर दोस्ताना ढंग से पेश आता और बताता रहा कि कैसे फ्रांस के राजाओं के महलों में ब्रिजवाटर के सभी ड्यूकों का आदर-मान होता था और खुद उसके पिता के दरबार में तो ड्यूक के परदादा को बार-बार निमंत्रित किया जाता था। परन्तु ड्यूक का मुंह फिर भी चढ़ा ही रहा।

तब महाराजाधिराज ने कहा, "सुनो ब्रिजवाटर, तुम चाहो या न चाहो, इस बेड़े पर हमें और तुम्हें काफी समय साथ रहना होगा, फिर मुंह चढ़ाए रहने से फायदा? इससे तो हालत और बिगड़ेगी ही। गुस्सा और नाराजी मन से निकाल दो। ड्यूक घराने में जन्म लेना न तुम्हारे बस का था और न राजघराने में जन्म लेना मेरे बस का! जिसपर अपना कोई बस नहीं, उसके लिए परेशान क्यों हुआ जाए? अपना तो यह सिद्धान्त है कि जो भी स्थिति हो उसका बढ़िया से बढ़िया उपयोग कर लिया जाए। जिन्दगी में मुसीबतें यों ही क्या कम हैं कि एक और बढ़ाई जाए? इस बेड़े पर तो मज़ा ही मज़ा है, खाने की चीज़ों की कमी नहीं और आराम पूरा, फिर मुंह चढ़ाकर मज़ा क्यों किरकिरा किया जाए! ड्यूक, बढ़ाओ अपना दोस्ती का हाथ और हंसो-बोलो।"

ड्यूक ने कहना मान लिया और मैंने और जिम ने सन्तोष की सांस ली। तनाव फौरन दूर हो गया और हम लोगों की बेचैनी मिट गई। बेड़े पर आपसी खाग-टाग और रंजिश का होना बहुत बुरा होता है। ईर्ष्या-द्वेष से नुकसान ही नुकसान है। बेड़े पर तो सभी को सन्तुष्ट, प्रसन्न, दूसरों के प्रति दयालु, उदार और सहिष्णु होना चाहिए। इनके अभाव में बेड़े की जिन्दगी एक क्षण भी नहीं चल सकती।

... समझ गया था कि वे लफंगे न राजा थे न ड्यूक, ...

झगड़े-टंटे से बचने और परेशानियों से दूर रहने का इससे अच्छा तरीका कोई नहीं। अगर वे अपने-आपको राजा और ड्यूक कहलाना पसन्द करते हैं और इससे बेड़े के परिवार में शान्ति बनी रहती है तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है! जिम को कहने से कोई फायदा नहीं था, इसलिए मैंने उसे भी नहीं बताया। अपने पिताजी के जीवन और व्यवहार से मैंने एक बात सीखी थी और वह यह कि निकृष्ट लोगों से विवाद करना हो तो उन्हें अपने मन की करने दो।

अध्याय २०

उन्होंने हमसे बहुत-से सवाल पूछ डाले और हर बात जाननी चाही—बेड़े पर इधर कहाँ और क्यों जा रहे हैं? दिन में क्यों नहीं चलते, रुक क्यों जाते हैं? क्या जिम भागा हुआ गुलाम है?

मैंने फौरन कहा, 'अरे अरे! आप कैसी बात करते हैं? गुलामी से भागा हुआ हब्शी भला दक्षिण जाएगा?"

उन्हें मानना पड़ा कि नहीं जाएगा। तब उनके समाधान के लिए मुझे यह कहानी गढ़नी पड़ी.

"मेरा परिवार मिसौरी की पाइक काउण्टी में रहता था। मेरा जन्म भी वहीं हुआ। लेकिन एक-एक कर परिवार के सब लोग मर गए, बचे रहे मैं, बापू और मेरा भाई आइक। तब बापू ने अपना कार-बार समेटकर बेन चाचा के यहाँ जाने का फैसला किया। बेन चाचा ओर्लियन्स से भी चवालीस मील आगे रहते हैं। नदी किनारे उनकी खेती है। बापू बहुत गरीब हैं। कर्ज़ा भी था। घर-ज़मीन बेचकर जो मिला वह सब कर्ज़ा बेबाक करने में खत्म हो गया। मुश्किल से सोलह डालर और एक गुलाम, यह जिम बचा, इतने पैसों में चार आदमियों को अठारह सौ मील डेक से ले जाना, किसी भी सवारी से चौदह सौ मील नहीं ले जाया जा सकता। इतने में बापू की तकदीर जागी। नदी चढ़ने लगी। एक दिन यह बेड़ा उनके हाथ

लग गया। हमने इस बेड़े से ओरलियन्स तक का सफ़र करने की ठा
चल पड़े, मगर एक रात अगनबोट से हमारी टक्कर हो गई, वह बेड़े
सामने वाले कोने पर चढ़ गया। हम सब पानी में जा गिरे। मैं और जिम
गोता मारकर निकल आए, पर बापू पिए हुए थे, डूब गए; और आ
सिर्फ चार बरस का था, उसका भी कहीं पता न चला। हम रो-धोकर आ
बढ़े। मगर दो-तीन दिन तक लोग बहुत सताते रहे। नावों में चढ़कर
जाते और यह कहकर कि जिम भागा हुआ गुलाम है उसे पकड़ ले जा
की कोशिश करते। एक को समझकर रवाना करता कि दूसरा आ जाता। त
हमने रात में चलने का फ़ैसला किया। दिन में हम चलते नहीं, रात में को
परेशान करने आता नहीं।"

इसपर ड्यूक ने कहा, "दिन में चलने का भी कोई तरीका मैं सो
निकालूंगा; यह तुम मुझपर छोड़ दो। थोड़ा दिमाग लड़ाना पड़ेगा।
ख़ैर, कोई बात नहीं। दिमागी मशक्कत के हम आदी हैं। मगर आज का
दिन ऐसे ही चलने दो। दिन के उजाले में उस कस्बे के आगे से हम
गुजरना नहीं चाहते। नाहक खतरा क्यों मोल लिया जाए।"

रात होते-होते बादल घिर आए और पानी बरसने के आसार नज़र आने लगे। आसमान से बिजली की फुलझड़ियां छूटने लगीं और पेड़ों की पत्तियां थरथराने लगीं। साफ़ लग रहा था कि मौसम बहुत खराब हो जाएगा। ड्यूक और राजा दोनों मिलकर टपरिया का मुआयना करने लगे कि सोने का क्या इन्तज़ाम है और बिस्तरे किस किस्म के हैं। मेरे गद्दे में पुआल भरा था और यह जिम के गद्दे से, जिसमें भुट्टे के पोल भरे थे, काफ़ी अच्छा था। भुट्टे के पोलवाले गद्दे पर आराम से नहीं सो सकते; एक तो उसमें डण्ठल होते हैं और फिर करवट बदलने पर इस तरह आवाज़ करता है मानो सूखी पत्तियां खड़खड़ा रही हों, फ़ौरन नींद खुल जाती है। ड्यूक ने फ़रमाया कि वे मेरे वाले बिस्तरे पर आराम फ़रमाएंगे।

इसपर महाराजाधिराज बोले, "कम से कम इतना तो सोचा होता कि भुट्टे के पोलवाला बिस्तरा राजाओं की पद-प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं होता। मगर आपको इतना ख़याल कहां? अब उचित यही है कि श्रीमान

मैं और जिम डरे कि कहीं दोनों में फिर झगड़ा शुरू न हो जाए। इसलिए ड्यूक का जवाब सुना तो जी में जी आया और हम निश्चिन्त हो गए। उसने कहा, "कदम-कदम पर ठोकरें खाना और कुचला जाना तो किस्मत में ही लिखा है। कभी नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते थे, मगर वे जमाने हवा हो गए जब गुलेलखा फाख्ता उड़ाया करते थे। गर्दिश के चक्कर ने सारी तेजी खत्म कर दी। ओ मेरी बुरी किस्मत, तेरी तजवीज सिर-माथे। दुनिया में जिसका कोई पुरसाहाल नहीं उसे चुप मारकर सब बर्दाश्त करना होगा। जैसी महाराजाधिराज की मर्जी।"

मौसम कुछ साफ हुआ और काफी अंधेरा हो गया तो हम रवाना हुए। महाराजाधिराज ने हुक्म दिया कि बिलकुल बीच धारा में रहें और जब तक कस्बे से काफी आगे न निकल जाएं रोशनी हरगिज न जलाई जाए। हमने आज्ञा का पालन किया और कस्बे के दिये देखते हुए उससे करीब आधा मील आगे निकल आए। पौना मील आकर हमने अपनी लालटेन जला दी। दस बजे के लगभग जोर की आंधी, बिजली और गर्जन-तर्जन के साथ पानी बरसने लगा। महाराजाधिराज ने हम दोनों को, जब तक मौसम साफ न हो जाए, बाहर खड़े पहरा देने का हुक्म दिया और तब आप ड्यूक के साथ टपरिया में रात बिताने चले गए। बारह बजे तक मेरा पहरा था और न भी रहता और सोने के लिए बिस्तरा भी होता तब भी मैं टपरिया में न जाता, क्योंकि ऐसा तूफान रोज-रोज देखने को नहीं मिला करता। बहुत जोर का तूफान था वह—आंधी चिंघाड़ रही थी; हर दूसरे सेकण्ड पर बिजली कौंध जाती और दोनों तरफ आधे-आधे मील के विस्तार में किनारे से टकराती फेनिल लहरों को उजागर कर जाती; झड़ी में द्वीप धुंधलाए-से लग रहे थे; पेड़ हहराते हुए झूम रहे थे; मानो जड़-मूल से उखड़ जाएंगे; बादलों की गरज और कौंधे की कड़क कानों के परदे फाड़े दे रही थी, गड़गड़ाहट एक सिरे से दूसरे तक जाकर थम भी नहीं पाती थी कि फिर कौंधा कड़क उठता था! लहरें इतनी ऊंची और प्रचण्ड होती जा रही थीं कि लगता था, मुझे बेड़े से बहा ही ले जाएंगी। भीगने और बहने का मुझे कोई डर नहीं था, क्योंकि नंगे बदन था। टोरों का कोई डर-भय इसलिए नहीं था कि जल्दी-जल्दी चमकनेवाली बिजली में वे

दिखाई दे जाने और मैं बेड़े का मुंह इधर या उधर घुमाकर उन्हें बगली दे जाता था।

पहरा तो मेरा आधी रात तक था, परन्तु ग्यारह बजे से ही नींद सताने लगी। जब जिम को पता चला तो वह फौरन मेरी जगह पहरा देने को राजी हो गया। इस मामले में वह बहुत अच्छा था। मैंने टपरिया में सिर छिपाना चाहा, मगर ड्यूक और राजा इस तरह टांगें फैलाए पड़े थे कि सोना तो क्या ठीक खड़े रहने को भी जगह नहीं थी। तब मैं बाहर बरसते पानी में ही पड़ रहा क्योंकि एक तो वर्षा का पानी उतना ठण्डा नहीं था, बल्कि बूंदें तत्ती ही थीं और दूसरे, लहरें भी उतनी प्रचण्ड नहीं रह गई थीं। करीब दो बजे लहरों ने फिर अपना उग्र रूप दिखाना शुरू किया। पहले तो जिम के मन में आया कि मुझे जगा दे, फिर यह सोचकर रह गया कि लहरें शायद उतना विकराल रूप धारण न करें। लेकिन उसकी यह धारणा गलत निकली। थोड़ी ही देर में लहरों का जबर्दस्त रेला आया और मुझे बेड़े पर से अपने साथ बहा ले गया। जिम हंसता-हंसता दुहरा हो गया। ऐसा हंसोड़ और मसखरा हबशी मैंने दूसरा नहीं देखा।

दो बजे के बाद मैंने पहरा सभाला और जिम लेटते ही खर्राटे भरने लगा। थोड़ी देर बाद तूफान भी शान्त हो गया। जैसे ही किनारे के केबिन में पहला दीया दिखाई दिया मैंने उसे जगा दिया। हमारे छिपने का वक्त हो गया था।

नाश्ते के बाद महाराजाधिराज ने ताश की एक गन्दी पुरानी जोड़ी निकाली और ड्यूक के साथ प्रति पांच सेंट की बाजी लगाकर खेलने लगे। जब खेलते-खेलते थक गए तो उन लोगों ने, जैसाकि उन्होंने बताया, 'प्रचार करने' की ठानी। ड्यूक ने अपने थैले में से कुछ छपे हुए पर्चे निकाले और जोर-जोर से पढ़ने लगा। एक पर्चे में लिखा था, 'पेरिस के मशहूर और मारूफ डाक्टर अर्मण्ड द' मोन्टाल बान दिमागी कूवत बढ़ाने के खासानी तरीकों पर फलां महीने की फलां तारीख को इस मुकाम पर ठीक इतने बजे तकरीर फरमाएंगे। दाखिला फीस सिर्फ दस सेंट फी आदमी और पच्चीस सेंट कीमत पर जाती तरक्की का चार्ट भी हासिल किया जा सकता है।'

...टर अर्मण्ड द मोन्टाल बान वही है। एक दूसरे पर्चे

में उसने अपने बारे में लिखा था, 'शेक्सपियर की ट्रैजेडियों का दुनिया में नाम कमाया हुआ मशहूर ऐक्टर, लन्दन शहर की ड्रूरी गलीवाला गैरिक उर्फ छुट्टन।' हर पर्चे में उसने अपने अलग-अलग नाम और अलग-अलग तरह के हथकंडे गिनाए थे—किसीमें वह 'जादुई डण्डे' से पानी और सोने का पता लगाने वाला था तो किसीमें 'भूत-प्रेत-बाधा को भगाने वाला औलिया।'

अन्त में उसने कहा, "मगर जो मज़ा नाटक-नौटंकी खेलने में है वह किसीमें नहीं। यह दुनिया का सबसे आला फन है। क्या जहाँपनाह कभी स्टेज पर नमूदार हुए हैं?"

"नहीं।" राजा ने कहा।

"खैर, कोई बात नहीं। यह खादिम महाराजाधिराज को तीन दिन के अभ्यास में स्टेज पर खड़ा करने का हौसला रखता है। जैसे ही कोई बड़ा कस्बा आया, हम एक हाल किराए पर लेंगे और उसमें 'तीसरे रिचर्ड' का 'जंगे-शमशीर' यानी तलवारों की लड़ाई और 'रोमियो-जूलियट' का बारजे वाला सीन पेश करेंगे। फरमाइए, क्या ख़याल है?"

"हुजूर ब्रिजवाटर साहब, महाराजाधिराज तो उन सभी कामों में भाग लेने के लिए तैयार हैं जिनमें कंचन बरसे। मगर हमको अभिनय यानी ऐक्टिंग करना नहीं आता। देखने के मौके भी कम ही मिले। पिताजी के महलों में नाटक होते तो थे, लेकिन तब हम बहुत छोटे थे। अगर अब आप सिखा सकें और हम सीख सकें तो हमें कोई आपत्ति नहीं, कीजिए।"

"ज़रूर-ज़रूर!"

"अच्छी बात है। मगर हम कोई नई बात ज़रा देर में ही सीख पाते हैं। खैर कोई बात नहीं। क्यों न अभी से शुरू किया जाए। कहा भी है शुभस्य शीघ्रम्।"

तब ड्यूक ने उसे बताया कि रोमियो कौन था और जूलियट कौन थी और बोला कि मैं तो हमेशा रोमियो बनता रहा हूँ इसलिए महाराजाधिराज को जूलियट का पार्ट करना होगा।

मैं "मगर जैसा कि आपने बताया, अगर जूलियट जवान लड़की थी तो मेरा गंजा सिर और सफेद मूँछें उसके पार्ट में कैसे चलेंगी?"

"इसकी जहांपनाह फिक्र न करें। गांव के गंवार तमाशबीन ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देते। और फिर आप जूलियट की पोशाक पहने रहेंगे, हुलिया तक तब्दील हो जाएगा। किसीको कुछ भी पता न चलेगा। सीन को समझिए, जूलियट सोने से पहले बारजे में खड़ी चांदनी की बहार लूट रही है; वह रात के सोने वाले लिबास में है—लम्बा नाइट-गाउन और रात में लगाने की चुन्नटदार टोपी। ये रही उसकी पोशाक।"

उसने फौरन अपने थैले में हाथ डालकर दो-तीन सूती कपड़े निकाले और बताया कि ये तीसरे रिचर्ड और रोमियो के जिरह-बख्तर हैं जो उस जमाने के अमीर-उमराव पहना करते थे। फिर उसने एक सफेद सूती नाइट-गाउन और चुन्नटदार टोपी निकालकर दिखाई कि ये जूलियट के पहनने के कपड़े हैं। महाराजाधिराज का समाधान हो गया। अब ड्यूक ने एक किताब निकाली और बढ़िया नाटकीय ढंग से, स्वरों के चढ़ाव-उतार के साथ, कभी घूमकर और कभी उछलकर पूरा अभिनय करता हुआ पढ़ने लगा। बीच-बीच में बताता भी जाता था कि किस भाव का कैसे अभिनय करना चाहिए। फिर उसने वह किताब राजा को अपना पार्ट याद करने के लिए दे दी।

नदी के घुमाव से तीन मील नीचे की ओर एक दरिद्र-सा कस्बा था। दोपहर के खाने के बाद ड्यूक ने कहा कि उसे एक बढ़िया तरकीब सूझ गई है, जिसकी बदौलत जिम को खतरे से बचाकर दिन में भी आराम से मुसाफिरी की जा सकती है। उसने बताया कि तरकीब को असली जामा पहनाने के लिए उसे कस्बे में जाना होगा। राजा भी वहां अपना भाग्य आजमाने के लिए जाना चाहता था। जिम ने मुझे भी उनके साथ नाव में इसलिए भेज दिया कि हमारी कॉफी खत्म हो गई थी।

जब हम वहां पहुंचे तो कस्बे में कोई न था, सड़कें सूनी और बाजार खाली, सारी बस्ती में मौत जैसा सन्नाटा, मानो इतवार का दिन हो। एक घर के पिछवाड़े कोई बीमार हब्शी पड़ा धूप सेंक रहा था। उसने बताया कि बस्ती के सारे मर्द-औरत दो मील दूर जंगल में धर्म सभा में गए हैं, सिर्फ बहुत बूढ़े, बीमार और नन्हे बच्चे, जो चल नहीं सकते गांव में रहे

से कहा कि चाहो तो तुम भी चल [illegible] हो। वह उस सभा को देखना और हो सके तो कुछ काम बनाना चाहता था। उसने हब्शी से पूरा पता पूछ लिया था।

ड्यूक को छापाखाने की तलाश थी। हमने ढूंढ-खोज शुरू की तो एक बढ़ईखाने के ऊपर छोटा-सा छापाखाना मिल गया। बढ़ई और छापाखाने के कर्मचारी सभा में गए हुए थे और ताला खुला छोड़ गए थे। छापाखाने की जगह बहुत गन्दी थी और सारा सामान बेतरतीब फैला पड़ा था, जहां-तहां स्याही के धब्बे लगे थे और भागे हुए हब्शियों और घोड़ों के कई इश्तिहार दीवालों पर चिपके हुए थे। ड्यूक ने अपना कोट उतारा और बोला कि जो चाहता था सो मिल गया, अब सब ठीक हो जाएगा। उसे वहां छोड़कर मैं और राजा धर्म-सभा की ओर चल दिए।

हम कोई आधे घण्टे में वहां पहुंच गए। धूप और गर्मी इतनी अधिक थी कि पसीने में तर हो गए थे। आसपास के बीसेक मील से करीब हजार आदमी वहां आ जुटे थे। जिसका जहां जी चाहा और जिधर जगह मिल गई वहीं गाड़ियां छोड़ दी थीं; यहां तक कि सारा ही जंगल घोड़ों और गाड़ियों से भर गया था। घोड़े गाड़ियों के कठौतों में से दाना खा रहे थे और मक्खियों को भगाने के लिए पांव पटकते जा रहे थे। खम्भों पर डालों और टहनियों के छप्पर डालकर सायबान खड़े कर लिए गए थे और उनके नीचे दुकानें लगी हुई थीं, जहां लेमन और सोंठ की मीठी रोटियां और तरबूज-खरबूज और हरे भुट्टे और इसी तरह की दूसरी चीजें धड़ल्ले से बेची जा रही थीं।

इसी तरह के दूसरे छप्परों के नीचे, जो काफी बड़े थे, प्रार्थना-प्रवचन और उपदेश हो रहे थे। वहां लोगों की भीड़ लगी हुई थी। बैठने के लिए लट्ठों की बेंचें थीं, जिनका बीच में से चिरा हुआ सपाट भाग ऊपर था, गोलाई वाला हिस्सा नीचे, जिसमें छेद करके तिपाई की तरह टांगें लगा दी गई थीं और सहारे के लिए पीठ नहीं थी। धर्मोपदेशक, प्रवक्ता और प्रचारकों के खड़े रहने के लिए इन छप्परों के छोर पर मंच बने हुए थे। औरतें बड़े-बड़े बोनेट लगाए थीं; किसी-किसी ने 'लिन्ज़ी-वुल्ज़ी'[1] कपड़े की

१. सूती और ऊनी धागों की मिली-जुली बुनावट वाला कपड़ा।

और अपराधों से दबे हुए आओ ! पावनकारी जल का, पापों-अप-
े धोने वाले पवित्र पानी का कोई पैसा नहीं लगता। स्वर्ग के द्वार
ाए खुले हैं—आओ, रे आओ, प्रवेश करो और सुखी हो जाओ !
! ! जय हो ! ! अल्लेलुजाह ! ! !)
ाओं के जयकारों और उनकी चिल्ल-पों में उपदेशकजी का स्वर
ा खो गया। लोग उठ खड़े हुए और धक्का-मुक्की करते हुए आगे
। सबका लक्ष्य विलापी बेंचें थीं। हर कोई वहां दूसरों से पहले
ा चाहता था, इसलिए सभी एक-दूसरे को ठेल-ठाल रहे थे।
रे आंसुओं से भीगे हुए थे और कुछ सिसकते भी लगे थे। आगे
ापी बेंचों के आगे भीड़ लग गई—सब वहां पहुंच गए थे। अब
े, रो रहे थे, पुआल पर गिर-गिर पड़ते थे और सिर धुनते थे—
च्चों और पागलों की तरह आपा खोकर और उन्मत्त होकर।
ाजा मेरे पास से गायब हुआ, कब भीड़ में घुसा, मुझे कुछ पता
। उसकी आवाज सबसे ऊपर सुनाई दे रही थी। फिर मैंने उसे
ल-ठालकर मंच पर चढ़ते देखा। उसने उपदेशकजी से बोलने
मांगी और वह बोलने लगा। उसने कहा, "मैं लुटेरा था, समुद्री
छले तीस सालों से हिन्द महासागर में लूट-पाट करता था।
ल में, एक मुठभेड़ में मेरे बहुत-से साथी मारे गए और हम
र आदमी बचे रह गए। मैं नई भर्ती करने घर लौटा। पर
ऐसी करनी कि कल रात खुद ही लुट गया और उन्होंने मेरी
रके अगनबोट में से किनारे ढकेल दिया। पास में बाती
र अच्छा ही हुआ। मैं तो इसे प्रभु की कृपा ही मानता हूं। उस
ऐसी कृपा मुझ अपराधी पर कभी नहीं की थी। आज मुझे
ो गए। मेरी जिन्दगी बदल गई। सच्चा सुख क्या होता है
, इसी घड़ी जाना। अब प्रभु के रास्ते पर चलने का फैसला
गरीब हूं और आगे-पीछे भी कोई नहीं। अभी, इसी समय
हूं वहीं लौट जाऊंगा—हिन्द महासागर में; और वहां अपने
ों को, समुद्री लुटेरों और डाकुओं को सत्पथ पर लाने में
के शेष दिन खपा दूंगा। मैं उन्हें जानता हूं और वे मुझे

तो किसीकी जिगाम' की और कुछ नई-नवेलियां की सूती छपी छींट की थीं। कुछ युवक नंगे पांव थे तो कुछ बच्चे सिर्फ दाशिया की कमीजें पहने थे। कुछ बूढ़ी औरतें बैठी बुनाई कर रही थीं और कुछ नवयुवक-नवयुवतियों में चुप-चुप इशारेबाजियों का—नैन-सैन व्यापार चल रहा था।

जाते ही हमें जो पहला छप्पर मिला उसमें उपदेशकजी लोगों से भजन गवा रहे थे। पहले वे दो कड़ियां बोलते और फिर सब लोग उन पंक्तियों को दुहराते। छप्पर ठसाठस भरा था और सबके गाने का समवेत स्वर बड़ा ही भला और प्रभावोत्पादक लगता था। वे सब गा भी रहे थे बड़ी उमंग से, दिल खोलकर। इस तरह देर तक भजन होता रहा और गाने वालों का उत्साह चरम सीमा पर पहुंचता गया। अन्त-अन्त में तो वे मन्द्र से तार और पंचम से मन्द्र-सप्तक और तार-सप्तक पर पहुंच गए थे और कुछ नाचने, झूमने सामने और प्राय: सभी चीखने लगे थे। इसके बाद उपदेशकजी ने प्रवचन प्रारम्भ किया। वे मंच पर दौड़कर कभी दायें जाते, कभी बायें और कभी सामने आकर झुक जाते थे। बड़े हाव-भाव और तरह-तरह की मुद्राओं के साथ वे गला फाड़-फाड़कर बोल रहे थे। बीच-बीच में बाइबल की अपनी पोथी को खोलकर फैला देते और उसे चारों तरफ घुमाते हुए जोर से चिल्लाते, "विश्वास मार्ग में यह ठीक रास्ता है। इसे देखो, बचो और इसे पूजा करते हुए जिन्दगी बसर करो!" और श्रोतागण उमगकर कहते, "आमीन! (ऐसा ही हो)! जय हो, प्रभु की जय हो!" उपदेशकजी इसी तरह प्रवचन करते रहे और श्रोतागण सुनते, चीखते और आमीन पुकारते रहे।

उपदेशकजी कह रहे थे, "आओ, अरे, विश्वास करने वालों की बैंच पर आओ। पश्चात्ताप करो! आओ, पापी और अपराधी! (आमीन!) आओ, बीमार और दुखी-दर्दी! (आमीन!) आओ, लंगड़े-लूले और अन्धे! (आमीन!) आओ, गरीब-दुखी और कलंकित अपमानित! (आमीन!) थके और मांदे, भ्रष्ट और कलुषित, भोजन और निद्रा के मारे हुए, सब आओ! जिनका दिल टूट गया है वो भी आओ! जो निराश [illegible] हैं वो भी आओ! आओ [illegible] में, आओ [illegible] हो, [illegible]

लियडे और अपराधों से दबे हुए आओ ! पावनकारी जल का, पापों-अपराधों को धोने वाले पवित्र पानी का कोई पैसा नहीं लगता। स्वर्ग के द्वार सबके लिए खुले हैं—आओ, रे आओ, प्रवेश करो और सुखी हो जाओ ! (आमीन ! जय हो !! वल्लेलुजाह !!!)

श्रोताओं के जयकारों और उनकी चिल्ल-पों में उपदेशकजी का स्वर जाने कहां खो गया। लोग उठ खड़े हुए और धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़ने लगे। सबका लक्ष्य विलापी बेंचें थीं। हर कोई वहां दूसरों से पहले पहुंच जाना चाहता था, इसलिए सभी एक-दूसरे को ठेल-ठाल रहे थे। सबके चेहरे आंसुओं से भीगे हुए थे और कुछ सिसकने भी लगे थे। आगे रखी विलापी बेंचों के आगे भीड़ लग गई—सब वहां पहुंच गए थे। अब वे गा रहे थे, रो रहे थे, पुआल पर गिर-गिर पड़ते थे और सिर धुनते थे—बिलकुल बच्चों और पागलों की तरह आपा खोकर और उन्मत्त होकर।

कब राजा मेरे पास से गायब हुआ, कब भीड़ में घुसा, मुझे कुछ पता ही न चला। उसकी आवाज सबसे ऊपर सुनाई दे रही थी। फिर मैंने उसे लोगों को ठेल-ठालकर मंच पर चढ़ते देखा। उसने उपदेशकजी से बोलने की इजाजत मांगी और वह बोलने लगा। उसने कहा, "मैं लुटेरा था, समुद्री लुटेरा ! पिछले तीस सालों से हिन्द महासागर में लूट-पाट करता था। पिछली बसन्त में, एक मुठभेड़ में मेरे बहुत-से साथी मारे गए और हम केवल दो-चार आदमी बचे रह गए। मैं नई भर्ती करने घर लौटा। पर भगवान की ऐसी करनी कि कल रात खुद ही लुट गया और उन्होंने मेरी नंगाझोरी करके अगनबोट में से किनारे धकेल दिया। पास में कानी कौड़ी नहीं, पर अच्छा ही हुआ। मैं तो इसे प्रभु की कृपा ही मानता हूं। उन दयानिधान ने ऐसी कृपा मुझ अपराधी पर कभी नहीं की थी। आज मुझे उनके दर्शन हो गए। मेरी जिन्दगी बदल गई। सच्चा सुख क्या होता है यह मैंने आज, इसी घड़ी जाना। अब प्रभु के रास्ते पर चलने का फैसला कर लिया है। गरीब हूं और आने-पाई से भी कोई नहीं। फिर भी, इसी वक्त यहां से जाता हूं वहीं लौट जाऊंगा—हिन्द महासागर में; और वहां अपने भूले हुए भाइयों को, समुद्री लुटेरों और डाकुओं को सन्मार्ग पर लाने में अपनी जिन्दगी के शेष दिन खपा दूंगा। मैं उन्हें जानता हूं और वे मुझे

जानते हैं और जरूर मेरी बात सुनेंगे और इसलिए उनके उद्धार का काम मैं किसी भी दूसरे से ज्यादा अच्छी तरह कर सकूंगा। बिना पैसे के इतनी दूर जाने में समय तो जरूर लगेगा, लेकिन जहां चाह है वहां राह भी है और चाहे सारा रास्ता पैदल ही क्यों न चलना पड़े पहुंचूंगा जरूर! अपनी पापी जिन्दगी छोड़कर सत्पथ पर आने वाला जो भी लुटेरा मेरा आभार मानेगा, मैं उससे यही कहूंगा कि भाई, इस महापापी को धन्यवाद देने की जरूरत नहीं; धन्यवाद तुम दो पोकविले की धर्मसभा में आनेवाले उन भले और भोले लोगों को जो सारी मानव-जाति के मित्र और हितैषी हैं और उन परम पूज्य उपदेशकजी को जो निकृष्ट लुटेरों के एकमात्र सखा और सहायक हैं और जिनकी अमृतमयी ज्ञानवाणी सुनकर मेरे जैसे अंधे की भी आंखें खुल गईं?"

और तब वह ढाडें मार-मारकर रोने लगा और उसके साथ और लोगों ने भी रोना शुरू कर दिया। फिर किसीने कहा, "अरे भाइयो, उसके लिए चन्दा करो, चन्दा।" कोई आधा दर्जन आदमी चन्दा इकट्ठा करने के लिए तैयार हो गए। तभी किसीने कहा, "खुद उसीको अपनी टोपी लेकर घूमने दो!" सबने इसका समर्थन किया और उपदेशकजी ने भी कहा कि यही ठीक है।

अब राजा एक हाथ में टोपी लिए दूसरे से आंखें पोंछता और लोगों को असीसता हुआ भीड़ में घूमने लगा। समुद्री लुटेरों के प्रति इतनी दया-माया दिखाने के लिए वह लोगों की प्रशंसा करता और उन्हें धन्यवाद भी देता जाता था। बीच-बीच में खूबसूरत लड़कियां उठकर खड़ी हो जातीं और आंसू बहाती हुई उसे चूमने की इजाजत चाहतीं, ताकि वे उसे याद रख सकें। और हर बार वह अपने गाल आगे बढ़ा देता; इस तरह उसने कई लड़कियों को तो पांच-पांच और छह-छह बार चूमा और बहुतों को गले भी लगाया। बहुत-से लोगों ने उसे अपने साथ रहने के निमन्त्रण दि कि अधिक नहीं, सिर्फ एक हफ्ता-भर रह लेना और यह तो प्रायः सभीने कहा कि आपके चरण हमारे घर में पड़ना बड़े सम्मान और सौभाग्य की बात होगी। लेकिन उसने सबको यह कहकर टाल दिया कि आज तो धर्मसभा ...खिरी दिन है, इसलिए कुछ हो नहीं सकता और मुझे हिन्द महासागर

पहुंचने की जल्दी भी है; अब तो मन में यही लगी है कि कब वहां पहुंचूं और काम शुरू करूं !

बेड़े पर लौट आकर जब उसने गिनती लगाई तो कुल मिलाकर सत्तासी डालर और पचहत्तर सेण्ट इक्ट्ठा हुए थे। और वहां से लौटते समय एक गाड़ी के नीचे से वह तीन गैलन व्हिस्की का कण्टर भी उड़ा लाया था। लौटानों में हम लोग जंगल के रास्ते आए थे, इसलिए किसीने देखा नहीं। राजा ने बताया कि इस तरह के धार्मिक काम वह पहले भी कर चुका है, लेकिन ऐसी आमदनी कभी नहीं हुई। फिर भी उसने अपनी इस कारगुज़ारी को कोई खास महत्त्व नहीं दिया। बोला, "किसी धर्मसभा में समुद्री लुटेरों के उद्धार की बात कहकर गवारों को बुद्धू बनाने में रखा ही क्या है !"

जब तक राजा ने लौटकर नहीं बताया, ड्यूक यही सोचता रहा कि उसने अच्छी कमाई की है। लेकिन उसके बाद उसे अपनी यह धारणा बदलनी पड़ी। उस छापाखाने में उसने दिन-भर में जो काम किया उसका विवरण इस प्रकार है : कुछ किसानों के लिए घोड़ों के बारे में दो पर्चे छापे और चार डालर वसूल किए। उनसे अखबार के लिए दस डालर कीमत के विज्ञापन, पेशगी की शर्त पर चार डालर में लिए, जो उन्होंने खुशी-खुशी दे दिए। आधा डालर वार्षिक चन्दे के हिसाब से तीन ग्राहक पेशगी बनाए; वैसे तो अखबार का सालाना मूल्य दो डालर था, लेकिन उसने पेशगी चन्दा जमा कराने पर डेढ़-डेढ़ डालर की छूट दे दी। वे लोग तो अखबार का चन्दा प्याज और ईंधन में दे रहे थे, लेकिन ड्यूक ने कहा कि उसने यह नया कार-बार हाल में ही खरीदा है और कीमतें इसलिए घटा दी हैं कि लोग नकद भुगतान कर सकें, जिन्सों में लेने का नियम उसने बन्द कर दिया है और सारा व्यवहार सिक्के का और नकद ही रखना चाहता है। अखबार के लिए उसने एक नज़्म (कविता) खुद लिखी और कम्पोज़ करके रख भी आया, जब चाहो छाप लो। उस कविता का शीर्षक था—'हां, कुचल दे, ओ बेरहम दुनिया, टूटे हुए मेरे दिल को !' वह बोला, "बड़ी मीठी और दर्दभरी नज़्म है; पढ़ने वाले झूम उठेंगे।" लेकिन इस कामकी उसने कोई उजरत नहीं ली थी। इस तरह उसने सारे दिन की मशक्कत के बाद साढ़े नौ डालर की कमाई की थी।

फिर उसने हमें एक पर्चा बताया, जो हमारे लिए छापा गया था इसलिए उसका भी मेहनताना उसे नही मिला था। उसपर एक भागे हुए हबशी की तसबीर बनी थी, जो अपने कन्धे पर लाठी में अटकी एक गठरी लिए हुए था; नीचे लिखा था, 'पकड़वाने वाले को २०० डालर इनाम!' उसमे हूबहू जिम का वर्णन किया गया था और लिखा था कि वह न्यूऑर्लियन्स से चालीस मील दूर सेंटजेकस के बागान से पिछली सर्दियों मे भागा है और शायद उत्तर की ओर गया है। पकड़वाने वाले को इनाम के अलावा राहखर्च भी दिया जाएगा।

अब ड्यूक ने अपनी योजना समझाते हुए कहा, "आज की रात के बाद अगर चाहे तो दिन मे भी मुसाफिरी कर सकते हैं। जब भी कोई आता दिखाई देगा जिम को रस्से से बांधकर टपरिया में पटक देंगे और इश्तहार उसके हाथो मे देकर कहेंगे कि इसे हमने गिरफ्तार किया है। मुफलिसी की वजह से अगनबोट की मुसाफिरी नही कर सकते, चुनांचे दोस्तो से यह बेड़ा मांगे लेकर इनाम वसूल करने जा रहे हैं। कायदे से तो हथकड़ी-बेड़ी होनी चाहिए और जिम पर फबेंगी भी खूब, मगर हमारी मुफलिसी के किस्से से मेल बैठेगा नहीं, इसलिए रस्सा ही बेहतर है। जैसाकि ड्रामा में कहते हैं, हर चीज मौजूं होनी चाहिए।"

हम सबने ड्यूक की इस तरकीब की दाद दी और कहा कि अब दिन में भी यात्रा बेखटके की जा सकेगी। लेकिन अभी तो हम उस कस्बे से जल्दी से जल्दी दूर निकल जाना चाहते थे, क्योंकि ड्यूक ने छापाखाने में जो कारगुजारियां दिखाई थी उनसे जरूर बावेला मचना। रात ही रात में हमें वहां से मीलों आगे निकल जाने की उम्मीद थी और फिर तो चाहते पर दिन भी हमारा ही था।

रात दस बजे तक हम छिपे बैठे रहे। जब खूब अंधेरा हो गया तो कस्बे से निकले और कस्बे को काफी दूरी पर रखते हुए वहां से सटक आए। इस बीच हमने आवाज तक न की। जब कस्बा बहुत दूर पीछे छूट गया तभी हमने अपनी लालटेन जलाई।

सुबह चार बजे जिम ने मुझे पहरे के लिए जगाया तो बोला, "क्यों हक, रास्ते में और तो ड्यूक और राजा हमें नहीं मिलेंगे न? क्या ख्याल

है तुम्हारा ?"

"नहीं, मेरा ख्याल है कि अब नहीं मिलेंगे।" मैंने जवाब दिया।

"फिर तो कोई बात नहीं।" उसने कहा, "एक या दो राजाओं को तो बर्दाश्त किया जा सकता है, लेकिन ज्यादा को नहीं। और यह जो राजा है वो तो शराब में धुत् हो रहा है और ड्यूक के भी बुरे हाल हैं।"

बाद में पता चला कि जिम ने राजा को फ्रांसीसी में बोलने के लिए कहा था, जिससे जान सके कि वह सुनने में कैसी लगती है। लेकिन उसने यह कहकर मना [illegible] किया कि इस देश में रहते-रहते बहुत बरस हो गए और इतनी मुसीबतें पड़ीं कि सब भूल-भाल गया।

अध्याय २१

सूरज निकल आया था, लेकिन हम रुके नहीं, बराबर चलते ही रहे। थोड़ी देर बाद राजा और ड्यूक एक-एक कर तख्तियों में से बाहर आए। दोनों बहुत थके हुए रहे थे। जब दोनों नदी में नहा लिए तो थोड़े चुस्त-दुरुस्त दिखाई देने लगे। नाश्ते के बाद राजा ने बेड़े के एक कोने पर आसन जमाया। जूते खोलकर और पिंडलियों से पतलून को ऊपर चढ़ाकर उसने टांगें नदी के पानी में लटका दीं, ताकि [illegible] और 'रोमियो जूलियट' का अपना पार्ट याद करने लगा। जब काफी याद हो गया तो वह और ड्यूक दोनों मिलकर अभ्यास (रिहर्सल) करने लगे। ड्यूक उसे बार-बार बताता था कि हर बात और हर शब्द को कैसे बोलना चाहिए और किस तरह अभिनय करना चाहिए। [illegible] और [illegible] करने की [illegible] और फिर [illegible] कि अब ठीक है; "मगर 'रोमियो' को [illegible] की तरह [illegible], बहुत [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] के बजाय इस तरह — [illegible]। एक बात के लिए सोचो कि जूलियट [illegible], [illegible] और [illegible] की, [illegible] की तरह नहीं।

रहेगी, बल्कि बुलबुल की तरह चहकेगी, समझे !"

तब ड्यूक ने बोझ के फट्टों की दो लम्बी तलवारें निकालीं और वे दोनों 'तीसरे रिचर्ड' के तलवार-युद्ध वाले दृश्य का अभ्यास करने लगे। उनका वह उछल-कूद और तलवारबाजी देखकर मेरी तबीयत खुश हो गई। दोनों ही बड़े शानदार ढंग से तलवारें चला रहे थे। फिर राजा के पाँव लड़खड़ा गए और वह नदी में जा गिरा। इसके बाद दोनों बैठकर आराम करने लगे और नदी पर अब तक के अपने-अपने कारनामों का बयान भी।

दोपहर के भोजन के बाद ड्यूक ने कहा, "सुनिए जहाँपनाह ! मैं चाहता हूँ कि हमारा ड्रामा 'फर्स्ट क्लास' रहे और देखने वाले अश-अश कर उठें। इसमें कुछ इजाफा करना पड़ेगा। फरमाइश के लिए भी कोई चीज हमारे पास होनी चाहिए।"

"यह फरमाइश क्या बला है ब्रिजवाटर ?"

ड्यूक ने उसे समझा दिया और कहा, "मैं तो फरमाइश के जवाब में मल्लाहों या पहाड़ियों का कोई गीत सुना दूंगा या नाच दिखा दूंगा। मगर जहांपनाह क्या करेंगे ? ठहरिए, सोचने दीजिए। खूब याद आया ! वाह! हैमलेट की खुदकलामी कैसी रहेगी ?"

"हैमलेट की खुदकलामी क्या ?"

"वाह हैमलेट का खुदकलाम नहीं जानते ? शेक्सपियर की बेहतरीन चीज़ों में से है। दुनिया के अदब में इसकी धूम है। यह वह कलाम है, जो हैमलेट खुद अपने से कहता है, अपने जानिब बयान करता है। बहुत बेहतरीन बहुत ही बेहतरीन ! देखने वाले उमड़ पड़ते हैं। 'हाउस फुल' हो जाता है। मगर मेरी किताब में नहीं है। दूसरी जिल्द मेरे पास नहीं। खैर, कोई बात नहीं। मुझे अपनी याददाश्त पर भरोसा है। चन्द मिनट अकेला छोड़ दीजिए और थोड़ी चहल कदमी कर लेने दीजिए। फिर देखिए दिमाग की गहराई से इस मोती को निकाल लाता हूं या नहीं ?"

थोड़ी देर वह बेड़े पर चहलकदमी करता रहा। कभी याद करने लगता, कभी भौंहों को इस तरह सिकोड़ता कि कपाल में गुत्थी-सी पड़ जाती, कभी भौंहों को उछालकर ऊपर चढ़ा लेता, कभी एक हाथ से माथे को जोर से दबाकर लड़खड़ाता हुआ दो कदम पीछे हट जाता। फिर उसने एक आह

भरी, और आंख से दो बूंद आंसू चू पड़े। यह सब मुझे बहुत सुन्दर लग रहा था। इतने में उसने कहा, "आ गया, याद आ गया! सुनने के लिए तैयार हो जाइए।"

अब वह बड़ी सुन्दर भंगिमा में खड़ा हो गया था—एक पांव आगे बढ़ा हुआ था, दोनों हाथ फैलाकर ऊपर उठा लिये थे, सिर थोड़ा पीछे को झुक गया था और आंखें आसमान की ओर लगी थीं; इस स्थिति में वह थोड़ी देर क्रोधोन्मत्त होकर दांत किटकिटाता रहा; फिर छाती फुलाकर, चारों ओर झूमता हुआ, गर्जन-तर्जन के साथ बोलने क्या लगा, सारा दृश्य ही साकार कर दिया। इतना उत्कृष्ट और प्राणवान अभिनय मैंने कभी नहीं देखा था। उसका वह आत्मसम्भाषण या खुदकलाम, जब वह राजा को सिखा रहा था तो मुझे अनायास ही याद हो गया—आसान भी तो बहुत था। यह लीजिए:

जिन्दा रहूं या मर जाऊं—सवाल तो यह है।—
कि क्या बेहतर है: गर्दिश की ठोकरें खाते रहना जलील होना,
या पूरी ताकत के साथ मुकद्दर से भिड़ जाना
और लड़ते-लड़ते मौत की गोद में समा जाना?
—यही सवाल है जो खंजर की नोक की तरह
मेरे कलेजे में साल रहा है।
अगर मिलता हो मरने से छुटकारा,
तो कोई क्यों, कब तक ढोएगा जिन्दगी का बोझ,
सो न जाएगा मौत की मीठी नींद!
मगर हाय री बुजदिली! मौत के बाद का डर
दहशत बना देता है उस मीठी नींद के खूबसूरत सपने को
और इन्सान बर्दाश्त किए जाता है बदकिस्मती की मार,
और कतराता है सकून देनेवाले उस सपने से!
अगर पैदा हो सके मरने का हौसला
खुदकुशी कर सके इन्सान अगर
तो गर्दिश का चक्कर, किस्मत की ठोकर, बेरहम वक्त की मार,

जरदारों के तीखे तेवर, जालिमों के जुल्म, हाकिमों की बेरहमी,
बेगैरती और जलालत,
अंधेरी आधी रात में एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर
काली डरावनी कब्रों में दफन होना कौन पसन्द करेगा ?
लेकिन जहाँ से कोई लौटकर न आया
उस अनजानी जगह का खौफनाक डर
मरने के हमारे इरादों को पामाल कर देता है,
खुदकुशी के हमारे हौसलों को पस्त कर देता है,
गोया बरसने को आए बादल
उमड़-घुमड़कर भी तितर-बितर हो जाएँ
जब कि वही है, वही है सबकी आखिरी मंजिल !
मगर खूबसूरत ओफेलिया, तुम शान्त हो जाओ,
अपने भारी भरकम और [illegible] को मत तोलो,
(मुँह से कोई कड़ी और चुभती बात मत बोलो !)
बेहतर है भिक्षुणियों के मठ में चली जाओ, — जाओ।

मुझे ही नहीं, उस बूढ़े गधे को भी यह आत्मसमर्पण बुरा लगा [illegible] अन्दर और उसने अपनी [illegible] भी [illegible] कर दिया और [illegible] के [illegible] को [illegible]। लगता था, जैसे वह इसी के लिए बना हो। [illegible] [illegible] को [illegible] वह [illegible] और [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible]

... लिए चल कि वहां हमारे खेल की कोई
विश हो सकती है या नहीं।

हम अच्छे मौके से पहुंचे थे। उसी दिन शाम को वहा सर्कस होनेवाला
अड़ोस-पड़ोस के देहातों से लोग-बाग चरमराती गाड़ियों में लदे या
पर सवार चले आ रहे थे। सर्कसवाले सूर्यास्त के पहले ही अपना
देखाकर डेरा-तम्बू उखाड़नेवाले थे; रात होने से पहले तो उन्हें वहां
ा भी जाना था। हमारे नाटक के लिए इससे बढ़िया मौका और
ता? ड्यूक ने फौरन कोर्ट हाउस' किराए पर लिया और हमने सारे
इश्तिहार चिपका दिये, जिनमें लिखा था :

शेक्सपियर का शानदार ज़माना
जीता-जागता आपके कस्बे के स्टेज पर
लाजवाब ड्रामा, गजब का एक्टिंग
सिर्फ एक रात के लिए
ेक्सपियर की ट्रेजेडियों का दुनिया-भर में माना हुआ एक्टर
री गली वाले लन्दन थिएटर का मशहूर और मारूफ
डेविड गैरिक उर्फ छुटुन
और
बड़े एडमण्ड कीन साहब, रायल हे मार्केट थिएटर, व्हाईट चेपल,
ेन, पिकाडी, लन्दन और रायल कांटिनेण्टल थिएटर्स लन्दनवाले
शेक्सपियर के शानदार ड्रामे
रोमियो-जूलिएट के दारजेवाले सीन में !!!

....मास्टर गैरिक
....मास्टर कीन

नी के पूरे लवाजमे के साथ! नये पर्दे, नई सीन-सिनेरी, नई
र नये चेहरे!

इसके बाद में
-धाड़ से भरा हैरतअंगेज, दिल दहलानेवाला जबर्दस्त तमाशा!

ह—सार्वजनिक भवन, जहां गांव या कस्बे की अदालत भी बैठती है और
की जाती है।"

तीसरे रिचर्ड का जंगे शमशीर उर्फ तलवारबाजी का कमाल !

रिचर्ड तीसरा ....मास्टर दीन

रिचमाण्ड ....मास्टर मै

और इसके अलावा

(खास फर्माइशी प्रोग्राम)

हैमलेट का खुदकलाम

जिसे आप कभी भूल न सकेंगे !

पेश कर रहे हैं जनाब बड़े एडमण्ड कीन साहब !

उनका यह खास प्रोग्राम पेरिस में लगातार १०० रातों तक धूम मचा चुका है

आपके कस्बे में सिर्फ एक रात के लिए

मौका न चूकिए : जल्द देखिए

यहाँ से कम्पनी फौरन यूरोप के लिए रवाना हो जाएगी

टिकट की दर

इधर से भगाते तो दूसरा उधर से आ जाता था।

सारी दुकानें एक ही सड़क पर थी। सभी दुकानो के आगे सफेद तिर-पाल लगे थे; देहाती लोग। इन तिरपालों के खम्भों का अपने घोड़ों को बाघने के लिए इस्तेमाल करते थे। हर तिरपाल के नीचे लकड़ी के खाली बक्सों और खोखों के ढेर लगे थे और उनपर गाव के आवारा लोग दिन-दिन भर बैठे अपने चाकू घिसा करते या तम्बाकू खाते हुए जम्हाइयां और अंगड़ा-इयां लिया करते। बड़े ही निकम्मे लोग थे उस कस्बे के। प्रायः सभीके सिर पर हाते जितनी चौड़ी पुआल की पीली टोपियां थी और न वे कोट पहने थे और न वास्कीट ही। आपस मे वे एक-दूसरे को बिल और बक और हाक और जो और एंडी कहकर पुकारते थे। उनकी हर बात में गालियों की भरमार रहती और पिनकचियों की तरह रुक-रुककर और शब्दों को चबा-चबाकर बोलते थे। वह सारा गाव ही शायद आवारो से भरा हुआ था, क्योंकि हमे तो तिरपाल के हर खम्भे के सहारे कोई न कोई ठाला बैठा दिखाई दिया था। इन ठालों के दोनों हाथ हमेशा बिरजिस की जेबों मे रहते; सिर्फ तभी बाहर निकलते जब या तो तम्बाकू का अण्टा मुंह में रखना होता या खुजलाना होता। आम तौर पर वे इस तरह की बातें करते सुनाई देते थे

"तम्बाकू का एक अण्टा तो देना हाक।"

"मेरे पास देने को कहा; सिर्फ एक ही बचा है। बिल से मागो।"

बिल शायद दे भी दे और शायद झूठ भी बोल जाए कि उसके पास नहीं। उन लफंगों मे से कइयों के पास न तो होता एक सेंट और न होता तम्बाकू का एक पत्ता ही। बिलकुल मगे नवाब और किले पर घर वाले लोग थे वे! तम्बाकू भी हमेशा उधार मागकर खाते थे। मागने का उनका ढंग होता "यार जेक, अगर थोड़ी तम्बाकू दे सको, मेरे पास थी तो सही, मगर अभी-अभी बेन थामसन को दे दी सबकी सब!"

यह सफेद झूठ होता और केवल अजनबी ही धोखा खा सकता था। लेकिन जेक तो अजनबी था नहीं और फिर वह कितनी बार धोखा खाता! तुरत कहता, "तुम और उसे तम्बाकू दोगे? तुम्हारी बहिन की बिल्ली की दादी ने भी कभी किसीको कुछ दिया है कि तुम दोगे! मुझसे जो तम्बाकू

उधार ले चुके हो पहले वह तो लौटाओ लेफ बकनर, फिर मांगोगे तो मैं टन-दो टन दे दूंगा और ब्याज भी नहीं लगाऊंगा, समझे !"

"एक बार कुछ लौटा तो चुका हूं।"

"हां, लौटाया है करीब छह अण्डे। मैंने दी थी असली दुकान वाली और तुमने लौटाई काली हबशियों वाली !"

काली टिकिया होती थी दूकान वाली तम्बाकू, मगर ये लोग अधिकतर खालिस तम्बाकू पत्ती को ही बल देकर काम में लाया करते थे। अंटा उधार मांगते तो कभी चाकू से न काटते, पूरी टिकिया दांतों में दबाकर हाथों से खींचते और जब दो टुकड़े हो जाते तो टिकिया वाला हिस्सा उसके मालिक को थमा देते थे। इसमें कई बार टिकिया इतनी छोटी रह जाती कि असली मालिक को भिन्नाकर कहना पड़ता था, "लो, टिकिया तुम्हीं रख लो और अंटा मेरे हवाले करो, लाओ इधर।"

तमाम सड़कों और गलियों में कीचड़ ही कीचड़ था—खालिस कीचड़, कोलतार जैसा काला और कहीं-कहीं तो एक-एक फुट गहरा; और दो-चार इंच गहरा तो प्रायः सभी जगह था। सूअरों के मारे नाक में दम था; सड़क, गली, रास्ता—हर जगह घूमते रहते थे। कोई भी सूअरी अपने आधा-पौना दर्जन बच्चों को लेकर बीच सड़क में आकर आराम से लेट जाती। रास्ता रुक जाता और राहगीरों को उसकी परिक्रमा करके जाना पड़ता था। उसकी बला से ! वह तो मजे से टांगें पसारे, आंखें मूंदे, कान हिलाती हुई अपने बच्चों को दूध पिलाया करती। वह इस तरह पड़ जाती मानो इसी काम की तनख्वाह पा रही हो ! तभी कोई निठल्ला उसपर कुत्ते छोड़ देता और वह बुरी तरह चीखती-चिल्लाती वहां से भागती—दो कुत्ते उसके कानों पर चिपटे होते और करीब तीन-चार भौं-भौं करते पीछे दौड़ रहे होते। तमाम आवारा, निकम्मे, निठल्ले तमाशा देखने को दौड़ आते और ठहाका लगाने लगते और खुश होते कि कुछ शोर-गुल तो हुआ और वक्त काटने को एक बहाना मिल गया। फिर वे पहले की तरह आराम से जा बैठते। जब तक कि कोई कुत्तों को लड़ा न देता।

...ान का तेल छिड़ककर आग लगा दी जाती या उसकी दुम में कनस्तर
ांध कर दौड़ाते-दौड़ाते बेदम कर दिया जाता तो उन्हें बहुत खुशी होती
ी। ऐसे समय उनकी जड़ता कुछ देर के लिए दूर हो जाया करती थी।

नदी के सामने वाले मकान किनारे पर झुक गये थे और खतरनाक
ग से तिरछे होकर झुक गए थे। वे कभी भी नदी में गिर सकते थे।
इलिए लोगों ने उन्हें खाली कर दिया था। कुछ मकानों का अभी सिर्फ
क कोना धंसा था और अकेला वही कोना नदी पर झूला हुआ था, लेकिन
गों ने ऐसे मकानों को खाली नहीं किया था, यद्यपि उनमें रहना भी कम
तरनाक नहीं था। कभी-कभी ऐसे मकानों के नीचे की सारी जमीन धस
ा करती थी और उनमें रहनेवाले बेमौत मारे जाते थे। गर्मियों में
यहां करीब चौथाई मील अन्दर तक की जमीन धसकर नदी के पेट में
। जाती थी। ऐसे कस्बों को हमेशा पीछे और पीछे ही हटते रहना
ा था, क्योंकि नदी उनको बराबर नोचती और काटती रहती थी।

दोपहर होते-होते कस्बे की तमाम सड़कें गाड़ियों और घोड़ों से भर गई
अभी उनका तांता लगा ही हुआ था। लोग-बाग घरों से अपना खाना
ाथ लेते आए थे और गाड़ियों में बैठे खा रहे थे। शराब भी धड़ल्ले से
ा रही थी और लोग मतवाले होकर लड़ने-झगड़ने में लगे थे। तीन जगह
द मैंने लोगों को लड़ते देखा था।

इतने में किसीने कहा, "बूढ़ा बाग्स आ रहा है। अब मज़ा रहेगा।
राब का अपना माहवारी खिराज वसूलने आ रहा है। सुनो, रे सुनो!
ाग्स आ रहा है।"

स्बे के जितने भी आवारे-निठल्ले थे सब बहुत खुश हो गए। मैं समझ
ा बाग्स ज़रूर इनका मनोरंजन करता होगा।

क आवारे ने कहा, "पता नहीं, इस बार वह किसको पछाड़ेगा?
बीस बरसों में उसने जिन-जिन को पछाड़ने का इरादा किया, अगर
पछाड़ देता तो आज इसमें सन्देह नहीं कि वह... बन ही जाता।"

रे आवारे ने कहा, "मनाता हूं कि बूढ़ा बाग्स आज मुझीको धमका
तो मेरे का नाम हज़ार बरस तक अमर हो जाएगा।"

ो बाग्स अपने घोड़े पर सवार आता दिखाई दिया। वह दूर से ही

हो-हो करता, चिल्लाता और अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता आ रहा था। कुछ पास आने पर उसकी आवाज सुनाई दी, "हटो, रास्ता साफ करो! जानते नहीं, मैं लड़ने के लिए आ रहा हूं। आज लाशें गिरेंगी और कफन के भाव तेज हो जाएंगे।"

वह खूब शराब पिये था और काठी में बैठा डोल रहा था। उम्र उसकी पचास से ऊपर होगी और चेहरा एकदम लाल गुलाल। लोग देखते ही चिल्लाने और ठहाके लगाने लगे। हर कोई उसे बोलियां मार रहा था और वह भी उलटकर बोलियां मारता जाता था। अन्त में उसने कहा, "सबको एक-एक कर समझूंगा और बारी-बारी से ठिकाने लगाऊंगा। लेकिन अभी मुझे फुर्सत नहीं। आज तो मैं कर्नल शेरबर्न को मारने आया हूं। अपना तो कायदा ही है, शेर को पहले मारना, सियारों का क्या, जब चाहा मार गिराया!"

मुझे देखा तो मेरे पास आ गया और बोला, "कहां से आया है रे लौंडे, मरेगा?"

फिर वह आगे बढ़ गया। मुझे डरते देख एक आदमी ने कहा, "डरने की कोई बात नहीं। पिये रहने पर हमेशा इसी तरह ऊलजलूल बका करता है। लेकिन दिल का बहुत भला है। आज तक उसने किसी को अंगुली भी नहीं छुआई, न शराब के नशे में और न साधारण हालत में।"

बाग्स घोड़ा दौड़ाता कस्बे की सबसे बड़ी दुकान के सामने जा खड़ा हुआ और झुककर तिरपाल के नीचे देखता हुआ चिल्लाया, "निकल आ शेरबर्न, हिम्मत हो तो बाहर आ और मुकाबला कर उस जवांमर्द का जिसे तूने ठगा है! ओ कुत्ते, बहुत दिनों से तेरी तलाश में था और आज तुझे मार कर ही रहूंगा।"

इसी तरह वह जो मुंह में आया बकता रहा और शेरबर्न को छांट-छांटकर गालियां देता रहा। लोग भीड़ के भीड़ सड़क के दोनों ओर आ खड़े हुए थे और मजा ले-लेकर हंस रहे थे। थोड़ी देर बाद कोई पचासेक बरस का एक रोबीला आदमी दुकान में से बाहर आया। वह बहुत बढ़िया कपड़े पहने हुए था। लोग उसे रास्ता देने के लिए दो-दो कदम पीछे हट गए। उसने एकदम शान्तिपूर्वक और स्पष्ट शब्दों में बाग्स से कहा,

"मैं इससे तंग आ गया हूं और आज एक बजे तक और बर्दाश्त करूंगा। सुन लिया, एक बजे तक ! उसके बाद नहीं ! उसके बाद अगर तुमने मेरे खिलाफ मुंह भी खोला तो यहां तक आ भी नहीं पाओगे, मैं उसके पहले ही गोली मार दूंगा।"

फिर वह मुड़कर अन्दर चला गया भीड़ में एकदम सन्नाटा छा गया। लोग अपनी जगह से हिले तक नहीं। हंसी और चुहल का तो नाम ही नहीं रहा। बाग्स शेरबर्न को भद्दी-भद्दी गालियां देता हुआ लौट गया, लेकिन दूसरे ही क्षण फिर चिल्लाता और गालियां बकता हुआ दूकान के सामने आ खड़ा हुआ। लोगों ने उसे घेर लिया और समझाने लगे। लेकिन वह किसी की क्यों सुनने लगा। लोगों ने कहा कि एक बजने ही वाला है, सिर्फ पन्द्रह मिनट बाकी हैं और तुम लौट जाओ, फौरन घर चले जाओ। लेकिन वह फिर भी वहीं अड़ा रहा। वह अब भी गालियां बके जा रहा था। कुछ देर बाद उसने माथे पर से टोपी उतारकर कीचड़ में फेंकी और उसे घोड़े के पांव तले कुचलकर गालियां बकता और अपने भूरे बालों को लहराता वहां से सरपट चला गया। कई लोगों ने उसे समझाने और घोड़े पर से उतारने की कोशिश की। उनका इरादा उसे घोड़े पर से उतारकर नशा उतरने तक ताले में बन्द रखने का था। लेकिन किसीकी कोई बात चल नहीं पा रही थी। वह हर दो मिनट बाद घोड़ा दौड़ाता आ जाता और शेरबर्न को गालियां देने लगता।

तब किसीने कहा, "अरे, कोई दौड़े जाकर इसकी बेटी को बुला लाओ, सारी दुनिया में एक वही है जो इसे समझा सकती है और यह उसका कहना मानता भी है।"

फौरन एक आदमी उसकी बेटी को बुलाने दौड़ गया। इस बीच मैं सड़क-सड़क कुछ दूर आकर एक जगह खड़ा हो गया था। कोई पांच मिनट बाद बाग्स फिर आया। लेकिन इस बार वह घोड़े पर नहीं था, नंगे सिर पैदल चल रहा था और अगल-बगल दो दोस्त उसे बगलों से पकड़े घसीटते हुए ला रहे थे। इस समय बाग्स चुप था और काफी बेचैन नजर आ रहा था। लेकिन उसे घसीटने की कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि वह डिठता हुआ नहीं चल रहा था, बल्कि तत्परता से कदम उठाता जा रहा था।

तभी एक आवाज़ गूंज गई, "बाग्स !"

बोलने वाले का पता लगाने के लिए मैंने जिधर से आवाज़ आई थी उधर देखा तो बीच सड़क में शेरबर्न चुपचाप खड़ा था। उसके दाहिने हाथ में पिस्तौल थी और उसकी नली ऊपर आसमान की ओर उठी हुई थी। तभी बाग्स की बेटी दौड़कर आती दिखाई दी। उसके साथ दो आदमी और थे। बाग्स और उसके साथ वाले आदमियों ने मुड़कर देखा कि आवाज़ किसने लगाई है। जैसे ही उन आदमियों को पिस्तौल दिखाई दी वे उछलकर एक ओर को भाग गए। इतने में पिस्तौल की नली सीधी हो गई; उसके दोनों घोड़े चढ़े हुए थे। बाग्स ने अपने पर निशाना सधा देखा तो दोनों हाथों को सामने करके बोला, "मत मारो, खुदा के लिए गोली मत मारो!" धांय ! पहली गोली चली और वह हाथ हिलाता हुआ पीछे की ओर लड़खड़ाया। धांय ! दूसरी गोली चली और वह दोनों हाथ फैलाए सड़क पर पीठ के बल धड़ाम से जा गिरा। उसकी बेटी चीखें मारती हुई झपटी और पछाड़ खाकर अपने बाप की लाश पर गिर पड़ी; और बैन कह-कहकर क्रन्दन करने लगी, "मार डाला रे ! हाय, उस हत्यारे ने मेरे बापू को मार डाला रे !" लोगों की भीड़ लग गई। सब देखने के लिए धक्का-मुक्की करने और एक-दूसरे पर चढ़ने लगे। अन्दर वाले उन्हें पीछे धकेलकर चिल्लाने लगे, "पीछे हटो, पीछे ! हवा आने दो, हवा !"

उधर कर्नल शेरबर्न ने पिस्तौल जमीन पर फेंका और मुड़कर दुकान के अन्दर चला गया।

अब लोगों ने बाग्स को उठा लिया और उसे दवाइयों की एक छोटी-सी दुकान में ले चले। भीड़ उसे उसी तरह घेरे रही और करीब-करीब पूरा कस्बा ही पीछे लगा चला आ रहा था। मैं लपककर दुकान की खिड़की में चढ़ गया ताकि उसे बिलकुल पास से देख सकूं। उन्होंने उसे ज़मीन पर लेटा दिया और एक बड़ी बाइबल उसके सिर के नीचे रख दी और एक-दूसरी बाइबल खोलकर उसकी छाती पर। लेकिन इसके पहले उन्होंने उसकी कमीज़ उतार दी थी और मुझे वह जगह दिखाई दी जहां उसके एक गोली लगी थी। उसे कोई दस-बारह हिचकियां आईं—हर बार जब — सांस लेता तो छाती पर रखी बाइबल उठ जाती थी और सांस छोड़ने

पर बैठ जाती थी। अब उन्होंने उसकी लड़की को जबर्दस्ती खींचकर अलग कर दिया और वहां से ले चले। वह अब भी आंसू बहाती हुई चीखें मार रही थी। उम्र उसकी सोलह के करीब होगी, देखने-सुनने में सुन्दर और भली, मगर इस समय मारे डर के पीली पड़ रही थी।

जल्दी ही सारा कस्बा वहां आ जमा हुआ और सब लोग अन्दर जाने और खिड़की से चढ़ने के लिए धक्का-मुक्की करने लगे। हर कोई देखना चाहता था, लेकिन जो लोग पहले से जमे बैठे थे या आगे खड़े थे वे टस से मस नहीं हो रहे थे। पीछे वाले कहते, "अब हटो भी, बहुत देख चुके; कब तक देखते रहोगे? दूसरों को भी देखने दो। यह तो अच्छी बात नहीं कि तुम डटे रहो और दूसरे टापते ही रह जाएं। जितना हक तुम्हारा उतना ही दूसरों का भी है। हटो! हटो!!"

बात धक्का-मुक्की से जब गाली-गलौज तक पहुंच गई तो मैं इस डर से कि कहीं झगड़ा न हो जाए, अपनी जगह से खिसक आया। बाहर सड़क में तिल धरने की जगह नहीं थी और सभी लोग काफी उत्तेजित हो रहे थे। जिसने भी गोली चलते देखी थी खड़ा विस्तार से बता रहा था कि कैसे क्या हुआ; ऐसे हर आदमी के चारों ओर काफी भीड़ जमा हो गई थी और लोग-बाग गरदनें तान-तानकर सुन रहे थे। बड़े-बड़े बालों वाले एक लम्बे-दुबले आदमी ने, जो सफेद फर का लम्बोतरा टोप पहने था और टेढ़े-मेढ़े हत्थे वाली छड़ी लिए था, एक-एक कर उन जगहों पर निशान बनाए जहां बाग्स और शेरबर्न खड़े थे। लोग उसके पीछे चलते हुए उसकी हर हरकत को बड़े ध्यान से देखते जा रहे थे। कुछ लोग इस तरह सिर हिला रहे थे मानो सब समझ गए हों और कुछ लोग जांघों पर हाथ धरे कमर झुकाए हर निशान को पूरे गौर से देखते जाते थे। फिर वह लम्बू एकदम तनकर वहां खड़ा हो गया जहां शेरबर्न खड़ा था। उसने अपना टोप आंखों तक खींच लिया, गुस्सैली आवाज में बोला, 'बाग्स!' अब उसने छड़ी को पिस्तौल की तरह पकड़कर निशाना साधा और बोला, 'धांय!' साथ ही वह थोड़ा पीछे को लड़खड़ाया; फिर बोला, 'धांय!' और पीठ के बल धड़ाम से गिर पड़ा। लोगों ने उसके अभिनय की दाद दी और जिन्होंने सारी घटना देखी थी उन्होंने कहा कि इसने ठीक वैसा ही करके दिखा दिया

लेकिन यह सच नहीं है। तुम किसी भी औसत आदमी से ज्यादा बहादुर नहीं हो। तुम्हारे जूरी खूनियों को फांसी क्यों नहीं लटकाते? क्योंकि वे डरते हैं कि उस खूनी के दोस्त रात के अन्धेरे में उन्हें पीठ में गोली मार देंगे—और वे सचमुच मार देते हैं।

"इसलिए वे हमेशा खूनी को रिहा कर देते हैं। और तब कोई मर्द रात के अन्धेरे में सौ नकाबपोश डरपोकों को साथ ले जाता है और उस खूनी को फांसी टांग कर जला देता है। तुमने पहली गलती तो यह की कि अपने साथ किसी मर्द को नहीं लाए और दूसरी गलती यह कि रात में नकाब पहन-कर नहीं आए। तुम अपने साथ किसी मर्द को नहीं, मर्द नामधारी आधे मर्द, बक हार्कनेस को लाए हो। अगर उसने उकसाया न होता तो तुम्हारी यहां आने की हिम्मत न पड़ती, औरतों की तरह हाय-हाय किया करते।

"तुम आना नहीं चाहते थे। औसत आदमी को झगड़ा-टण्टा और खतरे का काम पसन्द नहीं। और न तुम्हीं को झगड़ा और खतरा पसन्द है। लेकिन अगर बक हार्कनेस जैसा कोई नामधारी मर्द चिल्लाने लगे कि 'उसे फांसी लगा दो! उसे जिन्दा जला दो।' तो तुम उससे इसलिए मुंह नहीं मोड़ते कि कहीं तुम्हारी कायरता उजागर न हो जाए। डरपोक होने के कारण और अपने डरपोकपन पर पर्दा डाले रहने के लिए तुम उसकी आवाज में आवाज मिलाकर चिल्लाने लगते हो और उसके दुमछल्ले बने बड़ी-बड़ी डींगें हांकते हुए उसके साथ हो लेते हो। भीड़ से ज्यादा बेकार इस दुनिया में कुछ भी नहीं। फौज भी भीड़ ही है और कोई फौजी अपने अन्दर की हिम्मत और ताकत की वजह से ही नहीं लड़ता; वह लड़ता है अपने समूह-बल और अपने अफसरों से उधार ली हुई हिम्मत के बल पर। लेकिन उधार की हिम्मत और ताकत हमेशा काम नहीं देती। अगर भीड़ की अगुवानी करने के लिए कोई मर्द न हो तो वह भीड़ किसी काम की नहीं, तब वह होती है एकदम हेच और पोच! तुम्हारे लिए वाजिब यही है कि तुम दबा-कर अपने घरों को लौट जाओ और किसी बिल में जा दुबको। अगर मनुष्य टांग कर जलाना ही होगा तो वह रात के अंधेरे में किया जायेगा, ठीक दक्षिणी ढंग से। वे लोग नकाब पहनकर आएंगे और अपने साथ किसी मर्द बच्चे को लाएंगे। तुम दफा हो जाओ और अपने नामधारी मर्द को

भी साथ लेते आना, जाओ।" यह अन्तिम बात उसने अपनी बन्दूक ब
हाथ मे थामकर घोडा चढ़ाते हुए कही थी।

सारी भीड़ फुर्र से बिखर गई। जिसको जिधर रास्ता मिला सिर
पाव रखकर भाग छूटा। बक हार्कनेस भी सबके पीछे पिटे हुए कुत्ते
तरह भागा आ रहा था। मैं चाहता तो वही रुका रहता, लेकिन
रुकना बेकार था।

मैं सरकस देखने चला गया। काफी देर तक तम्बू के पीछे की
मंडराता रहा और जैसे ही चौकीदार वहा से गया फौरन अन्दर घुस गय
मेरे पास सोने के बीस डालर के सिवा कुछ रुपया और भी था; लेकिन मैं ए
एक पाई बचाकर रखना चाहता था, क्योंकि घर से इतनी दूर और अ
नदियों के बीच कब कैसी ज़रूरत आ लगे क्या पता। कितनी भी सावध
और होशियारी बरतो रुपये की जरूरत पड ही सकती है। मैं पैसा
करके सरकस देखने के विरुद्ध नहीं हू, लेकिन सिर्फ तभी जब दूसरे
रास्ते बन्द हो जाए। जब यों ही देखने को मिल सकता हो तो पैसा बे
क्यों खर्च किया जाए।

बहुत ही बढ़िया सरकस था वह। एक से एक जोरदार खेल उन
ने दिखाए। शुरू मे कुछ घुड़सवार—एक आदमी एक औरत और उ
पीछे फिर एक आदमी एक औरत, इस क्रम से आए और रिंग में चक
लगाने लगे। आदमियों के बदन पर जांघिये, बनियाइनें और अ
तक के मोजे थे। न जूते उनके पावों मे थे और न घोडों पर रकाबें, ज
पर हाथ रखे बड़े आराम और इत्मीनान से बैठे थे। कम से कम बी
तो रहे ही होंगे। औरतें सब गोरी-चिट्टी और खूबसूरत, बिलकुल रानि
महारानियां लग रही थीं। हीरों से जगमगाते खास-खास ढंग कीम
तो उनके बदन पर के कपड़े ही होंगे। बड़े शानदार करतब उन लोग
दिखाए। एक-एक कर सभी दौड़ते हुए घोड़ों पर खड़े हो गए। आदमी
लम्बे और सीधे खड़े थे और उनके सिर गेंद की तरह उछल रहे
औरतों के खड़े होने का अपना ही प्यारा, लुभावना और नजाकत-
अन्दाज था। जोर से चक्कर लगाने में उनके गुलाबी रंग के
कपड़े कमर के चारों ओर गुब्बारे की तरह फूल गए थे और हर

एक खूबसूरत रंगीन धारी जैसी लग रही थी।

घोड़ों की चाल तेज, और तेज, और-और भी तेज होती गई। फिर उनकी पीठ पर खड़े घुड़सवारों ने थिरकना शुरू किया। पहले एक पांव सामने की ओर उठाया और सारा बदन दूसरे पांव पर तौला; फिर यही करतब दूसरे पांव से करके दिखाया। इस बीच घोड़ों की चाल बढ़ती ही गई, रिंग-मास्टर अपना कोड़ा फटकारता हुआ घोड़ों को ललकारता रहा और पास खड़ा जोकर तरह-तरह के मजाकों की फुलझड़ियां छोड़ता रहा। घोड़े जमीन से लगने जा रहे थे। घुड़सवारों ने लगामें छोड़ दीं। आदमी छाती पर हाथ बांधकर खड़े हो गए और औरतों ने अपने हाथ नितम्बों पर रख लिए। अब घोड़े बिल्कुल जमीन से लग गए थे। पलक झपकते ही वे लोग एक-एक कर घोड़ों से नीचे उतर आए और बड़े खूबसूरत ढंग से झुक-झुककर सलाम करने के बाद दौड़ते हुए अन्दर चले गए। लोग खुशी से बावले होकर चिल्लाने और तालियां बजाने लगे।

उन्होंने और भी तरह-तरह के अजीबोगरीब खेल दिखाए और जोकर सारे समय इस तरह हंसाता रहा कि दर्शकों के पेट में बल पड़ गए। रिंग-मास्टर की उसे कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ती थी पर वह जो उसके जी में आता उसे सुना देता और उसकी हर बात हंसानेवाली होती थी। हाजिरजवाब भी गजब का था। मेरी तो समझ में नहीं आता कि वह इतनी सारी मजाकें तुरत-फुरत सोच कैसे लेता था। मैं तो पूरा साल लेकर भी शायद ही सोच पाता। फिर एक पिया हुआ आदमी रिंग में घुसने की कोशिश करता दिखाई दिया। उसने कहा, "मुझे भी घुड़सवारी करने दी जाए और जो करतब दूसरों ने दिखाए हैं वे सब मैं भी दिखा सकता हूं; उनमें रखा ही क्या है!" सरकस वालों ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसने किसी की न सुनी और रिंग में जाने की बराबर कोशिश करता रहा। नतीजा यह हुआ कि खेल बन्द हो गया। इसपर लोग चिल्लाने और उस शराबी की खिल्ली उड़ाने लगे। वह और भी बौखला गया और दर्शकों को बुरा-भला कहता हुआ उछल-कूद मचाने और पैंतरे बदलने लगा। अब तो सारे तमाशबीन नाराज हो गए और बेंचों से उतर-उतरकर नीचे रिंग की तरफ आने लगे; कई चिल्लाने लगे कि 'उठाकर

बाहर फेंक दो ससुरे को।' दो-एक औरतें बुरी तरह चीखने भी लगं
तब रिंग-मास्टर ने लोगों को शान्त करते हुए कहा, "आप सब साह
मेहरबानी करके अपनी-अपनी जगह बैठ जाइए; दंगा-फसाद मत कीजि
इन साहब से भी गुजारिश है कि झगडा-टंटा न करें। हम इन्हें घुडसवा
का मौका देने को तैयार हैं, बशर्ते कि यह घोड़े पर बैठे रह सकें।" नशे
होने के कारण वह आदमी खडा भी नहीं रह सकता था, घोडे पर सवा
क्या करता ! सब लोग खिलखिलाकर हंस दिए और बोले, "ठीक है
ठीक है !"

जैसे ही यह मतवाला सवार हुआ घोडा उछल-कूद मचाने और थिर
कने लगा। सरकस के दो आदमी दोनों ओर उसकी लगाम थामे हुए थे
पर वह काबू मे नहीं आ रहा था। मतवाला सवार उसकी गर्दन में लटका
हुआ था और बुरी तरह झिंझोड़ा जा रहा था। वह हर बार फिसल-फिसल
जाता और उसकी टांगें हवा में उछलती दिखाई देतीं। हंसते-हंसते देखने
वालों के बुरे हाल हो गए। वे खड़े होकर चिल्लाने और शोर मचाने लगे।
फिर घोड़े ने सहसा एक झटका दिया और अपने सईसों के हाथ से छूट-
कर रिंग मे दौड़ने लगा। अब तो मतवाले के बुरे हाल हो गए ; कभी
एक ओर लटक जाता, कभी दूसरी ओर, कभी खिसक कर गले पर आ जाता,
कभी दुम पर चला जाता। घोड़े की पीठ पर वह अब भी सवार नहीं हो
पाया था। इधर सारे हंसी के दर्शक दुहरे हुए जाते थे। पर मैं घबरा रहा
था कि कहीं वह अपनी फालतू की जिद मे हड्डी-पसली न तुड़वा बैठे। मगर
दूसरे ही क्षण क्या देखता हूं कि वह घोड़े की पीठ पर था और लगाम हाथ
में लिए जमकर बैठने की कोशिश कर रहा था। थोड़ी देर तो वह झूमता
रहा, फिर लगाम छोड़कर एकदम खड़ा हो गया और घोड़े को गोल-गोल
दौड़ाता रहा। अब वह बिलकुल स्थिर था और लगता था कि शराब तो
जैसे उसने कभी छुई भी न हो। फिर दौड़ते हुए घोड़े पर खड़े-खड़े वह अपने
कपड़े उतार-उतारकर फेंकने लगा। एक-एक कर उसने इतनी जल्दी और
इतने सारे कपड़े उतारकर फेंके कि हवा मे कपड़े ही कपड़े हो गए। कुल
मिलाकर वह सत्रह सूट पहने हुए था! अन्त मे सिर्फ एक बहुत बढ़िया सूट
उसके बदन पर रह गया, जिसमें वह खूब दिलनोटा लग रहा था। अब

वह चाबुक फटकारता हुआ घोड़े को तेज, और तेज भगाने लगा। अन्त में वह बड़ी सफाई से फिसलकर नीचे उतर आया, बड़ी खूबसूरती से झुककर दर्शकों को सलाम किया और दौड़ता हुआ अन्दर चला गया। उसके इस करतब पर जितनी तालियां बजीं, जितनी खुशी प्रकट की गई और जैसा अचरज दर्शकों को हुआ वैसा किसी करतब पर नहीं।

उधर रिंग-मास्टर की शक्ल देखने काबिल हो गई थी। बेचारा खूब बुद्धू बनाया गया और अपने ही आदमी के हाथों। यह सब अकेले उसी आदमी के दिमाग की उपज थी, और उसने पहले से किसीको बताया भी नहीं था। अगर मैं उस रिंग-मास्टर की जगह होता तो अपना मुंह किसी को भी न दिखा पाता। ऐसी रिंग-मास्टरी मैं तो हजार डालर देने पर भी न करूं! मगर कुछ भी हो, सरकस वह बहुत बढ़िया था। इस दुनिया में उससे भी शानदार सरकस हो सकते हैं, मगर मैंने तो कोई देखा नहीं। आगे कभी इस सरकस को दुबारा देखने का मौका मिला तो मुझे अपने टिकट के पूरे पैसे देने में जरा भी आपत्ति न होगी।

हां, उस रात हमारा नाटक भी हुआ, लेकिन सिर्फ बारह आदमी देखने आए और खर्चा निकालना भी मुश्किल हो गया। वे भी पूरे समय हंसते रहे और खेल खत्म होने के पहले ही उठकर चले भी गए; सिर्फ एक लड़का रह गया था, क्योंकि उसे नींद आ गई थी। मारे गुस्से के ड्यूक के बुरे हाल थे। हजार तो गालियां उसने दी होंगी उन लोगों को और कहा कि शेक्सपियर की बुलन्दियों को ये गंवार कभी पा नहीं सकते—भेजे में तो भुस भरा है, समझेंगे कहां से। इन्हें तो कोई फूहड़ मज़ाक चाहिए या कोई घटिया तमाशा। तो यही सही। हम इसका भी बन्दोबस्त कर देंगे। और दूसरे दिन सवेरे से वह बांधे के कागज लेकर बैठ गया, काले रंग से नये इश्तिहार लिखे और उन्हें सारे कस्बे में चिपका आया। यह इश्तिहार इस तरह था:

आपके कस्बे के कोर्ट हाउस में

सिर्फ ३ रात के लिए

सारी दुनिया में ट्रेजेडी की एक्टिंग में शोहरत पाया हुआ

डेविड गैरिक उर्फ छुटन

और
जनाब बड़े एडमण्ड कीन साहब
लन्दन और कांटिनेंटल थियेटर वाले
पेश कर रहे हैं
अपनी दिल फरेब ट्रेजेडी
शहन्शाह की शुतुर चाल
उर्फ
शाही कमाल
टिकट की दर ५० सेंट

सबसे नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—
औरतों और बच्चों को आने नहीं दिया जाएगा।

"अब देखना ड्यूक के भेजे का कमाल ! अगर भीड़ टूट न पड़े तो कहना !"

अध्याय २३

पूरे दिन ड्यूक और राजा, 'स्टेज' बनाने, पर्दे बांधने और 'फुट लाइट' के लिए मोमबत्तियां लगाने में जुटे रहे। आखिर रात हुई, लोग आने लगे और बात-की-बात में 'हाउस फुल' हो गया। जब सारी सीटें भर गई तो ड्यूक दरवाजे से हट गया और घूमकर पिछले रास्ते से स्टेज पर आया और पर्दे के आगे खड़े होकर उसने छोटा-सा भाषण दिया। अपने इस भाषण में उसने खेल की तारीफों के पुल बांध दिए और कहता रहा कि ऐसा दिलचस्प और दिलफरेब ड्रामा आप लोगों ने आज तक नहीं देखा होगा। उसने आज के खास एक्टर जनाब बड़े एडमण्ड कीन साहब की अदाकारी और उनके फन की खूब तारीफ की। इस तरह वह काफी समय तक दर्शकों के कुतूहल को उभारता रहा। जब दर्शकों की उत्सुकता चरम सीमा पर पहुंच गई तो उसने पर्दा उठा दिया।

थोड़ी देर बाद राज ने प्रवेश किया। वह नंगे बदन था और उसके सारे शरीर पर रंग-बिरंगे धब्बे, गोलाकृतियां और पट्टे बने हुए थे। इन्द्रधनुष के सातों रंग काम में लाये गए थे और सभी एक से एक चटकीले। कुल मिलाकर वह जंगल का बनमानुष मालूम पड़ता था। स्टेज पर आया भी वह चारों हाथों-पांवों से चलता हुआ, ठीक किसी जानवर की तरह। देर तक जिराफ की तरह कुलांचें लगाता और उछलता-कूदता रहा। लोगों के हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गए। फिर राजा उसी तरह कुलांचें लगाता हुआ नेपथ्य में चला गया। तालियों की गड़गड़ाहट, हंसी के ठहाकों, 'वाह-वाह' और वन्समोर के मिले-जुले स्वरों ने आसमान सिर पर उठा लिया। राजा को फिर आकर उसी तरह कुलांचें लगानी पड़ीं। सब मिलकर दर्शकों ने तीन बार उससे अपनी कला का प्रदर्शन करवाया। वह कम्बख्त बूढ़ा कुलांचें लगा भी इस तरह रहा था कि गाय तक को हंसी आ जाती।

उसके बाद ड्यूक ने पर्दा गिरा दिया और स्टेज पर आकर लोगों से कहा कि अब यह शानदार ट्रेजेडी आरक कस्बे में सिर्फ दो रात और खेली जाएगी, क्योंकि कम्पनी को जल्दी से जल्दी लन्दन पहुंचना है, जहां ड्र्यूरी लेनवाले मशहूर थियेटर में तमाम टिकट पेशगी बिक चुके हैं। इतना कहने के बाद वह एक बार फिर दर्शकों के आगे झुका और बोला कि हमारे खेल से आप साहबान को अगर कुछ भी दिलचस्पी (मनोरंजन) और तालीम (शिक्षा) हुई हो तो वह नाचीज उम्मीद करता है कि आप अपने दोस्तों और अजीजों को भी इसे देखने की हिदायत (सलाह) कर-

और बहुत बड़ा धोखा। यह भी सच है कि हम फरेबियों के जाल में फस गए हैं। लेकिन क्या अब सारे कस्बे को अपनी खिल्ली उड़ाने का मौका भी दें ? मेरे खयाल मे तो यह गुनाह बेलज्जत हो जाएगा। ऐसा ठीक नहीं। इस बात को यहीं दफना दीजिए और कभी जीते-जी अपनी जबान पर मत लाइए। बाहर जाकर यही कहिए कि ड्रामा बहुत बढ़िया है और हर आदमी को जरूर-जरूर देखना चाहिए। मतलब यह कि जिस जाल में हम फंसे हैं उसमें सारे कस्बे को फंसा दीजिए। फिर कौन किसीकी खिल्ली उड़ाएगा ? जब सभी की कटी होगी तो कौन किसको नकटा कहेगा।" ('ठीक कह रहे हो !' 'सलाह बड़ी माकूल है !' कई लोग एक साथ चिल्ला उठे।) "तो चुपचाप घर जाओ, ड्रामे की तारीफ करो और बाकी लोगों को भी फसने दो।"

दूसरे दिन सारे कस्बे मे एक ही बात थी और वह यह कि नाटक कितना बढ़िया, कितना मनोरंजक और उपदेशात्मक था। दूसरी रात भी हॉल खचाखच भर गया और उन लोगों को भी पहले दिन की ही तरह बुद्धू बनाया गया। रात बेड़े पर लौटकर हमने खाना खाया और तब ड्यूक और राजा ने मुझसे और जिम से कहा कि आधी रात के बाद बेड़े को यहां से दो मील नीचे की ओर ले जाकर कहीं छिपा दो। हमने ऐसा ही किया।

तीसरी रात फिर हॉल पूरा भर गया। आज तो कहीं तिल रखने को भी जगह नहीं थी। लेकिन आज सब वे ही लोग थे जो पिछली दो रातों में आए थे, नया तो एक भी नहीं था। मैं ड्यूक के साथ दरवाजे पर खड़ा था और मैंने लक्ष्य किया कि हर आनेवाले की या तो जेब फूली हुई थी या वह अपने कोट के नीचे कोई चीज छिपाए हुए था। मुझे गन्दे अण्डों, सड़ी गोभी और ऐसी ही दूसरी चीजों की सड़ांध आ रही थी। मैंने गिना तो चौंसठ आदमी अन्दर गए और सभी कुछ न कुछ लिए हुए थे। कुछ देर तो मैं लोगों को ठेलता-ठालता और गिनती गिनाता रहा, लेकिन जब मारे बदबू के नाक फटने लगी और लोग आते ही रहे तो मैंने गिनना छोड़ दिया। जब हाल में एक भी आदमी के समाने की जगह नहीं रह गई तो ड्यूक ने एक आदमी को चौथाई डालर पकड़ाकर कहा, 'बिरादर, जरा मेरी जगह खड़े

तो हो जाइए।" और वह घूमकर स्टेज की तरफ चल दिया। मैं भी उनके साथ हो लिया। हम जैसे ही मुड़े और अंधेरे में आए कि ड्यूक ने कहा, "अब सिर पर पांव रखकर भाग चलो और सीधे बेड़े पर ही पहुंचकर दम लेना।"

मैं वहां से बगटुट भागा और ड्यूक मेरे पीछे। हम दोनों एक ही साथ बेड़े पर पहुंचे और दूसरे ही क्षण अंधेरे में चुपचाप धारा की ओर बढ़ने लगे। मुझे रह-रह कर राजा के लिए चिन्ता हो रही थी। इस समय वहां बेचारे पर बेभाव की पड़ रही होगी। सारे दर्शक ले-देकर उसी गरीब पर अपना गुस्सा उतार रहे होंगे। मगर नहीं, वह हम दोनों से तेज निकला। थोड़ी ही देर में टपरिया के नीचे से बाहर आकर बोला, "कहिए हुजूर ड्यूक साहब, आज का रंग कैसा रहा?"

वह पट्ठा कस्बे में गया ही नहीं था।

जब तक कस्बे से दस मील परे नहीं निकल गए हमने रोशनी नहीं जलाई, अंधेरे में ही चलते रहे। फिर हमने लालटेन जलाई और खाना खाया और तब ड्यूक और राजा बगलें बजा-बजाकर अपने कारनामे का बखान करने लगे। दोनों इस बात पर फूले नहीं समा रहे थे कि लोगों को कैसा बुद्धू बनाया।

ड्यूक ने कहा, "उल्लू के पट्ठे, अहमक कहीं के! मैं तो जानता ही था कि पहले दिनवाले लोग चुप रहेंगे और सारे कस्बे को फंसा देंगे। और मैं यह भी जानता था कि तीसरी रात ये सब मिलकर बदला चुकाएंगे। सोचकर तो सब यही आए होंगे कि आज अपनी बारी है, जी भरकर बदला चुकाएंगे। बेशक, आज उनकी बारी है, तो चुका लें बदला! इस समय वहां का हाल जानने के लिए मैं लाख डालर देने को तैयार हूं। किसी भी तरह पता तो चले कि वे गंवार किस तरह बदला चुका रहे हैं! बदला तो क्या चुकाएंगे, दावत भले ही कर लें। सब्जियां और सामान तो सभी ढेर सारा लेकर आए थे।"

उन दोनों बदमाशों ने उस कस्बे से तीनों रातों के कुल मिलाकर चार सौ पैंसठ डालर वसूल किए थे। गाड़ी भरकर रुपया हो गया था। उनके पास एक साथ इतना रुपया मैंने पहले कभी

जब वे दोनों सो गए और खर्राटे भरने लगे तो जिम ने कहा, "क्यों हक, इन राजाओं की कारस्तानियों पर तुम्हें अचरज नहीं होता ?"

"ना, नहीं होता।" मैंने कहा।

"क्यों नहीं होता, हक ? होना चाहिए।"

"इसलिए नहीं होता कि ऐसी बातें तो इनकी आदत में शुमार हैं। मेरा ख्याल है कि राजा सब ऐसे ही होते होंगे।"

"लेकिन हमारे ये दोनों तो बहुत ही बदमाश हैं—एकदम हद दर्जे के बदमाश !"

"वही तो मैं भी कह रहा हूं—राजा-महाराजा सब के सब बदमाश होते हैं। भला तो इनमें कोई दीया लेकर ढूंढने से भी नहीं मिलेगा"

"अच्छा, ऐसी बात है।"

"हां, कभी इनका हाल पढ़ो तो आखें खुल जाएं। आठवें हेनरी के मुकाबले हमारा ड्यूक और राजा तो पानी भरते नजर आएंगे। चाहे दूसरे चार्ल्स को लो चौदहवें लुई को, या पन्द्रहवें लुई को लो। दूसरे जेम्स को, दूसरे एडवर्ड को लो या तीसरे रिचर्ड को, या उन सेक्सन शासकों को—सबका एक ही काम था, उपद्रव करना और लोगों पर तरह-तरह के जुल्म ढाना। आठवें हेनरी के जवानी के दिनों के किस्से सुनाऊं तो तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाएंगे। क्या जवानी चढ़ी थी उसपर कि दीवाना और अन्धा ही हो गया था। रोज रात को एक नई औरत से ब्याह करता और सवेरे उसका सिर धड़ से जुदा करवा देता। और नई औरत लाने का हुक्म इस तरह देता था मानो अण्डे मंगवा रहा हो। 'जाओ, नेल ग्वाइन को ले आओ,' यह हुक्म देता। वे लाकर हाजिर कर देते। दूसरे दिन सवेरे, 'इसका सिर उड़ाओ' वे सिर उड़ा देते। फिर कहता, 'जेन, शोर को बुला लाओ।' वह आ जाती। दूसरे दिन 'काट दो इसका सिर' और उसकी गरदन काट दी जाती। 'खूबसूरत रोजामन को टेलीफोन करो।' टेलीफोन की घण्टी टुन-टुनाती और वह हाजिर हो जाती; दूसरे दिन सवेरे, 'काट दो इसका सिर।' वह हर रात नई औरत से एक कहानी सुनाने के लिए कहता; इस तरह उसने एक हजार एक कहानियां इकट्ठा कर लीं और एक किताब छपवा दी। जानते हो उस किताब का उसने नाम क्या रखा ? 'प्रलय दिन की कहा-

लिया। कितना मार्मिक नाम है ! इससे अधिक उपयुक्त नाम उन बदलि का और क्या होगा ? तुम राजाओं को जानते नहीं जिम, मैं जानता हूँ सच मानो, हमारा यह राजा तो इतिहास के उन राजाओं की पासंग में नहीं है, उनके मुकाबले बहुत हलका उतरेगा। उसी हेनरी की बात है। एक दिन बैठे-ठाले उसके दिमाग में खुराफात उठी कि अमरीका से झगड़ा करना चाहिए। जानते हो उसने क्या किया ? कोई नोटिस दिया ? हमारे मुल्क से कुछ कारण पूछा ? नहीं, कुछ भी नही। एकदम सारी चाय बोस्टन के बन्दरगाह के समुद्र में डलवा दी, हमारी आजादी के घोषणा-पत्र को फाड़ फेंका और चुनौती दे दी कि अब हो हिम्मत तो आ जाओ। यह तरीका था उसका। कभी किसीको मौका नही देता था। एक बार उसे अपने ही पिता वेलिंगटन के ड्यूक पर सन्देह हो गया। जानते हो क्या किया ? कारण पूछा ? सफाई का मौका दिया ? नहीं, कुछ नही बेचारे बूढ़े को बिल्ली की तरह बोरे मे बन्दकर पानी में डुबो दिया, छुट्टी हो गई ! अगर उसे पता चल जाता कि रियाया मे किसीके पास पैसा है तो फौरन बेचारे का गला दबाकर छीन लेता था। हम किसी आदमी से काम करवाते हैं तो मेहनताना देते और देखते हैं कि उसने काम पूरा किया या नहीं। लेकिन वह इसका उलटा करता था; किए हुए काम मे हजार नुक्स निकालता और सारा मेहनताना जब्त कर लेता, अगर सामने वाला एतराज करता या कुछ बोलता तो उसकी गरदन नपवा दी जाती। ऐसा दुष्ट था वह हेनरी, हर-दर्जे का अत्याचारी। अगर हमारे इन राजाओं की जगह होता तो कस्बे वालों को इतना-सा बुद्धू थोड़े बनाता, जाने क्या अनर्थ कर डालता ! मैं यह नहीं कहता कि हमारे ड्यूक और राजा दूध के धोए और गाय के जाए हैं; पाजी ये भी हैं, मगर उस हेनरी की तुलना में पासंग भी नहीं। मेरा सिर्फ यही कहना है कि राजा राजा होते हैं और इस बात का खयाल तुम्हें रखना ही होगा। यों देखा जाए तो वे भी आदमी ही हैं, सबके जैसे साधारण आदमी, लेकिन शुरू से ऐसे वातावरण में रहते और इस तरह पाले-

आगे चलकर शैतान बन जाते हैं।"

२ राजा तो चौबीसों घण्टे शराब में धुत रहता है; गन्ध से नाक फटने लगती है।"

"सभीके यही हाल हैं जिम; इतिहास मे जितने भी राजा हो गए, सब-के यही हाल हैं—एक-से-एक बढ़कर शराबी, व्यभिचारी और अत्याचारी।"

लेकिन ड्यूक फिर भी कुछ गनीमत है।"

"हां, ड्यूक राजाओं से कुछ गनीमत तो होते ही हैं, और हमारा ड्यूक इतिहास के ड्यूकों से कुछ हलका ही उतरेगा, मगर लाल घोड़े पर सवार होने के बाद तो वह भी किसी राजा से कम नहीं।"

"खैर, अब जो भी है सो ठीक है हक। मैं तो इतना ही चाहता हूं कि अब कोई नया ड्यूक या राजा हमारे बेड़े पर न आए। ये दो बहुत हैं; ज्यादा से निबाहना मेरे बस का न होगा।"

"मैं तो इतना ही नहीं, यहां तक चाहता हूं कि ये भी दफा हो जाएं; लेकिन जब तक हैं रखना ही होगा और सहना भी होगा। यह भुलाने से तो काम चलेगा नहीं कि ये कौन लोग हैं; और जिस बुरी जाति के हैं उसे भी ध्यान मे रखना होगा। अकसर मनाया करता हूं कि दुनिया से इनका नाम ही उठ जाए, मगर अभी तक तो एक भी ऐसा देश नहीं सुना जहां ये लोग नहीं।"

जिम को अगर मैं बता भी देता कि ये लोग असली ड्यूक और असली राजा नहीं हैं तो भी कुछ लाभ न होता। और फिर जैसा कि कह चुका हूं, असली में और इनमें कोई फर्क भी तो नहीं था।

मैं सो गया; और जिम ने पहरे को मेरी बारी आने पर मुझे जगाया नहीं। वह अकसर ऐसा किया करता था। जब पौ फटने पर मेरी आंख खुली तो वह घुटने पर सिर रखे बिसूर रहा था। मैंने न तो कारण पूछा और न उसे पता चलने दिया कि मुझे मालूम हो गया है। मैं समझ गया कि उसे घर की याद सता रही थी—दूर कहीं पीछे छूटे अपने बीवी-बच्चों की याद में वह बिसूर रहा था। एक तो वह घर से कभी इतनी दूर नहीं आया था; दूसरे, मेरा ऐसा खयाल है कि उसे अपने बीवी-बच्चों की इतनी ही फिक्र थी जितनी किसी गोरे को हो सकती है। यह स्वाभाविक तो नहीं लगता लेकिन मेरा खयाल है कि बात कुछ ऐसी ही थी। अकसर वह रात में अपने बीवी-बच्चों की याद में रोया करता और उनके नाम ले-लेकर

बिसूरा करता था। वह समझता कि मैं सोया पड़ा हूं, पर मैं जागकर सुना करता था. वह ठण्डी सांसें भर-भरकर रुआंसे गले से कहता, 'हाय, मेरी प्यारी मुन्नी एलिजाबेथ, हाय मेरे प्यारे मुन्ने जानी ! तुम्हारी याद में दिल तड़पता है ! पता नहीं तुम्हें कभी देख भी पाऊंगा या नहीं !' सर्व-साधारण हबशी की तुलना में मेरा जिम बहुत ही भला था बेचारा !

इस बार मुझसे उसका दुःख न देखा गया और मैंने उससे उसके बीवी-बच्चों के बारे में पूछ ही लिया।

पहले तो वह आनाकानी करता रहा, फिर बोला, "क्या बताऊं भैया, अभी थोड़ी देर पहले, किनारे पर किसीके झापड़ मारने की आवाज सुनाई दी और मुझे मेरी मुन्नी एलिजाबेथ की याद आ गई। एक बार मैंने भी उसे इसी तरह झापड़ मारा था और यह बात याद आते ही मेरा दिल भर आया। तब वह मुश्किल से साल-भर की रही होगी और लाल बुखार से उठी ही थी। बुखार इतने जोर का था कि बचने की कोई उम्मीद नहीं रह गई थी, मगर भगवान की मेहर, उठ खड़ी हुई। एक दिन वह पास खड़ी थी तो मैंने कहा, 'दरवाजा बन्द कर दे !'

"उसने नहीं किया और वैसे ही खड़ी मेरी ओर देखती और मुस्कराती रही। मुझे गुस्सा आने लगा और मैंने कुछ जोर से कहा, 'सुना नहीं क्या ?—दरवाजा बन्द कर दे।'

"वह फिर भी वैसे ही खड़ी मुस्कराती रही। अब तो मैं गुस्से से बावला हो गया और जोर से डपटकर बोला, 'सुनती नहीं, खड़ी मुस्करा रही है ! ले, सुनना सिखाता हूं !'

"और मैंने इतने जोर से झापड़ मारा कि वह जमीन पर जा गिरी। फिर मैं दूसरे कमरे में चला गया और कोई दस मिनट बाद लौटा तो दरवाजा अब भी खुला था और वह उसके बीच में खड़ी सुबक-सुबककर रो रही थी और आंसू गालों पर ढरके जा रहे थे। मैं फिर गुस्से से आगबबूला हो गया और उसे सजा देने जा ही रहा था कि हवा का जोर का झोंका आया और दरवाजा उसके पीछे अपने आप धड़ाम से बन्द हो गया—वह अन्दर की तरफ खुलने वाला दरवाजा था। मैंने आश्चर्य से देखा कि लड़की फिर भी वहीं खड़ी रही, अपनी जगह से एक इंच भी नहीं खिसकी। मेरा

कलेजा मसोस उठा; बता नहीं सकता, कैसी हालत हो गई थी ! कांपता हुआ मैं आगे बढ़ा और धीरे से दरवाजा खोलकर देखा तो लड़की अब भी वहीं खड़ी हुई थी ! मैंने उसके कान के पास मुंह ले जाकर, पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा, 'मुन्नी, एलिज़ाबेथ, बेटी !' लेकिन उसने सुना ही नहीं, वैसे ही पत्थर की मूरत बनी खड़ी रही। अब सारी बात मेरी समझ में आ गई थी, मैंने लपककर उसे छाती से लगा लिया और रोते हुए बोला, 'हाय, यह मैंने क्या कर डाला ! भगवान मुझे माफ कर देना ! अपने इस गुनाह को मैं जिन्दगी-भर भूल न सकूंगा।' भैया, वह बहरी और गूंगी थी—निपट बहरी और गूंगी और मुझ राक्षस ने उसके साथ ऐसा सलूक किया ! हाय राम !"

अध्याय २४

दूसरे दिन, रात होने पर, हमने नदी की बीच धारा में सिपन और बेनो से घिरे हुए एक छोटे-से रेतीले टीबे पर रुकने का निश्चय किया। यहां नदी के दोनों किनारों पर एक-एक गांव था। राजा और ड्यूक दोनों मिलकर यहां के गांव वालों को ठगने की योजना बनाने में लग गए। जिम ने ड्यूक से कहा कि ज्यादा वक्त मत लगाना, क्योंकि देर तक रस्सी से बंधे रहने में तकलीफ होती है। मैं बताना भूल गया कि जब हम कहीं जाते और जिम को अकेला बेड़े पर रहना होता तो उसे रस्सी से बांध देते थे, जिससे कोई अकस्मात् आ निकले तो उसे भागा हुआ हब्शी ही समझे। अगर खुला छोड़ देते तो किसी को विश्वास न होता कि वह भागा हुआ गुलाम है और हम उसे पकड़ कर ला रहे हैं। ड्यूक ने जिम की बात सुनकर स्वीकार किया कि सच ही दिन-भर रस्सियों से बंधा रहना कष्टकर होता है और वह जल्दी ही इससे छुटकारे की कोई तरकीब सोच निकालेगा।

बहुत ही चलता-पुर्जा और तेज-तर्रार था वह ड्यूक। फौरन ही उसने एक उपाय खोज निकाला। उसने किंग लीयर की पोशाक जिम को पहना

सी और वैसा ही भेस भी बना दिया—रंग-बिरंगे मोटे सूती कपड़े का लम्बा-सा गाउन और सफेद घोड़े के बालों के केश और डाढ़ी-मूछें। फिर उसने गाढ़े नीले रंग से जिम का पूरा चेहरा, दोनों कान, गरदन और हाथ रंग दिए। अब जिम की शक्ल-सूरत खासी डरावनी हो गई थी, मानो नौ दिन तक पानी में डूबी लाश हो। इसके बाद ड्यूक ने लकड़ी की एक तख्ती पर लिखा :

बीमार अरब—अगर सनका हुआ न हो तो किसीको नुकसान नहीं पहुंचाता।

यह तख्ती उसने एक फट्टे पर जड़कर टपरिया के सामने चार-पांच फुट के फासले पर खड़ी कर दी। जिम सन्तुष्ट हो गया। उसने कहा कि दिन-भर बंधे पड़े रहने और किसीकी आहट पाकर कांप-कांप उठने से तो यह बहुत ही अच्छा रहेगा। जिम ने उसे सलाह दी कि अब तुम आराम से और आज़ादी से पड़े रहना, अगर कोई भेद की ओर आता दिखाई दे तो टपरिया में से उछलकर बाहर आ जाना और जानवरों की तरह गुर्राकर और दांत किटकिटाकर थोड़ा कूद-फांद लेना, वह आप ही उल्टे पांव भाग जाएगा। ड्यूक की सलाह बहुत बढ़िया थी, लेकिन मेरे ख्याल में इतना सब करने की ज़रूरत नहीं थी। साधारण आदमी तो उसकी शक्ल-सूरत देखकर ही भाग जाता, उछलने-कूदने और चीखने-गुर्राने की ज़रूरत ही न होती। उस नीले रंग में वह मुर्दे से भी अधिक प्रेत लगता था।

इन धूर्तों का विचार यहां वालों को भी 'शहंशाह की सुन्दर नाट्य शाही कमाल' से ठगने का था, क्योंकि उसमें खूब पैसा बटोरा जा सकता था, मगर डरते थे कि कहीं उस गांव की खबर यहां न पहुंच गई हो; फिर तो उलटे लेने के देने पड़ जाते। लोगों को मूर्ख बनाकर उनकी जेबें कतरने का कोई कारगर तरीका उनकी समझ में आ नहीं रहा था, इसलिए ड्यूक ने कहा, "मुझे दो एक घंटे के लिए अकेला छोड़ दो, जिससे सोचकर कोई नुस्खा सोच लूं, जिसे आजमाकर इस गांव पर अजमाया जा सके।" मगर राजा ने कहा, "मैं तो बाहर किसी मौके की, अवसर की तलाश में, बाहर जाकर देखता हूं कि क्या हो सकता है। [illegible] (जो बाद में उसका उपयोग होता न था) कोई न कोई रास्ता निकाल

ही देंगे।"

पिछले मुकाम पर हम सबने दुकान से सिले-सिलाये तैयार कपड़े खरीदे थे। राजा ने अपने कपड़े पहन लिए और मुझे भी पहनने का आदेश दिया। मैंने फौरन खुशी-खुशी नये कपड़े पहन लिए! राजा की तो नये कपड़ों में शक्ल-सूरत ही बदल गई थी। कहा तो एकदम फटीचर लगता था और कहां अब काले रंग के नये कोट-पतलून में सचमुच राजाधिराज लग रहा था। कपड़े-लत्तों से आदमी इतना अधिक बदल जाता है, यह तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था। जब उसने काले सूट पर सफेद बीवर टोप लगाकर मुस्कराते हुए सलाम किया तो मुझे लगा जैसे बाइबल के पन्नों में से लेविटिकस स्वयं शरीर धारण करके सामने आ खड़ा हुआ हो! जिम ने जैसे ही डोंगी को खाली किया मैं चप्पू थामकर बैठ गया।

कस्बे से कोई तीनेक मील ऊपर एक बड़ा-सा अगनबोट किनारे लंगर डाले खड़ा था। उसे वहां खड़े काफी समय हो गया था क्योंकि माल लादा जा रहा था। राजा ने कहा, "इन बढ़िया कपड़ों में रहने के कारण लोग यही समझेंगे कि मैं सेंट लुई या सिनसिनाटी या इसी तरह की किसी बड़ी जगह से चला आ रहा हूं। हकलबेरी, डोंगी को सीधे अगनबोट की ओर ले चलो। हम बोट से ही गांव में जाएंगे।"

मेरे लिए अगनबोट में यात्रा करने का प्रलोभन ही इतना बड़ा था कि उसे दुबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। फौरन चल पड़ा, गांव से कोई आधे मील ऊपर हमारी डोंगी किनारे लगी। वहां से हम छिछले पानी में किनारे-किनारे अगनबोट की ओर बढ़े। कुछ दूर जाने पर एक सीधा साधा देहाती युवक नदी किनारे एक लट्ठे पर बैठा मिला। वह चेहरे का पसीना पोंछ रहा था। मौसम उस दिन बहुत ही गर्म था और फिर वह बड़े-बड़े कुछ थैले भी लिए हुए था।

"डोंगी को किनारे लगाओ।" राजा ने हुक्म दिया।

मैंने डोंगी किनारे लगा दी तो उसने उस ग्रामीण युवक से पूछा, "जवान, कहां जा रहे हो?"

"ओर्लियन्स जानेवाले अगनबोट में चढ़ने।"

"डोंगी में सवार हो जाओ।" राजा ने उससे कहा, "ठहरो रहो, मेरा

नौकर अभी तुम्हारे झोले डोंगी में रख देगा। एडल्फस, जाओ; इन श्रीमान की मदद करो।" उसने मुझे हुक्म दिया।

जब मैंने उस देहाती युवक और उसके सामान को डोंगी में चढ़ा लिया तो फिर हम तीनों वहां से आगे बढ़े। उस जवान की खुशी का क्या पूछना! उसने बार-बार धन्यवाद दिया और कहा कि आपने मेहरबानी कर मेरा रास्ता आसान कर दिया, नहीं तो इस गर्मी में इतना बोझ लादकर चलते-चलते दम ही निकल जाता। फिर उसने राजा से पूछा कि आप कहां जा रहे हैं? राजा ने बताया कि आज सवेरे ही नदी की राह इस गांव आए थे और अब कुछ मील ऊपर की तरफ एक फार्म है वहां पुराने दोस्त से मिलने के लिऐ जा रहे हैं।

"पहले तो मैंने यही समझा," उस युवक ने कहा, "कि आप मिस्टर विल्क्स हैं और पहुंचने में थोड़ी-सी देर हो गई है। लेकिन जब आपको धारा से उलटी तरफ जाते देखा तो सन्देह हो गया; गांव तो नीचे की तरफ है, मिस्टर विल्कस ऊपर की तरफ क्यों जाएंगे! आप, मेरा ख्याल है कि मिस्टर विल्कस तो नहीं हैं?"

"नहीं। मेरा नाम ब्लाजेट है—अलेक्जेंडर ब्लाजेट—असल में तो प्रभु का अकिंचन सेवक होने के कारण मुझे अपने-आपको पादरी अलेक्जेंडर ब्लाजेट कहना चाहिए। यद्यपि न विल्क्स हूं और न विल्क्स को जानता हूं, फिर भी यह सुनकर बड़ा दुःख हो रहा है कि वे समय पर पहुंच न सके। आशा है, देर हो जाने से उनका कोई अकाज न होगा।"

[illegible] कोई नुकसान न होगा, [illegible]

मर गए। जिन्दा रहने वालो में सिर्फ हार्वी और विलियम हैं, जिनके
र्ने मैं आप से कह रहा था कि वे लोग समय पर पहुंच न सके।"
'क्या उन्हे खबर की गई थी ?"
'जी हा, जरूर ! करीब महीना दो-एक पहले जब पीटर बीमार हुआ
बर भेजी गई थी। पीटर ने तो तभी कह दिया था कि वह इस बीमारी
न सकेगा ! बूढा भी बहुत हो गया था और जार्ज और उसको घर-
मरने का सदमा भी था। वे लोग उसका बहुत खयाल रखते थे।
में सिर्फ जार्ज की लडकिया हैं—वे बूढ़े का क्या तो खयाल रखें
सार-सभाल करें, अभी तो उन्ही की देख-भाल करनेवाला कोई
हा, लाल बालो वाली मेरी जेन जरूर बूढे की सेवा-टहल में लगी
। मगर बुढऊ ने तो जीने की सारी आशा ही छोड़ दी थी। बस
टट लगाए हुए था कि हार्वी को बुलादो, हार्वी से मिला दो। इसकी
शायद यह भी थी कि पीटर अपना वसीयतनामा तैयार नही कर
—वह उन लोगो में से था, जो वसीयत के नाम से घबराते हैं।
हुत कहने-सुनने पर एक कागज लिखकर छोड़ गया है, जिसमें
है कि जमीन-जायदाद का बटवारा कैसे किया जाए और रुपया-
छिपाकर रखा है। लोगो का कहना है कि जमीन-जायदाद उसने
डकियों को देने की बात लिखी है, क्योंकि जार्ज तो कुछ छोड़
। बस, उस कागज के अलावा उसने कोई वसीयतनामा नही

के न आने का कारण भला क्या हो सकता है ? वह रहता कहा

ड में रहता है—शेफील्ड मे। वहा पादरी है और पूजा-प्रवचन
हा कभी आया नहीं। कहते हैं कि वहा इतना काम है कि उसे
फुर्सत नही मिलती। और फिर पीटर का खत भी शायद उसे
न आने के कारण तो कई हो सकते हैं।"
म ! बुरा हुआ, बहुत बुरा। बेचारा बूढ़ा अन्त समय अपने
भी न सका। जैसी प्रभु की मर्जी, बन्दे का क्या बस ! तुम
जा रहे हो न ?'

"जी हां; लेकिन सिर्फ ओरलियन्स ही नहीं, वहां से अगले बुधवार को जो जहाज छूटेगा उससे मैं अपने चाचा के पास रियो जनीरियो जाऊंगा

"बड़ी लम्बी मुसाफिरी पर निकले हो भाई! काश मुझे भी उस देश को देखने का मौका मिल पाता। कहते हैं कि बड़ा खूबसूरत देश है हां, तो मेरी जेम्स सब बहिनों मे बड़ी है? और बाकी कितनी बड़ी हैं?

"मेरी जेन उन्नीस बरस की है, सुसान पन्द्रह की और जोअन्ना करीब चौदह बरस की। यह छोटी तीनों में सबसे मेहनती है और दिन-भर किसी-न-किसी काम में लगी रहती है; पर बेचारी का ऊपर का होंठ कटा हुआ है।"

"हाय, गरीब बेचारियां इस कठोर दुनिया मे अकेली रह गईं।"

"अगर पीटर के दोस्त न होते तो सचमुच अकेली रह जातीं और तब उन्हें खासी मुसीबतो का सामना करना पडता। मगर वे लोग उनका पूरा खयाल रखेंगे और कोई तकलीफ न होने देंगे। पीटर के दोस्त सभी भले लोग हैं—एक हैं बैप्टिस्ट पादरी हाब्सन साहब; डीकन लाट होवी और बेन रकर और एबनर शेकलफोर्ड के अलावा वकील लेवीबेल है; डाक्टर राबिन्सन हैं; और इन सब लोगों की बीवियां हैं और बेवा बार्टली है। वैसे तो और भी बहुत-से लोग हैं, मगर मैंने जो नाम गिनाए उनसे पीटर का घरोपा था और वह अक्सर हार्वी को अपने खतो में इन लोगों के बारे में लिखता था; इसलिए हार्वी को भी यहा आने पर कोई दिक्कत न होगी, वह अपने दोस्तों को खोज निकालेगा और उसे उनसे माकूल सलाह मिल जाएगी।"

इस तरह राजा ने खोद-खोदकर उस जवान से सारी बातें पूछ लीं। उसने यह भी मालूम कर लिया कि गांव में कितने लोग हैं, उनके नाम क्या हैं और कौन क्या करता है। उसने पीटर और जार्ज के कामकाज के बारे में भी पता लगा लिया—पीटर चमड़ा कमाता था और जार्ज बढ़ईगीरी करता था; हार्वी स्वतन्त्र विचारों का प्रोटेस्टेंट पादरी था। सबकुछ मालूम कर लेने के बाद उसने जवान से पूछा, "तुम अगनबोट में सवार होने के लिए इतनी दूर पैदल क्यों जा रहे थे?"

"...यह है कि यह अगनबोट ओरलियन्स का है और बड़ा भी है।

ऐसे बाट गहरे पानी में चलते हैं, और पुकारने पर रुकते भी नहीं। सिनसिनाटी का हो तो रुककर मुसाफिरों को ले लेता है। यह सोचकर कि अगर रास्ते में न रुका तो मेरा जाना रह जाएगा, मैं जहाज घाट के लिए पैदल ही चल पड़ा, क्योंकि मेरा जाना बहुत जरूरी है।"

"क्या पीटर विल्क्स मालदार था?"

"जी हां, अच्छा-खासा मालदार था। जमीन-जायदाद है और कुछ मकानात भी। और लोगों का कहना है कि तीन-चार हजार डालर नकद भी कहीं छिपाकर रख गया है।"

"मरा कब?"

"कल रात।"

"शायद कल दफनाया जाएगा?"

"जी हां, यही कोई दोपहर को।"

"बेचारा मर गया, बहुत बुरा हुआ! लेकिन मौत पर आदमी का क्या बस! और आगे पीछे-एक दिन मरना तो हम सभी को है। इसलिए मौत को अवश्यम्भावी मान कर उस दिन के लिए तैयार रहें तो फिर कोई कष्ट नहीं होता।"

"जी, पादरी साहब, आपका कहना सच है और मेरे ख्याल में यही तरीका सही भी है। मेरी अम्मा भी यही कहा करती थी।"

जब हम अगनबोट के करीब पहुंचे तो माल लद चुका था और थोड़ी ही देर में उसने लगर उठा लिया। मेरे देखते-देखते वह चल भी पड़ा मगर राजा सवार न हुआ। अगनबोट में यात्रा करने की मेरी अभिलाषा मन-की-मन में रह गई। अगनबोट के रवाना हो जाने के बाद राजा की आज्ञा से मैं डोंगी को लेकर करीब एक मील ऊपर एक सुनसान-सी जगह में लाया।

राजा यहां किनारे उतर पड़ा और बोला, "अब जल्दी जाकर ड्यूक को लिवा लाओ और उसके साथ दरीवाले नए थैले भी। अगर वह उस पार निकल गया हो तो वहां जाकर बुला लाना। कहना कि काम बहुत जरूरी है और फौरन बनना है। अब तुम एकदम रवाना हो जाओ।"

उसकी सारी चाल तुरन्त मेरी समझ में आ गई, लेकिन मैंने कुछ न

कहा। ड्यूक के साथ मेरे भी खाने पर हम लोगों ने डोंगी को छिपा दि
और वे दोनों एक जगह पर बैठकर बातें करने लगे। राजा ने उन देह
बचपन से जो कुछ भी सुना था वह सब अक्षर-अक्षर ड्यूक को सुना दि
इस प्रकार अंग्रेजी बोलने का उसका ढंग अंग्रेजों-जैसा ही था, कम-से-क
नकल तो वह अंग्रेजों पढ़ने की ही कर रहा था—अंग्रेजों की थोड़ी नकल
लेकिन मैं ठीक से नकल नहीं कर पाऊंगा, इसलिए उसकी भाषा का व
वर्णन नहीं करता। इतना जरूर कहूंगा कि राजा ने अंग्रेजों पढ़ने की तर
पूरी महारत से कर दिखाई थी।

अन्त में उसने ड्यूक से पूछा, "कहिए आप गूंगे-बहरे का अभिन
कर सकते ?"

"अजी, आप देखते रह जाइएगा। गूंगे-बहरे के एक्टिंग में तो बन्दे को कमाल हासिल है। एक बार स्टेज पर वो एक्टिंग किया है कि देखनेवाले दांतों तले अंगुली दबाए रह गए। हुजूरेवाला, आप सब-कुछ इस नाचीज पर छोड़कर बेफिक्र हो जाइए।"

फिर वे अगनबोट का इन्तजार करने लगे।

तीसरे पहर तक छोटे-छोटे बहुत से अगनबोट वहां से गुजरे लेकिन वे सब पास-पड़ोस के ही थे। अन्त में एक बड़ा अगनबोट आता दिखाई दिया। उन लोगों ने आवाज देकर उसे रोका। अगनबोट वालों ने अपनी नाव किनारे भेजी और हम उसमें सवार होकर बोट पर चढ़ गए। काफी बड़ा बोट था और ठेठ सिनसिनाटी से आ रहा था। लेकिन जब बोट वालों को पता चला कि हमें सिर्फ चार-पांच मील ही जाना है तो वे बहुत नाराज हुए और उन्होंने सफा कह दिया कि रुकेंगे नहीं।

मगर राजा जरा भी उत्तेजित नहीं हुआ। उसने बड़ी शान्ति के साथ कहा, "अगर कोई भला आदमी प्रतिमील एक डालर किराया देने को तैयार हो तो बोट वालों को उसे ले जाने और पहुंचाने में क्या आपत्ति हो सकती है! मेरे विचार में तो बोट वाले उसे अपनी नाव में किनारे पर ही छोड़ सकते हैं। क्यों ठीक है न ?"

राजा की इस बात ने उनके गुस्से पर ठण्डा पानी छिड़क दिया। उन्होंने उसका कहना मान लिया और शान्त हो गए। जब गांव दिखाई दिया तो

उन्होंने अपनी नाव में हमें किनारे उतार भी दिया।

नाव को आते देख बीस-बाईसेक आदमी किनारे पर आ जुटे। उन्हें सम्बोधित कर राजा ने कहा, "क्या आप में से कोई मुझे यह बताने की कृपा कर सकता है कि मिस्टर पीटर विल्क्स कहा रहते हैं।"

उन्होंने एक-दूसरे की ओर देख कर इस तरह सिर हिलाया मानो कह रहे हों, 'क्यो, मैंने क्या कहा था ?' फिर एक आदमी बड़ी विनम्रता से बोला, "जी, अधिक-से-अधिक यह बता सकते हैं कि कल शाम तक वे कहा रहते थे।"

इतना सुनना था कि राजा उसके गले से लिपट गया और उसके कन्धे पर सिर डाल कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा, "हाय रे दुर्भाग्य ! अपने प्यारे भैया का हमें मुह देखना भी नसीब न हुआ। यह किन पापों की सज़ा भगवान ने हमें दी !"

फिर वह हाथ के इशारों से और गों-गों कर ड्यूक को समझाने लगा; और उसने भी समझने का नाट्य किया और थैलों को ज़मीन पर पटक कर रोने लगा। सच ही दोनों अव्वल नम्बर के धूर्त और पाजी थे !

अब आस-पास खड़े लोग उन दोनों को दिलासा देने और हिम्मत बंधाने लगे। कुछ लोगों ने उनके थैले उठा लिए और साथ चलने लगे। रास्ता पहाड़ी पर हो कर जाता था। वे दोनों धूर्त लोगों का सहारा लिए और रोते-बिसूरते चढ़ाई चढ़ने लगे। रास्ते में लोग उन्हें बताते जा रहे थे कि किस तरह पीटर के प्राण उन दोनों में अन्त समय तक अटके रहे और कैसे उनके प्राण निकले। राजा यह सब हाथों के इशारे से ड्यूक को बताता जाता था। दोनों-के-दोनों इस तरह शोक मना रहे थे मानो प्यारे भाई के बिछोह में उनकी छाती ही फट जाएगी। सच कहता हू, आदमी की ऐसी नीचता करते मैंने न पहले कभी देखा था और न बाद में ही देखा। मारे लज्जा के मेरा सिर झुका जा रहा था।

अध्याय २५

दो ही मिनट मे तो सारे गांव मे खबर फैल गई और सब तरफ
दौड़-दौड़कर आने लगे। कुछ इतनी हड़बड़ी में थे कि कोट पहनते
चले आ रहे थे। जरा-सी देर में हमारे चारों ओर अच्छी-खासी भी
हो गई और साथ चलने वालो के पांव उस तरह बजने लगे मानों पु
टन कूच कर रही हो। खिड़कियों और दरवाज़ों मे लोग ठसे हुए
कदम-कदम पर बागुड के पार से पूछने वालों की आवाज सुनाई देत
"क्यो वे ही हैं न ?"

और हर बार भीड़ मे चलता हुआ कोई भी आदमी मुड़कर कह
था, "हा भाई, हा ! खातिर जमा रखो, वे ही हैं।"

जब हम घर पहुचे तो सारी गली लोगों से खचाखच भर गई
और तीनों लड़कियां दरवाज़े में खड़ी थी। मेरी जेन के सिर के बाल
जरूर थे, पर इससे क्या, खूबसूरत वह वाकई गजब की थी; और
समय तो चचाओ के आने की खुशी में उसकी हुलसती आखों और दम
चेहरे ने उसे और भी सुन्दर बना दिया था। राजा ने बाहें फैला दी अ
वह उसकी बाहों मे समा गई। उधर कटे ओठ-वाली ड्यूक से लिपट ग
थी। यो चचा-भतीजियो का बड़े प्रेम से मिलन हुआ। इस सुखद दृश्य
देखकर सभी की आखो मे खुशी के आंसू उमड़ आए और औरतें अपने
स्वभाव के अनुसार सुबकने लगी।

फिर राजा ने सबकी आंखें बचाकर—लेकिन मैं देख रहा था—ड्यूक
को चुपके से ठूसा मारा, और तब उसने घूमकर ताबूत को देखा, जो कोने
मे दो कुर्सियो पर रखा हुआ था। अब वे दोनों एक दूसरे के गले मे हाथ डाले
और आंसू पोंछते हुए चुपचाप धीरे-धीरे चलते हुए ताबूत की दिशा मे
बढ़ने लगे। कमरे में जो भी खड़े थे वे सब उन्हें रास्ता देने के लिए पीछे हट
गए; बातचीत की आवाज और शोर गुल एक दम बन्द हो गया, लोग
नाकपर अगुलियां रखकर दूसरों को चुप कराने के लिए 'श-श श !' करने
लगे। सभी पुरुषों ने अपने-अपने टोप उतार कर सिर भुका दिए, और
वहां इतना सन्नाटा हो गया कि यदि सुई भी गिरती तो आवाज सुनाई दे

... ...अन्दर देखा और सिर्फ एक बार
तने ज़ोर से रो उठे कि उनका रुदन ठेठ ओरलियन्स तक सुनाई
गया। फिर आपस में गलबहियां डाले एक दूसरे के कन्धे पर ठुड्डिया
ाने ही ज़ोर-ज़ोर से कोई तीन-चार मिनट तक रोते रहे। मैंने
दो आदमियों को इस तरह ज़ोर-ज़ोर से रोते और आंसू बहाते
नहीं देखा था। इसके बाद दोनों ही ताबूत के अगल-बगल
ल बैठ गए; उन्होंने अपने सिर ताबूत पर टिका दिए और
ी शान्ति के लिए मन-ही-मन प्रार्थना करने लगे। इस दृश्य ने
ोगों के मन की करुणा को जगा दिया और तीनों लड़कियाँ
लोग सिसक-सिसककर रोने लगे। अब औरतों ने एक अजीब
किया—बार-बार रोती हुई हर औरत लड़कियों के पास आती
छ कहे चुपचाप उनका कपाल चूमकर माथे पर हाथ फेरती
री आंखों से एक क्षण आसमान की तरफ देखती और तब
र आंसू पोंछती हुई वहां से हट जाती थी। किसी के प्रति
करने और सान्त्वना देने का ऐसा बेहूदा ढंग भी मैंने पहले
ा था।

बाद राजा अपनी जगह से उठा और आंसू पोंछता हुआ आगे
धासी आवाज़ में बोलने लगा। सिसकियां भरते और थर्रा-
ाते हुए उसने जो बकवास की उसका सार यह था कि हम
ल से दौड़े आए, फिर भी भैया से भेंट न हो सकी; हाय,
ने से पहले ही चल बसे! इस बात का खयाल आते ही हम
दुःख के मारे फटने लगती है। ऐसे समय आप सब लोगों
मवेदनाएं हमें ढाढ़स बंधाती हैं। आप लोगों के पवित्र
ःख को सहने की शक्ति और साहस देते हैं। आप सब के
के लिए मैं और मेरा भाई हृदय से आभारी हैं। मुंह से तो
मर्थ हैं, क्योंकि शब्द आन्तरिक भावों को व्यक्त करने में
ौर ऐसे प्राणवान शब्द हैं ही कहां जो आन्तरिक कृतज्ञता
के! काफी देर तक वह इसी तरह बक-बक करता रहा,
मन उकताने लगा। फिर उसने बड़ी भावुकता से दो-

लोगों ने ड्यूक से भी हाथ मिलाये, लेकिन उसने कुछ कहा नहीं, केवल मुस्कराते और कठपुतलियों की तरह सिर हिलाते रहे और बदले में वह हाथों के इशारे और नन्हे बच्चे की तरह 'गू-गू —गू गू-गू' करता रहा।

इसलिए राजा की बकवास एक क्षण के लिए भी नहीं रुकी। उसने गाव के हर आदमी, यहा तक कि कुत्तों के बारे में भी उनका नाम लेकर कुशल-क्षेम पूछी और गाव में तथा जार्ज के परिवार एव पीटर के साथ जो कुछ भी घटनाएं घटी थीं उनका उल्लेख किया। उसने लोगों को बताया कि पीटर उसे ये सब बातें अपने पत्रों में लिखता रहा था। लेकिन यह सफेद झूठ था, उसने सारी बातें उस गवई युवक से खोद-खोदकर पूछ ली थीं, जिसे हमने अपनी डोंगी से अगनबोट में चढ़ाया था।

\ इसके बाद मेरी जेन उस पत्र को ले आई जिसे उसका पिता छोड गया था। राजा ने उस पत्र को सबके सामने ऊंची आवाज में पढ़ा। पत्र में लिखा था कि रहने का मकान और सोने के तीन हजार डालर तीनों लड़कियों को दिए जाएं, चमड़ा पकाने का कारखाना (जिसका कारबार काफी चढ़ती पर था,) उसके साथ की जमीन और मकानात (जिनकी कीमत सात हजार के करीब थी) और सोने के तीन हजार डालर हार्वी और विलियम को दिए जाएं, और पत्र में यह भी लिखा था कि नकद छह हजार डालर नीचे तहखाने (सेलर) में कहां छिपाए हुए हैं। पत्र पढ़ चुकने के बाद उन धूर्तों ने कहा कि हम फौरन नीचे जाकर डालर ले आते हैं और सबके सामने लिखे अनुसार बटवारा कर लेते हैं। उन्होंने मुझे हुक्म दिया कि मोमबत्ती उठाओ और आगे-आगे चलो। हमने तलघर का दरवाजा अन्दर से बन्दकर लिया। जरा-सी ढूंढ़-खोज के बाद डालरों की थैली मिल गई। उन्होंने उसे उलटकर फर्श पर खाली कर दिया। वहां सोने के पीले-चमकीले सिक्कों का ढेर लग गया। एक साथ इतना रुपया देखकर दोनों बदमाशों के मुह में पानी भर आया। राजा की आंखें चमकने लगीं और उसने ड्यूक के कन्धे पर धौल जमाकर कहा, 'इसे कहते हैं, हुजूर ड्यूक साहब, भाग्य का सीधा होना! इतनी सम्पदा! इतना धन! 'शहरजाद की दास्तान' भी धरी रह गई इसके आगे तो! क्यों, ठीक कह रहा हूं न?"

और 'हुजूर ड्यूक साहब' को मंजूर करना पड़ा कि 'जनाब राजा साहब' सच ही फरमा रहे हैं।

दोनों नन्हें बच्चों की तरह सुनहरे सिक्कों को हथेलियों में भरते और जमीन पर उछालने लगे। फिर राजा ने कहा, "भाग्य पर भरोसा करने का ही सुफल मिला है हमें। हम भाग्य के भरोसे, बिना किसी योजना के चल पड़े और मरनेवाले एक अमीर के सगे भाई ही नहीं बन गए, तीन अनाथ सुन्दर कन्याओं के अभिभावक भी। यह हमारे भाग्य में लिखा था और हमें प्राप्त हुआ। मैं अपने अनुभव से कहता हूं कि भाग्य पर भरोसा करने से उत्तम और कोई बात नहीं होती। यों मैं कई उपाय आजमा चुका हूं, पर भाग्य से श्रेष्ठ मैंने किसी को भी नहीं पाया। सुन रहे हैं न हुजूर ड्यूक साहब? मेरी इस बात को गांठ बांध लीजिए!"

और कोई होता तो उस ढेर को देखकर सन्तुष्ट हो जाता और स्वीकार कर लेता कि जरूर छह हजार डालर होंगे। लेकिन वे पूरे बिना गिने मानने वाले नहीं थे। उन्होंने सारे सिक्कों को गिना तो चार सौ पन्द्रह डालर कम निकले।

गिनेंगे। बूढ़ा अपने पत्र में छह हज़ार लिख गया है तो गिनने पर सबके सामने छह हज़ार निकलने ही चाहिए। कम निकलने पर लोगों को सन्देह हो सकता है; और मैं नहीं चाहता कि किसी को सन्देह हो। सारी बात यह है···"

"एक मिनट सब्र कीजिए।" ड्यूक ने हाथ उठाकर कहा, "जो कमी है क्यों न उसे हम पूरा कर दें···" और उसने अपनी जेब में से डालर निकालना शुरू भी कर दिया।

"मान गए हुज़ूर ड्यूक साहब, मान गए!" राजा ने दाद देते हुए कहा, "क्या ही उपजाऊ दिमाग पाया है आपने! वाह!! चुटकी बजाते सारी उलझन सुलझा दी। 'शहनशाह की शतुरचाल' एक बार फिर गाढ़े वक्त हमारे काम आई!" और उसने भी अपनी जेबें खाली करना शुरू कर दिया।

उनकी अधिकांश पूंजी निकल आई, लेकिन छह हज़ार की कमी भी उन्होंने अवश्य पूरी कर दी।

"एक नायाब ख़याल मेरे दिमाग में आया है।" ड्यूक ने कहा, "ज़रा मुलाहिज़ा फरमाइएगा। क्यों न ऊपर चलकर सारे सिक्के गिने जाएं और सबके सब लड़कियों के हवाले कर दिए जाएं? कहिए, कैसा रहेगा?"

"ख़ूब, बहुत ख़ूब! ड्यूक साहब, आप तो इतनी दूर की कौड़ी लाए हैं कि जी चाहता है, आपको गले लगा लूं। बड़ी प्रतिभा है आप में! गज़ब की खोपड़ी पाई है! भई वाह! यो चाल सोची है कि जिसकी कोई काट नहीं! अब कोई हम पर सन्देह कर ही नहीं सकता; जो करेगा, आप ही मारा जाएगा। आओ, चलें।"

हम ऊपर आए तो सब लोग मेज़ के चारों ओर जमा हो गए। राजा ने तीन-तीन सौ डालरों को गिन कर बीस ढेरियां लगा दीं। लोग चकित, भूखी निगाहों से ओंठ चटकारते हुए सोने की उन ढेरियों को देख रहे थे। प्रायः सभी के मुंह में पानी आ गया था। फिर राजा और ड्यूक ने सारा पैसा थैली में डाल दिया और राजा ने बड़े आडम्बर के साथ निम्नलिखित भाषण दिया।

उसने कहा, "मित्रो, मैं अपने स्वर्गवासी भैया की महान उदारता की

जितनी भी प्रशंसा करूं कम है। अपने वियोग में शोक-सन्तप्त होने वालों को सुखी करने का विचार उनके मन में अन्त तक बना रहा। इन मातृ-पितृ विहीन गरीब और अनाथ लड़कियों का उन्होंने पूरा ध्यान रखा। वे इन्हें प्यार करते थे और इनकी सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध करते गए। यदि उन्हें विलियम और मेरी भावनाओं को चोट पहुंचने की आशंका न होती तो आप, मैं और हम सभी जानते हैं कि वे अपनी इन प्यारी लड़कियों के लिए और भी बहुत कुछ कर जाते। आपही बताइए, क्या न कर जाते? लेकिन मेरा यह पूछना ही व्यर्थ है। मैं जानता हूं और आप भी जानते हैं कि वे अपनी लडकियों को, अगर बीच में हम न होते तो अपना सर्वस्व दे जाते। यदि उनके मन को मैं कुछ भी जान पाया हूं तो दावे से कह सकता हूं कि वे निस्सन्देह ऐसा ही करते। तो अब एक भाई के नाते मेरा क्या कर्त्तव्य है? क्या मैं उनकी आंतरिक अभिलाषा में अंतराय बनूं और वह भी ऐसे समय? क्या मैं चाचा होकर अपनी ही अबोध और प्यारी-प्यारी भतीजियों के अधिकारों का अपहरण करूं? क्या ऐसा राक्षसी कृत्य मेरे लिए उचित है? नहीं, ऐसा पाप मुझ से नहीं होगा। और विलियम भी, जितना मैं उसे जान पाया हूं, कभी इससे सहमत न होगा। लेकिन उसीसे क्यों न पूछ लिया जाए?" और राजा ने फौरन मुड़कर ड्यूक को इशारों से समझाना शुरू कर दिया। कुछ देर तो ड्यूक मुंह बाए पगले की तरह उसकी ओर देखता रहा, फिर लगा जैसे मतलब उसकी समझ में आ गया है; और वह गूं-गूं करता हुआ अपनी जगह से लपका और राजा से लिपट गया। देर तक लिपटे रहने और बार-बार मुंह चूमने के बाद ही उसने राजा को छोड़ा। अन्त में राजा ने कहा, "मैं जानता था। और अब तो सभी को विश्वास हो गया होगा कि वह क्या चाहता है। उसने अपने ढंग से अपने मन की भावनाओं को स्पष्ट रूप से प्रकट कर दिया है। तो मेरी जैन, सुसान और जोन्नर, तुम तीनों इधर आओ और यह रुपया लो, सब-का-सब ले लो। यह उस महान् आत्मा की भेंट है जो इस समय वहां कोने में निष्प्राण, परन्तु सुखी और सन्तुष्ट, अपनी चिर निद्रा में सोया हुआ है।"

इतना सुनते ही मेरी जैन राजा से और सुसान तथा कटे होंठ वाली ड्यूक से लिपट गई और बड़ी देर तक चुम्बन-प्रति-चुम्बन और आलिंगन-

प्रत्यालिंगन का दौर चलता रहा। वहां उपस्थित सभी लोगों की आंखों में खुशी के आंसू उमड़ आए। उन्होंने चचा-भतीजियों को घेर लिया और उन धूर्तों से हाथ मिलाते हुए कहने लगे : "ओह, कितने महान् और उदार हैं आप लोग ! और कितना बड़ा त्याग किया है आप लोगों ने ! धन्य है ! धन्य है ! !"

फिर थोड़ी देर के बाद सब-के-सब मृतक के गुणानुवाद में लग गए कि वे कितने भले और सत्पुरुष थे और उनके मरने से समाज की कितनी हानि हुई है, आदि-आदि। तभी बड़े-बड़े जबड़ों वाला एक आदमी बाहर से लोगों को ठेलता-ठालता अंदर आया और एक जगह खड़ा होकर देखने और चुपचाप सुनने लगा। वह किसी से बोला नहीं और दूसरों ने भी उससे कुछ नहीं कहा, क्योंकि राजा बोल रहा था और वे सब सुन रहे थे। जाने किसी बात को लेकर राजा ने बोलना शुरू कर दिया था और वह कह रहा था :

"...वे भैया के घनिष्ट मित्र हैं, इसीलिए आज रात में भोजन के लिए उन्हें निमन्त्रित किया गया है, लेकिन कल सभी का निमन्त्रण है—सब आएं और अवश्य आएं। भैया सबका सम्मान करते थे और सब उन्हें चाहते थे, भैया सबके थे और सब भैया के—उनके निकट निज-पर का भेद रह ही नहीं गया था, इसलिए उनके मरणोत्सव (ओरजीज़) में सबका सम्मिलित होना उचित ही है और उनके मरणोत्सव को सार्वजनिक रूप से ही मनाया जाना चाहिए।"

इस तरह वह अपनी ही वक्तृता से प्रसन्न होता हुआ देर तक बकवास और बार-बार 'मरणोत्सव' शब्द का उल्लेख करता रहा। ड्यूक को 'मरणोत्सव' शब्द उचित नहीं लग रहा था, आखिर वह जब्त न कर सका और एक पुर्जे पर 'ओ गधे, "मरणोत्सव" नहीं "अन्त्येष्टि" (आब्सीक्वीज़) कह।' लिखकर उसने उसे मोड़ा और गूं-गूं करते हुए हाथ बढ़ाकर राजा को थमा दिया।

राजा ने उसे पढ़कर जेब के हवाले किया और बोला, "विलियम बेचारा बोल नहीं सकता, परन्तु सोचता-विचारता समय के उपयुक्त ही है। वह भी यही चाहता है कि गांव के सभी लोगों को भैया के मरणोत्सव में निमंत्रित किया जाए। उसे निश्चिन्त हो जाना चाहिए, क्योंकि ठीक यही

[illegible]

[illegible]

"हुश् ! अपना गन्दा, गलीज हाथ मुझसे दूर ही रखो।" डाक्टर ने उसे फटकार दिया, "तुम्हारा दावा है कि तुम अंग्रेजों की तरह बोलते हो—क्यों है न ? अंग्रेजी लहजे की ऐसी भद्दी नकल तो मैंने कभी सुनी नहीं। और तुम अपने-आपको पीटर विल्क्स का भाई कहते हो ? लबाडिये कहीं के ! तुम झूठे हो, मक्कार, दगाबाज !"

सब लोग सकते में आ गए और अपने-अपने ढंग से डाक्टर को समझाने और शान्त करने की कोशिश करने लगे। उन्होंने उसे बताया कि कैसे बीसियों तरह से हार्वी ने सिद्ध कर दिया है कि वह हार्वी ही है, गांव के हर आदमी को उनके नाम से जानता है और गली के कुत्तों तक को पहचानता है। उन्होंने डाक्टर से अनुरोध किया कि वह कम-से-कम हार्वी का अपमान तो न करे और बेचारी लड़कियों की भावनाओं को चोट न पहुंचाए। लेकिन डाक्टर शान्त न हुआ। वह उसी तरह गुस्से से उबलता और कहता रहा कि अंग्रेजी लहजे की ऐसी भद्दी नकल करने वाला अंग्रेज तो कभी हो नहीं सकता, मक्कार और दगाबाज जरूर हो सकता है। यह सब सुनकर बेचारी लड़कियां राजा से लिपट गईं और रोने लगीं।

यह देख डाक्टर उन्हीं पर बरस पड़ा और बोला, "मैं तुम्हारे बाप का दोस्त था, और अब तुम्हारा दोस्त हूं; मेरी ईमानदारी और दोस्ती का तकाजा है कि तुम्हें हर मुसीबत से बचाऊं और तुम्हारा नुकसान न होने दूं। इसलिए एक दोस्त के नाते इस लफंगे, बेईमान और झूठे आदमी से बचकर रहने की सलाह देना मैं अपना फर्ज समझता हूं। यह उठाईगीर, आवारा ही नहीं अपढ़ भी है। यूनानी और हिब्रू की इसने जैसी टांग तोड़ी है वह तो कोई निपट गंवार भी नहीं करेगा ! जरूर कोई छटा बदमाश और धोखेबाज मालूम पड़ता है, जिसने कहीं से गांव वालों के नाम सुनकर रट लिए हैं और तुम्हें बुद्धू बना रहा है। और तुम हो कि उसके बहकावे में आ गईं। इतना भी तुम्हारी समझ में नहीं आता ? क्या सारी अक्ल ही बेच खाई है ! मेरी जेन विल्क्स, जरा समझ से काम लो। तुम जानती हो कि मैं तुम्हारा दोस्त हूं और तुम्हारा भला चाहता हूं। तुम्हारी भलाई में मेरा कोई भी स्वार्थ नहीं है। अब मेरी बात कान खोलकर सुनो, "इस पाजी को घर से निकाल बाहर करो। बोलो, मेरी इतनी बात मानोगी ?"

तो मैं कर रहा हूं।"

और वह बड़े इत्मीनान के साथ काफी देर तक आंय-बांय
और बार-बार 'मरणोत्सव' शब्द का उल्लेख करता रहा और
बोला, "मैं 'मरणोत्सव' कह रहा हूं और जानता हूं कि यह प्रच
नहीं है। प्रचलित शब्द तो 'अन्त्येष्टि' है, लेकिन अब इंगलैंड में को
प्रयोग नहीं करता, वहां सब 'मरणोत्सव' ही कहते हैं; इंग्लैंड में
शब्द अप्रचलित हो गया है। वैसे भी 'मरणोत्सव' ज्यादा सही और
युक्त है। जन्म की ही तरह मृत्यु भी एक उत्सव है; इस लोक से
में जाने का अभियान उत्सव नहीं तो क्या है ? तो क्यों न उस उ
सार्वजनिक रूप से मनाया जाए, क्यों न सबको उसमें सम्मिलित हो
लिए निमन्त्रित किया जाए ? इसीलिए मैं 'अन्त्येष्टि' के स्थान पर
बार 'मरणोत्सव'' शब्द का प्रयोग कर रहा हूं।"

इस समय वह अंग्रेजी उच्चारण की नकल में अपने शब्दों को
चबा-चबाकर और बिगाड़-बिगाड़कर बोल रहा था। यह देखकर
जबड़ों वाला वह आदमी उसकी खिल्ली उड़ाता हुआ ठठाकर हंस
वहां उपस्थित सभी लोगों को आश्चर्य भी हुआ और बुरा भी लगा

ने कहा, "बस-बस ! काम बन गया। उसमें मेरा खिदमतगार रह लेगा।" खिदमतगार से उसका मतलब मुझसे था।

इसके बाद मेरी जेन हम लोगों को ऊपर ले गई और वहां उसने उन लोगों को बतलाया कि कौन-सा कमरा किसके लिए है। कमरे दोनों ही साधारण परन्तु बढ़िया थे। जेन के कमरे में उसकी फ्राकें और दूसरा बहुत-सा सामान था। उसने कहा कि अगर आपको इनसे असुविधा हो तो हटा दिया जाए; लेकिन राजा ने कहा कि नहीं, रहने दो, इनसे तो कमरा और भी अच्छा लगता है। फ्राकें छत से फर्श तक लटके हुए एक सूती परदे के पीछे दीवाल पर टंगी हुई थीं। एक कोने में बालदार चमड़े का बक्सा था, दूसरे कोने में गिटार रखने की पेटी थी और दूसरा बहुत-सा सामान, जिससे आमतौर पर लड़कियां अपना कमरा सजाती हैं। ड्यूक का कमरा छोटा होते हुए भी काफी आरामदेह और खुशनुमा था। और अटारी वाली मेरी कोठरी भी बुरी नहीं थी।

उस रात का भोज काफी शानदार रहा; और राजा ने जिन स्त्री-पुरुषों को बुलाया था वे सब आ गए थे। मैं राजा और ड्यूक की परोस-गारी में रहा और हबशियों ने दूसरे लोगों को परोसा। मेरी जेन मेजबान की जगह मेज के सिरे पर सुसान को अपने साथ लेकर बैठी थी और ठीक वैसा ही भूखी औरतों की तरह बेकार की बातें कर रही थी कि बिस्कुट कितने बुरे हैं और अचार कितना खराब है और मुर्गे का गोश्त कितना सख्त और जरूरत से ज्यादा भुना हुआ आदि-आदि। यह सब लोगों से तारीफ करवाने के लटके थे, क्योंकि खाने में सभी चीजें उम्दा थीं और मेहमान भी इस बात को जानते थे और इसीलिए तारीफ के पुल बांधे जा रहे थे, 'भई, कमाल है, तुम बिस्कुट इतने कुरकुरे कैसे बना लेती हो !' और 'ऐसा जायकेदार अचार कहां से ला जाती हो !' और 'तुम्हारा कौन-सा बरतन है जिसमें गोश्त भुनकर इतना मुलायम हो जाता है।' गर्ज यह कि खाने के समय आम तौर पर लोग जैसी बातें करते हैं, वैसी बातें वहां

टे ईंड वाली दराजें-
ट के दूसरे लोग ठह

[illegible]

[illegible] हैं। [illegible] "[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] और [illegible] थी। [illegible]

[illegible] पड़ी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लगी और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राजा का [illegible] [illegible] में [illegible] उठाए [illegible] से [illegible] होता हुआ गुनगुनाने लगा।

तब डाक्टर ने कहा, 'अच्छी बात है। मैं जाता हूं, तुम्हारे जो मैं [illegible] आए करो; परन्तु इतना याद रखना कि जल्दी ही तुम्हें आने इस लि[illegible] पछताना पड़ेगा।" और वह वहां से चला गया।

"अच्छी बात है डाक्टर!" राजा ने उसकी खिल्ली उड़ाते हुए क[illegible] "जब भी पछताना होगा, हम तुम्हें जरूर कृपा भेजेंगे इलाज के लिए।"

मुसाहब सब खिलखिला पड़े और बोले कि सर्द, कमाल कर दि[illegible] मूंजी को यह पटकनी दी है कि चारों खाने चित हो गया!

"फिर तुमने क्या कहा ?"

"मैंने सिर्फ यह कहा कि वे वहां समुद्र-स्नान के लिए आते हैं।"

"अगर वहां समुद्र नहीं है तो वे समुद्र-स्नान करते कैसे हैं ?"

"पहले एक बात का जवाब दो. तुमने कभी सारा टोगा (न्यूयार्क राज्य) के कांग्रेस चश्मों का पानी देखा है ?"

"हां, देखा है ?"

"क्या उस पानी के लिए तुम्हारा कांग्रेस नाम की जगह पर जाना ज़रूरी है ?"

"नहीं तो।"

"बस, इसी तरह बादशाह विलियम चतुर्थ को भी समुद्र-स्नान के लिए समुद्र पर जाना नहीं पड़ता।"

"फिर वे समुद्र-स्नान करते कैसे हैं ?"

"जिस प्रकार यहां रहने वालों को पीपों में भरकर कांग्रेस जल मिल जाता है उसी तरह उनके लिए विंडसर के महल में समुद्र-जल पहुंचा दिया जाता है। ठण्डे पानी से वे कभी नहीं नहाते, इसलिए महलों में पानी गरम करने के लिए भट्टियां बनी हुई हैं। और तुम जानो कि समुद्र के किनारे पर तो इतने पानी को गरम करने के लिए कोई इन्तज़ाम हो नहीं सकता।"

"ओह, तो यह बात है ! तुमने पहले ही क्यों नहीं बता दिया ! नाहक इतना वक्त जाया करना पड़ा !"

अब कहीं आकर मेरी जान में जान आई और मैंने यह सोचकर चैन की सांस ली कि चलो, बला टली। तभी वह पूछ बैठी, "क्या तुम भी हमेशा गिरजाघर जाते हो ?"

"हां, हमेशा; बिला नागा।"

"बैठते कहां हो ?"

"हमारी अपनी बैठकी पर।"

"हमारी यानी किसकी ?"

'तुम्हारे चाचा हार्वी साहब की।"

"चाचा की बैठकी ? उन्हें बैठकी से क्या सरोकार ?"

"बैठने का सरोकार। बैठकी का और वे करेंगे क्या ? और कि

समय सफाई करने में हबशियों का हाथ बंटा रहे थे। खाना खाते समय
होंठ वाली ने इंग्लैण्ड के बारे में पूछ-पूछकर मेरी नाक में दम कर दिया
जवाब देते समय कई बार तो मैं अपनी जरा-सी असावधानी के कार
खासी मुसीबत में पड़ जाता था।

उसने पूछा, "क्यों जी, कभी तुमने बादशाह को भी देखा है ?"

"कौन-सा बादशाह ? विलियम चतुर्थ ? भला देखा क्यों नहीं है—
वे तो अक्सर ही हमारे गिरजाघर मे पूजा-प्रार्थना करने आते हैं।"
जानता था कि विलियम चतुर्थ को मरे बरसों हो गए, लेकिन मुझे तो
बोलना ही था।

यह सुनकर कि बादशाह हमारे गिरजाघर में आते हैं, उसने पूछा
"क्या हमेशा आते हैं ?"

"हां, हमेशा आते हैं। उनकी बैठकी (प्यू—गिरजाघर में कटहरे
घिरी परिवार वालों के बैठने की जगह) व्याख्यान-मंच के उस ओर हमारी
बैठकी के ठीक सामने ही तो है।"

"मेरा खयाल तो था कि वे लन्दन मे रहते हैं।"

"लन्दन में ही तो रहते हैं। और रहेंगे भी कहां ?"

"लेकिन मेरा खयाल है कि तुम तो शेफील्ड मे रहते हो ?"

धत्तेरे की, मारे गए ! मैंने गले मे कौर फंस जाने का बहाना किया
ताकि कोई जवाब सोच सकू और तब कहा, "मेरे कहने का मतलब यह है
कि जब वे शेफील्ड मे रहते हैं, यानी सिर्फ गर्मियों में, जब वे वहां समुद्र-
स्नान के लिए जाते हैं तो हमेशा हमारे ही गिरजाघर मे आते हैं।"

"क्या कह रहे हो—शेफील्ड में समुद्र है ही कहां ?"

"यह किसने कहा कि वहां समुद्र है ?"

समझा जाता।"

"क्या वहां नौकरों को छुट्टियां भी नहीं दी जातीं—बड़े दिन की और नये साल के सप्ताह की और चौथी जुलाई की, जैसी कि हम यहां देते हैं?"

"लो, सुनो इसकी बातें ! यह सुनकर तो कोई भी कह देगा कि तुम कभी इंग्लैण्ड नहीं गई कान खोलकर सुन लो क-ट्-अं हं जोअन्ना, कि वहां नौकरों को न कभी छुट्टी मिलती है, न वे सरकस देखने जा पाते हैं, न नाटक और न हब्शियों के नाच-तमाशे ही; आमोद-प्रमोद उनके लिए है ही नहीं।"

"गिरजाघर भी नहीं जा पाते?"

"नहीं, वहां भी नहीं।"

"फिर तुम कैसे जाते हो? अभी तो कह रहे थे कि हमेशा जाते हो।"

हम फिर घिरे गए ! याद ही नहीं रहा कि बूढ़े के नौकर हैं। लेकिन फौरन एक बहाना ढूंढ निकाला। उसे समझाने की कोशिश की कि नौकर और खिदमतगार में बड़ा फर्क होता है, और खिदमतगार चाहे या न चाहे उसे गिरजाघर में जाना और परिवार वालों के साथ बैठना ही होता है, क्योंकि ऐसा कानून बना हुआ है। लेकिन बात उसके गले उतरी नहीं।

उसने कहा, "सच-सच कहो, तुम गप तो नहीं हांक रहे थे? मुझे तो लगता है कि तुमने शुरू से अखीर तक सब-कुछ झूठ ही कहा है।"

"नहीं, चाहो तो कसम खा सकता हूं।" मैंने कहा।

"एक भी झूठ नहीं कहा? सब सच है?"

"हां, एक भी झूठ नहीं, रत्ती बराबर भी झूठ नहीं। सब सच है।"

"इस किताब पर हाथ रखकर कहो तो मुझे यकीन आए; यों तो मैं मानने की नहीं।"

मैंने पहले ही देख लिया था, वह सिर्फ एक शब्दकोश था, मैंने फौरन उसपर हाथ रखकर कह दिया कि जो भी कहा है, सच ही कहा है, झूठ नहीं। वह कुछ सन्तुष्ट हो गई और बोली "ठीक है, तुम्हारी कुछ बातों को माने लेती हूं। परन्तु सबपर तो विश्वास कर नहीं सकती।"

"काहे पर विश्वास कर नहीं सकोगी जो?" मेरी जेन ने अन्दर आते हुए पूछा। सुसान भी उसके पीछे लगी चली आ रही थी। मेरी ने कहा,

बैठकी के बैठेंगे कहां ?"

"मैं तो सोचती थी कि वे व्याख्यान-मंच पर रहते होंगे।"

धत्तेरे की ! फिर पकड़े गए ! मैं तो भूल ही गया कि वह पादरी
मैंने फिर गले में और फंसने का बहाना किया और इस बीच जवाब
निकाला। फिर बोला, "क्या तुम्हारे खयाल में गिरजाघर में सिर्फ अके
एक पादरी होता है ?"

"ज्यादा का करेंगे भी क्या ?"

"सुनो इसका जवाब। ऐसी लड़की तो मैंने देखी नहीं। बादशाह
सामने प्रवचन करने के लिए पादरी चाहिए कि नहीं ? हमारे गिरजाघर
एक-दो नहीं कुल सत्रह पादरी हैं।"

"बाप रे, सत्रह ! सबका प्रवचन सुनते-सुनते मेरी तो जान ही निक
जाए। मैं तो कभी बैठी न रह सकूं। सबको प्रवचन करते-करते पूरा हफ
तो लग ही जाता होगा !"

"दुत् ! सभी एक ही दिन प्रवचन थोड़े करते हैं ! हरएक की पा
बंधी हुई है और दिन निश्चित हैं। एक दिन एक ही पादरी का प्रवच
होता है।"

"और बाकी क्या करते हैं ?"

"खास तो कुछ नहीं करते; छोटा-मोटा कोई काम हुआ तो कर दिया
इधर-उधर घूम लिए, ज्यादा हुआ तो भिक्षा-पात्र घुमा दिया और छुट्टी।
लेकिन आम तौर पर तो बैठे ही रहते हैं।"

"फिर इतने पादरियों की क्या जरूरत, अगर उनके लिए काम नहीं
है ?"

"कैसी लड़की है, इतना भी नहीं समझती ! अरे भई, वे सब शोभा के
लिए हैं।"

... उस बेचारी पर इतनी लताड़ पड़ चुकी थी कि वह रो दी।
च्छा, तो अब तुम इससे माफी माग लो।" दोनों बहिनों ने उससे

री ने फौरन मुझसे माफी माग ली। उसका माफी मागने का ढंग
रा था और उसने 'माफ कर दीजिए' इतने लुभावने ढंग से कहा
हने लगा, जिन्दगी-भर झूठ बोलता रहूं और वह इसी तरह माफी
।

एक बार फिर मेरे मन ने मुझे धिक्कारा कि एक यह है और एक
। बेचारी को उन दुष्टों के हाथों लुटने दे रहा है! फिर तीनों
वाव-भगत की और हर तरह से दिलासा दिया कि अपने-
गानों के नहीं, मित्रों के ही बीच समझूं। मुझपर घड़ों पानी पड़
ो नीचता के खयाल से गरदन ऐसी झुकी कि उनसे आखें मिलाने
हीं हो रही थी। कहां वे और कहां मैं! फौरन तय कर लिया
। ही क्यों न चली जाए, उन्हें लुटने न दूंगा और सारा रुपया
रहूंगा।

यह कहकर उनके पास से चला आया कि अब सोने जाता हूं।
मे मैं उन लुटेरों के चंगुल में से रुपया निकालने की तरकीब
। समय और एकांत चाहता था। पहले मैंने सोचा कि क्यों न
र डाक्टर से कह दू और इन बदमाशों की पोल खोल दू?
ह उपाय मुझे ठीक नहीं लगा। डाक्टर जरूर बता देगा कि
। है और तब राजा और ड्यूक मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे। तो
री जेन से चुपचाप कह दू? लेकिन नहीं; वे उसका चेहरा
जाएंगे कि उसे मालूम हो गया है और तब सारा रुपया, जो
र था, लेकर नौ दो ग्यारह हो जाएंगे। मुझसे सारी बात
ोगों को मदद के लिए बुला सकती थी, लेकिन उसमें यह
ामले का निबटारा होने के पहले मैं खुद ही उसमें फंस जाता
ाई हो जाती। हर पहलू से सोचने पर मुझे तो सिर्फ एक ही
आता था और वह यह कि जैसे भी बने खुद ही रुपया चुराऊं
। तरह कि उन्हें मुझपर सन्देह न हो। चुराने के मौके तो

[illegible]

[illegible]

"[illegible] और [illegible] तो मैं नहीं जानती, परन्तु यह बेचारा हमारे [illegible] हुआ है और यहाँ इसका कोई भी नहीं है। [illegible] को ऐसा क्या लगता है? सोचो, क्या तुम्हें शोभा देता है? अगर तुम उसकी जगह होती तो कितना बुरा लगता? किसीको बुरा लगने वाली बात तुम्हें निकालनी ही क्यों चाहिए? क्यों किसीको शर्मिन्दा किया जाए?"

"लेकिन मादाम, यह कह रहा था····"

"यह कुछ भी कह रहा हो, सवाल तो यह है कि तुमने उसे ऐसी चुभती हुई बात क्यों कही? उस के साथ ऐसा बुरा बर्ताव क्यों किया? क्या तुम्हारा यह फर्ज़ नहीं कि तुम उसके साथ नर्मी से पेश आओ और ऐसी कोई बात न कहो जिससे उसे ऐसा लगे कि वह पराये देश में बेगानों के बीच आ निकला है!"

और मेरा मन मुझे धिक्कारने लगा कि तू ऐसी सच्ची और नेक लड़की को उस सांप के हाथों लुटने दे रहा है!

उसके बाद सुसान अन्दर आई और उसने भी कटे ओठ वाली को खूब आड़े हाथों लिया।

और मेरा मन मुझे धिक्कारने लगा कि एक यह भी है और एक तू है जो इस बेचारी को उस दुष्ट के हाथों लुटने दे रहा है!

सुसान के बाद मेरी जेन ने कटे ओठवाली को एक बार फिर धिक्कारा और फिर जैसा कि उसकी आदत थी, बड़े प्रेम और मिठास से समझाने

चाहिए, यहां ऊपर आकर सलाह-मशविरा करने लगे तो लोग नाम धरेंगे और सम्भव है कि सन्देह भी करें।"

"मुझे तफसील में कुछ नहीं कहना है; सिर्फ इतना ही कि मन में बड़ी बेचैनी है और घबराहट हो रही है जिसकी वजह वह कम्बख्त डाक्टर है। पता नहीं वह कब क्या कर गुजरे! इसलिए हुजूरेवाला के इरादों के बारे में मालूम करना चाहता हूं। और मेरे जेहन में भी एक खयाल रोशन हो रहा है, जो मेरी अपनी राय में बहुत नायाब है।"

"बताइए हुजूर ड्यूक साहब, अवश्य बताइए।"

"जो कुछ हाथ लगा है उसीको लेकर आज ही आधी रात के बाद हमें यहां से उड़न-छू हो जाना चाहिए—सुबह का चेहरा देखने के लिए रुकना ठीक नहीं। अभी तो किस्मत हमारा साथ दे रही है; जिन डालरों को हम चुराने का मनसूबा कर रहे थे वे खुद-ब-खुद हमारे हाथ में चले आए, बल्कि कहना चाहिए कि हमारे सिर पर थोप दिए गए। ऐसी सूरत में, मेरी राय तो यही है कि फौरन नौ-दो-ग्यारह हो लिया जाए।"

यह सुना तो जैसे मेरे पांव तले की धरती ही खिसक गई। अगर यही बात दो-एक घण्टे पहले सुनी होती तो इतना दुःख न होता, शायद खुशी ही होती, लेकिन अब स्थिति बदल गई थी। दुःख और निराशा के मारे मेरा बुरा हाल हो गया।

तभी राजा ने तमककर कहा, "यह क्या कह रहे हो? जायदाद को बेचे बिना ही यहां से चल दें? सब मिलाकर आठ-नौ हजार डालर की सम्पत्ति है और अपने से हमारे पास चली आ रही है; हर चीज सरलता से बिक जानेवाली है। और हम मूर्खों की तरह सब छोड़-छाड़कर चले जाएं? नहीं, कदापि नहीं।"

ड्यूक अपनी ही बात की रट लगाए रहा—हमारे लिए डालरों की थैली ही काफी है, इससे ज्यादा हमें कुछ नहीं चाहिए, लालच अच्छा नहीं होता, यतीम लड़कियों का सब-कुछ लूटकर उन्हें तबाह करना हमें शोभा नहीं देता।

"कैसी बातें करते हो? कहीं बुद्धि तो चरने नहीं चली गई है!" राजा ने कहा, "लड़कियों का तो वास्तव में हम यह रुपया ही ले रहे हैं

कई गिन गए थे, क्योंकि मैं जानता था कि इन लड़कियों और सारे गांव को अच्छी तरह ठगे बिना वे दुष्ट यहां से टलनेवाले नहीं थे। मैं डालरों की थैली चुराकर कहीं छिपा दूंगा और जब नदी की राह काफी दूर निकल जाऊंगा तो मेरी जेन को पत्र लिखकर बता दूंगा कि कहां छिपाकर रख गया हूं। लेकिन फिर खयाल आया कि क्यों न आज ही चुरा लूं? डाक्टर उनसे नाराज है और पीछे भी लगा है; पता नहीं, कब डरा-धमकाकर भागने पर मजबूर कर दे और उनसे रुपया निकलवाने की मेरी सारी योजना धरी रह जाए!

इस तरह सोच-विचार कर मैंने ऊपर जाने और कमरों की तलाश लेने का निश्चय किया। ऊपर गलियारे में घुप्प अंधेरा था, लेकिन मैं ड्यूक का कमरा पा ही लिया और अन्दर जाकर हाथों से टटोलने लगा तभी मुझे खयाल आ गया कि राजा ऐसा जीव नहीं है जो इतना रुपया किसी और को रखने के लिए दे दे। यह सोचकर कि थैली उसीके कमरे में होनी चाहिए, मैं फौरन राजा के कमरे में पहुंचा और वहां अंधेरे में टटोलने लगा। मोमबत्ती जलाए बिना काम बनना मुश्किल था, लेकिन मैं मोमबत्ती जला नहीं सकता था। अन्त में फैसला किया कि कमरे में छिपकर बैठ रहूं और चोरी से उनकी बातें सुनकर मालूम करूं कि रुपया कहां छिपाकर रखा गया है। इतने में उनके पांवों की आहट सुनाई दी। वे ऊपर कमरों की ओर चले आ रहे थे! मैं पलंग के नीचे छिपने के लिए लपका, लेकिन वह मुझे मिला नहीं, तभी मेरी जेन की फ्राकों के आगे पड़ा परदा मेरे हाथ आ गया और मैं उछलकर उसके पीछे कपड़ों की ओट में दुबक गया। मैं वहां दम साधे चुप खड़ा था।

अन्दर आकर उन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया। ड्यूक ने सबसे पहले पलंग के नीचे झांककर देखा। संयोग से ही मैं बच गया था, नहीं तो जरूर पकड़ा जाता। बड़ी खुशी हुई कि उस समय पलंग मिला नहीं और परदा हाथ आ गया। वैसे आम तौर पर दूसरों की बातें सुनने के लिए लोग-बाग पलंग के ही नीचे छिपा करते हैं।

जब वे दोनों बैठ गए तो राजा ने कहा, "जो कहना हो, जल्दी से कह डालो और संक्षेप में। वास्तव में इस समय हमें नीचे बैठकर शोक मनाना

चाहिए, यहां ऊपर आकर सलाह-मशविरा करने लगे तो लोग नाम धरेंगे और सम्भव है कि सन्देह भी करें।"

"मुझे तफसील में कुछ नहीं कहना है; सिर्फ इतना ही कि मन में बड़ी बेचैनी है और घबराहट हो रही है जिसकी वजह यह कम्बख्त डाक्टर है। पता नहीं वह कब क्या कर गुज़रे ! इसलिए हुज़ूरेवाला के इरादों के बारे में मालूम करना चाहता हूं। और मेरे जेहन में भी एक खयाल रोशन हो रहा है, जो मेरी अपनी राय में बहुत नायाब है।"

"बताइए हुज़ूर ड्यूक साहब, अवश्य बताइए।"

"जो कुछ हाथ लगा है उसीको लेकर आज ही आधी रात के बाद हमें यहां से उड़न-छू हो जाना चाहिए—सुबह का चेहरा देखने के लिए रुकना ठीक नहीं। अभी तो किस्मत हमारा साथ दे रही है; जिन डालरों को हम चुराने का मनसूबा कर रहे थे वे खुद-ब-खुद हमारे हाथ में चले आए, बल्कि कहना चाहिए कि हमारे सिर पर थोप दिए गए। ऐसी सूरत में, मेरी राय तो यही है कि फौरन नौ-दो-ग्यारह हो लिया जाए।"

यह सुना तो जैसे मेरे पांव तले की धरती ही खिसक गई। अगर यही बात दो-एक घण्टे पहले सुनी होती तो इतना दुःख न होता, शायद खुशी ही होती, लेकिन अब स्थिति बदल गई थी। दुःख और निराशा के मारे मेरा बुरा हाल हो गया।

तभी राजा ने तमककर कहा, "यह क्या कह रहे हो ? जायदाद को बेचे बिना ही यहां से चल दें ? सब मिलाकर आठ-नौ हज़ार डालर की सम्पत्ति है और अपने से हमारे पास चली आ रही है; हर चीज़ सरलता से बिक जानेवाली है। और हम मूर्खों की तरह सब छोड़-छाड़कर चले जाएं ? नहीं, कदापि नहीं।"

ड्यूक अपनी ही बात की रट लगाए रहा—हमारे लिए डालरों की थैली ही काफी है, इससे ज्यादा हमें कुछ नहीं चाहिए, लालच अच्छा नहीं होता, यतीम लड़कियों का सब-कुछ लूटकर उन्हें तबाह करना हमें शोभा नहीं देता।

"कैसी बातें करते हो ? कहीं बुद्धि तो चरने नहीं चली गई है !" राजा ने कहा, "लड़कियों का तो वास्तव में हम यह रुपया ही ले रहे हैं

और कुछ नहीं। अगर में पुड़े गई जाएंगे जो इस जायदाद को खरीदें हानि उन्हीं को उठानी होगी, लड़कियों को नहीं। जैसे ही यह पता चले कि हम मालिक नहीं, और हमारे यहां से जाने के बाद जल्दी ही यह मालूम हो जाएगी, तो बिक्री आप ही रद्द हो जाएगी और सारी रकम उनके पास लौट आएगी। इन अनाथों को अर्थात् आपके इन भतीजों के सारी जमीन, जायदाद और मकानात फिर से मिल जाएंगे। इतना इनके लिए बहुत है। अभी जवान हैं और बड़े मजे से कमाई-धमाई कर सकती हैं। इन्हें कोई कष्ट नहीं होगा, न इनकी कोई हानि ही हो रही है। इन्हें के पास तो इतना भी नहीं होता। सच मानिए, इन्हें कोई कष्ट न होगा और न शिकायत का कोई मौका ही रह जाएगा।"

राजा की इन युक्तियों ने ड्यूक को सर्वथा निरुत्तर कर दि आखिर उसे राजा से सहमत होना ही पड़ा। फिर भी उसने कहा, " कि डाक्टर का खतरा सिर पर मंडरा रहा हो तो मेरी राय में यहां रहना परले सिरे की बेवकूफी है।"

इस पर राजा ने कहा, "ऐसी की तैसी उस डाक्टर की ? हम ससुरे की परवाह ही क्या करते हैं। क्या गांव के सब मूर्ख हमारे स नहीं हैं ! ऐसी स्थिति में वह अकेला अकलमन्द क्या कर लेगा ? हर गांव तो प्रबल बहुमत मूर्खों का ही होता है और वे हमारे साथ हैं।"

इसके बाद वे नीचे जाने के लिए उठ खड़े हुए।

चलते-चलते ड्यूक ने कहा, "मेरी राय में हम लोगों ने थैली को ठीक जगह छिपाकर नहीं रखा है।"

मेरी बाछें खिल गईं। कहां पछता रहा था कि इतना खतरा भी मोल लिया और थैली का सुराग न लगा।

राजा ने पूछा, "क्यों ?"

"इसलिए कि मेरी जेन तो सोग में रहेगी और मान लीजिए कि कल सुबह होते ही उसने कमरे की सफाई करने वाले हब्शी को हुक्म दे दिया कि खूंटी से लटके हुए इन कपड़ो-लत्तों को समेट कर सन्दूकचे में रख दिया जाए, तो क्या आपका ऐसा खयाल है कि डालरों की भरी हुई थैली पाकर कोई हब्शी उसे यों ही छोड़ [illegible] ?"

...ने कहा, ड्यूक साहब ! फिर मान गया कि आप बहुत दूर की सोचा करते हैं।" इतना कहकर राजा परदे के पास ड़ा हुआ और मुझसे कोई दो-तीन फुट के फासले पर कपड़ों मे ालकर टटोलने लगा। मैं दम साधे दीवाल से सट गया, यद्यपि न-बदन बुरी तरह कांप रहा था। यदि उस समय पकड़ जाता तो ें मेरी जाने क्या गत बनाते ! मैं सोचने लगा कि यदि पकड़ा ा तो क्या जवाब देना ठीक रहेगा। लेकिन इसकी नौबत ही ई। अभी मैं कोई बहाना पूरा सोच भी नहीं पाया था कि राजा ो मिल गई, और उसे सदेह भी नहीं हुआ कि मैं वहीं खड़ा हूं। अब उस थैली को पुआल के गद्दे मे, जो परोंवाली गादी के नीचे ा, छिपा दिया और कहा कि यहां से इसके चोरी का कोई अन्देशा ोंकि हबशी टहलुए सिर्फ परोंवाली गादी को झटकते-फटकते हैं वे वाले पुआल के गद्दे को तो साल मे सिर्फ दो-एक बार ही उलटा-ता है।

न उनका यह ख़याल एकदम गलत साबित हुआ। अभी तो वे आधा नहीं उतर पाए थे कि मैंने थैली को गद्दे के अंदर से निकाल लिया ेरे में टटोलते हुए ले जाकर अपनी अटारी में छिपा दिया। मैं उसे तक छिपाए रखना चाहता था जब तक कहीं और छिपाने का मिल जाता। मैं उसे घर से बाहर कहीं छिपाना चाहता था, क्यो-ा था कि यदि उन बदमाशों को थैली न मिली तो वे उसकी घर का कोना-कोना छान मारेंगे। मैं उनके स्वभाव से खूब परि-या था। फिर मैं कपड़े पहने हुए ही सो गया। लेकिन थैली सुरक्षित जगह छिपाने की चिन्ता और उत्तेजना के कारण मुझे ाई। काफी देर बाद राजा और ड्यूक के जीना चढ़कर ऊपर ावाज सुनाई दी। मैं अपने गद्दे से लुढ़ककर नसैनी के सिरे पर र उस पर ठुड्डी रखकर देखने लगा। मैं देर तक टोह लेता और ड्यूक की ओर किसी तरह की प्रतिक्रिया होती दिखाई न्हें पता ही नहीं लग पाया था।

र में सब तरफ सन्नाटा हो गया, तो मैं चुपचाप नसैनी से

और कुछ नहीं। अगर मैं पकड़े भी जाएँगे तो इस जायदाद की हानि उन्हीं को उठानी होगी, लड़कियों को नहीं। जैसे ही यह ... कि हम मालिक नहीं, और हमारे यहाँ से जाने के बाद उन्हें ... मालूम हो जाएगी, तो बिक्री आप ही रद्द हो जाएगी और ... उनके पास लौट आएगी। इन अनाथों को अर्थात् आपके ... सारी जमीन, जायदाद और मकानात फिर से मिल जाएँगे। इनके ... लिए बहुत है। अभी जवान हैं और बड़े मजे से कमाई-धमाई कर ... हैं। इन्हें कोई कष्ट नहीं होगा, न इनकी कोई हानि ही हो रही है। ... के पास तो इतना भी नहीं होता। सच मानिए, इन्हें कोई कष्ट नहीं ... और न शिकायत का कोई मौका ही रह जाएगा।"

राजा की इन युक्तियों ने ड्यूक को सर्वथा निरुत्तर कर दिया। आखिर उसे राजा से सहमत होना ही पड़ा। फिर भी उसने कहा, "... कि डाक्टर का खतरा सिर पर मंडरा रहा हो तो मेरी राय में ... रहना परले सिरे की बेवकूफी है।"

इस पर राजा ने कहा, "ऐसी की तैसी उस डाक्टर की! ... ससुरे की परवाह ही क्या करते हैं। क्या गाँव के सब मूर्ख हमा... नहीं हैं! ऐसी स्थिति में वह अकेला अकलमन्द क्या कर लेगा? हर... तो प्रबल बहुमत मूर्खों का ही [illegible] आए हैं।"

चुपचाप बाहर खिसक आया और खाने वाले कमरे के आगे से गुजरते हुए यह इत्मीनान करने के लिए अन्दर झांककर देखा कि दाव की रखवाली करने वालों ने तो कहीं मुझे देख नहीं लिया। जब मैंने किवाड़ों की दराज में से देखा तो सब कुछ पहले की ही तरह था—रखवाले उसी तरह कुर्सियों पर निढाल सो रहे थे, उन्होंने मुझे देखा नहीं था।

अटारी में पहुंचकर मैं अपने बिस्तरे पर पड़ गया। मन ही मन बहुत बुरा लग रहा था। जिस पैसे को बचाने के लिए इतना परिश्रम किया और खतरा मोल लिया उसे इस तरह फेंक देना पड़ा। क्या सोचकर चला था और क्या हो गया! अगर ताबूत में जहां रखा है वहीं पड़ा रहा तब तो ठीक, नदी में सौ-दो सौ मील दूर निकल जाने पर मेरी जेन को पत्र लिखकर सूचित कर दूंगा और वह कब को खुदवाकर अपना पैसा पा जाएगी लेकिन जानता था कि ऐसा होगा नहीं। होगा यह कि ताबूत का ढक्कन जड़ते समय थैली उन्हें दिख जाएगी और राजा फौरन उसे अपने अधिकार में कर लेगा और दुबारा वह उसे चुराने का मौका नहीं देगा। हां, अगर चाहता तो नीचे जाकर जरूर निकालकर ले आ सकता था मगर हिम्मत नहीं पड़ रही थी और उचित भी न होता, क्योंकि सबेरा होने ही वाला था, रखवाले जाग पड़ें तो पकड़े जाने का अन्देशा था। और छह हजार डालरों की थैली के साथ पकड़े जाने पर मेरी जो गतबनती उसकी कल्पना आसानी से की जा सकती है; क्या कहकर अपनी सफाई दे पाता? मैंने ऐसी किसी झंझट में पड़ना ठीक न समझा।

सवेरे जब नीचे पहुंचा तो बैठका बन्द था और रात में दाव की रखवाली करनेवाले जा चुके थे। उस समय वहां परिवार के लोग विधवा बार्टली और दोनों ढदमाश, यानी राजा और ड्यूक के सिवा बाहर का एक भी आदमी नहीं था। किसीको रुपयों की चोरी का पता चल गया है या नहीं, यह जानने के लिए मैंने बारी-बारी से सबके चेहरों को बड़े गौर से देखा, लेकिन किसीके चेहरे से कुछ भी मालूम नहीं हुआ, अर्थात् रुपयों की चोरी का किसीको पता नहीं चला था।

दुपहर होते-होते अन्त्येष्टि करनेवाला अपने सहयोगियों के साथ आ पहुंचा। उन्होंने ताबूत को कोने से उठाकर कमरे के बीचोबीच कुर्सियों पर

मैंने पाठ बताया। उस समय आत्माराम के द्वार बन्द हो गये और सिर्फ रात की आवाजें अभी शुरू नहीं हुई थीं।

अध्याय २७

गाड़ी से पहुंचे मैंने उनके दरवाजों के आगे खड़े रहकर सुना, वे जोर-जोर खर्राटे ले रहे थे। फिर तो मैं पंजों के बल चलता हुआ चुपचाप ज़ीना उ[illegible] गया। चारों ओर सन्नाटा था, कहीं से कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थ[illegible] मैंने खाने वाले कमरे के किवाड़ों की दराज में से झांका तो सब की ए[illegible] वाली करनेवाले अपनी-अपनी कुर्सियों पर निढाल सोए पड़े थे। दरवा[illegible] एक ओर बैठके में खुलता था, जहां शव रखा हुआ था और दोनों ही कम[illegible] में मोमबत्तियां जल रही थीं। मैं आगे बढ़ा तो बैठके का दरवा[illegible] खुला मिल गया। वहां पीटर के शव के अलावा और कोई नहीं था। वह[illegible] से मैं मुख्य द्वार की ओर गया तो उसे बन्द पाया; ताला लगा हुआ थ[illegible] और चाबी वहां नहीं थी। तभी मुझे अपनी पीठ की ओर किसी के जीन[illegible] उतरकर आने की आवाज सुनाई दी। मेरे रोंगटे खड़े हो गए। फौरन दौड़कर बैठके में चला गया और चारों ओर देखा तो थैली छिपाने के लि[illegible] सिर्फ ताबूत ही दिखाई दिया। ताबूत का ढक्कन कोई फुट-भर खिसका हुआ था और उसमें से मृतक का चेहरा दिखाई दे रहा था, जिसपर गीला कपड़ा लपेटा हुआ था और कफन भी ओढ़ाया हुआ था। मैंने थैली को फौरन ढक्कन के नीचे मृतक के छाती पर बंधे हुए हाथों के पास रख दिया। वे हाथ इतने ठण्डे थे कि उन्हें छूते ही मेरे सारे बदन में कंपकपी दौड़ गई। फिर मैं भागकर कमरे में ही दरवाजे के पल्ले के पीछे खड़ा हो गया।

आगन्तुक मेरी जेन थी। वह दबे पावों ताबूत के पास गई, झुककर उसने अन्दर देखा और घुटनों के बल बैठकर रूमाल आंखों से लगा लिया और रोने लगी। वह पीठ मेरी ओर किए हुए थी इसलिए और बगैर आवाज [illegible] नहीं दिया। मैं वहां

' इस बेचारे की जाने क्या गत बनती !

ति-बजाने के बाद परम पूज्य पादरी हावसन साहब अंतिम प्रार्थना ाचन के लिए खड़े हुए। अभी उन्होंने मुंह खोला ही था कि तलघर ार के हो-हल्ले की आवाज़ आती सुनाई दी; वहां कोई कुत्ता जा ' और ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहा था। एक बार जो उसने भौं-भौं ़ुरू किया तो फिर चुप होने का नाम न लिया। पादरी साहब को ार्रवाई स्थगित कर देनी पड़ी। बेचारे ताबूत के आगे चुप खड़े : इतना शोर मचा रहा था कि आपको अपने मन के विचार भी पड़े। स्थिति एकदम बहुत जटिल और विकट हो गई। किसी- ़ मे नहीं आ रहा था कि क्या करें और कुत्ते को कैसे चुपाए। े देखा कि वह लम्बतगा अत्येंष्टि कराने वाला पादरी साहब को रा कर रहा है, मानो उसने कहा कि 'आप चिंता न करें, सब र छोड़ दें।' फिर वह लोगों के सिरों पर अपने कन्धे चलाता ल के सहारे-सहारे खिसकने लगा। जैसे-जैसे वह खिसकता गया ़ने की आवाज़ तीव्र से तीव्रतर और तीव्रतम होती गई। कमरे की वालों के सहारे खिसककर वह लम्बतगा अंत में तलघर के अंदर । दो ही सेकण्ड के बाद ज़ोर से पीटे जाने की आवाज़ सुनाई दी ो-एक बार ट्याऊं-ट्याऊं करके चुप हो गया। अब बिलकुल शांति ़ पादरी साहब ने प्रार्थना-प्रवचन की कार्रवाई पुनः शुरू कर ो मिनट बाद अत्येंष्टि करानेवाला तलघर में से बाहर आया ी तरह दीवालों के सहारे खिसकता हुआ पादरी साहब की ओर इसपर उसने पूरी तीन दीवालें पार कीं और अपने मुंह पर और लोगों के सिर के ऊपर से गर्दन लम्बा कर दबी और घुटी में पादरी साहब से कहा, "वह एक चूहा था गया था!" : वह फिर दीवाल के सहारे खिसकता हुआ अपनी जगह जा ़ोगों की जिज्ञासा भी शांत हो गई, क्योंकि उत्कण्ठा तो सभी- ो छोटी बातों का दाम तो कुछ लगता नहीं, परन्तु ऐसी छोटी ो आदमी का मूल्य और महत्त्व बढ़ा देती हैं और उसकी पूछ- ती है। मेरे ख़याल में तो उन अन्त्येष्टि करानेवाले से अधिक

रख दिया और फिर सारे घर एवं पड़ोसियों के यहां से मांगकर लाई हुई तमाम कुर्सियों को कतारों में जमा दिया, यहां तक कि हाल और बैठका और खानेवाला कमरा सभी कुर्सियों से भर गए। ताबूत का ढक्कन अभी भी पहले की ही तरह खुला हुआ था, लेकिन चारों ओर खड़े इतने आदमियों के कारण उसके अन्दर झांककर देखने की मेरी हिम्मत न हुई।

फिर एक-एक कर लोग आने लगे। तीनों लड़कियां और स्यापा करने वाले ताबूत के सिरहाने अगली कतार में बैठ गए; उनके सिर झुके हुए थे और वे आंखों से रुमाल लगाए दबे स्वर में सिसक रहे थे। फिर आधे घण्टे तक लोग कतार बनाकर ताबूत के पास आते और मृतक के अंतिम दर्शन करते रहे। प्रत्येक वहां एक मिनट खड़ा रहता और कोई-कोई तो आंसू भी गिरा देता था। सारा वातावरण बहुत ही शान्त, उदास और शोक-मग्न हो गया था। केवल फर्श पर लोगों के पावों के घसीटे जाने और नाक सिनकने की आवाज़ें सुनाई देती थीं—लोगों की आदत ही है कि वे अन्त्येष्टि के समय और गिरजाघर में बार-बार और ज़ोर-ज़ोर से नाक सिनकते हैं।

जब सारी जगह खचाखच भर गई तो अन्त्येष्टि करानेवाला वहां की व्यवस्था और आखरी तैयारियों में लग गया। काले दस्ताने पहने हुए दबे पावों फुर्ती से चलता वह लोगों को करीने से बिठाने और आराम पहुंचाने की पूरी कोशिश कर रहा था। वह बोलता नहीं था, केवल इशारों से लोगों को बढ़ते रहने की ताकीद कर देता, देर से आने वालों को अन्दर ले जाता और बिना आवाज़ किए गलियारों के दरवाज़े खोलता और फिर बन्द कर देता था। अपना काम पूरा करके वह दीवाल के पास जा खड़ा होता। ऐसा विनम्र, चुप्पा और फुर्तीला आदमी मैं पहली बार ही देख रहा था। हंसना और मुस्कराना तो जैसे वह जानता ही नहीं था—चेहरा उसका एकदम निर्विकार था, लकड़ी के कुन्दे की तरह।

वे कहीं से एक नई मेलोडियन बाजा मांग लाये थे। जब सारी तैयारियां हो गईं तो एक युवती उसे लेकर बैठ गई और बजाने लगी। वह बाजा टिटियाता, सिसियाता और खड़खड़ाता हुआ बज उठा। अब लोग उसके बेसुरे स्वर में राग मिलाकर गाने लगे। सुनकर मेरा तो सिर चकराने लगा। मुझे इस बात से बड़ा संतोष हुआ कि पीटर सुन नहीं सकता था,

लोकप्रिय आदमी उस सारे कस्बे में दूसरा शायद ही कोई होगा।

वैसे तो पादरी साहब का अन्त्येष्टि-प्रवचन काफी अच्छा था, लेकिन बहुत लम्बा होने के कारण थकाने वाला हो गया था। और राजा ऐसे समय अपनी वक्तृत्व-कला का प्रदर्शन करने से क्यों चूकता। उसने भी थोड़ी देर बकवास की। इस तरह अंतिम सस्कार पूरे हुए और अन्त्येष्टि करानेवाले ने ताबूत का ढकना बंद करने के लिए अपना पेचकस संभाला। कहीं थैली का पता न लग जाए, इस विचार से मुझे पसीना आने लगा और मैं टक लगाए उस अंत्येष्टि करानेवाले की हर हलचल को देखता रहा। लेकिन उसने तो ताबूत के अंदर उड़ती हुई निगाह भी नहीं डाली; बहुत आहिस्ते से ढक्कन खिसकाकर बन्द किया और फुर्ती से सारे पेंच कस दिए। मैं देखता ही रह गया! अब यह जानने का कोई उपाय मेरे पास नहीं था कि डालरों की थैली ताबूत मे ही रखी है या किसीने उसे चम्पत कर दिया! समझ में नहीं आ रहा था कि थैली की बात मेरी जेन को लिखना ठीक भी रहेगा या नहीं। मान लो, मेरे लिखने पर वह कब्र खुदवा ले और कुछ न निकले तो मेरे बारे में क्या सोचेगी? तब तो मैं पकड़कर जरूर जेल भेज दिया जाऊंगा। अब तो चुप ही रहना अच्छा; सारी बात को पी जाओ, किसीको कुछ भी लिखने की जरूरत नहीं। करने चला था सीधा और हो गया उलटा; बात तो कुछ बनी नहीं, मामला और उलझ गया। बड़ी गलती कर बैठा; न हाथ डालता और न बात बिगड़ती। अब कुशल इसीमें है कि चुप मारकर बैठा रहूँ।

उन्होंने उसे ले जाकर दफना दिया और हम घर लौट आए। और मैं फिर लोगों के चेहरे गौर से देखने लगा। यह जानने की मन में बड़ी उत्कंठा थी कि किसीको पता चला या नहीं। लेकिन किसीके चेहरे से कुछ भी मालूम नहीं हो रहा था, शायद किसीको पता ही नहीं चला था।

शाम को राजा पड़ोसियों से मिलने के लिए गया और मीठी-मीठी बातें करके सबका मन मोह आया। सबसे उसने यही कहा कि वहाँ इंग्लैंड में मेरे भक्तगण कष्ट अनुभव कर रहे होंगे इसलिए यहां जमीन-जायदाद का काम जल्दी से निपटाकर मुझे फौरन लौट जाना होगा। "आप लोगों के साथ रहने के लिए जी तो बहुत करता है, लेकिन क्या करूँ, मजबूरी है।

भागना ही पड़ेगा।" लोगों ने भी कहा कि इतनी जल्दी तो हम भी
देना नहीं चाहते, पर रुकने के लिए भी कैसे कहें। भगवान के
बाधक बनकर कौन पाप चढ़ाए ? उसने सबसे यह भी कहा कि यह
विलियम तीनों लड़कियों को अपने साथ इंग्लैण्ड ले जाएगा, अब यह
भी किसके भरोसे ! लोगों ने सुना तो खुश हो गए और बोले कि
लड़कियां ठिकाने लग गईं, अब कम से कम अपने रिश्तेदारों के सा
रहेंगी। और लड़कियों की खुशी का क्या पूछना ! इंग्लैण्ड जाने के
में सगे चाचा के मरने का गम ही भूल गईं। उन्होंने फौरन मजूरी दे
जल्दी से जल्दी जमीन-जायदाद बेचकर छुट्टी करो और फौरन यहां
चलो; खुद वे तो जब कहो तैयार हो जाएंगी। उन बेचारियों को क
था कि ये दुष्ट उन्हें तबाह करने पर तुले हुए हैं ! मैं उनकी खुशी
उमगों को देखता और जहर के घूंट भरकर रह जाता था। सही बा
बताने का न तो कोई निरापद ढंग दिखाई देता था और न हिम्मत
थी।

उधर राजा ने एक क्षण की भी देर नहीं की। सारी बस्ती में
करवा दी कि अन्त्येष्टि के दो दिन बाद मकान, जमीन, जायदाद और
गियों का जाहिर नीलाम किया जाएगा, लेकिन कोई चाहे तो उससे
भी आपस में सौदा हो सकता है।

अन्त्येष्टि के दूसरे ही दिन दुपहर होते-होते हबशियों को खरीद
करनेवाले सौदागर आ पहुंचे और लड़कियों की उमंगों को ऐसा
लगा कि उनकी सारी दुनिया रुलाई में बदल गई। राजा ने हबशियों
से ठीक ही सौदा किया, मतलब यह कि ठीक दिन की कीमत हु
उसने हबशियों को सौदागरों के हाथ बेच दिया। दोनों लड़कों को
के ऊपर की ओर मेम्फिस और उनकी मां को नीचे की ओर ओर्
के लिए लेकर रवाना हो हो गए। उन लोगों के बिछुड़ने और वि
वह दृश्य मैं कभी भूल नहीं सकूंगा। मम्मा का जैसे कलेजा फ
दुख के कारण उन लड़कियों और हबशियों की हालत ही बद
कर एक दूसरे के गले लगकर जार-जार रो रहे थे। मुझे लग कि

रही थी कि हुजूर, यह तो सपने में भी नहीं सोचा था कि आगे ही ... बाद बच्चों ने को दुःखदायी पड़ेगा और अब तो उन्हें खरीदकर दूर शहर ले जाएंगे। लड़कियों के गले लिपटकर रोती हुई उन अभागियों की याद फिर आज इतने दिनों के बाद भी मेरी आंखों में नाच रही है। अगर मुझे यह मालूम न होता कि बिक्री गैर-कानूनी है और तीन हफ्ते-दस दिन में घर और लौटेंगे तो शायद मैं चुप न रह पाता और उन बदमाशों का भण्डा जरूर फोड़ देता।

इस सौदे ने सारे शहर में हलचल मचा दी और कइयों ने यह आकर उनका कड़ा विरोध किया और साफ शब्दों में कहा कि मां और बच्चों को इस तरह जुदा करना बहुत बुरी बात है। इससे उन दोनों की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा, लेकिन राजा तो एक ही बेशर्म था; वह लोगों को तुर्की-ब-तुर्की जवाब देता रहा। ड्यूक कुछ बोल नहीं सकता था, लेकिन खुश वह भी नहीं था और मैं जानता हूं कि इस सौदे से उसे भी कम दुःख नहीं हुआ था। उस बेचारे ने इशारों से अपनी भावनाओं को जाहिर भी किया, मगर राजा ने कोई ध्यान नहीं दिया।

दूसरे दिन नीलाम था। सवेरे दिन चढ़े राजा और ड्यूक मेरी अटारी में आए और झिंझोड़कर मुझे सोते-से जगा दिया। उनकी टेढ़ी निगाहें देखकर ही मैं समझ गया कि मामला गम्भीर है।

राजा ने पूछा, "परसों रात तुम मेरे कमरे में गए थे?"

"नहीं महाराजाधिराज!" जब हमीं-हम होते तो मैं उसे इसी तरह सम्बोधित करता था।

"तो क्या कल अथवा परसों रात गए थे?"

"नहीं महाराजाधिराज!"

"सच कह रहे हो? झूठ बोलो तो तुम जानो!"

"ईमान की कसम, महाराजाधिराज, बिलकुल सच-सच कह रहा हूं। जिस दिन मिस मेरी जेन ने आपको और हुजूर ड्यूक साहब को कमरे दिखाए, मैं तो उस दिन से उनके पास भी नहीं फटका।"

ड्यूक ने पूछा, "तुमने किसी को अन्दर जाते देखा था?"

"नहीं हुजूर, मुझे तो याद नहीं पड़ता

"सोचकर जवाब दो।"

मैंने सोचा तो एक बात सूझ गई, बोला, "जी हां, याद आ गया ; हब-शियों को कई बार आते जाते देखा था।"

सुनते ही दोनों इस तरह उछल पड़े मानो ततैया ने काटा हो, पहले तो लगा, जैसे उन्हें इसकी उम्मीद ही न हो; फिर लगा, जैसे इसीकी उम्मीद हो। और तब ड्यूक ने कहा, "क्या सभीको ?"

"जी नहीं; हर बार तो सभी को एक साथ आते-जाते नहीं देखा, लेकिन ठहरिए, याद आ गया, हां, एक बार जरूर देखा था।"

"कब ?

"अन्त्येष्टिवाले दिन, सवेरे के समय। मुझे उठने में देर हो गई थी। नसेनी उतर ही रहा था कि वे दिखाई दे गए।"

"अच्छा, फिर क्या हुआ ? वे क्या कर रहे थे और किधर गए ?"

"जी, कर तो कुछ भी नहीं रहे थे। जहां तक मुझे याद पड़ता है उस समय उनके पास करने को कुछ था भी नहीं। खाली पंजों के बल चले जा रहे थे। मैं समझ गया कि महाराजाधिराज के कमरे की सफाई करने या ऐसे ही किसी काम से आए होंगे। उन्होंने सोचा होगा कि आप जाग गए होंगे, लेकिन आप शायद जागे नहीं थे, इसलिए बिना आवाज किए वहां से चुपचाप खिसके जा रहे थे। डरे होंगे कि खटका सुनकर कहीं आप जाग न जाएं और सवेरे-सवेरे उनके सिर पर कोई मुसीबत बरपा न हो जाए।"

"बापरे, यह तो गजब ही हो गया !" राजा ने कहा और दोनों की शक्लें देखने के काबिल हो गईं—बिलकुल पिटे हुए और बुद्धू लग रहे थे। थोड़ी देर तक वे न जाने क्या सोचते रहे और अपने सिर खुजलाते हुए खड़े रहे। फिर ड्यूक ने बड़े ही जले-भुने स्वर में कहा, "बस मुझ की, उन कम्बख्त हबशियों के हाथ की सफाई ने तो सभीको मात कर दिया। यहां से जाते वक्त किस बुरी तरह छाती पीट-पीट कर रो रहे थे, गोया मर ही जाएंगे। मुझ तक को दया आ गई और हुजूरवाला को भी अफसोस होने लगा था। नाटक ही उन्होंने ऐसा किया कि हर देखनेवाले को दया आ जाए। आप मानें या न मानें मैं तो यही कहूंगा कि एक्टिंग के फन में उन लोगों को कमाल हासिल है। जो यह कहते हैं कि हबशी लोग एक्टिंग में माहिर नहीं

होने महज बकवास करते हैं। अगर मेरे पास थोड़ा सरन
थिएटर हो तो मैं सिर्फ उन तीनों के सहारे धूम मचा दूं और
गर्ग। अफसोस, हमने ऐसे फनकारों को कौड़ी के मोल बेच दि
कौड़ियां भी सिपाही हुण्डी की शकल में, दर्शनी हुण्डी भी नहीं।
सख्त अफसोस ! खैर, मगर हुजूरेवाला, वे कौड़ियां, मेरा मतल
हुण्डी कहां है ?"

"बैंक में वसूली के लिए दी है। और कहां होगी !"

"तो ठीक है; चलिए, भागते भूत की लंगोटी ही भली।"

मैंने कुछ डरते-डरते पूछा, "क्या कोई बात हो गई है ?"

यह सुनना था कि राजा कटकने कुत्ते की तरह गुर्रा उठा,
"देख बे, तुझे इन मामलों मे माथा मारने की कोई जरूरत नहीं।
जब तक यहां रहना है आंख-मुंह बन्द करके पड़ा रह और अपने
का काम किए जा। सुन लिया कान खोलकर ?" फिर उसने ड्यूक से
कहा, "इस मामले में तो हमें भी चुप मारकर ही रहना होगा; किसी से
कुछ कहने की जरूरत नहीं, सबसे भली चुप !"

फिर वे नसेनी उतरने लगे और ड्यूक ने उतरते-उतरते
"चट सौदा, पट पैसा, मुनाफा चाहे कम ही हो; धन्धा तो बा
नहीं।"

सुनते ही राजा गुर्राया, "बेचा-बेची की इतनी जल्दी अपने
ही लिए तो कर रहा हूं। अगर लाभ कम हो रहा है या नहीं भी हो र
है, तो उसके लिए अकेला मैं ही क्यों, तुम भी जिम्मेदार हो और उतने ही।

"दिखता है कि कोयले की दस दलाली में हमारे हाथ तो आखिरका
काले ही होकर रहेंगे। अगर हुजूर ने पहले ही मेरे मशविरे पर गौर फर-
माया होता तो आज यह नौबत क्यों आती ? मेरी सलाह मान ली जाती तो
वे लौंडियां तब भी इसी मकान में रहतीं और हम डालरों की थैली के साथ
आराम से रफूचक्कर हो जाते, आज इस मुसीबत से दो-चार होने के लिए
यहां बैठे न रहते।"

बात राजा को लग गई और वह आग बबूला हो उठा। ड्यूक का तो
डर कर- ...
। गया।

... हुआ। उस दिन मेरे कमरे मे
ए और दबे पाव बाहर निकले, पर तुमसे कहते न बना। दीदे फाड़
। देखता रहा ! गधा कही का ! नही गधे से भी बदतर ! इतने से
भी समझ आता कि जरूर दाल मे कुछ काला है। इस गोबर
कुछ भी समझ मे नही आया !" और फिर वह मुड़कर लगा
ने ही कोसने ! "सारा दोष मेरा ही है। क्यो उस दिन जल्दी उठ
यों निन्य नियमानुसार सवेरे की झपकी म लेता रहा ? कान पक-
अब आगे ऐसी भूल कदापि नही करूगा।" इस तरह बकते-झकते
हां से चले गए। और मैं मारे खुशी के फूला नही समा रहा था।
हबशियों के सिर डालकर उन दुष्टो को खूब छकाया था और
ह कि इससे हबशियों का कोई नुकसान भी नही हुआ।

अध्याय २८

वत हो गया था, इसलिए मैं अटारी से उतरा और नीचे जाने
ढ़ियो की तरफ चला। जब लड़कियों के कमरे के सामने मे
उनका दरवाजा खुला हुआ था और अन्दर मेरी जेन अपने
को खोले बैठी थी और उसमें कपड़े तहाकर रखती जा रही
ह गया कि वह इगलैंड जाने की तैयारियां कर रही है। लेकिन
या हुआ कि तहाया हुआ गाउन उसकी गोद में रखा रह गया
ों हाथो मे मुह छिपाकर रोने लगी। देखकर मेरा जी जाने
; विलोकर भी हो आया।
चला गया और बोला, "मिस मेरी जेन, आपके लोगों का
ं जाता और न मैं ही देख सकता हू। बताइए, आप किस
होकर रो रही है ?"
या तो पता चला कि हबशियों को याद करके रो रही है।
ोचा था। उसने कहा, "इग्लैंड-यात्रा की सारी खुशी किर-

किरी हो गई। जब इस बात का ख्याल आता है कि वे मां-बच्चे आपस में कभी मिल नहीं सकेंगे तो कलेजा मसोस उठता है और रुलाई फूट निकलती है।" इतना कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी और अपने दोनों हाथों को फैलाकर बोली, "हाय राम, क्या करूं, अब वे कभी एक-दूसरे से मिल नहीं सकेंगे ! मैं कैसे धीर धरूं ? कैसे अपने मन को समझाऊं ?"

"लेकिन वे ज़रूर मिलेंगे—और दो-एक हफ्तों के अंदर ही—मैं इस बात को जानता हूं।" मैंने कहा।

और दूसरे ही क्षण मुझे यह ख्याल आया कि यह मैं क्या कह गया। लेकिन बात मुंह से निकल चुकी थी और उसे लौटाया नहीं जा सकता था। कोई बहाना बनाने जा ही रहा था कि उसने मेरे गले में बांहें डाल दीं और कहने लगी, "फिर कहो, एक बार फिर कहो, एक बार फिर तो कहो।"

बात बिना विचारे ही मुंह से निकल गई थी और जो नहीं कहना चाहिए था वह कहकर बुरी तरह फंस गया था। अब निकलने का कोई उपाय सोचना था, इसलिए बोला, "ज़रा मिनट-भर सोच लेने दो तो कहूं।" और वह राजी हो गई। उस क्षण वह बड़ी ही उत्सुक, सुन्दर, प्रसन्न और निश्चिन्त लग रही थी। मैं सोचने लगा कि क्या कहना ठीक होगा, सच या झूठ ? मुझे ज्यादा अनुभव तो नहीं है और निश्चयपूर्वक कह भी नहीं सकता, लेकिन ऐसा लगता है कि मुसीबत में फंसा आदमी सच बोलकर अपने लिए खतरा ही मोल लेगा; कम से कम मेरी तो यही धारणा है। परन्तु जिस स्थिति में मैं था और जो प्रसंग मेरे सामने था उसमें मुझे लग रहा था कि झूठ बोलने की अपेक्षा सच कहना ही अधिक निरापद रहेगा। सच कहकर संकट से बचने की बात मुझे बड़ी विचित्र लगी और मैंने मन ही मन कहा कि इसपर तो बाद में कभी तफसील से सोचना होगा, क्योंकि सच कहकर मैंने तो किसी को संकट से बचते नहीं देखा था। अन्त में मैं इस निर्णय पर पहुंचा कि इस बार तो सच बोलकर ही देखा जाए कि क्या होता है। और मैंने सच कहने का फैसला कर लिया। जैसे मेरा यह फैसला उतना ही खतरनाक था जितना बारूद के ढेर पर बैठकर यह देखने के लिए पलीते में आग लगाना कि अब क्या होता है।

मैंने कहा, "लिज़ मेरी जेन, गांव के बाहर आसपास कोई ऐसी

जगह भी है जहां जाकर आप तीन या चार दिन रह सकें ?"

"हां, है तो; मिस्टर लोप्रोप के यहां रह सकती हू, मगर क्यों ?"

" 'क्यों' तो अभी मत पूछिए। सिर्फ यह बतलाइए कि अगर मैं कहूं कि दो हफ्तों में आपके हुबशी इसी मकान में आ मिलेंगे और क्यों आ मिलेंगे इसका कारण भी बता दू तो क्या आप मिस्टर लोप्रोप के यहां चार दिन के लिए चली जाएंगी ?"

"तुम चार दिन के लिए कहते हो," वह बोली, "मैं साल-भर के लिए चली जाऊंगी।"

मैंने कहा, "अच्छी बात है ! मुझे सिर्फ आपका इतना वचन चाहिए और कुछ नहीं। दूसरों की तरह मैं आपसे यह नहीं कहूंगा कि बाइबल उठाकर कहो तो मानू।" वह मुस्करा दी तो लगा, जैसे किसी ने चेहरे पर गुलाल मल दी हो। मैं बोला, "अगर आपको एतराज न हो तो किवाड़ें बन्द करके सांकल लगा दू ?"

दरवाज़ा बन्द करके मैं उसके पास आ बैठा और बोला, "रोना-कलपना मत। चुप बैठी रहना और मर्दों की तरह हिम्मत से काम लेना। बात बड़ी भयकर है, मगर सच भी है और मुझे कहनी होगी और आपको दिल कड़ा करके सुननी होगी ; इसके सिवा कोई चारा नहीं है ! अब दिल थामकर सुनिए कि आपके ये चाचा लोग सच्चे चाचा नहीं हैं, परले सिरे के धूर्त, धोखेबाज और बदमाश हैं। यह कड़ी-से-कड़ी बात आपने सुन ली और सह भी ली तो आगे की बात ज़रूर सह लेंगी।"

सुनकर वह सकते में आ गई; आघात भी ज़रूर लगा, मगर सह गई। मेरी मंज़िल का सबसे मुश्किल हिस्सा पार हो गया था इसलिए मैं निश्चित होकर आगे बढ़ा। वह आंखें फाड़े सुनती रही। मैंने उस देहाती बौड़म के मिलने से लेकर जब वह अपने घर के प्रवेश द्वार पर राजा के गले लिपटी और उसने ताबड़तोड़ सोलह-सत्रह बार उसे चूमा तब तक की कहानी पूरे विस्तार के साथ कह सुनाई।

सुनकर उसकी आंखों से अंगारे बरसने लगे, चेहरा रक्त वर्ण हो गया और वह अपनी जगह से उछलकर खड़ी होती हुई बोली, "नीच ! पापी कहीं का ! फौरन मेरे साथ चलो ! दोनों के चेहरों पर कालिख पोतकर

गरे बन्दरगाह आए, वरना वे हम लोगों में झगड़ा नहीं किया है तो अच्छा नहीं ! ऐसे दुष्टों को यही सजा है।"

मैंने कहा, "सजा तो ठीक है, लेकिन आप उन्हें मिस्टर लोगों के पास भेजना चाहती हैं या उन्हें सजा देना ?"

"ओह !" वह एकदम शान्त हो गई और बोली, "मैं भी कितनी मूर्ख हूं ! इतनी जल्दी आपा खो बैठी और उत्तेजित हो गई। मेरा, तुम मेरी इस बात पर ध्यान मत देना, नहीं दोगे न ?" और उसने अपना रेशम-सा मुलायम हाथ मेरे हाथ पर इस तरह रख दिया कि मैं उसके इशारे पर मरने को भी तैयार हो जाता। फिर वह बोली, "मुझे इस तरह उत्तेजित नहीं होना चाहिए था। खैर, अब न हूंगी। तुम जो कहना चाहते थे कहो और मैं वादा करती हूं कि जैसा कहोगे वैसा ही करूंगी। बताओ, मुझे क्या करना चाहिए ?"

"देखिए", मैंने कहा, "ये दोनों आदमी परले सिरे के धूर्त और बदमाश हैं। और मैं इनके चक्कर में फंस गया हूं। कारण तो नहीं बताऊंगा, पर अभी कुछ समय तक मुझे इनके साथ इसी तरह यात्रा करनी होगी, यद्यपि मैं नहीं चाहता। मगर प्रश्न मेरे चाहने या न चाहने का नहीं है; यों समझ लीजिए कि कुछ ऐसी ही मजबूरी है। यदि आपने गांववालों पर इनकी असलियत जाहिर कर दी तो लोग मुझे इनके चंगुल से जरूर छुड़ा लेंगे, जो मेरे फायदे की ही बात होगी। मगर इससे एक और आदमी का, जिसे आप नहीं जानतीं, बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा। और उस गरीब को बचाना बहुत जरूरी है; उसे नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए। मेरी इस बात से तो आप भी सहमत होंगी। हैं न ? तो नतीजा यह निकला कि हम इनकी असलियत किसी पर जाहिर नहीं करेंगे।"

यह कहते-कहते मुझे एक ऐसा बढ़िया उपाय सूझ गया कि जिससे मैं आनन-फानन इन बदमाशों से अपना और जिम का पीछा छुड़ा सकता था; उन दोनों को यहीं जेल हो जाती और हम दोनों मजे से आगे बढ़ जाते। लेकिन दिन में एक हबशी के बेड़ा खेते जाना भी कम खतरनाक नहीं था; जिम के बारे में लोगों के सवालों का क्या जवाब देता ! इसलिए योजना को रात होने तक स्थगित कर दिया और मेरी से

कहा, "सुनिए, मिस मेरी जेन, मैं आपको बताता हूं कि हमें क्या करना चाहिए। आपको मिस्टर लोथ्रोप के वहां ज्यादा दिन रहना भी नहीं होगा। वह जगह यहां से कितनी दूर है ?"

"मुश्किल से चारेक मील—यहां से अन्दर की तरफ देहात में।"

"ठीक है, काम बन जाएगा। आप वहां चली जाइए और आज रात नौ या साढ़े नौ बजे तक वहीं रहिए और फिर उनसे कहिए कि आपको घर पहुंचा दें। कारण बता दीजिएगा कि कोई बहुत जरूरी बात याद आ गई है। अगर आप ग्यारह बजे से पहले लौट आएं तो खिड़की में मोमबत्ती जलाकर रख दीजिए; मैं ग्यारह बजे के बाद तक भी न लौटूं तो समझ लीजिए कि चला गया हूं और सुरक्षित हूं। फिर आप गांववालों को खबर करके इन बदमाशों को पकड़वाकर जेल भिजवा दीजिए।"

"ठीक है; मैं ऐसा ही करूंगी।" उसने कहा।

"लेकिन अगर मैं भाग न सकूं और इन बदमाशों के साथ पकड़ा जाऊं तो आपको मेरा साथ देना होगा और लोगों को यह बताना होगा कि मैंने आपको सारी बात पहले ही बता दी थी। कहिए, मेरा साथ देंगी न ?"

"क्यों न दूंगी ! जरूर दूंगी।" उसने कहा, "मेरे रहते कोई तुम्हारा बाल भी बांका न कर सकेगा।" उसके नथुने फैल गए थे और आंखों से चिनगारियां निकलने लगी थीं।

"मैं चला गया तो यह सिद्ध करने के लिए कि ये बदमाश आपके चाचा नहीं हैं, मैं यहां नहीं रहूंगा, और रहा तब भी साबित नहीं कर सकूंगा। अधिक से अधिक मैं यही कह सकूंगा कि ये अव्वल नम्बर के बदमाश, धूर्त और पाजी हैं, हालांकि इससे कुछ बात बनेगी नहीं, तो बिगड़ेगी भी नहीं। लेकिन दूसरे लोग भी हैं जो इसे ज्यादा अच्छी तरह साबित कर सकते हैं और उनपर कोई अविश्वास भी नहीं करेगा, जबकि मेरी बात पर आसानी से विश्वास नहीं किया जाएगा। वे लोग कहां मिलेंगे यह भी आपको बताए देता हूं। जरा मुझे कागज-पेन्सिल तो दीजिए। लाइए......" और मैंने उसपर 'शहन्शाह की शुतुर चाल, बिक्स-विले' लिखकर उसे देते हुए कहा, "इसे संभालकर रखिए; खो न जाए। जब अदालत को इनके खिलाफ गवाह पुराबों की जरूरत पड़े तो यह कागज पेश कर दीजिए और बिक्स

विले वालों को बुलवाने के लिए कहिए। वहां वालों को सिर्फ इतना ही कहना होगा कि 'शहन्शाह की गुदुर चाल' दिखलाने वाले पकड़े गए हैं और उनके खिलाफ कुछ गवाहों की जरूरत है। फिर तो सारा गांव दौड़ा आएगा और उन लोगों को काबू में रखना मुश्किल हो जाएगा। बेहद गुस्सा और नाराजी है वहां वालों में इन बदमाशों के प्रति।"

अपनी समझ में मैंने सारी बातें बता दी थीं और पूरी व्यवस्था कर दी थी। इसलिए अंत में बोला, "नीलाम को लेकर परेशान होने की जरूरत नहीं। उसे हो जाने दीजिए, रोकिए मत। खरीदार समय कम होने के कारण उन्हें दूसरे दिन तक पैसा नहीं दे पाएंगे और बिना पैसा पाए वे यहां से टलेंगे नहीं। हमारी योजना के अनुसार न तो बिक्री कानूनी रूप ले सकेगी और न उन बदमाशों को पैसा मिल पाएगा। हबशियों की बिक्री के बारे में भी ठीक यही बात है। उनका बेचा जाना भी उतना ही गैर-कानूनी है, इसलिए हफ्ते-दस दिन में वे भी लौट आएंगे। हबशियों का रुपया उन्हें अभी तक मिला नहीं है और अब मिलेगा भी नहीं। अपने जाल में वे खुद ही बुरे फंस गए हैं मिस मेरी।"

"अच्छा, तो अब मैं जल्दी से नाश्ता कर लूं और फिर भाग जाऊं मिस्टर लोथ्रोप के यहां।"

"नहीं, मिस मेरी जेन, ऐसा हर्गिज मत कीजिए।" मैंने कहा, "आप नाश्ते के लिए मत रुकिए, फौरन रवाना हो जाइए।"

"क्यों ?"

"बता सकती हैं कि मैंने आपको वहां जाने के लिए क्यों कहा ?"

"न तो मैंने सोचा और न बता ही सकती हूं; इसलिए तुम्हीं बता दो।"

"बात यह है कि आपका चेहरा आईने की तरह है। मन के सारे भाव आपके चेहरे पर उभर आते हैं। 'मन में कुछ और मुख पर कुछ और' वाले लोगों में आप नहीं। आपका चेहरा तो खुली किताब है कि जो भी चाहे मन के भावों को उसपर छापे के अक्षरों की तरह साफ-साफ पढ़ ले। मौके आने पर बाबा लोग जब आपको मंगल प्रभात का चुम्बन देने आएंगे … चेहरा……"

"बस, बस, रहने दो। ठीक है, मैं नाश्ता किए बिना ही चली जाऊंगी। लेकिन एक बात है—मैं तो खुशी-खुशी चली जाऊंगी, पर मेरी बहनों का क्या होगा ? क्या उन्हें इन दरिन्दों के सहारे छोड़कर चली जाऊं ?"

"हां, छोड़ जाइए। कोई हर्ज नहीं। उनका वे कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। कुछ घण्टों की तो बात ही है, जो होगा सह लेंगी। अगर सब बहिनें चली गई तो उन्हें संदेह हो जाएगा। आपका किसीसे भी मिलना ठीक नहीं—न अपनी बहिनों से न गांव वालों से। अगर किसी पड़ोसी ने आप से चाचा लोगों की क्षेम-कुशल पूछ ली तो आप जब्त न कर सकेंगी और आपका चेहरा उन्हें सब कुछ बता देगा। नहीं, मिस मेरी जेन, आप किसीसे मत मिलिए और तुरत रवाना हो जाइए। यहां मैं सब संभाल लूंगा। मिस सुसान से कह दूंगा कि वह अपनी ओर से आपका प्यार चाचा लोगों को देकर उन्हें बता दें कि आप कुछ घण्टों के लिए दोस्तों से मिलने या मन बहलाने के लिए बाहर चली गई हैं और रात तक या अधिक से अधिक कल सवेरे तक लौट आएंगी।"

"यही कहना ठीक रहेगा कि मैं दोस्तों से मिलने के लिए गई हूं; मगर उन धूर्तों को मेरा प्यार देने की जरूरत नहीं।"

"अच्छी बात है, नहीं दिया जाएगा; आप निश्चिंत होकर जाइए।" उसकी इस छोटी सी बात को मान लेने में कोई हानि नहीं थी। कई बार छोटी-छोटी बातों का भी काफी बड़ा महत्त्व होता है और लोगों को उससे बड़ा सुख और सहारा मिलता है और उनका मन काफी आश्वस्त हो जाता है। मैं जानता था कि इतनी-सी बात मान लेने से मेरी जेन का रास्ता काफी सुगम और मन बहुत निश्चिन्त हो जाएगा। अंत में मैंने कहा, "आपको एक बात और बतलाना रह गई—डालरों की उस थैली के बारे में।"

"वह उनके कब्जे में है। मैंने ही बेवकूफी करके उसे उनके हवाले कर दिया था। अब अपनी बेवकूफी पर पछताती हूं।"

"जी नहीं, अब वह उनके पास नहीं है; और इसलिए आपको पछताने की जरूरत नहीं।"

"फिर कहां चली गई, और किसके पास है ?"

"यह तो मुझे भी मालूम नहीं। मेरे पास थी, क्योंकि मैंने उसे चुरा लिया था। इसलिए चुराया था कि आपको लौटा सकूं। इतना जानता हूं कि कहां छिपाया था, लेकिन अब शायद वहां नहीं है। मुझे इस बात का बहुत दुःख है मिस मेरी जेन, वाकई बहुत दुःख है। जितना हो सकता था, मैंने किया; यों समझ लीजिए कि पकड़ ही गया था, इसलिए जो जगह सामने दिखाई दे गई वहीं उसे छिपाकर भाग खड़ा हुआ—और वह जगह बहुत रद्दी थी, इतनी रद्दी कि किसी चीज को वहां छिपाने की बात सोची भी नहीं जा सकती।"

"अपने-आपको को मत कोसो, बुरा लगता है, खासकर मुझे तो बहुत बुरा लगता है। न तुम्हारे बस की बात थी और न तुमने कोई गलती की। खैर, यह बताओ कि कहां छिपाया था?"

न तो मैं यह चाहता था कि वह अपने कष्टों की बात सोचकर फिर से चिंतित होने लगे और न यही हिम्मत पड़ रही थी कि उसे ताबूत के अंदर शव के पेट पर रखी डालरों की थैली की बात कहूं। इसलिए दो-एक मिनट तो मैं चुपचाप सोचता रहा, फिर बोला, "बोलकर तो मैं आप को बता नहीं सकूंगा मिस मेरी जेन, और इसके लिए आपसे माफी चाहता हूं, मगर आप कहें तो लिखकर दे सकता हूं। मिस्टर लोथोप के यहां जाते हुए आप रास्ते में पढ़ लीजिएगा। यह ठीक रहेगा न?"

"हां, जरूर ठीक रहेगा।"

तब मैंने एक कागज लेकर उसपर लिखा, "मैंने वह थैली ताबूत के अंदर रख दी थी। उस रात जब आप ताबूत के पास बैठी रो रही थीं तो थैली वहीं, ताबूत के अंदर ही थी। मैं उस समय दरवाजे की ओट में खड़ा था और आपको रोते देख बहुत दुखी हो रहा था।"

इस बात को याद करके कि यह बेचारी तो उस रात अकेली बैठी रो रही थी और वे दुष्ट इसीके घर में आराम से पड़े इसे लूटकर तबाह किए दे रहे थे, मेरी आंखों में आंसू भर आए। और जब मैंने अपने लिखे हुए कागज के पुर्जे को तहाकर उसे दिया तो खुद उसकी भी आंखें गीली हो गई थीं।

अपनी स्नेह-भरी मजबूत पकड़ में मेरा हाथ-थामकर वह उसी ओर-

हिलाती हुई बोली, "विदा, मेरे नन्हे दोस्त, अब चलती हूं। जैसा तापा, मैं ठीक वैसा ही करूंगी। अगर बाद मे मिलना न भी हुआ म्हें भूलूंगी नही, हमेशा याद रखूंगी—हमेशा-हमेशा तुम्हारे बारे ी और तुम्हारे लिए प्रार्थना भी करती रहूंगी।" और इतना कह-चली गई।

ी लड़की! मेरे लिए प्रार्थना करेगी! मुझे जाने बिना ही ने जिम्मे इतना बड़ा काम ले लिया था! ठीक से जानने के बाद मी इतना बड़ा काम अपने जिम्मे न लेती। लेकिन शायद ले भी यद ही क्यो, अवश्य ले लेती, क्योंकि उसका स्वभाव ही कुछ ऐसा था। बात मन मे आने के बाद वह मेरे लिए तो क्या, शैतान के ार्थना करने का जिम्मा ले लती और उसे पूरा करके ही रहती। की वह ऐसी ही पक्की थी। आप कुछ भी सोचें और कहें, मेरी में तो वह दूसरी किसी भी लड़की से अधिक पक्के इरादोंवाली मन की बात को पूरा कर दिखानेवाली लड़की थी। जी नही, ी नही उसके मनोबल और आन्तरिक दृढ़ता का यथार्थ वर्णन र जहा तक उसकी सुन्दरता और अच्छाइयो का प्रश्न है, वह ो मे इक्कीस ही ठहरती। उस दिन के बाद से मैंने उसे देखा तक नहीं मगर मैं हजारों बार उसके बारे मे सोचता रहा हू और हर बार मुझे ात याद आती रही है कि वह मेरे लिए प्रार्थना करेगी। और मैं कहता हू कि प्रार्थना से किसीका भला होने की बात में अगर विश्वास होता या उसके लिए प्रार्थना करने से मुझे थोड़ा भी तो विश्वास मानिए कि मैं हजार काम छोड़कर भी उसके र प्रार्थना करता।

ल है कि मेरी रेल पिछवाड़े के रास्ते से चुपचाप खिसक गई किसीने उसे जाते देखा नहीं। थोड़ी देर बाद जब मुख्तार और से मेरी भेंट हुई तो मैंने उनसे पूछा, "नदी के पार के गांव यहां तुम लोग अक्सर आया-जाया करते हो?"

"यो तो कई हैं, लेकिन डोबरों से हमारा सरोकार अधिक उन्ही के यहां ज्यादा आना-जाना रहता है।"

'हाँ, यही बात है," मैंने कहा, "मैं तो भूल गया था। मिस मेरी जेन ने मुझसे कह रखा था कि तुम लोगों को बता दूँ। वहाँ कोई बीमार हो गया है और उन्हें बहुत जल्दी में जाना पड़ा है।"

"कौन बीमार हो गया है ?"

"यह तो मुझे मालूम नहीं। उन्होंने नाम ज़रूर बताया था, लेकिन मैं भूल गया।"

"कहीं हैजा तो नहीं ?"

"अरे हाँ, यही नाम तो उन्होंने बताया था।"

'हे भगवान ! क्या हो गया उन्हें ? अभी पिछले हफ़्ते तक तो भली चंगी थीं ! क्या हालत खराब है ?"

"खराब नहीं, बहुत खराब कहो। मिस मेरी जेन कह रही थीं कि घरवाले बेचारे सारी रात जागते बैठे रहे और उनका कहना है कि अब शायद कुछ ही घण्टों की मेहमान हैं।"

"अरे, ऐसा क्या हुआ है ? बताओ तो, क्या बीमारी है इन्हें ?"

मुझे दूसरी किसी बीमारी का नाम एकदम सूझ न पड़ा इसलिए फौरन कह दिया, "मम्प्स (गले भरना, कनपेड़) !"

"मम्प्स नहीं, तुम्हारा सिर ! मम्प्स वाले के लिए किसीको सारी रात जागते बैठे नहीं रहना पड़ता और न वह कुछ घण्टों का मेहमान होता है।"

"हुंह् ! कह दिया, बैठे नहीं रहना पड़ता ! अरे, तुम क्या जानो, बैठे रहना पड़ता है या नहीं ! ये कोई मामूली मम्प्स नहीं, एकदम नई तरह के मम्प्स हैं। मिस मेरी भी यही कह रही थीं।"

"कई तरह के कौन से ? हम भी तो सुनें।

"इनमें और भी तकलीफें जुड़ी हुई हैं।"

"जैसे ?"

"चेचक, और कूकर खांसी, और लाल चकत्ते, और दिक और पीलिया, और दिमाग का बुखार, और भी न जाने क्या-क्या !"

"बाप रे ! और फिर भी तुम कहते हो कि मम्प्स हैं।"

"हाँ क्यों, मिस मेरी ने भी तो

"समझ में नहीं आता कि इतनी बीमारियाँ होने के बाद भी वे इसे मम्प्स क्यों कहते हैं !"

"महज इसलिए कि ये मम्प्स हैं और बाकी सारी बीमारियाँ भी मम्प्स ही से तो शुरू हुई हैं।"

"यह तो बिलकुल नादानी की बात हुई। मान लो, किसी आदमी के पाँव में ठोकर लग जाए, उसका चोट लगा अँगूठा सड़ जाए और वह मैं गिरकर गरदन तोड़ ले और सिर में चोट लग जाने से मर जाए कोई पूछे कि कैसे मरा तो उस मूर्ख को क्या कहेंगे जो यह कहे कि ठोकर लगी थी। है न नादानी की बात ? ऐसी ही तुम्हारी यह बात बिलकुल न समझ में आने जैसी !"

तुम भी क्या पागलों-जैसी बात कर रही हो ? इसमें भला न समझ आने जैसा क्या है ? अँधेरे में हँगा लेने जाओ और उसका एक दाँता हाथ में आए तो क्या यह कहोगी कि हँगा नहीं मिला ? और अगर उस एक दाँते को खींचो तो क्या अकेला वही खिंचेगा या पूरा हँगा खिंचा चला आएगा ? ठीक यही बात इन मम्प्स के बारे में भी है। ये मम्प्स हँगे की तरह हैं और बाकी तकलीफें हँगे के अलग-अलग दाँतों की तरह। जिस तरह हँगा कहने के बाद उसके दाँतों को गिनाना ज़रूरी नहीं होता उसी तरह मम्प्स कह देने के बाद उसकी दूसरी तकलीफों के नाम बताना ज़रूरी नहीं रह जाता, समझीं ?"

"मुझे बीमारी सचीन लगती है।" कटे ओंठवाली बोली, "जाकर हार्दी बाबा को खबर कर दूँ......"

"हाँ-हाँ," मैंने उसके स्वर की नकल करते हुए कहा, "जाओ, ज़रूर खबर कर दो ! मगर तुम्हारी जगह मैं होता तो हर्गिज़ खबर न करता।"

"क्यों भला ?"

"ज़रा शान्त मन से सोचोगी तो तुम्हें भी कारण साफ़ हुआ मालूम हो जाएगा। बाबा लोग बेचारे तुम्हारी खातिर देहरादून से भागे आए। अब वे तुरत आते चले जाएँ और तुम्हें उनके पीछे-पीछे दर्शन करना पड़े, ऐसा तो वे कर नहीं सकते। यह तो तुम भी जानती हो कि वे तुम्हें अपने साथ लेकर ही लौटेंगे। ठीक है न ? और बाबा हार्दी कौन है, यह भी तुम

जानती हो। वे पादरी हैं। और कोई पादरी झूठ नहीं बोलता और धोखा नहीं देता। अगनबोट के क्लर्क के पूछने पर क्या वे उसे धोखा देंगे, झूठ बोलेंगे? और क्या जहाज के क्लर्क से झूठ कहेंगे? मिस मेरी जेन को इंग्लैण्ड ले जाने की खातिर क्या हार्वी साहब सचाई पर पर्दा डाल देंगे? नहीं, वे ऐसा नहीं कर सकते। वे यही कहेंगे कि वहां मेरा काम हर्ज होता है और लोगों को तकलीफ होती है तो होती रहे; मेरी भतीजी मिस मेरी जेन खतरनाक किस्म के मम्प्स रोगी को देखने गई थी और इसलिए तीन महीने इन्तजार करके यह पता लगाना कि उसे छूत लगी है या नहीं, मेरा कर्तव्य हो जाता है। लेकिन फिर भी अगर तुम मेरे इन विचारों से सहमत नहीं तो खुशी से जाकर यह सकती हो अपने चाचा हार्वी साहब से···"

"मैं ऐसी बेवकूफ नहीं कि उनसे जाकर कह दूं और फिर तीन महीने यहां यह मालूम करने के लिए पड़ी रहूं कि मेरी को मम्प्स की छूत लगी है या नहीं। मैं तो इंग्लैण्ड जाने के लिए मरी जा रही हूं। इतनी बुद्धू नहीं हूं।"

"चाचा से नहीं तो किसी पड़ोसी से ही कह दो।"

"कैसी बात करते हो? क्या वे चाचा को बता न देंगे? मैं किसीसे न कहूंगी; इस मामले में चुप रहना ही अच्छा।"

"हां, अब तुमने सही फैसला किया। मेरी राय में भी इस मामले में चुप रहना ही अच्छा है!"

"लेकिन हमें हार्वी चाचा को यह तो बताही देना चाहिए कि मेरी थोड़े समय के लिए बाहर गई है और जल्दी ही लौट आएगी, नहीं तो वे चिन्ता करेंगे। क्यों?"

"हां, जरूर बता देना चाहिए। मिस मेरी जेन जाते समय कह भी गई है कि दोनों बहनें हार्वी और विलियम चाचा को मेरा प्यार दें और मेरी ओर से चुम्बन करके कह दें कि मैं नदी पार मिस्टर, क्या नाम है उनका, अरे, वही साहब, जिनका जिक्र तुम्हारे पीटर चाचा अकसर किया करते थे, उनसे मिलने गई हूं।"

"तुम्हारा मतलब मिस्टर एप्थोर्प से तो नहीं है?"

मिस्टर एप्थोर्प ही। यहां नामों के ऐसे टेढ़े-बांके नाम हैं कि

हो नहीं रहते। उन्होने यह कहा था कि चाचा को यह बता दिया जाए
वह मिस्टर एप्थ्रोप को नीलाम मे आने और बोली लगाकर घर खरीदने
बात कहने के लिए गई हैं; आखिर वे अपने ही आदमी हैं और किसी
के बदले घर उनके हाथो मे गया तो उनसे पीटर चाचा की आत्मा को
ोप और प्रसन्नता होगी; बहुत करके तो वह उन्हे अपने साथ ही
र लौटेगी; थक न गई तो रात मे ही लौट आएगी, नहीं तो सवेरे तो
र ही। वे कड़ी ताकीद कर गई हैं कि प्रोक्टरो के यहा उनके जाने की
भूलकर भी न कही जाए, सिर्फ यही कहा जाए कि एप्थ्रोपो के यहां
है—उनसे घर खरीदने के लिए कहने जाने की बात जम भी जाएगी।"
"ठीक है, बिलकुल ठीक है।" कहती हुई वे दोनो वहां से अपने चाचा
के पास चली गईं ताकि उन्हे मिस मेरी जेन का प्यार और सन्देश
ें।

अब सब ठीक-ठाक हो गया था। मैं जानता था कि लड़किया सच
किसीसे न कहेगी, क्योंकि उन्हे इंग्लैण्ड जाने की जल्दी पडी थी।
राजा और ड्यूक भी खुश हो जाएगे कि मेरी मकान बेचने की
ा करने गई है, और डाक्टर राबिन्सन उसे बहकाने का मौका नहीं
ता। मैं अपनी इस कारगुज़ारी पर बहुत प्रसन्न था। मैंने सारा-काम
फाई से किया था। इतनी सफाई से तो टाम सायर भी न कर पाता।
ह जितनी टीम-टाम और जितने आडम्बर से करता, मैं न कर पाया,
टीम-टाम की मेरी आदत नहीं थी।

आखिरकार, जैसी कि घोषणा हो चुकी थी, तीसरे पहर के बाद,
क सार्वजनिक चौराहे पर ज़मीन-जायदाद और माल-असबाब का
शुरू हुआ। एक-एक कर चीज़ों पर बोलिया लगती रहीं और नीलाम
आता रहा। यह क्रम बहुत देर तक चलता रहा। राजा और ड्यूक
ही वहां शुरू से आखीर तक डटे हुए थे। राजा तो नीलाम पुकारने-
की ठीक बगल मे जमा था। इस समय वह पूरी तरह पादरी के लिबास
और बीच-बीच मे बाइबिल के किस्सों, धार्मिक उक्तियो और मनो-
चुटकुलो से लोगो का मनोरंजन करता जाता था। ड्यूक अपनी गूंगे-
भूमिका के कारण बोल नहीं सकता था, इसलिए मों-मोंकर लोगों को

सहानुभूति प्राप्त करने में लगा रहा।

एक-एक कर थोड़ों के दाम लगते रहे और धीरे-धीरे वे निकली यहां तक कि कब्रस्तान के कुछ रद्दी सामान को छोड़ और सब नीला गया। लेकिन राजा और ड्यूक इसे भी छोड़ना नहीं चाहते थे; वे कुछ हजम करने पर तुल गए थे। सबसे अन्त में उन्होंने कब्रस्तान वाले बाद को भी नीलाम पर चढ़ा दिया। पराया माल हड़पने वाले ऐसे लाल तो मैंने देखे नहीं थे।

इधर उनके ये हाल थे, उधर घाट पर एक स्टीमबोट आकर रुकी थोड़ी ही देर में एक अच्छी-खासी भीड़ चिल्लाती, शोर मचाती और ठह मचाती गांव के चौराहे की ओर आती दिखाई दी। सारी भीड़ चिल्लाती चली आ रही थी, "अब होशियार हो जाओ ! तुम्हारे मुकाबले पीटर विल्क्स के दो वारिस और खड़े हो गए हैं। अब पता चलेगा कि कौन असली और कौन नकली है—मुफ्त का तमाशा देखने को मिलेगा !"

अध्याय २९

वह भीड़ अपने साथ एक सुन्दर-से वृद्ध सज्जन और एक दिखनौटे सभ्य जवान को लिए चली आ रही थी। युवक का दाहिना हाथ गलपट्टी में लटका हुआ था। लोग बहुत जोर से चिल्लाते और ठहाके लगाते जा रहे थे। मुझे हसने और खुशी होने का तो कोई कारण दिखाई नहीं दिया। राजा और ड्यूक के लिए भी खुशी की कोई बात नहीं थी। मेरा तो खयाल था कि वे दोनों मारे डर के पीले पड़ जाएंगे। लेकिन नहीं, डर तो दूर उनके तेवर भी मैले नहीं हुए। ड्यूक पहले की ही तरह खुशी से नाचता हुआ गों-गों करता रहा। उसने किसी बहाने से भी पता नहीं चलने दिया कि उन लोगों की धोखाधड़ी की बात फूट गई है, या फूटने जा रही है; वह उसी प्रकार छाछ से लबालब भरे बरतन की तरह छलकता रहा। और राजा

दास और दुःख-भरी निगाहों से देख

रहा था मानो इस विचार से कि दुनिया में कितना छल-कपट और झूठ-धोखा है, उसे मर्मान्तक पीड़ा हो रही हो। उस समय अपने सच होने के अभिनय को उसने इतनी सफलता से निबाहा कि तारीफ करने को जी चाहता है। गांव के बहुत-से प्रमुख लोग इस बीच राजा के पास आ खड़े हुए थे, मानो कहना चाह रहे थे कि हम तुम्हारे साथ हैं, तुम निश्चिन्त रहो। यह सब देखकर वह नया आनेवाला बूढ़ा बेचारा खासी उलझन में पड़ गया। थोड़ी ही देर बाद उसने बोलना शुरू किया और उसके बात करने का ढंग और लहजा बिलकुल अंग्रेजों जैसा था। वह हमारे राजा की तरह अंग्रेजी लहजे की नकल नहीं कर रहा था, शुद्ध अंग्रेजी लहजे में बोल रहा था, हालांकि नकल के लिहाज से देखा जाए तो राजा का ढंग भी कोई बुरा नहीं था। मैं उस बूढ़े की बात उसकी अपनी अंग्रेजी में तो लिख नहीं सकूंगा, पर भीड़ को सम्बोधित कर उसने जो कुछ कहा वह इस प्रकार था—

"यह सब देखकर मैं तो हक्का-बक्का हो रह गया। यह तो सपने में भी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा। मैं आपसे सच-सच कहता हूं कि स्थिति का सामना करने और सच बात को साबित करने की मेरी सामर्थ्य भी नहीं रह गई है। मैं और मेरा भाई मुसीबत में पड़ गए हैं—उसका हाथ टूट गया और हमारा सामान पिछली रात गलती से दूसरे कस्बे में उतार दिया गया। मैं पीटर विल्क्स का भाई हार्वी हूं और यह उसका छोटा भाई विलियम है; यह गूंगा भी है बहरा भी। हाथ टूट जाने से यह अपनी बात इशारों से भी नहीं समझा सकता, क्योंकि उसमें दोनों हाथों की जरूरत होती है। अभी तो सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि मैं हार्वी हूं और यह विलियम है—और दो-एक दिन में जब हमारा सामान आ जाएगा तो मैं इस बात को साबित भी कर दिखाऊंगा। तब तक के लिए न मैं कुछ कह सकता हूं, न कहूंगा। अभी तो होटल जा रहा हूं और वहीं इन्तजार करूंगा।"

इतना कहकर वह और उसके साथ वाला गूंगा वहां से चले गए और राजा ने जोर का ठहाका लगाकर उसकी खिल्ली उड़ाते हुए कहा, "हाथ टूट गया? बेशक टूटना ही चाहिए! एक धोखेबाज, जिसे इशारे करने पड़ें परन्तु जिसने सीखा ही न हो उसका हाथ न टूटेगा तो क्या होगा? और सामान खोने की बात भी एक ही रही। वर्तमान परिस्थिति में इस बहाने

को भी मौलिक ही कहना होगा।"

यह कहकर राजा एक बार फिर ठठाकर हंस पड़ा और दूसरे लोगों ने भी उसके साथ ठहाका लगाया। सारी भीड़ में सिर्फ तीन-चार या इससे अधिक आधा दर्जन आदमी ऐसे थे जो हंस नहीं रहे थे। उनमें एक तो वही डाक्टर था और दूसरा तेज निगाहों वाला कोई आदमी था, जो एक पुराने ढंग का झोला लिये हुए था और सीधा अगनबोट से उतरकर चला आ रहा था। वह दबी जबान मे डाक्टर से बातें कर रहा था। और बीच-बीच में राजा की ओर देखता भी जाता था। बातें करते हुए दोनों अपने सिर हिलाते जा रहे थे। यह आदमी और कोई नहीं, लेवीबेल का वकील था, जो अपने किसी काम से लुईविले गया हुआ था और अब लौट आया था। न हंसने वालो में एक ऊंचा-पूरा और मोटा-तगड़ा आदमी भी था। उसने उस नये आनेवाले बूढ़े की पूरी बात सुनी थी और अब राजा की बात भी सुनी। जब राजा अपनी बात पूरी कर चुका तो उस पहलवान पट्ठे ने कहा, "अगर तुम अपने को हार्वी विल्कस कहते हो जरा यह बताओ कि इस गांव मे कब आए?"

"पीटर के दफनाए जाने के एक दिन पहले।" राजा ने बताया।

"मगर कब, किस समय?"

"शाम को—सूर्यास्त के कोई दो-एक घंटे पहले।"

"किसमे आए?"

"सुसान पावेल नाम के अगनबोट मे सिनसिनाटी से सवार होकर आए।"

"तो सबेरे-सबेरे डोंगी से पिट पर कैसे पहुंच गए थे?"

"मैं तो सबेरे पिट पर नहीं था।"

"झूठ बोलते हो!"

बहुत-से लोग, लपककर उसके पास पहुंच गए और मना करने लगे कि एक तो ये वृद्ध हैं और फिर पादरी; तुम्हें इनसे ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

वह बोला, "कहां का पादरी और कैसा बूढ़ा! झूठा, लबाड़ और [illegible] बदमाश। उस दिन सबेरे यह पिट पर था। मैं वहीं रहता

हूं . उस समय यह वहां पर था और मैं भी वहीं था। मैंने इसे वहां आंखों से देखा है। यह वहां एक डोंगी से आया था और इसके साथ गांव का टिम कालिन्स और एक लड़का भी था।"

तभी डाक्टर ने कहा, "क्यों हाइन्स, अगर उस लड़के को दे पहचान लोगे ?"

"जरूर पहचान लूंगा बशर्ते कि वह दिखाई दे। अरे हां, वह है वहां ! वही था, मैंने खूब पहचान लिया।" यह बात उसने मे अंगुली दिखलाते हुए कही।

इसपर डाक्टर ने कहा, "पड़ोसियो, मुझे नहीं मालूम कि न वाले दोनों आदमी असली हैं या झूठे और धोखेबाज; मगर इन ठग और बदमाश होने में मुझे जरा भी सन्देह नहीं। अब हमारा हो जाता है कि जब तक मामले की छानबीन होकर झूठ-सच का नहीं हो जाता, हम इन्हें यहां से जाने न दें। हाइन्स, तुम आओ; औ के आप सब लोग भी आइए। हम इन दोनों को होटल ले चलें औ जो नये आए हुए दोनों आदमी हैं उनके सामने खड़ा कर दें; फिर खयाल है कि दोनों के बारे में असलियत आप ही मालूम हो जाएगी

कई लोगों को यह बात बहुत अच्छी लगी, क्योंकि इस तरह तमाशा उनके हाथ लगा था, मगर हो सकता है कि राजा के दो अच्छी न भी लगी हो। खैर, हम सब होटल की ओर चल पड़े। उ सूरज डूब रहा था और सांझ होने ही वाली थी। डाक्टर मेरा हा हुए था। यह सच है कि उसने मेरे साथ किसी तरह की सख्ती न मगर मेरा हाथ भी नहीं छोड़ा, अन्त तक पकड़े ही रहा।

होटल पहुंचकर हम वहां बड़े कमरे में जमा हो गए। उजाले मोमबत्तियां जला दी गईं; और उन दोनों आदमियों को बुला लिय

सब से पहले डाक्टर ने कहा, "मैं इन दोनों के साथ किसी सख्ती नहीं करना चाहता, यद्यपि मेरी राय में ये धूर्त और धोखे हैं। हमें यह भी नहीं मालूम कि इस धोखाधड़ी में इनका कोई भी है या नहीं। लेकिन यह साफ है कि अगर कोई सहयोगी है डालर की थैली लेकर चम्पत हो जाएगा। ऐसा होना असम्भव

इसलिए मेरा प्रस्ताव है कि सबसे पहले तो ये डालरों की थैली लाकर दे दें और झूठ-सच का फैसला हो जाने तक उसे हमारे पास रहने दें। अगर ये धोखेबाज नहीं और सच्चे हैं तो इन्हें मेरे इस प्रस्ताव पर आपत्ति न होगी। क्यों पंचो, ठीक है न?"

सब लोगों ने डाक्टर का समर्थन किया। मैंने सोचा कि अब राजा और ड्यूक मुसीबत में फंसे, जवाब देना मुश्किल हो जाएगा। लेकिन राजा था एक ही धूर्त; विनम्र स्वर में बोला, "सज्जनो, काश वह थैली हमारे पास होती! मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मामले के न्यायपूर्ण निपटारे में मैं अपनी ओर से कोई बाधा नहीं डालना चाहता—इस पेचीदा समस्या का सही हल होना ही चाहिए। लेकिन दुःख की बात है कि थैली हमारे पास नहीं है। आप चाहें तो किसी को भी भेजकर दिखवा सकते हैं।"

"फिर वह गया कहां?"

"भतीजी से पाकर मैंने उस थैली को अपने पलंग के पुआल के गद्दे के अन्दर छिपाकर रख दिया था। मैं उसे बाहर रखकर किसी तरह का खतरा मोल लेना नहीं चाहता था और यहां मेरी दृष्टि में सबसे सुरक्षित जगह थी। लेकिन मैं नहीं जानता था कि हब्शी चोर होते हैं। मैं तो यही समझे हुए था कि वे इंग्लैण्ड के नौकरों की तरह ईमानदार होते हैं। दूसरे दिन सवेरे, जब मैं नीचे गया हुआ था, उन्होंने थैली को चुरा लिया और [illegible] बेचकर वहां से कोसों दूर [illegible]। आप चाहें तो मेरे नौकर से भी पूछ सकते हैं।'"

[illegible]

का !"

फिर वे सब मिलकर तरह-तरह के सवाल पूछने लगे और यह पूछ-ताछ घण्टों होती रही। यहां तक कि रात के भोजन का समय हो गया, परन्तु किसीका ध्यान उधर नहीं गया, सब पूछताछ में लगे रहे और मामला उलझता ही गया। पहले उन्होंने राजा के बयान लिए और फिर नये आने वाले बूढ़े के। कोई भी देख सकता था कि बूढ़ा जो-कुछ कह रहा था वह सच था और राजा की हर बात झूठी, बनावटी और गलत थी। फिर उन्होंने मुझसे भी पूछताछ की। राजा ने फौरन चुपके से बाईं आंख का इशारा कर दिया, इसलिए मैं भी सच के स्थान पर झूठ बोलता चला गया। मैं उन्हें शेफील्ड में रहने के अपने तौर-तरीकों और इंग्लैण्ड के विल्क्स परिवारों और ऐसी ही दूसरी बातों के बारे में बतलाने लगा। लेकिन सच ही कहा है कि झूठ के पांव नहीं होते। मेरी बात सुनकर डाक्टर को हंसी आगई और वकील लेवीबेल ने कहा, "बैठ जाओ, मेरे बच्चे ! अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो कभी यों झूठ न बोलता। झूठ बोलना आसान काम नहीं है। इसके लिए काफी अभ्यास होना चाहिए। कोई भी कह सकता है कि तुम्हें झूठ बोलना नहीं आता। क्यों बेकार कोशिश कर रहे हो।"

उसकी इस प्रशंसा से तो नहीं, परन्तु गला छूट जाने से मुझे जरूर खुशी हुई और मैं चुपका बैठ गया।

तभी डाक्टर ने मुड़कर वकील से कहा, "लेवीबेल, अगर शुरू से ही तुम गांव में रहे होते…"

इतना सुनना था कि राजा ने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए बड़े ही तपाक से कहा, "अच्छा तो आप ही हैं भैया के पुराने मित्र वकील साहब, जिनके बारे में वे मुझे हर पत्र में लिखते रहे थे ?"

वकील ने फौरन बड़े उत्साह से उससे हाथ मिलाया और काफी प्रसन्न होता दिखाई दिया। दोनों मुस्करा-मुस्कराकर बातें करने लगे और फिर वकील उसे एक ओर ले जाकर जाने क्या घुसर-फुसर करता रहा।

अन्त में वकील ने जोर से कहा, "हां-हां, इससे काम बन जाएगा। मैं आपसे आदेश लेकर और उसपर आपके भाई के भी दस्तखत करकराकर

भेज दूंगा । फिर तो उन्हें कोई एतराज नहीं रह जाएगा और बात माननी पड़ेगी ।"

फौरन कागज-कलम का प्रबन्ध किया गया और राजा गरदन टेढ़ी करके बैठ गया और अपनी जबान को चबाता हुआ लिखने लगा । उसके बाद उन्होंने कागज और कलम ड्यूक की ओर बढ़ा दिए । पहली बार मैंने उसे कुछ बदहवास होते देखा । लेकिन दूसरे ही क्षण उसने कलम ले ली और कागज पर अपने दस्तखत बना दिए ।

अब वकील ने नये आए हुए वृद्ध सज्जन की ओर मुड़कर कहा, "उ... और आपके भाई साहब भी मेहरबानी करके इसपर दो-एक सतरें लिख... अपने-अपने दस्तखत बना दें ।"

वृद्ध सज्जन ने लिखा तो, लेकिन उनकी लिखावट किसीसे पढ़ी जा सकी—'आप लिखे और खुदा पढ़ें वाला हाल था ।'

यह देखकर वकील साहब के अचरज का ठिकाना न रहा और बोले, "यह तो कमाल ही हो गया ।" फिर उन्होंने अपनी जेब में से बहुत से पुराने पत्र निकालकर पहले उनकी लिखावट को और तब वृद्ध सज्जन की लिखावट को जांचा और एक बार फिर पत्रों की लिखावट से उनका मिलान करते हुए बोले, "ये पुराने पत्र हार्वी विल्कस के लिखे हुए हैं और इस कागज पर इन दोनों के हाथ की लिखावटें हैं और कोई भी देखकर कह सकता है कि इन्हें इन लोगों ने नहीं लिखा है । (राजा और ड्यूक अब की बुरे फंस गए थे; वकील ने उन्हें चकमा देकर खूब बुद्धू बनाया था) । और यह इन वृद्ध सज्जन की लिखावट है और कोई भी कह सकता है कि इन पत्रों को इन्होंने भी नहीं लिखा है । असल में तो इनकी घसीट लिखावट को लिखावट कहा भी नहीं जा सकता । अब ये कुछ ऐसे पत्र हैं जिन्हें…"

तभी उन नये आनेवाले बूढ़े ने कहा, "अगर आप मुझे थोड़ा समझाने की इजाजत दे सकें तो बड़ी मेहरबानी होगी । लिखावट को सिवा [illegible] के और कोई पढ़ नहीं सकता । मेरे लिखे शब्दों की नकल

। सके। मेरे पास विलियम के हाथ के लिखे हुए पत्र भी हैं। अगर आप उसे दो-एक सतरें लिखवा दें तो हम उसका भी मिलान कर···"

"लेकिन बायें हाथ से तो वह लिख नहीं सकता।" वृद्ध सज्जन ने हा, "अगर उसका दाहिना हाथ टूटा हुआ न होता और वह उससे लिख पता तो अभी आपको पता चल जाता कि उसके और मेरे दोनों के ही 'उसीके हाथ के लिखे हुए हैं। आप दोनों का मिलान करके देखिए उनकी लिखावट एक जैसी है या नहीं ?"

वकील ने दोनों का मिलान करके कहा, "हां, है तो; अगर बिलकुल 'जैसी नहीं है तो भी इतनी ज्यादा मिलती-जुलती है कि उन्हें एक हाथ लिखावट माना जा सकता है, हालांकि इस बात की ओर पहिले मेरा न नहीं जा पाया था। खैर; मैं तो सोच रहा था कि इस तरह यह पेंच म जाएगा, लेकिन अब तो सुलझता दिखाई नहीं देता। हां, एक बात र साबित हो गई कि ये दोनों," उसने अपने सिर से राजा और ड्यूक ओर इशारा किया, "विल्क्स परिवार के नहीं हैं।"

तो क्या आप समझते हैं कि इतने से राजा ने हार मान ली ? जी नहीं, इतनी आसानी से हार मानने वाला जीव नहीं था। वह फिर भी अपनी पर अड़ा रहा और बोला कि लिखावट से तो कुछ भी साबित नहीं '। मेरा भाई विलियम लिखावट के इतने प्रयोग करता है और इतनी के अक्षर लिखता है कि शायद ही कोई लिख पाता होगा। कलम में आनी चाहिए फिर देखिए उसकी लिखावटें। और उसने जो लिखा-ास्त्र के बखिये उधेड़ने शुरू किए तो रुकने का नाम न लिया, बस, ा ही चला गया।

लेकिन थोड़ी देर बाद उस वृद्ध सज्जन ने उसकी बात काटकर कहा, एक बात सूझी है। क्या यहां कोई ऐसा व्यक्ति भी है जिसने पीटर त को दफनाने में हाथ बटाया हो ?"

"हां, है क्यों नहीं !" एक आदमी ने कहा, "मैंने और एब टर्नर ने उसे या था और हम दोनों इस समय यहां मौजूद हैं।"

इसपर उस वृद्ध सज्जन ने राजा की ओर देखकर पूछा, "शायद यह । बता सकें कि मरने वाले की छाती पर कौन-सा गुदना गुदा हुआ

…ा ?"

प्रश्न इतना आकस्मिक था कि और कोई होता तो चारों खाने चि…ा गिरता, ठीक वही हालत हो जाती जो कगार के नीचे की मिट्टी क…ाने पर होती है। राजा को पता ही क्या था कि कौन-सा गुदना गुदा हुआ…ा, और सोचकर भी वह क्या सोच पाता ? एक क्षण के लिए तो भक्-से…ह गया। लेकिन फिर तुरत मुस्कराने भी लगा। कमरे में पूरी तरह…न्नाटा हो गया और सब लोग गरदनें ताने, टक लगाए उसकी ओर देख…हे थे कि क्या जवाब देता है। मैंने सोचा कि अब तो जरूर हथियार डालने…ड़ेंगे, इस बार कोई बहाना काम न देगा। मगर ऐसा सोचना मेरी भूल ही…ा थी। वह राजा ही क्या जो हथियार डाल दे ! असल में उसका विचार…ोगों को थका मारने का था; बराबर डाल-डाल और पात-पात चलता…हे कि देखने-सुनने वाले ऊब जाएं और एक-एक कर खिसकने लगें और…से तथा ड्यूक को भागने का मौका मिल जाए !

उसने पहले की ही तरह आराम से बैठ और मुस्कराते हुए जवाब दिया, …हुं ! प्रश्न तो बहुत कठिन है, लेकिन मैं आपको अवश्य बता सकता हूं कि…नकी छाती पर कौन-सा गुदना गुदा हुआ था। एक बहुत छोटा, नन्हा-सा…र, इतना छोटा कि बहुत ध्यान से देखने पर ही दिखाई दे, उनकी छाती…र गुदा हुआ था। अब बताइए, आपका इस बारे में क्या कहना है ?"

ऐसी ढिठाई और सीनाज़ोरी की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। …र ! उन नवागन्तुक वृद्ध सज्जन की आंखें चमकने लगीं। उन्हें शायद …की खुशी हो रही थी कि इस बार तो राजा को फांस ही लिया ! …से ९. टर्नर और उसके साथी की ओर मुड़कर बोले, "सुना आप…ने ! अब बताइए कि क्या पीटर विल्क्स की छाती पर तीर गुदा हुआ…"

…ों ने एक साथ जवाब दिया, "हमने तो ऐसा कोई गुदना देखा…

…ात है।" उस बूढ़े ने कहा, "तब आपने उनकी छाती पर …-सा धुंधला 'पी' और 'बी' (यह उनके दूसरे नाम का पहला अक्षर …उपयोग उन्होंने छुटपन में ही छोड़ दिया —) और 'डब्ल्य'

गुदा हुआ देखा है, जिसके बीच में इस तरह के डैश भी लगे हुए हैं। 'बी—बी—डब्ल्यू', उसने एक कागज पर लिखकर दिखाए और आगे बोला, "बताइए आपने यही गुदना देखा है न ?"

फिर दोनों एक साथ बोल उठे, "जी नहीं; हमने तो वहां कुछ भी गदा हुआ नहीं देखा।"

अब तक लोगों का धीरज टूट चला था। वे सब के सब गुस्से में भरकर चिल्लाने लगे, "ये चारों के चारों ठग हैं, झूठे और धोखेबाज हैं। हमें झांसा देने और बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे हैं। मार-पीटकर भुर्ता बना दो इनका, पकड़कर नदी में डुबा दो, ले चलकर फांसी टांग दो !" वहां इतना शोर मच गया कि किसीकी बात ही नहीं सुनाई पड़ रही थी।

तब वकील साहब उछलकर एक मेज पर खड़े हो गए और गला फाड़कर चीखे, "सुनिए, भाइयो, सुनिए ! मेरी ज़रा-सी बात सुन लीजिए। पहले मेहरबानी करके खामोश हो जाइए। एक बात मेरी समझ में आती है। क्यों न कब्र खोदकर लाश को देख लिया जाए ?"

"ठीक है ! ठीक है !!" सब ने चिल्लाकर समर्थन किया और हो-हो करते उठ खड़े हुए।

तभी डाक्टर और वकील की आवाजें सुनाई दीं, "ठहरो, ठहरो ! इन लोगों को योंही छोड़कर मत जाओ। चारों आदमियों और इस लड़के को भी पकड़कर अपने साथ लेते चलो !"

"हां, ऐसा ही करते हैं।" लोगों ने चिल्लाकर समर्थन किया, "अगर इनकी बात झूठी निकली तो सभी को फांसी टांगकर जला देंगे !"

मेरे तो हाथ-पांव फूल गए ! नाहक जानलेवा मुसीबत में फंस गया था। और भाग भी नहीं सकता था। कोई रास्ता ही उन लोगों ने रहने नहीं दिया था। मजबूती से पकड़कर चारों ओर घेरा-सा बनाए वे हमें सीधे कब्रस्तान की ओर ले चले, जो वहां से नीचे नदी की तरफ कोई डेढ़ मील के फासले पर था। शोर-गुल सुनकर सारा गांव हमारे साथ हो लिया, क्योंकि अभी मुश्किल से नौ ही बजे थे।

घर के सामने से गुजरा तो पछताने लगा कि मेरी को साथ में बाहर भेजकर अच्छा नहीं किया। अगर इस समय वह होती तो मैं इशारा कर

देगा और वह आकर मुझे बचा लेगी और इन लुटेरों की कलई भी खोल देगी।

इस तरह मैं उन लोगों के बीच में घिरा अपने भाग्य को कोसता चला जा रहा था। लोग उन्मत्त होकर चीख ही नहीं रहे थे जंगली बिल्लियों की तरह गुर्रा भी जाते थे। सहसा कोढ़ में खाज की तरह बादल घिर आए, बिजलियां चमकने लगीं और हवा ने उग्र रूप धारण कर लिया। मैं ऐसी खतरनाक मुसीबत में कभी नहीं फंसा था। बुद्धि काम नहीं कर रही थी। क्या सोचा था और क्या हो गया! अगर मेरी जेन को बाहर आने के लिए न कहता तो इस समय यह सब मेरे लिए तमाशा होता; आराम से देखता रहता और गरदन फंसने को होती तो वह फौरन आकर बचा लेती और मैं इस झमेले से छुट्टी पा जाता। लेकिन अब तो मौत सामने खड़ी थी और उसके और मेरे बीच में सिर्फ गुदने थे। अगर लाश की छाती पर गुदने न हुए...

सोचने के साथ ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए, जूड़ी के रोगी की तरह थर-थर कांपने लगा। परिणाम के बारे में न सोचना चाहता था और न सोचे बगैर रह सकता था। हर क्षण अंधेरा गहरा होता जाता था। भागने के लिए इससे बढ़िया मौका और हो नहीं सकता था। लेकिन उस पहलवान पट्ठे हाइन्स की मुट्ठी सड़सी की तरह मेरी कलाई पर कसी हुई थी। उससे ...ना मेरे लिए तो मगर की पकड़ छुड़ाना था। मारे उत्तेजना के ... हुआ मुझे घसीटे लिए जा रहा था; उसके कदमों मिलाए रखने के लिए मुझे बेतहाशा दौड़ना पड़ रहा था।

... आया तो सारी भीड़ बाढ़ के रेले की तरह अन्दर घुस गई। ... पहुंचे तो एक की जगह सौ फावड़े और कुदाल निकल आए, लेकिन ... लाने का खयाल किसीको भी नहीं रहा था। फिर भी कौंधती ... के उजाले में सब के सब कब्र के खोदने में जुट गए और एक आदमी ... सबसे पासवाले घर से, जो वहां से आधे मील के फासले पर था, लालटेन लाने के लिए दौड़ाया गया।

... और भी घना हो गया और पानी बरसने लगा; हवा हहराकर ... और ... जोर-जोर से

गरजने लगे। लेकिन वे लोग सब ओर से बेखबर कब्र को खोदने में लगे रहे। एक क्षण, बिजली चमकते ही सबके चेहरे और फावड़ों से खोदी जाती मिट्टी तक दिखाई दे जाती और दूसरे ही क्षण सब-कुछ अन्धकार में विलीन हो जाता था।

बात की बात में कब्र खुद गई और ताबूत बाहर निकाल लिया गया। दूसरे ही क्षण बीसियों हाथ उसका ढक्कन खोलने में जुट गए। अब ताबूत के चारों ओर इतनी भीड़-भाड़ और धक्का-मुक्की होने लगी कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। हर कोई ताबूत के निकट पहुंचने और देखने के लिए उतावला हो रहा था। और बादल घिरे उस घुप्प अंधेरे में लोगों की वह धक्का-मुक्की प्रति क्षण भयावना रूप धारण करती जा रही थी। हाइन्स अब भी मेरी कलाई को मजबूती से पकड़े इतने जोर से खींच और घसीट रहा था कि मुझे दर्द होने लगा था। ऐसा लगता था मानो जोश और उत्तेजना के कारण वह मेरे अस्तित्व को ही भूल गया हो।

सहसा बिजली चमकी और एक क्षण के लिए चारों ओर चांदना-सा हो गया। तभी कोई जोर से चिल्ला पड़ा, "ओ-हो-हो ! डाक्टर की पैनी सी लाश के पेट पर पड़ी है !"

दूसरों की तरह हाइन्स ने भी जोर की किलकारी लगाई और मेरा हाथ छोड़कर ठीक से देखने के लिए लोगों को धकियाता हुआ भीड़ में घुसा। मुझे मुंहमांगी मुराद मिल गई। अंधेरे में सड़क की तरफ सिर पर पांव रखकर भागा। इस तरह दौड़ा जा रहा था मानो पर निकल आए हों !

जल्दी ही सड़क मिल गई और मैं उसपर सरपट दौड़ने लगा। यहां से वहां सारी सड़क पर मेरे सिवा और कोई भी नहीं था। चारों ओर घुप्प अंधेरा छाया हुआ था। रह-रहकर बिजली चमक उठती थी। पानी लगातार बरसता जा रहा था। हवा झपट्टे मार रही थी और बीच-बीच में बादल कड़कड़ाकर गरज उठते थे, लेकिन मैं विक्षुब्ध प्रकृति के गर्जन-तर्जन की परवाह किए बिना उड़ा चला जा रहा था।

गांव में पहुंचा तो रास्तों और गलियों में पूरी तरह सन्नाटा था। उस आंधी-तूफान में यदि लोग घरों में होते तो भी शायद ही बाहर निक-

लते, फिर इस समय तो सारा गांव कब्रस्तान में था। इसलिए मैं
गलियों के बदले गांव की मुख्य सड़क पर ही हो लिया। दौड़ता हुआ
जेन के घर के सामने पहुंचा तो अनायास ही मेरी आंखें मेरी के कम
खिड़की की ओर उठ गईं। मुझे वहां जलती मोमबत्ती का प्रकाश दि
देने की आशा थी। लेकिन सारा घर अंधेरे में डूबा हुआ था! बड़ी नि
हुई और मन न जाने क्यों उदास और दुखी हो गया। लेकिन अभी
के पार जा भी नहीं पाया था कि सहसा मेरी के कमरे की खिड़की में
जल उठा। मेरी सारी निराशा और उदासी दूर हो गई और छाती
से उमगने लगी। दूसरे ही क्षण मकान पीछे छूट गया और मैं आगे नि
आया। फिर मैंने उस मकान को कभी नहीं देखा, मेरी दुनिया में
निःशेष हो चुका था, लेकिन मेरी की याद सदा बनी रही। वह मेरी दृ
में विश्व की श्रेष्ठतम लड़की थी और संकल्प-बल में भी सबसे इस्पात।

गांव के बाहर आकर मैं नदी किनारे कोई नाव या डोंगी तलाश
लगा, जिसकी सहायता से बीच धार वाले रेतीले टीले तक पहुंच सकूं, जह
हमारा बेड़ा लंगर डाले पड़ा था। तभी मेरे भाग्य से बिजली चमकी और
एक लम्बोतरी नाव पानी में झकोरे लेती दिखाई दे गई। वह जंजी
से नहीं, केवल रस्सी से बंधी थी। मैंने खोला और जल्दी-जल्दी डांड़े चलाने
लगा। टीला किनारे से बहुत दूर मझधार में था। मैं बिना रुके उसकी
सीध में तीर की तरह बढ़ता चला गया। जब मेरी नाव बेड़े से आकर लगी
तो मैं थककर चूर हो गया था और सांस धौंकनी की तरह चल रही थी।
लेकिन फिर भी मैं दम लेने के लिए रुका नहीं। उछलकर बेड़े पर चढ़ गया
और ज़ोर-ज़ोर से सांस लेता हुआ चिल्लाया, "जिम, बाहर आ जाओ
और लंगर उठाकर फौरन भाग चलो! हमारा सौभाग्य कि उन दुष्टों से
पिंड छूटा।"

जिम तुरन्त बाहर आ गया और फिर दोनों हाथ फैलाए मुझे छाती
से लगाने के लिए वह मेरी ओर लपका। उस समय उसकी प्रसन्नता का
पार न था। तभी बिजली चमकी और मेरा मुंह से चीख निकल गई; मैं
उलटे पांवों डोंगी की ओर भागा। मैं तो भूल ही गया था कि हम दोनों पुन
[illegible]

लिए मारे डर के मेरा बुरा हाल हो गया। लेकिन जिम ने मुझे अंधेरे में भी खोज निकाला। मेरे लौट आने और राजा एवं ड्यूक से छुटकारा पा जाने के कारण वह खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

उसने जैसे ही छाती से लगाना चाहा, मैं बोल उठा, "अभी नहीं, अभी नहीं! यह काम सवेरे कर लेना नाश्ते के समय। अभी तो लंगर उठाकर फौरन बेड़े को धारा में ठेलो; बाकी काम बाद में होते रहेंगे।"

पलक झपकते तो हम बीच नदी में धारा के साथ बहे जा रहे थे। उस समय मेरी खुशी का क्या पूछना! अपने-आपको नदी पर स्वतन्त्र और खुदमुख्तार पाकर ऐसा लगा मानो स्वर्ग का राज्य मिल गया हो। अब हमें परेशान करनेवाला भी वहां कोई नहीं था। आपसे सच कहता हूं, मारे खुशी के मैं अपने बेड़े पर नाचने, कूदने और उछलने लगा, यदि ऐसा न करता तो शायद मेरी छाती ही फट जाती। मैं अभी दो बार ही नाचा-कूदा हूंगा कि नदी में एक परिचित-सी आवाज सुनाई दी। सांस रोककर सुनने लगा, सच ही कोई छपाछप चप्पू चलाता नाव को खेते हमारी ओर बढ़ा आ रहा था। तभी बिजली चमकी और मैंने उसके उजाले में देखा तो एक डोंगी हमारी दिशा में तीर की तरह चली आ रही थी और उसकी डांडें-चप्पू राजा और ड्यूक के हाथों में थे—हां, वे ही थे!

दूसरे ही क्षण मैं कटे हुए पेड़ की तरह बेड़े के पटरों पर जा गिरा; उस समय छाती को फाड़कर उमड़ती हुई रुलाई को रोकने में मुझे अपनी सारी शक्ति लगा देनी पड़ी थी।

अध्याय ३०

बेड़े पर आते ही राजा ने लपककर मेरा गला पकड़ लिया और जोर से झिंझोड़ते हुए कहा, "हमारी आंखों में धूल झोंककर भागना चाहता था कमीने कुत्ते! हम राजा-नवाबों का संग-साथ इतना बुरा हो गया, क्यों?"

मैंने फौरन कहा, "नहीं, महाराजाधिराज, नहीं! आपसे पीछा छुड़ाना

हूं, मेरा गला छोड़ दीजिए।"

"तो अभी बता और सच-सच बता कि तेरा मतलब क्या था, नहीं तो गला घोंट दूंगा।"

"सच ही निवेदन करता महाराजाधिराज, बिलकुल सच। जो कुछ हुआ है आपकी सेवा में सच-सच निवेदन करता हूं। सुनिए, जो आदमी मुझे पकड़े हुए था, वह बड़ा ही भला और दयालु निकला। वह रास्ते-भर कहता रहा कि मेरी ही उम्र का उसका एक लड़का था, जो पिछले साल मर गया। इस झमेले में मुझे फंसे देखकर उस आदमी को बड़ी दया आ रही थी। उस लिए जब डालरों की थैली ताबूत में पड़ी मिली तो उसे देखने के लिए जो धक्कमपेल मची उसमें उसने मेरा हाथ छोड़ दिया और चुपके से कहा, 'दया करके छोड़ रहा हूं, अब उड़नछू हो जाओ बेटा, नहीं तो तुम भी इनके साथ फांसी पर लटका दिए जाओगे।' छूटते ही मैं वहां से सिर पर पांव रखकर भागा। रुके रहने की तो बात ही नहीं थी और रुककर करता भी क्या? नाहक फांसी लटका दिया जाता। इसलिए बगटुट भागता चला आया नदी किनारे तक और नाव लेकर सीधा पहुंचा बेड़े पर। आते ही जिम से कहा कि लंगर उठाकर भाग चलो, नहीं तो वे मुझे पकड़ ले जाएंगे और फांसी टांग देंगे। मैंने जिम से यह भी कहा कि महाराजाधिराज और ड्यूक साहब शायद मारे गए। आपके मारे जाने की बात सोचकर छाती फटी जा रही थी और आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई थी। यही हाल जिम का भी हुआ। हम दोनों ही आपको याद कर-कर के रोते जा रहे थे लेकिन जैसे ही आपको आते देखा मन प्रसन्न हो गया। चाहे तो जिम से पूछ लीजिए कि मैं कितना खुश हुआ!"

जब जिम ने मेरी हां में हां मिलाई तो राजा ने उसे डांटकर चुप कर दिया और बोला, "तेरा कहना ठीक भी हो सकता है, परन्तु मैंने तो तुझे डुबोने का निर्णय कर लिया है।" और वह फिर मेरा गला पकड़कर

तब ड्यूक ने कहा, "अबे बुड्ढे बेवकूफ, बेचारे लड़के को छोड़ दे। अपनी याद कर कि बूढ़े तूने क्या किया! क्या तू इसके लिए रुका रहा? क्या यह पता लगाने की कोशिश की कि यह गरीब कहां और किस हालत में है?

क्या तू खुद सिर पर पांव रखकर भाग नहीं आया ? मुझे तो याद नहीं पड़ता कि तूने इसकी खोज-खबर लेने की कोई कोशिश की !"

इस लताड़ को सुनकर राजा ने मुझे छोड़ दिया और बैठकर उस गांव और वहां के सभी लोगों को कोसने और गालियां देने लगा।

इसपर ड्यूक ने कहा, "किसी और को नहीं ; अपने को कोस और खुद अपने आप को ही गालियां दे। जो हुआ उसके लिए सिर्फ तू ही जिम्मेवार है। तूने शुरू से आखीर तक एक भी काम कायदे का नहीं किया। महज उस नीले तीर वाला तेरा नुक्ता लाजवाब रहा, बाकी तो सब बकवास थी। ऐन वक्त पर अगर नीले तीर का नुक्ता तेरे जहन में रोशन न हो जाता तो हम कुत्ते की मौत मारे जाते। उस नुक्ते ने जान बचा ली। वरना तेरी बेवकूफी से सीधे हवालात में पहुंचा दिए जाते और उन अंग्रेजों का माल-असबाब आ जाने पर तो सजा ही हो जाती। फिर तो किस्मत में जेल की कड़ी मशक्कत धरी-धराई थी। मगर शुक्र उस नुक्ते का कि सबको कब्रिस्तान खींच ले गया और शुक्र उस डालरों की थैली का कि ताबूत में से बरामद हुई। न वहां थैली निकलती, न लोग आपा खोते और न हमें भागने का मौका मिलता। फिर तो जनाब शहन्शाहे आलम, आपके और हमारे गले में तौक पड़ा होता और खुदा जाने उस गैर जरूरी तोहफे को जाने कितनी मुद्दत तक गले में लटकाए रहना पड़ता—मेरा तो यही खयाल है कि काफी लम्बे अर्से तक जेल का वह पट्टा हमारे गले का हार बना रहता ! और यह सारी छीछालेदर होती महज तुम्हारी बेवकूफी की वजह से।"

कोई मिनट-भर चुप्पी रही, शायद दोनों कुछ सोच रहे थे, फिर राजा ने खोए-खोए स्वर में कहा, "और हम हबशियों पर सन्देह कर रहे थे कि थैली वे चुरा ले गए।"

सुनकर मेरे कलेजे में एक हूक-सी उठी।

"हां !" ड्यूक ने धीमे और व्यंग्य-भरे स्वर में कहा, "हमने किया तो।"

कोई आधे मिनट की चुप्पी के बाद राजा बोला, "कम से कम मैंने तो किया।"

ड्यूक भी ठीक उसी लहजे में बोला, "नहीं जी, मैंने किया।"

राजा थोड़ा क्रुद्ध हो उठा और उसने पूछा, "ड्यूक साहब, यह क्या

किस बात की ओर संकेत कर रहे हैं ?"

ड्यूक ने मुस्कराकर कहा, "तो क्या मैं भी पूछ सकता हूं कि सवाल का मतलब क्या था ?"

राजा ने गहरे आत्म-भरे स्वर में कहा, "मुझे ठीक से नहीं मालूम लेकिन हो सकता है कि आपने नींद में सब कुछ किया हो और बिना यह जाने कि क्या कर रहे हैं ?"

अब ड्यूक तनकर खड़ा हो गया और डांटकर बोला, "बन्द करो अपनी बकवास ! क्या तुमने मुझे दूध पीता बच्चा समझ लिया है ? क्या मैं जानता नहीं कि उस थैली को ताबूत में किसने छिपाया ?"

"जी हां मेरे विचार में आप अवश्य जानते हैं, क्योंकि स्वयं आपने ही छिपाया था।"

"चोरी और सीना जोरी !" ड्यूक ने लपककर राजा का गला पकड़ लिया। राजा चिचिया उठा, "छोड़ दो, मेरा गला छोड़ दो; मैं अपना कहा लौटाता हूं।"

ड्यूक बोला, "पहले मंजूर करो कि डालरों की थैली तुमने चुराई वरना जनाब शहंशाहे आलम, गला घोंटकर रख दूंगा। इकबाल करो कि तुम्हारी नियत में खोट था और तुम मुझे धोखा देना चाहते थे। कहो कि थैली तुमने इसलिए चुराई कि बाद में चोरी-चोरी आकर खोद निकालो और सारे डालर आप रख लो !"

ड्यूक साहब, तनिक रुक जाइए और मेरे इस प्रश्न का उत्तर दीजिए। सच-सच कहिए कि आपने थैली को वहां नहीं छिपाया और मैं आपकी बात पर विश्वास कर लूंगा। और अपने कहे को लौटा लूंगा।"

"अबे बूढ़े बूदम, मैंने नहीं छिपाया और तू भी इस बात को जानता है कि मैंने नहीं छिपाया। अब तो हो गई न तस्कीन ?"

"जी हां, विश्वास हो गया। लेकिन एक प्रश्न और है, उसका उत्तर देने की भी अवश्य कृपा करें। देखिए, नाराज होने की बात नहीं है। यह बताइए कि क्या आपके मन में रुपया लेने और थैली को छिपाने का विचार नहीं था ?"

ड्यूक सहसा जवाब न दे सका। कुछ देर चुप रहने के बाद उसने

कहा, "यह तो नहीं कहूंगा कि खयाल था ही नहीं मगर खयाल होने से क्या, मैंने उसे असली जामा तो नहीं पहनाया। और एक तू है कि बात जैसे ही दिल में आई उसे असली शकल दे भी डाली !"

"सच कहता हूं ड्यूक साहब, अगर मैंने किया हो तो अभी मुझपर गाज गिर पड़े। यह तो नहीं कहूंगा कि मन में थैली उड़ाने का विचार नहीं था; था और अवश्य था, सम्भवत उड़ा भी लेता, लेकिन आपने, मेरा मतलब है, किसीने उसे मुझसे पहले ही उड़ा दिया।"

"झूठे ! लबाड़ !" ड्यूक ने दोनों हाथों से उसका गला दबोचते हुए कहा "तूने छिपाया और अब इनकार करता है ? इकबाल कर वरना···"

राजा गों-गों करने लगा था, पकड़ कुछ ढीली हुई तो हांफता हुआ बोला "बस-बस, रहने दो ! स्वीकार करता हूं।"

राजा की इस बात को सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और मन पहले से काफी हलका और स्वस्थ हो गया।

ड्यूक ने उसका गला छोड़ दिया और घुड़कता हुआ बोला, "आगे कभी इनकार किया तो गला घोंटकर नदी में फेंक दूंगा। अब बच्चों की तरह बैठा सुबक रहा है, शर्म नहीं आती, जैसा करेगा वैसा ही तो पाएगा। तेरी यही सजा है। रो, धाड़ें मार, मेरी बला से ! ऐसा खबीस बूढ़ा शुतुरमुर्ग तो मैंने देखा नहीं जो सब कुछ भकोस जाना चाहता है। और मेरी नादानी देखो कि इस बुड्ढे का इस तरह एतबार करता रहा, गोया सगा बाप हो ! उन गरीब हबशियों पर तोहमत लगाते तुझे शर्म नहीं आई ! खूब खड़ा सुना किया, पापी कहीं का ! उन बेचारों के बचाव में एक लफ्ज तो कहा होता ! खुद मुझे इस खयाल से शर्मिन्दगी होती है कि तेरे उस झूठ और फरेब पर मैंने यकीन किया। और, जलालत की हद हो गई ! अब समझ में आ रहा है कि कमी को पूरा करने के लिए तू क्यों इतना उतावला हो रहा था ! असल में तू 'शहनशाह की शुतुर चाल' का मेरे हिस्से का भी रुपया हड़पकर नौ दो ग्यारह हो जाना चाहता था; क्यों !"

राजा ने सहमे हुए स्वर में कहा, "गिनती कम न होने पर डालरों की कमी को पूरा करने का विचार पहले तो आपको ही सूझा था।" वह अब भी सुबक रहा था।

"दूर कर ! मुंह भी खोता है तो ज़बान खींच लूंगा।" ड्यूक ने कहा है "अजीब अहमक है ! इतना कुछ हो गया और अकल नहीं आई। तेरी बेवकूफी की वजह से वे अपने नाच के साथ हमारी गाढ़ी कमाई का सारा धन ले गए और हम टन-टन गोपाल बने रह गए ! जा, मुंह बांधकर सो रह ! कमी-बेशी की बात की है और हमसे ज़बान लड़ाई है तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

राजा फौरन पिटे हुए कुत्ते की तरह टपरिया में घुस गया और मन गलत करने के लिए बोतल मुंह से लगा ली। थोड़ी देर के बाद ड्यूक भी अन्दर चला गया और शराब के घूंट भरने लगा। और कोई आधे घण्टे में तो वे दोनों चोर फिर मौसेरे भाई बन गए। दोनों एक-दूसरे पर इस तरह जान निछावर करने लगे मानो आपस में झगड़ा कभी हुआ ही न हो। और जब सोए तो एक-दूसरे के गले में बाहें डाले हुए थे ! दोनों पिघलकर पानी हो गए थे। लेकिन मैंने लक्ष्य किया कि पिघल जाने के बाद भी राजा इस बात को न भुला पाया कि वह डालरों की थैली को छिपाने के आरोप को दुबारा अस्वीकार नहीं कर सका था। लेकिन मुझे तो उनके झगड़े से कुल मिलाकर सन्तोष और प्रसन्नता ही हुई। और जब वे खर्राटे भरने लगे तो मैंने दबी आवाज़ में जिम को पूरा किस्सा शुरू से आखीर तक कह सुनाया।

अध्याय ३१

इस घटना के बाद हम नदी किनारे के किसी गांव या कस्बे में नहीं रुके और कई दिनों तक बराबर चलते रहे। अब हम दक्षिण में, घर से काफी दूर निकल आए थे। इधर का मौसम भी बड़ा सुहाना गरम था। अब ऐसे · मिलने लगे थे जिनकी शाखाओं और तनों से स्पैनी काई डाढ़ी की तरह । । ऐसे वृक्ष मैं यहां पहली ही बार देख रहा था। इन वृक्षों कारण इधर का जंगल भी खासा गम्भीर और उदास प्रतीत होता था।

... के बाद हमारे दोनों लफंगों ने यह सोचकर कि वे खतरे र निकल आए हैं रास्ते के गावों को फिर छलना और धोखा देना : दिया था।

से पहले उन्होंने एक गाव में शराब की बुराइयों और मद्य-निषेध ण दिया, लेकिन इतना पैसा न पा सके कि दोनों का एक बार का खर्च भी निकल आता। तब दूसरे गांव में उन्होंने नाच सिखलाने शुरू किया, लेकिन नाचना दोनों में से किसीको नहीं आता था, अधिक वे ऊंट की तरह उछल-कूद सकते थे; इसलिए उनके च को देखकर गांव वालों ने उन्हें सिर पर पांव रखकर भागनेपर र दिया। अगले किसी गाव मे उन्होंने अपने वक्तृत्व की धाक लिए व्याख्यानमाला का श्रीगणेश किया परन्तु हुआ यह कि ण के ही बीच श्रोता हो-होकर खड़े हो गए और इतनी गालियां वक्ताओं को वहा से भागना पड़ा। उन्होंने अलग-अलग गावों मे के अलग-अलग प्रयोग किए—कहीं धर्म प्रचार तो कहीं मेस्मेरिज्म, या इलाज तो कहीं जादू-टोने, कहीं जन्तर-मन्तर तो कहीं र सामुद्रिक, लेकिन न जाने क्यों कहीं भी उनकी कोई कल सीधी ही थी। आखिर वे निराश और हताश हो गए और घण्टों बैठे चा करते कि क्या तरकीब चलें जिससे पैसा बरसने लगे। तर-सूझती नहीं थी, इसलिए उनकी निराशा और नाराज़ी बढ़ती र वे आधा-आधा दिन बेड़े के पट्टों पर चुपचाप पड़े जाने क्या ! उस समय उन्हें छेड़ना बरों के छत्ते में हाथ डालना था।

ह परिवर्तन होता दिखाई दिया। अब दोनों टपरिया में घुसकर तक जाने क्या खुसर-पुसर किया करते। उन्हें इस तरह कुल्हड़ रे देख मैं और जिम चिन्तित हो उठे। हमें किसी षड्यन्त्र की गी और यह सोचकर प्राण सूखने लगे कि इस बार वे ज़रूर तानी का काम करेंगे। हो सकता है कि वे किसीके घर में सेंध सी दुकान मे नकबजनी करें; या यह भी हो सकता है कि वे लाने और बेचने का काम शुरू कर दें या ऐसे ही किसी दूसरे में हाथ डालें। हम दोनों बहुत डर गए थे, इसलिए अन्त में

हमने फैसला लिया कि यदि इन बदमाशों ने ऐसा कोई काम हाथ में लि तो हमारा उनसे कोई सम्बन्ध न होगा और यदि इन्होंने हमें उसमें शा करने की कोशिश की तो हम इन्हें ठेंगा दिखाकर भाग जाएंगे।

इसके बाद, एक दिन की बात है, हमने सवेरे-सवेरे अपने बेड़े क पाइक्सविले नामक छोटे-से गन्दे गांव से कोई दो मील नीचे की ओर ए सुरक्षित जगह छिपाया और राजा किनारे उतर पड़ा। उसने हमें छि रहने के लिए कहा, क्योंकि इस बीच वह उस गांव में आकर मालूम करन चाहता था कि वहां वालों को 'शहन्शाह की चुतुर चाल' के बारे में पता तो नहीं चल गया है। (मैंने मन ही मन कहा, 'तुम्हारा मतलब नाटक के नाम पर लोगों को लूटना है। ठीक है, इस बार जब तुम गांव वालों को लूट रहे होगे तो मैं और जिम बेड़ा लेकर इस तरह चम्पत होंगे कि तुम देखते ही रह जाओगे। फिर कौन तुम्हारे हाथ आता है!') और उसने यह भी कहा कि अगर मैं दुपहर तक न लौटूं तो समझ लेना कि सब ठीक-ठाक है और तब ड्यूक और हकलबेरी तुम दोनों भी आ जाना।

राजा चला गया और हम छिपे बैठे रहे। आज ड्यूक का मिजाज जाने क्यों बहुत बिगड़ा हुआ था। वह बात-बात पर भिन्नाता, गालियां बकता और चीखने-चिल्लाने लगता था। आज उसे हमारा कोई काम पसन्द नहीं आ रहा था। उसे दुनिया की हर चीज बुरी और हमारा हर काम गलत लग रहा था। हम समझ गए कि जरूर कोई बात होनी चाहिए। इस तरह दिन दुपहर हो गया, मगर राजा लौटकर नहीं आया। मैंने चैन की सांस ली—एक तो ड्यूक की बक-झक से छुट्टी मिल रही थी, दूसरे वहां से जाने को मिल रहा था और सबसे अधिक तो भागने का मौका भी मिल सकता था।

मैं और ड्यूक गांव में पहुंचे और राजा को खोजने लगे। काफी दौड़-धूप के बाद वह हमें एक सस्ता हाल ताड़ीखाने के पीछे वाले कमरे में मिला। खूब पिए हुए था। और गांव के ठलुए वहां जमा होकर उसे बुरी छेड़ रहे थे और ठहाके लगा रहे थे। वह बदले में अनाप-शनाप लियां बकता हुआ एक-एक से निपट लेने की धमकियां दे रहा था। लेकिन के कारण उससे खड़े होते भी नहीं बन रहा था, लोगों से निपटने को

बात तो दूर रही, ह्यूक ने उसे इन हालों देखा तो लगा फटकारने। जल्दी ही दोनों में वाक्‌युद्ध शुरू हो गया। दोनों एक-दूसरे पर गालियों के छर्रे दागने लगे। उधर उनके गाली-युद्ध का रंग जमा और इधर मैं वहां से खिसक गया। बाहर निकला और हिरन की तरह चौकड़ियां भरने लगा। बात की बात में वहां पहुंच गया जहां बेड़े को छिपाकर रखा गया था। शुक्र हो रहा था कि अब वे बदमाश मुझे और जिम को देख चुके। बेड़ा लेकर ऐसे चम्पत होंगे कि उनके फरिश्तों को भी पता नहीं चलेगा। जब मुकाम पर पहुंचा तो मेरा दम फूल गया था, लेकिन छाती खुशी से उमगी पड़ रही थी। जाते ही मैं पुकार उठा, "जिम, खोल दो बेड़े को और चल पड़ो आगे। अब हमीं हम हैं!"

लेकिन न तो कोई जवाब मिला और न कोई टपरिया में से बाहर ही आया। जिम जाने कहां चला गया था! मैंने कई आवाजें दीं, चारों तरफ खोजा, आसपास का पूरा जंगल छान मारा, गला फाड़-फाड़कर चिल्लाया लेकिन कोई लाभ न हुआ। जिम जा चुका था। अन्त में मैं हारकर बैठ गया और सिर थामकर रोने लगा। लेकिन ज्यादा देर तक बैठा रो भी नहीं सकता था। उठा और सड़क-सड़क चल पड़ा। सोचता जा रहा था कि अब क्या करना और जिम को कहां ढूंढना चाहिए।

तभी मुझे एक लड़का सामने से आता दिखाई दिया। मैंने रोककर पूछा कि क्या तुमने किसी हब्शी को इधर से जाते देखा है? वह अजीब तरह के कपड़े पहने था और शक्ल भी उसकी अजीब थी।

उसने कहा, "हां।"

"कहां देखा?" मैंने पूछा।

"यहां से दो मील नीचे, नदी के बहाव की तरफ, सिलास फेल्प्स के यहां। वह भागा हुआ हब्शी था, उन्होंने पकड़ा है। क्या तुम उसीको तलाश रहे हो?"

"बिल्कुल नहीं। दो-एक बरस पहले जंगल के इलाके में एक बार भेंट हुई थी, तब तो सोचा कि अगर मिल जाए तो जरा बात-चीत कर देखूं। वहीं वह पहुंचा, मददगार, जो उसने भी कोशिश की! इस तरह समझाकर वह चला गया। मैं बगल में दुबका बैठा रहा। अब बची उसे-उसे बाहर बाहर

हूँ ।"

"अब डरने की जरूरत नहीं ।" उस लड़के ने कहा, "उन्होंने उसे पकड़ लिया है । वह कहीं दक्षिण की तरफ से भागकर आया है ।"

"अच्छा हुआ कि उन्होंने पकड़ लिया । मुझे तो उसने मार ही डाला था !"

"पता चला है कि उसे पकड़ने के लिए दो सौ डालर का इनाम रखा गया था । यों समझो कि पकड़ने वाले को तो रास्ते पर पड़ा रुपया मिल गया ।"

"हां, मिल तो जरूर गया । अगर मैं बड़ा होता तो वह रुपया मुझी को मिलता, क्योंकि सबसे पहले मैंने ही उसे देखा था । बता सकते हो, उसे किसने पकड़ा ?"

"कोई अनजान बूढ़ा था, इधर का रहनेवाला नहीं । उसने उसे सिर्फ चालीस डालर में बेच दिया, क्योंकि वह यहां रुक नहीं सकता था, जाने की जल्दी पड़ी थी । बड़ा अजीब लगता है न ? दो सौ डालर का माल सिर्फ चालीस डालर में । मैं होता तो कभी न बेचता; चाहे सात साल रुकना पड़े, रुक लेता ।"

"मैं भी यही करता ।" मैंने कहा, "लेकिन शायद ज्यादा का माल न होगा, नहीं तो वह इतना सस्ता क्यों बेचता ? जरूर कोई बात होनी चाहिए ।"

"बात तो कोई नहीं थी ।" उस लड़के ने कहा, "मैंने खुद इश्तिहार पढ़ा है । सब कुछ उसमें साफ-साफ लिखा हुआ था । जो हुलिया बयान किया गया था ठीक वैसा ही वह हब्शी था । न्यू ओरलियन्स से भी आगे किसी बागान से वह भागकर इधर आया था । इनाम के दो सौ डालर भी साफ लिखे थे । जैसा तुम सोचते हो, ऐसी कोई बात मुझे तो उसमें दिखाई नहीं दी । शर्तिया दो सौ डालर का सौदा था, जिसे वह बुड्ढा बेवकूफ चालीस डालर में बेच गया । अच्छा, थोड़ी तम्बाकू हो तो दो न ?"

तम्बाकू तो मेरे पास थी नहीं, इसलिए मैं वहां से चला आया । बेड़े पर आकर टपरिया के अन्दर बैठ गया और सोचने लगा । बहुत सोचा, पर इस मुसीबत से निकलने का कोई रास्ता समझ में नहीं आया; यहां तक कि सोचते सोचते मेरा माथा दुखने लगा । इतनी लम्बी यात्रा और इतनी

मुसीबतों और उन बदमाशों के लिए इतना सब करने के बाद भी नतीजा यह रहा कि उन्होंने उस गरीब को घर-द्वार से दूर बिलकुल बेगानों में सिर्फ चालीस डालर के लिए फिर गुलाम बना दिया! मेरे और जिम के तो सारे ही मनसूबों पर उन बदमाशों ने अपनी गन्दी हरकत से पानी फेर दिया था।

एक बार मन में यह ख्याल आता कि यदि जिम को गुलामी ही करनी है तो क्यों न वह घर पर परिवार वालों के बीच गुलाम बनकर रहे और क्यों न मैं टाम सायर को एक पत्र लिखकर मिस वाटसन को इस बात की सूचना देने के लिए कह दूं! लेकिन फिर यह ख्याल आता कि मिस वाटसन बहुत नाराज होंगी और अपने हबशी की नालायकी और अहसानफरामोशी को माफ न कर सकेंगी और उसे जरूर दक्षिण में ही कहीं बेच देंगी। मालिक के यहां से भागने वाले अकृतज्ञ हबशी को कोई पसन्द नहीं करता और हर नया खरीदार गाहे-बगाहे उसे इस बात की याद दिलाता रहता है। जिम को भी उसके नये खरीदार इस बात की याद दिलाते रहेंगे, उससे नफरत करेंगे और दुख भी देंगे। इस तरह तो उस बेचारे की जिन्दगी जहर हो जाएगी। और लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे! हर कोई यही कहेगा कि हकफिन ने एक हबशी को भागने में मदद की। और कभी उस गांव वाले किसी आदमी से सामना हो गया तो मुझे शर्म से पानी-पानी हो जाना पड़ेगा और उसके सामने देखने की हिम्मत न होगी। बुरे काम का हमेशा ऐसा ही बुरा नतीजा होता है, जो एक दिन सामने आ जाता है और भुगतना ही पड़ता है। जब तक बुराई छिपी रहती है लाज भी ढकी रहती है, लेकिन बुराई हमेशा तो छिपी रह नहीं सकती, एक दिन उजागर हो ही जाती है और चेहरे पर कालिख पुत जाती है। मैं आज ऐसी ही मुसीबत में फंस गया था, जितना ही सोचता था दिल उतना मसोसने लगता था। रह-रहकर यही ख्याल आता कि मुझसे नीच और बुरा इस दुनिया में और कोई नहीं। इस घटना ने जैसे मुंह पर थप्पड़ मार कर बता दिया कि आखिर भगवान है और उससे कुछ भी छिपा हुआ नहीं है और वह आंखों में उंगली डालकर तुम्हारी सारी बदमाशी और बुराई को सामने ला खड़ा करता है। वह सब देखता है और उसके राज्य में देर चाहे हो अंधेर नहीं। जिसने मजे से एक गरीब विधवा के,

हूं।"

"अब डरने की जरूरत नहीं।" उस लड़के ने कहा, "उन्होंने उसे प
लिया है। वह कहीं दक्षिण की तरफ से भागकर आया है।"

"अच्छा हुआ कि उन्होंने पकड़ लिया। मुझे तो उसने मार ही डा
था!"

"पता चला है कि उसे पकड़ने के लिए दो सौ डालर का इनाम र
गया था। यों समझो कि पकड़ने वाले को तो रास्ते पर पड़ा रुपया मि
गया।"

"हां, मिल तो जरूर गया। अगर मैं बड़ा होता तो वह रुपया मुझ
को मिलता, क्योंकि सबसे पहले मैंने ही उसे देखा था। बता सकते हो, उ
किसने पकड़ा?"

"कोई अनजान बूढ़ा था, इधर का रहनेवाला नहीं। उसने उसे सि
चालीस डालर में बेच दिया, क्योंकि वह यहां रुक नहीं सकता था, जाने क
जल्दी पड़ी थी। बड़ा अजीब लगता है न? दो सौ डालर का माल सिर्फ
चालीस डालर में। मैं होता तो कभी न बेचता; चाहे सात साल रुकना पड़े,
रुक लेता।"

"मैं भी यही करता।" मैंने कहा, "लेकिन शायद ज्यादा का माल न होगा,

मैं बहुत दुःखी हो गया था और समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करना चाहिए। अन्त में यह खयाल आया कि क्यों न पत्र लिखकर देखूं तब शायद प्रार्थना कर सकूं। इस विचार के आते ही मन का सारा बोझ उतर गया और मैं हलका-फुलका अनुभव करने लगा। फौरन कागज-पेन्सिल लेकर बैठ गया और खुशी-खुशी लिखने लगा

> मिस वाटसन, आपका भागा हुआ हब्शी जिम यहां पाइक्स विले नामक गांव से दो मील आगे मिस्टर फेल्प्स के यहां है। उन्होंने उसे पकड़ लिया है। उसके नाम इनाम की रकम भेजकर आप उसे छुड़ा सकती हैं।
>
> —हक फिन

अब बहुत अच्छा लग रहा था। जीवन में पहली बार मैंने शांति और आंतरिक पवित्रता का अनुभव किया। सारे पाप और कल्मष धुलकर साफ हो गए थे। लगा कि अब प्रार्थना कर सकता हूं। लेकिन मैंने तुरन्त प्रार्थना आरंभ नहीं की। पत्र लिखकर एक ओर रख दिया और सोचने लगा—यही सोच रहा था कि कितना अच्छा हुआ और भगवान ने कृपा करके मुझे किस तरह बचा लिया, नहीं तो अनन्त काल तक नरक की आग में झुलसना पड़ता। इस तरह सोचते-सोचते मन भटक गया और मैं नदी पर अपनी इस लम्बी यात्रा के बारे में सोचने लगा और तब जिम की तस्वीर मेरी आंखों के आगे आ खड़ी हुई कि किस तरह हम दिन और रात में, आंधी और तूफान में, चमकीली चांदनी और चमचमाते तारों के प्रकाश में हंसते, गाते और अनेक तरह की बातें करते हुए साथ-साथ बहते रहे हैं। कोशिश करने पर भी मुझे उसकी कोई बुराई याद नहीं आई, उलटे हर कदम पर अच्छाई ही दिखाई दी। याद आया कि किस तरह वह मेरे बदले पहरा दे दिया करता था और मुझे सोने से जगाता नहीं था; याद आया कि जब मैं कुहरे में से निकलकर वापस लौटा तो उसे कितनी खुशी हुई थी; उन कबीलों के खून-खराबे के बाद ज्यों-ज्यों कर मैं दलदल में उसके पास पहुंचा था और इसी तरह जब-जब मौकों पर मैं उसके पास लौटा तो उसे कितनी खुशी होती थी और वह मुझे कितना प्यार करता था; याद आया कि वह हर समय

जिसने कभी मेरा कुछ भी अहित नहीं किया, हबशी को भुलाकर आप जा रहा था और सोचता था कि किसीको नहीं मालूम। लेकिन व अकेला मन कुछ देख रहा था और बाद उसने मेरे अन्दर के चोर को पं मात्मा के सामने लाकर खड़ा कर ही दिया। अपनी दुष्टता का ध्यान कर के मैं बुरी तरह सहम गया। आखिर यह सोचकर मन को समझाने की कोशिश की कि मुझे तो बचपन से ही बुरा बनने की सीख दी गई है, तो मैं क्या करूं? इसमें मेरा क्या दोष? लेकिन तभी मुंह पर चांटा-सा पड़ा। कोई मेरे अन्दर पुकार-पुकारकर कह रहा था, "झूठ है, बिलकुल झूठ है। क्या रविवार का स्कूल नहीं था? तुझे वहां जाने से किसने रोका था? अगर जाता तो जरूर अच्छे गुण सीखने को मिलते और पता चल जाता कि उस हबशी के बारे में तूने जैसा आचरण किया है उस तरह का आचरण करने को हमेशा-हमेशा के लिए नरक की आग में जलना पड़ता है।

मेरे रोंगटे खड़े हो गए। फौरन प्रार्थना करने का विचार मन में आया और निश्चय किया कि हर तरह की बुरादता और दुष्कर्म छोड़कर भला बनने का प्रयत्न करूं। दूसरे ही क्षण घुटनों के बल झुक तो गया, लेकिन प्रार्थना के बोल मुंह से निकल न सके। बहुत कोशिश की, परन्तु प्रार्थना के भाव मन में उदित नहीं हो रहे थे। आखिर क्यों? समझ गया कि उससे कोई बात छिपी नहीं रह सकती, और न अपने-आप से ही कुछ छिपाया जा सकता है। समझते देर न लगी कि प्रार्थना के भाव मन में उदित क्यों नहीं हो रहे हैं! असल में मेरा मन ही साफ नहीं था; अंतःकरण पर मैल जमा हुआ था; मैं दोरुखी नीति अपनाए हुए था। ऊपर से तो पाप से पल्ला झाड़कर भला बनना चाहता था, लेकिन अंदर सबसे बड़े पाप को गले लगाए हुए था। मुंह से कहना चाहता था कि भले काम करूंगा, बुराई के पास नहीं फटकूंगा और पत्र लिखकर हबशी की मालकिन को बता दूंगा कि वह कहां है, परन्तु अतःकरण जानता था कि यह झूठ और निरी बकवास है और घट-घट की जाननेवाला परमात्मा इस बात को जानता था। और मुझे यह विश्वास हो गया कि झूठ को लेकर प्रार्थना नहीं की जा सकती—प्रार्थना के लिए अदर और बाहर सब जगह सच होना जरूरी है।

ा पहुंचकर बेडे को तो मैंने एक सुरक्षित जगह छिपा दिया और स्वयं
ाल में घुसकर सो रहा। सवेरे दिन उगने के पहले ही उठा और नाश्ता
के दूकान से खरीदे हुए नये कपडे पहने, कुछ कपड़े और दूसरी-दूसरी
जें एक गठरी में बांधी और डोंगी में बैठकर किनारे उतर गया। मैं अनु-
न से उस जगह किनारे लगा था जहां से फेल्प्स की जगह ज्यादा दूर
ी थी। अपनी गठरी को मैंने जंगल में छिपा दिया और डोंगी को पत्थ
: कर किनारे के पास ऐसी जगह डुबो दिया जहां जरूरत पड़ने पर वह
सानी से मिल सकें; यह जगह नदी किनारे पर बनी भाप से चलनेवाली
छोटी-सी आटा मिल से कोई चौथाई मील के फासले पर नीचे की
र थी।

वहां से मैं सड़क पकड़कर आगे बढ़ा। थोड़ी दूर जाने पर आटा मिल
नामपट्ट मिला, लिखा था 'फेल्प्स की आटा मिल'। वहां से दो-तीन
गज आगे जाने पर कुछ मकानात मिले। मैं चारों ओर आंखें फाड़े
ता जा रहा था, लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया, यद्यपि दिन काफी
आया था। अच्छा ही हुआ कि कोई मिला नहीं, क्योंकि मैं किसीसे
रना नहीं चाहता था, अभी तो मैं सिर्फ उस जगह और जमीन को
कर वहां का नकशा अपने दिमाग में बैठा लेना चाहता था। अपनी
ना के अनुसार मुझे फेल्प्स के यहां नदी के रास्ते से नहीं गांव की ओर
हुंचना था, जो वहां से ऊपर की ओर था। जगह-जमीन की देख-भाल
मैंने सीधे गांव का रुख किया। वहां पहुंचने पर जो पहला आदमी
ाई दिया वह और कोई नहीं ड्यूक था। वह 'शहन्शाह की नुमाइश'
ाके चिपका रहा था—वही तीन रात के तीन प्रदर्शनवाले पर्चे, जो
ोंने उस गांव में चिपकाए थे। इन बदमाशों की हिम्मत तो देखो,
मन ही मन कहा।

सहसा उसके सामने इस तरह आ खड़ा हुआ था कि अपने को छिपाने
ाहीं से भागने का मौका ही नहीं मिला। वह भी चकित रह गया और
ा, "कहो जी, कहां से आ रहे हो?" फिर कुछ मुस्कराकर उसने
उत्सुकता से पूछा, "बेड़ा कहां है? छिपाया तो अच्छी जगह है न?"
मैंने कहा, "यही तो मैं आपसे पूछने आ रहा था।"

मेरा जितना ख्याल रखना और मेरे लिए क्या कुछ करने को तैयार
हो जाता था; फिर वह घटना याद आई जब मैंने बेवकूफी बात कह
उन आदमियों को झांसा देकर उसे बचा लिया था और वह किस तरह ख
हो उठा था और कहने लगा था कि बूढ़े जिम का इस सारी दुनिया में
एक ही दोस्त है, सबसे अच्छा दोस्त हक फिन; और तब जाने क्या सो
कर मैंने गरदन घुमाई और मुझे वह कागज दिखाई दे गया।

कागज बहुत दूर नहीं था। मैंने हाथ बढ़ाकर उसे उठा लिया। व
कागज मेरे हाथों में था और मेरा तन-बदन कांप रहा था, क्योंकि मु
हमेशा के लिए फैसला करना था और मैं जानता था कि वह फैसला क
होगा। मैं एक क्षण सांस रोके सोचता रहा और तब बोला, "अच्छी ब
है; अब तो मैं नरक में ही जाना पसन्द करूंगा।" और मैंने उस कागज
फाड़कर फेंक दिया।

यह विचार जितना भयानक था उसे व्यक्त करनेवाले शब्द भी उत
ही भयानक थे, परन्तु मैं उन्हें कह चुका था। और उस कही हुई बा
को मैंने लौटाया नहीं; और अपने-आपको सुधारने की बात पर भी माथ
मारना छोड़ दिया, बल्कि उसे सदा के लिए अपने मन से निकाल फेंका
मैंने अपने-आपसे कहा कि मेरा बुरा ही बने रहना अच्छा, मैं बुरा हूं औ
बचपन से मुझे बुराइयों की सीख मिली है और भला मैं कभी हो नहीं
सकता। और इस बार अपने बुरे कामों का श्रीगणेश करूंगा। जिम क
दुबारा गुलामी के बन्धनों में से मुक्त करके और अगर इससे भी बुरा कोई
काम ध्यान में आया तो उसे करूंगा। जब बुरे ही बने रहना है तो जितने
ही ज्यादा से ज्यादा और भयंकर से भयंकर बुरे काम किए जा सकते हैं,
करते रहना चाहिए।

फिर मैं सोचने लगा कि इस बुरे काम को करने का अच्छे से अच्छा
तरीका क्या हो सकता है। मैंने कई तरह से सोचा और अंत में एक बहुत
बढ़िया तरीका मेरे ध्यान में आ गया। वहां से कुछ फासले पर, नीचे की
ओर, नदी के बीचों-बीच एक द्वीप था। तरह-तरह के वृक्षों और झाड़-
झंखाड़ के कारण उस द्वीप पर अच्छा-खासा जंगल ही उग आया था।
... होते ही मैं चुपचाप अपना बेड़ा लेकर उस द्वीप की ओर चल पड़ा।

मेरा गुलाम और मेरी दौलत था !"

"अरे, यह बात तो हमें सूझी ही नहीं। असल में हम उसे अपना हबशी समझने लगे थे; सच, हम उसे अपना ही गुलाम समझते थे। बेचारे को हमने बहुत तकलीफ दी। खैर, जब बेडा चला गया और काम कुछ बना नहीं तो 'शहन्शाह की सुनुर चाल' को आजमाने के सिवा हमारे सामने और कोई चारा नहीं रहा। उसी दिन से मैं भूखा और प्यासा उस खेल के परचे चिपकाता फिर रहा हूं। अच्छा वे दस सेण्ट कहां हैं ? लाओ, मुझे दो।"

पैसा मेरे पास बहुत था, फौरन दसों सेण्ट दे दिए और घिघियाकर कहा कि हुजूर, इस पैसे को खाने पर खर्च किया जाए, क्योंकि कुल जमा इतना ही पैसा मेरे पास है और कल से मैंने भी एक दाना मुंह में नहीं डाला है।

वह कुछ नहीं बोला; फिर थोड़ी देर बाद मेरी ओर घूमकर उसने कहा, "कहीं वह हबशी हमारा भेद तो नहीं खोल देगा ? क्या खयाल तुम्हारा ? अगर उसने ऐसी हरकत की तो खुदा कसम, कम्बख्त की खाल ही उधेड़ दूंगा।"

"भेद वह क्या खोलेगा ? भाग जो गया है ? या नहीं भागा ?"

"ऊंह ! मैंने कहा न कि उस बूढ़े बेवकूफ ने सिर्फ चालीस डालर में औने-पौने कर दिया और सारी रकम खर्च भी कर डाली; मुझे अपना हिस्सा तक नहीं दिया।"

"बेच डाला !" और मैं आंखें मलता हुआ रोने लगा, "हाय, वही तो मेरा एक मात्र गुलाम, मेरी दौलत, मेरा पैसा और पूंजी था। कहां है वह ? मुझे अपना हबशी चाहिए।"

"हबशी तो तुम्हें मिल नहीं सकता, चाहे रो-रोकर आंखें फोड़ लो, इसलिए बेहतर यही है कि चुप हो जाओ। अच्छा बताओ, कहीं तुम्हारा इरादा तो हमारा भेद खोलने का नहीं है ? मुझे यकीन तो तुम्हारा भी नहीं, मगर इतना समझ लो कि भेद खोलने की जुर्रत की तो···"वह कहते-कहते रुक गया और आंखें तरेरकर बड़े भयावने ढंग से मेरी ओर देखने लगा।

उसका ऐसा आतंकित करनेवाला रूप मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मैं थोड़ी देर सुबकता रहा और फिर बोला, "न तो मुझे किसी का भेद खोलना है और न किसीकी चुगली खानी है। मेरे पास वक्त ही कहां

उसकी भौंहों में बल पड़ गए और बोला, "मुझसे पूछने का कारण?"

मैंने कहा, "कल जब ताड़ीखाने में महाराजाधिराज की वह हालत देखी तो समझ गया कि अब घण्टों उनका नशा नहीं उतरेगा और घर तो हम उन्हें नशा उतरने पर ही ले जा सकेंगे। तब मैं समय बिताने के लिए गांव में यों ही घूमने निकल गया। इतने में एक आदमी मिला और बोला कि अगर भेड़े को नाव तक पहुंचाने और नाव को नदी के अन्दर ठेलने में मदद कर सको तो दस सेंट मिलेंगे। मैं फौरन राजी हो गया। हम दोनों भेड़े को खींचकर नाव की ओर ले चले। आदमी ने रस्सी तो मुझे थमा दी और वह खुद पीछे से उसे ढकेलने लगा। लेकिन भेड़ा बहुत ताकतवर था। उसने जोर का झटका मारा तो रस्सी मेरे हाथ से छूट गई और वह भाग खड़ा हुआ। हम दोनों उसके पीछे दौड़े। कुत्ता होता तो वह जल्दी पकड़ में आ जाता, इसलिए सब ओर उसे दौड़ाते रहे। जब वह थक गया तो अन्धेरा होते-होते हम पकड़ पाए। काम निपटाकर मैं बेड़े की तरफ चला। वहां जाकर देखा तो बेड़ा गायब। मैंने सोचा कि महाराजाधिराज और नवाब साहब जरूर किसी मुसीबत में फंस गए और उन्हें चल देना पड़ा, इसलिए मेरे हबशी को भी साथ लेते गए। एक वही हबशी तो इस सारी दुनिया में मेरी दौलत था, वह भी गया। अब इस अनजान जगह में क्या करूंगा और कैसे गुजर-बसर कर पाऊंगा—यह सोच-सोचकर मैं रोने लगा। जी भर कर रो लेने के बाद रात जंगल में सोकर गुजारी। और आप मुझी से बेड़े के बारे में पूछ रहे हैं। तो बेड़ा क्या हुआ? और मेरा जिम कहां है?"

"मुझे क्या मालूम कि बेड़ा कहां है! रहा जिम, तो उसे उस बूढ़े बेवकूफ ने चालीस डालर में बेच डाला और जब हम उसे खोजते हुए ताड़ीखाने पहुंचे तब तक वह नाव के निठल्लों से दांव लगाकर सब-कुछ हार भी चुका था। चालीस डालरों में सिर्फ उतने ही नोट उसके काम आए जितने की उसने शराब पी ली थी, बाकी तो सब नाव के लफंगे छीन ले गए। इसके बाद जब रात गए मैं घर पहुंचा और बेड़े को गायब पाया तो यही समझा कि नन्हा सा इस हमें छोड़ गया और बेड़ा चुराकर भाग गया।"

"अपने हबशी को छोड़कर भागा जाता! इस दुनिया में एक वही तो

। सिर्फ दूसरों के कहने पर एतबार कर लेते हैं। इनाम और इश्तिहार के लिए भी तुम कोई बहाना बना सकते हो और वह गधा उसपर भी यकीन कर लेगा। अब फौरन चल पड़ो और वहां जाकर जो जी में चाहे भौंकना, मगर रास्ते में जबान खोली तो तुम तुम्हारी जानो।"

मैं देहात का रुख करके वहां से तुरन्त चल पड़ा। मुड़कर पीछे तो नहीं देखा, लेकिन लग रहा था कि वह मुझे बराबर देखे जा रहा है। मैंने भी तय कर लिया कि आज उसे छकाकर ही रहूंगा। पूरे एक मील तक देहात की ओर चलता चला गया। फिर जंगल की राह दौड़ता हुआ फेल्म्स के मकान की ओर लौट आया। मैं तुरंत अपनी योजना को असली रूप देना चाहता था, क्योंकि यह डर तो था ही कि इन बदमाशों के यहां रहते कहीं जिम सारा भेद न खोल दे। मैं उनसे किसी भी तरह का झगड़ा मोल लेना नहीं चाहता था। उनको खूब देख और बरत चुका था। ऐसों से दूर रहना ही भला। उनरे बुखार को न्योतने से फायदा?

अध्याय ३२

जब मैं पहुंचा तो वहां रविवार के दिन-जैसी शांति और सन्नाटा था। उस दिन धूप में काफी तेजी थी और मौसम गर्म। नौकर सब के सब खेतों पर गए हुए थे। हवा में कीट-पतंगों और मक्खी-मच्छरों की भनभनाहट भरी हुई थी, जो वहां के वातावरण को और भी अलस, उदास और सूना बनाए दे रही थी। ऐसा लगता था मानो वहां के सारे जीवधारी मर-कर खत्म हो गए हों। अगर हवा का कोई भूला-भटका झोंका आकर पेड़ों की पत्तियों को हिलाडुला जाता तो ऐसा प्रतीत होता था मानो सदियों पुरानी प्रेतात्माएं सहसा जागकर तुम्हारे ही बारे में कानाफूसी करने लगी हों; ऐसे समय मन और भी खिन्न और उदास हो जाता था। इस तरह वहां का सारा वातावरण कुछ इस तरह का था कि जीवित आदमी भी यही चाहने लगता कि मर-मराकर सब झंझटों से मुक्ति

है। मैं तो यह मना करने, हबशी की तलाश में।"

वह कुछ नरम पड़ गया और थोड़ी देर हाथ मला सोचता रहा। सोचते-सोचते उसकी भौंहों बोला, "तुम्हें यहां तीन दिन रहना होगा। अगर हमारा भेद खोलोगे और न उस हबशी को खोजने हूं कि वह कहां मिलेगा? बोलो, मंजूर है?"

मेरे वादा करने पर उसने कहा, "उस किसान का नाम है फ़े······" और वह एकदम चुप हो गया। पहले तो वह सच ही कह रहा था, लेकिन जब चुप होकर कुछ सोचने लगा तो मैं समझ गय इसने अपना विचार बदल दिया है और अब जरूर झूठ बोलेगा। अ खुद धोखेबाज होने की वजह से वह किसीपर विश्वास नहीं कर था। वह मुझे अपने लिए खतरा समझकर तीनों दिन गांव से दूर चाहता था। शायद यही सोच-विचार कर अन्त में वह बोला, "जि खरीदने वाले आदमी का नाम है अब्राहम फास्टर—अब्राहम जी० फा वह यहां से चालीस मील अन्दर की ओर रहता है। यह जगह ल जानेवाली सड़क पर है।"

"बहुत अच्छा," मैंने कहा, "मैं पैदल चलकर तीन दिनों में वहां सकता हूं। आज ही दुपहर के बाद चल पड़ूंगा।"

"नहीं तुम अभी, इसी समय रवाना हो जाओगे; दुपहर तक की कोई जरूरत नहीं और न रास्ते में किसी से कुछ बोलना-बतिया मुंह बन्द किए चुपचाप चले जाना, सीधी सड़क। अगर किसी से कुछ कहा तो समझ लेना तुम्हारी खैर नहीं। सुन लिया?"

यही तो चाहता था और इसीलिए इतना सब नाटक किया अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए मैं स्वयं भी इन बदमाशो पकड़ से दूर और अकेला रहना चाहता था।

"अब फौरन चलते-फिरते नजर आओ!" उसने आगे कहा, "मि फास्टर से तुम अपने हबशी के बारे में जो जी चाहे कहना। कह सकते कि वह हबशी तुम्हारा है। कुछ गधे इस दुनिया में, और खास तौर पर दक्षिण में, ऐसे भी हैं जो किसी किस्म का दस्तावेजी पुरावा नहीं माग

मैं पिछवाड़े ऐश्ट्रापर के पास वाली सीढ़ियों से बागुड़ चढ़कर अंदर आया और वहां से रसोईघर की ओर चला। कुछ ही दूर आया हूंगा कि मुझे बरसे की रू-रू की आवाज सुनाई दी। उस सन्नाटे में वह आवाज बिलकुल प्रेत-ध्वनि जैसी लग रही थी। एक क्षण के लिए तो ऐसा ही प्रतीत हुआ मानो स्वयं प्रेत बनकर किसी प्रेतलोक में निकल आया हूं।

मैं उस समय बिना कुछ सोचे-विचारे भाग्य-भरोसे से बढ़ा चला जा रहा था। पहले से मैंने कोई योजना नहीं बनाई थी। अपने अनुभव से जानता हू कि यदि भगवान पर भरोसा किया जाए तो हर मौके पर वह सम्भाल लेता है और मुह से ठीक और उपयुक्त बात ही निकलती है। उसपर भरोसा करने के बाद मेरे मुह से तो हमेशा विकट से विकट प्रसंगों पर भी उपयुक्त बात ही निकली थी।

आधी दूर पहुंचा हूंगा कि एक शिकारी कुत्ता मुझपर झपटा और फिर दूसरा। मैं फौरन उनकी ओर मुह करके अपनी जगह पत्थर की मूरत की तरह चुप खड़ा हो गया। दोनों ही कुत्ते बुरी तरह भौंक रहे थे। और कोई चौथाई मिनट में तो मैं चारों ओर कुत्तों से घिर गया, एक चक्र-सा बन गया, जिसकी धुरी मैं था और अरे कोई पन्द्रह-एक कुत्ते, जो अपनी गरदनें लम्बाये और थूथनें उठाये मेरे चारों ओर खड़े थे। वे सब-के सब ओर-ओर से भौंक रहे थे और इधर-उधर से अभी और भी कुत्ते लपके-लपके चले आ रहे थे—कुछ बागुड़ फांदकर दौड़े आ रहे थे और कुछ कोनों-अंतरों में से निकल-निकलकर।

तभी एक हबशी औरत हाथ में बेलन लिए रसोईघर में से लपटकर बाहर आई और कुत्तों को डपटा, 'टाइगर ! स्काउट ! नहीं !! भागो यहां से।" और उसने दो-एक कुत्तों के सिर पर बेलन मारा। वे टुपाऊं-टुपाऊं करते वहां से भागे और दूसरे कुत्ते भी उनके साथ हुए हो गए। लेकिन दूसरे ही क्षण आधे कुत्ते लौट आए और दुम हिलाते हुए मुझे सूंघ-सूंघकर दोस्ती करने लगे। मैंने संतोष की सांस ली और सोचा कि शिकारी कुत्ता उतना खतरनाक नहीं होता।

उस हबशी औरत के पीछे दो नन्हे हबशी बच्चे भी थे—एक छोटी लड़की और एक छोटा लड़का। वे दोनों सिर्फ सनिये की कमीजें पहने हुए थे

पा जाए।

फेल्प्स का कारबार कोई बहुत लम्बा-चौड़ा नहीं था। सिर्फ एक घोड़े की कपास की खेती थी। इस तरह के छोटे खेत-खलिहान वालों की हैसियत, घर, अहाता, ज़मीन, बाड़ा और ज़र-जायदाद सब कहीं एक-जैसे ही होते हैं। फेल्प्स का दो एकड़ का बाड़ा चारों ओर लकड़ी के सरियों की बागुड़ से घिरा था। बागुड़ के आर-पार जाने के लिए नसैनीनुमा जो सीढ़ी बनी हुई थी वह कटे हुए लट्ठों की होने के कारण दूर से एक पर एक रखे विभिन्न आकार के पीपों का भ्रम पैदा करती थी। इस सीढ़ी के पगथियों से महिलाएं घोड़े पर सवार होने का काम भी लेती थीं। बाड़े की अधिकांश ज़मीन रोएं घिसे टोप अथवा गंजे के सिर जैसी चिकनी और सपाट थी, परन्तु कहीं-कहीं मुर्दार घास भी उगी हुई दिखाई दे रही थी। गोरे लोगों के रहने का मकान चीरे हुए लट्ठों का और दुहरा था। लट्ठों के बीच की दराज़ों को गारे अथवा चूने से भरकर उनपर सफेदी पोत दी गई थी। रसोईघर गोल लट्ठों का बना था और उसे मुख्य घर से जोड़ने वाला गलियारा काफी बड़ा, चौड़ा, दोनों बाजू से खुला और ऊपर से ढका हुआ था। रसोईघर के पीछे की ओर मांस एवं मछलियों को धुआं देकर सुरक्षित रखने के काम आने वाला कमरा था और वह भी लट्ठों का ही बना था। उस कमरे के दूसरी ओर हब्शियों के रहने के लिए लट्ठों की तीन छोटी कोठरियां एक कतार में बनी थीं। पिछवाड़े की ओर दूर बागुड़ से लगी हुई एक अकेली छोटी-सी झोंपड़ी थी। झोंपड़ी के दूसरी ओर कुछ फासले पर नौकरों के रहने के मकान थे। झोंपड़ी के पास ऐशहापर का पेड़ खड़ा था और वहीं साबुन के पानी में कपड़े उबालने की कड़ाही रखी थी। रसोईघर के दरवाज़े के पास एक बेंच पड़ी थी, जिसपर पानी की बाल्टी और एक तूम्बा धरा था। वहीं धूप में एक शिकारी कुत्ता सोया पड़ा था और इधर-उधर कुछ और भी शिकारी कुत्ते लेटे हुए थे। दूर एक कोने में तीनेक छायादार पेड़ थे। एक जगह ... के पास दाख और गुलमेंहदी की झाड़ियां लहरा रही थीं। बागुड़ अन्दर बगीची और तरबूज का खेत था। उनके आगे कपास के खेत शुरू हो जाते थे, और कपास के खेतों के बाद जंगल लगता था।

"अब तुम्हें खूब जी भरकर देख लू और तुम्हारी हज़ार बलैया लू ! ओह, कितने बरसों से तुम्हें देखने को तरस रही थी। आज भगवान ने मन की मुराद पूरी की जब से तुम्हारे आने की बात सुनी, यहां हम सब आखें बिछाए बैठे थे। रोज मनाती थी कि कल नहीं आए, पर आज तो जरूर आओगे। तुमने इतनी देर कहा लगा दी ? कहा बिलम गए थे ? कही बोट तो बालू में नहीं फस गया था ?"

"जी, श्रीमती जी, बोट···"

"यह 'जी' और 'श्रीमतीजी' क्या लगा रक्खा है ?" उसने मीठी झिड़की दी, "मौसी क्यो नही कहते ? मैं तुम्हारी मौसी हू, सगी मौसी; समझे ? हा, तो बोट कहा फस गया था ?"

मेरे लिए इसका जवाब देना मुश्किल हो गया। यहा यही पता नहीं था कि अगनबोट नदी मे ऊपर की तरफ से आ रहा था या नीचे की तरफ से; फिर जवाब क्या देता ? लेकिन ऐसे विकट प्रसगो पर मैं प्राय: अन्त:-प्रेरणा के अनुसार आचरण करने का अभ्यस्त था। मेरा अन्तर्बोध कह रहा था कि अगनबोट नीचे ओरलियन्स की ओर से ऊपर की तरफ आना चाहिए। लेकिन इससे भी कोई बात बनती नहीं थी, क्योंकि मुझे उन स्थानों का पता नहीं था, जहा अगनबोट रेती मे फस सकता था। या तो कोई नया नाम गढना होगा या नाम भूल जाने का बहाना बनाना पड़ेगा। तभी एक नई बात सूझ गई और मैंने तपाक से कह दिया, "देर वैसे बालू मे फंसने की वजह से नही हुई, योंही ज़रा-सा फस गए थे। असल मे तो एक सिलेण्डर का मत्था फूट गया था।"

"बाप रे, किसीको चोट तो नहीं आई ?"

"जी नही, सिर्फ एक हबशी मारा गया।"

"कुशल हुई कि किसीको चोट नही लगी, नही तो ऐसे में कई लोग बुरी तरह घायल हो जाते हैं। दो साल पहले क्रिसमस के दिनों मे तुम्हारे सिलास मौसा लल्लीरूक बोट में न्यूओरलियन्स से लौट रहे थे कि उसके एक सलेण्डर का मत्था फूट गया और बेचारा एक आदमी बुरी तरह घायल हो गया। जहा तक मुझे याद है, वह शायद बाद में अस्पताल मे मर गया कोई बैप्टिस्ट था। तुम्हारे मौसा की पहचान वाला कोई बेटनरोग मे

और अपनी मां का गाउन पकड़े खड़े थे। दोनों ही कुछ सहमे औ शरमाए हुए-से अपनी मां की ओट में से झांक-झांककर मुझे देख रहे थे जैसीकि आम तौर पर बच्चों की आदत होती है।

फिर एक गोरी महिला मकान के अन्दर से दौड़कर आती दिखाई दी। उम्र होगी करीब पैंतालीस-पचास बरस की। वह नंगे सिर थी। और अपने हाथ में चरखे की छड़ी लिए हुए थी। उसके भी पीछे-पीछे नन्हे गोरे बच्चे चले आ रहे थे और उन्होंने भी ठीक हबशी बच्चों के ही जैसा आचरण किया। वह महिला खुशी से फूली नहीं समा रही थी; इतनी अधिक प्रसन्न थी कि उसके लिए सीधे खड़े रहना भी दुश्वार हो रहा था। किलककर बोली, "आ गए, आखिर तुम आ गए!—ओहो, आगए न।"

अनायास ही मेरे मुह से निकल पड़ा, "जी हां, श्रीमती जी!"

उसने मुझे झपटकर छाती से लगा लिया और फिर मेरे दोनों हाथ थामकर जोर-जोर से झकझोरने लगी। उसकी आंखें भर आईं और आंसू की धाराएं बह चलीं। उसने कई बार मुझे छाती से लगाया, बार-बार मेरे हाथ झकझोरे और जब उसका प्रेमोद्वेग कुछ शान्त हुआ तो बोली, "मैंने तो सोचा था कि चेहरा-मुहरा तुम्हारी अपनी मां के जैसा होगा, लेकिन तुम उसको तो नहीं पड़े हो। न सही, मेरे लिए यही क्या कम है कि तुम आगए! ओह, आज मैं कितनी खुश हूं! देखकर जी जुड़ा गया। मन करता है कि आंखों में बिठा लू। अरे बच्चों, यह तुम्हारा मौसियारा भाई टाम है। इसे नमस्कार करो।"

लेकिन उन्होंने लजाकर सिर नीचा कर लिया और मुंह में उंगली डाले अपनी मां के पीछे दुबक गए।

वह आगे बोली, "लिज़े, जल्दी से इसके लिए गरमागरम नाश्ते का प्रबन्ध करो, या तुम बोट पर नाश्ता कर आए हो?"

मेरे यह कहने पर कि बोट पर नाश्ता करके आया हूं वह मेरा हाथ पकड़कर मुझे घर की ओर ले चली। बच्चे हमारे पीछे हो लिए। अन्दर जाकर उसने मुझे एक बुनी हुई कुर्सी पर बिठा दिया और आप मेरे सामने छोटे स्टूल पर बैठ गई और मेरे दोनों हाथ अपने हाथ में लेकर बोली,

पर सवाल पूछती चली जा रही थी। और एक सवाल तो वे ऐसा पूछ बैठीं कि मेरे होश ही गुम हो गए।

वे बोली, "लो, तब से मैं ही बके जा रही हू और सवाल पर सवाल पूछ रही हूं। तुम्हें तो बोलने का मौका ही नही दिया। न तुम्हीने मुझे बहिन और वहां वालों के बारे मे कुछ बताया। मेरी बारी खत्म हुई, अब बोलने की तुम्हारी बारी है। बताओ, वे सब वहा कैसे हैं और क्या कर रहे हैं और बहिन ने मेरे लिए क्या कहलवाया है ? जल्दी से सब कुछ बताते चलो।"

मैं क्या बताता, खाक ! बुरी तरह घबरा गया। ऐसा बुरा कभी नही फसा था। अभी तक तो भाग्य साथ देता रहा था, परन्तु अब गाड़ी पूरी तरह दलदल मे फंस गई थी। ऐसे समय कुछ भी कहना गा-बजाकर मुसीबत को न्योता देना था। सोचा, कुशल इसीमे है कि बनावटी हथियार डालकर हार मान ली जाए। मैं एक बार फिर 'साच को आच नहीं,की परीक्षा लेने के लिए मुह खोलने जा ही रहा था कि श्रीमती फेल्प्स ने मुझे फुर्ती से पकड़कर बिस्तरे की ओट मे कर दिया और बोली, "वे आ रहे हैं ! तुम छिन-भर दुबककर बिस्तरे के पीछे बैठ जाओ। हा, ठीक है, अब तुम्हें कोई उधर से देख नहीं सकता। अपनी तरफ से जरा भी इशारा मत करना, हा देखो, उन्हें कैसा छकाती हूं ! बच्चो, तुम भी मत कहना।"

बराबर फसता ही चला जा रहा था, लेकिन चिन्ता करना भी व्यर्थ ही था। उस समय सिवा दुबके बैठे रहने के और कुछ कर भी तो नहीं सकता था। यह सोचकर मन को समझाया कि जब जैसी पड़ेगी निपटेंगे। चुप मारकर बैठ गया कि जब वह इशारा करें खड़ा हो जाऊं।

अन्दर प्रवेश करते समय वृद्ध सज्जन की जरा-सी झलक दिखाई दी, फिर वे पलंग की ओट हो गए। श्रीमती फेल्प्स यह पूछती हुई उनकी ओर लपकी, "क्यों, आ गया ?"

"नहीं !" उनके पति ने जवाब दिया।

"हे भगवान !" श्रीमती फेल्प्स ने कहा, "कहा अटक गया ? उसे कुछ हो तो नहीं गया ?"

"कुछ कहा नही जा सकता।" मिस्टर फेल्प्स बोले, "तुम जानो कि

[illegible] हैं, जो उन लोगों को [illegible] था। हाँ, वह ठीक से [illegible], [illegible] न सका, वह ही गया। पीने पर मर्द तो और [illegible] था। [illegible] [illegible] से बचाने की बहुत कोशिश की, मगर [illegible], पर इसे बचाया न जा सका। हाँ, यहाँ [illegible] था। [illegible] [illegible] हो गया था। जिन्होंने देखा वे कहते हैं कि देखने पर [illegible] था। बेचारा बच्चे होने की उम्मीद लिए हुए ही मर गया। [illegible] के लिए रोज ही दफ्तर जाते हैं। अब भी [illegible] हैं, मुश्किल से [illegible] पर हुआ होगा, बस, [illegible] ही होंगे। तुम्हें रास्ते में कहीं दिखे नहीं ? बूढ़े-से आदमी हैं और……"

"ना मौसी, मैंने तो किसी को नहीं देखा। अगल [illegible] किनारे [illegible] दिन निकल आया था। मैंने अपना असबाब तो बरसात की नाव में छोड़ा और शहर का चक्कर लगाने के लिए निकल पड़ा। फिर थोड़ा देहात को भी देखा। असल में मैं यहाँ उतने सवेरे आना नहीं चाहता था। देहात में निकल जाने से समय भी कट गया; और मैं पिछवाड़े के रास्ते से यहाँ आ भी गया।"

"भगवान जिसको सहेज आए हो ?"

"किसीको भी नहीं।"

"हाय राम, कोई चुरा ले गया तो ?"

"ऐसा छिपाकर रख आया हूं मौसी, कि किसीको ढूंढे भी नहीं मिल सकता।"

"और तुम्हें इतने सवेरे बोट पर नाश्ता कहां से मिल गया ?"

मौसी का यह सवाल बहुत टेढ़ा था। अपने पांव तले की जमीन खिसकती नजर आने लगी। लेकिन फिर भी मैंने कहा, "कप्तान साहब ने मुझे खड़ा देख लिया तो बोले, 'आओ, उतरने से पहले कुछ खा-पी लो।' और वे मुझे अपने साथ ऊपर अफसरों की मेस में ले गए और खुद उन्होंने मुझे बैठकर कलेवा करवाया।"

मेरा जी घबड़ाने लगा था और मैं ठीक से सुन नहीं पा रहा था। बार-बार मेरा ध्यान बच्चों की ओर चला जाता था। मैं उन्हें एक ओर ले जाकर पता लगा लेना चाहता था कि मैं कौन हूं। लेकिन श्रीमती फेल्प्स इसका मौका ही नहीं दे रही थीं; वे बात में से बात निकालकर सवाल

गया। और कुछ कहने या करने का मौका भी नहीं मिला। बूढ़े ने लपककर मेरा हाथ पकड़ लिया था और जोर-जोर से हिलाए जा रहा था। बुढ़िया सारे कमरे में हंसती और खुशी की किलकारियां लगाती नाच रही थी। और थोड़ी ही देर में दोनों ने मिलकर सिड और मेरी और बाकी सब लोगों के बारे में सवालों की झड़ी लगा दी थी।

यदि वे प्रसन्न थे तो अपनी उस समय की अवस्था के लिए मैं किस शब्द का प्रयोग करूं ? मैं तो जैसे मरकर फिर जी उठा था। इस घर में मैं क्या हूं, यह जानकर अब मेरी प्रसन्नता का वारापार न था। उसके बाद तो मैं पूरे दो घण्टे तक उन्हें अपने परिवार—मेरा मतलब है सायर-परिवार—के बारे में बतलाता रहा, यहां तक कि लगातार बोलते-बोलते मेरा मुंह ही दुखने लग गया था। अगर और कोई बयान करने लगता तो उतना सब सायरों की पूरी छह पीढ़ियों का किस्सा हो जाता। फिर मैंने उन्हें बड़े विस्तार से यह भी बतलाया कि किस तरह व्हाइट रिवर (श्वेत नदी) के मुहाने पर हमारे बोट के एक सिलिण्डर का मत्था फूट गया और उसे दुरुस्त करने में पूरे तीन दिन लग गए। मेरी यह गप भी खूब जमी और रंग खूब गाढ़ा हो गया, क्योंकि वे बेचारे तो जानते नहीं थे कि सिलिण्डर के फूटे ढक्कन को ठीक करने में तीन दिन लगते हैं या तीन घण्टे। अगर मैं सिलिण्डर की जगह बोल्ट का मत्था कह देता तो वे उसे भी सच मान लेते।

अब एक ही आशंका थी, जो मुझे खाए जा रही थी। टाम सायर के रूप में तो मैं यहां निश्चिन्त और निरापद हो गया था, लेकिन जब भी किसी स्टीमबोट की छुक-छुक करती आवाज सुनाई देती, मेरी छाती धड़कने लग जाती और यह डर आरे की तरह सामने लगता कि कहीं टाम सायर आ गया और मेरे इशारा करने से पहले ही उसने मेरा नाम लेकर पुकार दिया तो क्या होगा! चुप बैठे चिन्ता करते रहने से तो कोई फायदा हो नहीं सकता था! मैंने फौरन इस सम्बन्ध में कुछ करने का निश्चय किया। क्यों न सामने सड़क पर जाकर उसे रोकूं और सारी बात बता दूं? मन ही मन यह फैसला कर मैंने मौसा-मौसी से कहा कि जरा शहर तक जाकर अपना सामान ले आता हूं। मौसा जी फौरन साथ चलने को तैयार

चिन्ता तो मुझे भी होने लगी है।"

"तुम चिन्ता की बात करते हो और मैं बावली हुई जा रही हूं। वह जरूर आया है। कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि वह तुम्हें सड़क चलता भी नहीं दिखाई दिया ? मेरा मन कहता है कि जरूर ऐसा ही हुआ है।"

"कैसी बात करती हो सैली ! वह मुझे सड़क चलता दिखाई न देता ? इधर आ रहा होता तो जरूर दिखाई दे जाता।"

"कहीं भटक तो नहीं गया ? हाय राम, अब बहिन को क्या मुंह दिखाऊंगी। लोग क्या कहेंगे ! वह आया जरूर है, पर तुमने देखा नहीं। वह···"

"मैं तो वैसे ही परेशान हूं और तुम ऊल-जलूल बककर और परेशान कर रही हो। समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करूं। मेरी तो अक्ल ही काम नहीं कर रही है। बुरी तरह घबरा गया हू। लेकिन इतना जरूर कह सकता हू कि वह आया नहीं है। आया होता तो मुझे कहीं न कहीं जरूर दिखाई दे जाता। कोई सुई नहीं है कि आंखों के सामने से निकल जाए और मैं देख न सकू ! ओह सैली, जरूर कुछ हो गया है, या तो कोई कहीं फंस गया है या फिर कोई दुर्घटना···हे भगवान, क्या करूं ?"

"सिलास, सिलास ! मेरी सुनो। जरा सड़क की ओर तो देखो। वह दूर, मुझे कोई आता-सा दिखाई दे रहा है।"

बूढ़ा बेचारा फौरन उछलकर पलंग के सिरहाने वाली खिड़की में जा खड़ा हुआ। श्रीमती फैल्प्स यही तो चाहती थी। उन्हें मौका मिल गया। फुर्ती से पलंग के पैताने की ओर झुककर मुझे बाहर खींच निकाला। अब वे एक विजयी योद्धा की तरह खुशी से भरी, मुस्कराती खड़ी थीं और मैं उनकी बगल में सिकुड़ा, सकुचाता और पसीने-पसीने होता हुआ।

मिस्टर फैल्प्सने अन्दर की ओर गर्दन घुमाई तो आँखें फाड़े मेरी ओर [illegible]

ाटगी सवालो की झड़ी लगा दी। वह उसी समय सब कुछ जान लेना
ाहता था; इतने बड़े साहसिक और रहस्यपूर्ण काम की तो उसने शायद
ल्पना भी नही की थी। लेकिन मैंने कहा कि अभी तो रहने दो, बाद में
ारे-धीरे सब बता दूगा। यह कहकर मैंने उसके गाड़ीवान को थोड़ी देर
कने के लिए कहा और उसे एक ओर ले जाकर अपनी मुसीबत बयान की
ौर पूछा कि अब क्या करना ठीक होगा ?

उसने कहा, "ज़रा एक मिनट चुपचाप सोच लेने दो।" और थोड़ी
र सोचने के बाद वह बोला, "लो, तरकीब निकल आई। तुम मेरा यह
क लेकर लौट जाओ और वहा ऐसा दिखावा करना मानो तुम्हारा ही
ा। लेकिन लौटने मे इतना वक्त ज़रूर ले लेना जितना शहर जाकर वापस
ाने मे लगता है। तब तक मैं शहर जाकर फिर लौटता हू और तुम्हारे
र पहुंचने के कोई आधे-पौने घण्टे बाद मैं भी पहुच जाऊगा। शुरू में
म ऐसा दिखावा करना मानो मुझे नहीं पहचानते।

मैंने कहा, "ठीक है, यह बात तो हुई, मगर एक बात और है, उसे भी
न लो उस बात को सिर्फ मैं ही जानता हू। यहां एक हबशी है जिसे मैं
ाज़ाद करना चाहता हू; उसका नाम जिम है, अपने गाव की मिस वाटसन
ा हबशी जिम !"

वह बोला, "क्या कह रहे हो ? जिम तो······" और वह अपनी बात
ूरी किए बिना ही कुछ सोचने लगा।

मैंने कहा "समझ गया कि तुम क्या कहना चाहते हो ? यही न कि
स तरह का काम बहुत बुरा और गन्दा है। है तो हुआ करे, मैं ही कौन
च्छा और भला हू ? कान खोलकर सुन लो, मैं गन्दा और बुरा आदमी हू
ौर उस हबशी को भगाकर रहूगा। इस मामले में तुम्हें चुप रहना होगा।
होगे न ?"

उसकी आंखें चमक उठी। बोला, "उसे भगाने में मैं तुम्हारी मदद
रूगा।"

मुझे अपने कानो पर विश्वास न हुआ। ऐसी चौंकाने वाली बात तो
ैने किसी गोरे के मुह से आज तक नही सुनी थी। मेरे मन में टाम सायर
ा सम्मान सहसा बहुत अधिक बढ़ गया। लेकिन उसके बारे पर विश्वास

हो गए। मैंने उन्हें यह कह कर टाला कि आप आराम कीजिए, पहुंचे थके हुए हैं. मैं थोड़ा गाड़ी दूर चला लेता हूं। अकेला ही चला जा... आप चिन्ता न कीजिए।

अध्याय ३३

इस तरह मैं घोड़ागाड़ी से शहर के लिए रवाना हुआ। अभी आगे दूर भी नहीं पहुंचा था कि सामने से एक और घोड़ागाड़ी आती दिखाई दी। उसमें टाम सायर चला आ रहा था; हां, वही था। मैं रुककर उसका इन्तज़ार करने लगा। जब वह पास आ गया तो मैंने कहा, 'रुको' और वह रुक गया। मुझे देखकर उसका मुंह ट्रंक के ढक्कन की तरह खुला का खुला रह गया। फिर उसने दो-तीन बार इस तरह थूक निगला मानो गला बुरी तरह सूख गया हो और तब बोला, "मैंने तो जाने-अनजाने कभी तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाया; इस बात को तुम भी जानते हो। फिर क्यों मरने के बाद भी सामने आकर मेरा रास्ता रोक रहे हो?"

मैंने कहा, "न मैं मरा था, न मरकर रास्ता रोकने आया हूं।"

मेरी आवाज़ सुनी तो कुछ उसके जी में जी आया, परन्तु आश्वस्त वह फिर भी न हुआ। बोला, "देखो, मैंने तुम्हें कभी धोखा नहीं दिया फिर क्यों झूठ बोल रहे हो? सच बताओ, क्या तुम भूत नहीं हो?"

"कसमिया कहता हूं कि मैं भूत नहीं हूं।" मैंने कहा।

"अच्छा-वाह, मैं—मैं, तुम कहते हो तो मान लेता हूं, लेकिन यह बात कुछ मेरी समझ में नहीं आ रही है। अच्छा यह बताओ कि क्या तुम्हारा खून नहीं हुआ था?"

"नहीं, बिलकुल नहीं। वह तो मैंने चाल चली थी। अगर अब भी विश्वास न आता हो तो यहां आओ और मुझे छूकर इत्मीनान कर लो।"

मुझे छूने के बाद उसे विश्वास हो गया कि मैं भूत नहीं, जीता-जागता ... फिट हूं। फिर तो उसकी खुशी का क्या पूछना! उसने एक-

सीढ़ियों के आगे आकर रुकी। सबसे पहले सेली मौसी ने ही खिड़की की राह उसे देखा, क्योंकि वहां से वह सीढ़ी मुश्किल से पचासेक गज के फासले पर होगी।

वे बोली, "देखो तो कोई आया है। भला कौन हो सकता है? जरूर कोई अजनबी मालूम पड़ता है। जिम्मी (उनके एक बच्चे का नाम), जरा दौड़े जाकर लिज़े से कह तो दो कि एक आदमी का खाना और बढ़ा दे।"

सब के सब आगे वाले दरवाज़े की ओर लपके, क्योंकि अजनबी यहां रोज़-रोज़ नहीं आया करते; छठे-छमाहे कभी कोई आ निकलता है तो यहां वालों के लिए उत्सव ही हो जाता है। अब टाम बागुड़ की सीढ़ी चढ़कर मकान की ओर चला आ रहा था। जिस घोड़ागाड़ी में वह बैठकर आया था वह सड़क पर शहर की ओर लौटने के लिए मुड़ रही थी। हम सब दरवाज़े में खड़े देख रहे थे। टाम बाज़ार के सिले-सिलाये नये कपड़े पहने था और उसकी सज-धज को देखने वाले दर्शक भी थे, फिर उस दिखावा-पसन्द को और क्या चाहिए। ऐसे समय तो वह और भी सीना निकालकर चलता था; यों भी वह सिमट-सिकुड़कर चलने वाला लड़का नहीं था। कोई और होता तो अजनबियों के बाड़े में डरी हुई भेड़ की तरह सहमे कदम रखता हुआ चलता, लेकिन वह निडर भेड़े की तरह सधे कदम रखता शान से निश्चिन्त चला आ रहा था। हमारे पास आकर उसने बड़े ही ललित ढंग से सिर का टोप उठाकर अभिवादन किया, मानो वह टोप न होकर तितलियों के करंडिये का ढक्कन हो और उसे यह डर सता रहा हो कि कहीं तितलियां उड़ न जाएं।

फिर उसने कहा, "यह जगह मिस्टर आर्चीबाल्ड निकोलस की ही है न?"

"नहीं, मेरे बच्चे!" बुढ़ऊ ने कहा, "बड़े अफसोस की बात है कि तुम्हारा गाड़ीवान तुम्हें गलत जगह उतार गया; उसने तुम्हें धोखा दिया। निकोलस की जगह तो यहां से कोई तीनेक मील दूर है। आओ आओ!"

टाम ने मुड़कर पीछे की ओर देखा और बोला, "उसे तो गए देर भी हो गई—दिखाई नहीं दे रहा।"

"हां, वह तो चला गया; लेकिन कोई बात नहीं। तुम अन्दर आ जाओ

नहीं हो रहा था। होता भी कैसे? टाम सायर भला किस हबशी को
से छुड़ाने में मदद करेगा!

मैंने कहा, "क्यों मज़ाक करते हो?"

"मज़ाक करने वाले की ऐसी-तैसी!" उसने जवाब दिया।

"अच्छी बात है!" मैं बोला, "अगर मज़ाक नहीं कर रहे हो तो बात को गांठ बांध लो कि जब भी किसी भागे हुए हबशी का ज़िक्र जाए तो तुम चुप रहोगे; और मैं भी चुप रहूंगा—न तुम इस बारे में जानते हो और न मैं। ठीक है?"

"हां, ठीक है।" उसने कहा।

फिर हमने ट्रंक उसकी घोड़ागाड़ी मे से उठाकर मेरी घोड़ा गाड़ी रखा और वह अपने रास्ते चला गया और मैं अपने रास्ते लौट आया। इतनी गलती मुझसे ज़रूर हो गई कि घोड़े को धीरे-धीरे चलाने की बा याद न रही। मारे खुशी के उसे सरपट दौड़ाता हुआ जल्दी घर पहुंच गया।

बुड्ढे दरवाज़े पर खड़े थे। बोले, "अरे, कमाल कर दिया! किसे मालूम था कि यह घोड़ी इतनी तेज़ चलने वाली होगी? सच समझकर हमने तो कभी इसकी चाल भी नहीं देखी। और देखो, पसीना तक नहीं आया, बिलकुल ही नहीं। अब तो मैं इसे सौ डालर में भी न बेचूं। और पहले पन्द्रह डालर में भी खुशी से दे देता, यही समझता कि बहुत दाम मिल गया।"

उन्होंने बस इतना ही कहा, और कुछ नहीं। बेचारे बड़े सीधे, नेक और भोले आदमी थे। उनके भले होने का कारण भी था। असल में वे निरे किसान ही नहीं धर्मोपदेशक भी थे। खुद अपने खर्चे से उन्होंने अपनी खेती-बाड़ी के पास ही लट्ठों का एक छोटा-सा गिरजा घर बनवाया था, जहां प्रार्थना-प्रवचन के साथ-साथ मदरसा भी लगता था। और तारीफ यह कि उपदेश मुफ्त देते थे, कभी किसीसे इस काम का मेहनताना नहीं लिया। उपदेशक बहुत बढ़िया थे और चाहते तो शुल्क रख सकते थे और लोग खुशी से दे भी देते। मगर नहीं, इसे धर्म और ईश्वर का काम समझकर निःशुल्क करते थे, उत्तर दक्षिण के किसानों में उनके जैसे कई धर्मोपदेशक थे, जो इस तरह चुपचाप प्रभु और मानवता की सेवा कर रहे थे।

कोई आधे घंटे बाद टाम की घोड़ागाड़ी फाटक की सामनेवाली

ऐसा कह रही हैं !"

"लो, सुनो, इस कमीने की बात ! कहता है, इसको ताज्जुब हो रहा है ! अपने को जाने क्या समझ रखा है ! मैं पूछती हूं, तूने क्या देखकर मेरा चुम्मा लिया ?"

"जी, देखा तो कुछ भी नहीं। और न मैंने किसी बुरे इरादे से आपका चूमा।" उसने बड़ी विनम्रता से जवाब दिया और बोला, "मैंने तो यही सोचा था कि आपको अच्छा लगेगा।"

"ओ रे जनमजले !" उन्होंने परसे की छड़ी उठा ली और शायद दो-चार जड़ भी देतीं, मगर किसी तरह जब्त कर गईं और बोलीं, "यह तूने काहे पर से सोच लिया कि मुझे अच्छा लगेगा, ए ?"

"जी, सोचा तो काहे पर से भी नहीं, लेकिन उन—उन्होंने—कहा था कि आपको मेरा चूमना अच्छा लगेगा।"

"चुप रह शैतान ! 'उन्होंने' यानी किसने कहा था ? कौन है वे बदतमीज ? नाम बता उनके।"

"सभीने तो कहा था, जी हां, सभीने ?"

मारे गुस्से के उनका बुरा हाल हो गया। आंखों से अंगारे बरसने लगे, और अंगुलियां इस तरह ऐंठने लगीं कि मुंह ही नोच लेंगी। तड़पकर बोलीं, "मैं पूछती हूं, कौन हैं वे 'सभी' ? क्या नाम हैं उनके ? बता, नहीं तो कच्चा ही चबा जाऊंगी ! तूने समझ क्या रखा है ?"

वह घबराया-सा अपनी कुर्सी पर उठकर खड़ा हो गया और टोप को हाथों में इधर-उधर नचाता हुआ व्यथित स्वर में बोला, "मुझे इस बात का सख्त अफसोस है कि आप नाराज हो गईं। यह तो सोचा भी नहीं था कि जरा-सी बात का इस तरह बतंगड़ बन जाएगा। वहां तो सभी कह रहे थे, जी हां, सब के सब कि उन्हें चूमना; और यह भी कहा था कि आपको अच्छा लगेगा। जी हां, सभीने यही कहा था। मगर आप नाराज हो गईं। मुझे इस बात का अफसोस है श्रीमतीजी। मैं बाज आया, अब ऐसा कभी नहीं करूंगा; जी, कभी भी नहीं, आपसे सच कह रहा हूं।"

"अब तुम क्या करोगे। हिम्मत ही न होगी !"

"जी, बिलकुल न होगी। अब कभी नहीं करूंगा, विश्वास मानिए,

और हमारे साथ खाना खाओ। फिर हम अपनी घोड़ागाड़ी में तुम्हें निकोलस के यहां पहुंचा देंगे।"

"जी, आपको तकलीफ क्यों दूं ? नहीं-नहीं, रहने दीजिए। कोई खास दूर नहीं है, मैं पैदल चला जाऊंगा।"

"वाह, हमारे रहते तुम पैदल चलकर जाओगे ? हम कभी न जाने देंगे। यहां दक्षिण में ऐसा रिवाज नहीं। यहां तो घर आए हर आदमी की आवभगत की जाती है। आओ, अन्दर आ जाओ।"

"हां बेटे, आ जाओ।" सैली मौसी ने कहा, "हमें काहे की तकलीफ! उलटे खुशी ही होगी। आकर थोड़ा सुस्ता लो। कुछ खा-पी लो। धूल-भरे रास्ते में कहां तीन मील पैदल जाओगे ? बहुत दूर है। और हम जाने देंगे तब न जाओगे ! जैसे ही तुम आते दिखाई दिए मैंने तुम्हारा खाना भी लगाने के लिए कह दिया, इसलिए अब तो खाना ही पड़ेगा। हमें निराश मत करो। अन्दर आ जाओ और सुस्ता लो; इसे गैरों का नहीं अपना ही घर समझो।"

टाम ने बड़े ही शालीन ढंग से झुककर धन्यवाद दिया और उनकी बात मानकर अन्दर चला आया। भीतर आकर उसने अपने को ओहियो राज्य के हिक्सविले गांव का निवासी और अपना नाम विलियम थामसन बताया और एक बार फिर झुककर नमस्कार किया।

उसके बाद वह लगा हिक्सविले गांव और वहां के निवासियों के बारे में बताने, जो शुरू से अखीर तक सब का सब मनगढ़न्त था। लेकिन वह बोलता ही चला गया। इधर मेरे प्राण सूख रहे थे और समझ में नहीं आता था कि उसकी यह बकवास इस मुसीबत में से मुझे कैसे उबार सकेगी। तभी वह बातें करता हुआ उठा, सैली मौसी के पास पहुंचा और उनका मुंह चूमकर आराम से अपनी जगह आ बैठा और फिर पहले की ही तरह बातें करने लगा।

उधर मौसी मारे गुस्से के अंगारा हो गईं। तड़पकर उठीं और उलटे हाथ से मुंह पोंछती हुई चिल्ला पड़ीं, "हरामी पिल्ला ! इसका हिसाब तो देखो !"

वह बुरा मान गया और बोला, "बड़े ताज्जुब की बात है कि आप

ने अकेले उसीके आने की बात लिखी थी। तेरे आने की तो कोई बात
बताई ही नहीं।"
बताती कहा से ?" उसने कहा, मेरे आने की कोई बात ही नही थी,
राम को भेजने की बात तय पाई थी। लेकिन मैंने ऐन वक्त पर ऐसी
कड़ी कि अम्मां को हार मानकर मुझे भी साथ भेजना पड़ा। रास्ते
दोनों ने सोचा कि मौसी को चलकर खूब छकाना चाहिए। इसी-
म पहले आ गया और मैं बाद मे अजनबी बनकर आया। मगर
बड़ी गलती हो गई। पिटते-पिटते बचा ! कहना पड़ेगा कि अजन-
लिए यह कोई अच्छी जगह नही और न अजनबियों से पेश आने
रा ढग ही अच्छा है।"
धर आ, अभी सिखाती हू अजनबियों से पेश आने का ढग ! पाजी
! सिड, तेरी तो खूब कुटम्मस करनी चाहिए। ऐसा चकमा दिया
राम ही जानता है ! मगर खैर, कोई बात नहीं, तू आ गया, मेरा
वसूल हो गया। तेरे आने की खुशी मे ऐसे हजार चकमे और हजार
भी सह सकती हू। ओह, कैसा नाटक किया है इस लौंडे ने! जब
र चुम्मा लिया तो मैं सकते मे आ गई और फिर गुस्सा भी खूब

ा हम लोगो ने मकान और रसोईघर के बीचवाले कुशादा गलि-
ठकर खाया। तरह-तरह के और ढेर सारे पदार्थ थे, इतने ज्यादा
रिवार मिलकर खाने बैठें तब भी खतम न हों। और हर चीज
और ताजा। हमारे यहा की तरह नही कि रात-भर तलघर को
मे रखा बासी और ठण्डा गोश्त सबेरे परोस दिया, जो न दांतो से
के और न चबाया ही जा सके और जिसे राक्षसों की तरह खाना
स मौसा ने मेज पर बैठकर काफी देर प्रार्थना की और भगवान
के लम्बे-लम्बे वाक्य अर्पित करते रहे। जितनी मात्रा मे और
ह का खाना मेज पर लगा था उसे देखते हुए मौसा की प्रार्थना
ही कहा जा सकता। और खुशी की बात यह कि उनकी लम्बी
ाना ठण्डा भी नही हुआ, जैसा कि आम तौर पर ऐसे अवसरों
ा करता है।

भीड़ शोर मचाती, टीन के बाजे बजाती हो-हा करती आती दिखाई दी। कुछ लोग हाथ में मशालें भी लिए हुए थे। वे इतनी तेज़ी से चले आ रहे थे कि अगर हम लोग उछलकर एक ओर न हो जाते तो शायद कुचल ही जाते। जब भीड़ पास से गुज़री तो मैंने देखा कि हदूक और राजा भीड़ से घिरे रस्सियों से बंधे घिसटते चले आ रहे थे। उनका सारा बदन कोलतार से पुता था और ऊपर से पंख चिपका दिए गए थे। इस हुलिए में वे आदमी कम और डरावने गुड्डे ज़्यादा लग रहे थे। देखकर मन दुखित हो गया और उनपर दया भी आने लगी। उनके खिलाफ़ जितना गुस्सा, नाराज़ी और विरोध का भाव था वह एकदम शान्त हो गया। बड़ा ही दारुण, हृदय को दहलाने वाला दृश्य था। हाय, मनुष्य मनुष्य के प्रति कितना निर्मम और क्रूर हो जाता है!

हमें पहुंचने में बहुत देर हो गई थी। अब कुछ भी नहीं किया जा सकता था। स्थिति पूरी तरह हाथ से निकल गई थी। हमने पीछे रह जाने वाले आदमियों से पूछा तो पता चला कि लोगों को असलियत तो मालूम हो गई थी, परन्तु किसीने जाहिर नहीं होने दिया। सारा गांव कुतूहलवश देखने के लिए आया। राजा के मंच पर आने तक लोग-बाग सब्र किए बैठे रहे, लेकिन जैसे ही उसने उछल-कूद शुरू की किसी एक ने इशारा कर दिया और सारे दर्शक उनपर टूट पड़े।

हम सिर झुकाए घर की ओर लौटे। अब मेरी चाल में न वैसी तेज़ी थी और न मन में वैसी उमंग। खुद अपनी ही निगाहों में गिर गया था और अन्तरात्मा बुरी तरह धिक्कार रही थी। यद्यपि जो कुछ हुआ उसमें मेरा तनिक भी दोष नहीं था। लेकिन हमेशा ऐसा ही होता है, अन्तरात्मा जब किस बात के लिए धिक्कारने लगेगी, कुछ कहा नहीं जा सकता। वैसे सच में तो आदमी की अन्तरात्मा सर्वदा विवेकशून्य होती है, और यही कारण है कि कोई अच्छा काम करे या बुरा, उसका विचार किए बिना ही वह सबको भी आदमी के पीछे पड़ जाती है और बेचैन कर कोई न कोई मुसीबत खड़ी कर देती है। ऐसी अन्तरात्मा के कोई भी किसी मेरी चुने का कुछ अनुभव करता हूं। यह अन्तरात्मा तो आदमी के अन्दर भी अपनी जगह बैठ जाती है और उसपर के कामों को हमेशा परखती रहती है; मुझे इस इस

फिर शाम तक तरह-तरह की बातें होती रहीं और मैं और टाम हर बात को ध्यान से सुनते रहे कि कहीं किसी भागे हुए हबशी का जिक्र तो नहीं निकलता है। लेकिन उन्होंने इस सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कहा और न हमने अपनी ओर से पूछा, क्योंकि पूछते डर लगता था।

अन्त में जब रात में खाना खाने बैठे तो घर के एक छोटे लड़के ने कहा, "पिताजी, मैं, टाम और सिड भैया खेल देखने जा सकते हैं ?"

"नहीं !" बुड्ढ़े ने कहा, "मेरे खयाल में तो खेल होगा ही नहीं, और होता तब भी मैं तुम लोगों को जाने न देता; क्योंकि उस भागे हुए हबशी ने मुझे और बरटन को उन लोगों की धोखाधड़ी की बात बता दी है। बरटन कह रहा था कि वह शहर वालों को इसकी खबर कर देगा और उसने जरूर कर भी दिया होगा, इसलिए मेरा खयाल है कि इस बार उन लोगों की दाल गलेगी नहीं और शायद अब तक तो शहर वालों ने उन्हें मार पीट कर भगा भी दिया होगा।"

तो हो नहीं सकते। यानी नतीजा यह निकला कि वह कैदी और कोई न जिम ही है। बस-बस, पता चल गया। जासूसी करके हमने यह तो मालूम कर लिया कि जिम कहां है, दूसरे किसी तरीके से तो कभी पता न चलता। अब तुम उसे छुड़ाने की कोई तरकीब सोचो और मैं भी सोचता हूं। दोनों में जो अच्छी होगी हम उसी पर अमल करेंगे।"

यह सोचकर मैं चकित रह गया कि इस लड़के ने क्या दिमाग पाया है! अगर मुझे टाम सायर के जैसा दिमाग मिला होता तो न ड्यूक बनने की सोचता, न अगनबोट का मिस्त्री और न ही सरकस का जोकर—उन सबका दिमाग टाम सायर के आगे पानी भरता था। मैं उनके कहे अनुसार जिम को छुड़ाने की तरकीब सोचने तो लगा, लेकिन कोई बढ़िया तरकीब सुझाई नहीं दी, जानता था कि बढ़िया तरकीब टाम के ही दिमाग से निकलेगी।

तभी टाम ने कहा, "सोच लिया ?"

मैंने कहा, "हां।"

"अच्छा, बताओ।" वह बोला।

"मेरी योजना यह है," मैंने कहा, "कि सबसे पहले तो हम पता लगा लें कि वह कैदी जिम ही है। उसके बाद मेरी नाव को कल रात नदी के पेटे में से निकालकर टापू पर चले आएं और बेड़े को यहां ले आएं। फिर जैसे ही अंधेरी रातें शुरू हों बुड्ढे के सो जाने पर उनकी बिरजिस की जेब में से चाभी चुरा लें और जिम के साथ बेड़े पर सवार होकर भाग चलें—पिछली बार की तरह इस बार भी दिन में छिपना और रात में चलना ठीक रहेगा। बोलो, यह तरकीब काम दे देगी न ?"

"काम तो जरूर दे देगी, बात भी बन जाएगी, मगर मजा नहीं आएगा। तुमने तरकीब सोची तो सही, लेकिन एकदम सीधी-सादी। जो आसानी से पार उतर जाए वह तरकीब ही क्या ? योजना वह जिसमें कुछ खतरा और कुछ टंटा-बखेड़ा हो। यह तो गुलाम को अगवा करना नहीं सीधी गाय को दुहना हो गया। लोगों को बातें करने का भी तो कुछ मसाला मिलना चाहिए। इसमें तो सनसनी के नाम पर साबुन के कारखाने में सेंध लगाने-जैसी बात भी नहीं।"

न मैंने अपनी योजना के पक्ष में कुछ कहा न अपना बचाव किया;

सिवा बुराई के कोई भी अच्छाई दिखाई नहीं देती। टाम सायर का भी यही कहना है।

अध्याय ३४

हमने बातचीत बन्द कर दी और सोच-विचार में पड़ गए। थोड़ी देर बाद टाम बोला, "धत्तेरे की ! हम भी कैसे गधे हैं हक, जो इतनी-सी बात समझ में नहीं आई ! लो, मुझे मालूम भी हो गया कि जिम कहां है।"

"सच ? अरे नहीं ! अच्छा बताओ, कहां है ?"

"ऐश-हापर के पासवाली वह झोंपड़ी है न, उसमें। पूछो, क्यों ? इसलिए कि जब हम खाना खा रहे थे तो तुमने किसी हबशी को खाना लेकर उधर जाते देखा था या नहीं ?"

"हां, देखा तो था।"

"क्या खयाल है, वह खाना किसके लिए था ?"

"कुत्ते के लिए।"

"पहले तो मैंने भी यही समझा, लेकिन वह कुत्ते के लिए नहीं था।"

"क्यों ?"

"उसमें तरबूज भी था।"

"हां, था तो सही; मैंने भी देखा था। लेकिन यह खयाल ही नहीं आया कि कुत्ता तरबूज नहीं खाता। हद हो गई टाम ! इसे कहते हैं देखती आंखों अन्धा होना। मैंने तो देखकर भी नहीं देखा।"

"इतना ही नहीं, वह हबशी दरवाजे का ताला खोलकर अन्दर गया और बाहर आकर उसने फिर ताला लगा दिया। और जब हम खाना खाकर उठे तो उसने मौसा को एक चाभी लाकर दी—मेरा खयाल है कि यह वही चाभी थी। तरबूज से पता चलता है कि वहां आदमी होगा ... मालूम पड़ता है कि वह आदमी कैदी होना चाहिए, और ... पर, जहां सब लोग इतने भले और दयालु हों दो कैदी

करना चाहिए ?"

"नहीं, ऐसी बात तो नहीं है।"

"क्या मैंने यह नहीं कहा था कि हबशी को छुड़ाने में तुम्हारी मदद करूंगा ?"

"कहा तो था।"

"फिर ?"

इस 'फिर' का मेरे पास कोई जवाब नहीं था। मैं कुछ न बोला, और वह भी इस सम्बन्ध में और कुछ न बोला। कुछ कहना भी बेकार था, क्योंकि जब वह किसी काम को करने पर आ जाता तो करके ही रहता था। लेकिन यह मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि वह इस निकृष्ट काम में हाथ बटाने के लिए तैयार कैसे हो गया ? मगर जो बात समझ में न आए उसके लिए परेशान होने से भी क्या फायदा ! इसलिए मैंने चिन्ता करना छोड़ दिया। जब वह इस काम को करने पर उतारू हो ही गया, तो मैं क्या कर सकता था !

जब हम घर पहुंचे तो वहां अन्दर-बाहर घुप्प अंधेरा और सन्नाटा था। इसलिए हम उस झोंपड़ी का मुआयना करने चले गए। यह देखने के लिए कि शिकारी कुत्ते क्या करते हैं, हम बाड़े में होकर उधर जाने लगे। लेकिन कुत्ते हमें पहचानते थे, इसलिए उन्होंने सिर्फ उतना ही शोर मचाया जितना आम तौर पर देहाती कुत्ते रात में किसीको आते देखकर मचाते हैं। वहां पहुंचकर हमने झोंपड़ी की सामने और दोनों बाजू वाली दीवारों को ध्यान से देखा, और एक बाजू की दीवार में, जिसकी जानकारी मुझे मालूम नहीं थी—वह उत्तर बाजू की दीवार थी—काफी ऊंचे पर हमें एक चौकोर खिड़की दिखाई दी, जिसपर बीच में एक मजबूत पटिया जड़ा हुआ था।

मैंने कहा, "रास्ता तो बना-बनाया है। अगर हम पटिये को उखाड़ दें तो जिम इसमें से सरककर बाहर आ सकता है।"

टाम ने कहा, "हम जिम, यह तो बाएं हाथ का खेल हुआ। इससे ज्यादा आसान और कौन-सी बात हुई; हबशी को छुड़ाना न हुआ जैसे किसीको खेल हो गया, न कोई झंझट, न कोई मुसीबत ! उफ़, कुछ ऐसा रास्ता निकालना होगा, जिसमें कुछ बेचैनी और हैरानी हो।"

पहले ही जानता था कि टाम यही कहेगा। और यह भी खूब जानता था कि उसकी योजना में ऐसे नुक्स नहीं हुआ करते।

इस योजना में भी नहीं था। जब उसने बताया तो मुझे मानना पड़ा कि उसकी योजना बहुत बढ़िया है और मेरी पन्द्रह तो क्या बीस योजनाएं भी उसका मुकाबला नहीं कर सकतीं। उसकी योजना से जिम आज़ाद तो होता ही था, साथ ही हम सब मारे भी जा सकते थे। मैंने फौरन उसकी योजना को मंजूर कर लिया और कहा कि अब तुरंत इस पर काम शुरू कर देना चाहिए। योजना क्या थी यह यहां बताने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि अन्त तक वह इसी रूप में रहने वाली नहीं थी। मैं जानता था कि वह हर कदम पर उसमें परिवर्तन करता और उसे सजाता रहेगा ताकि ज़्यादा से ज़्यादा रोमांचक और सनसनीखेज हो सके। यह उसकी आदत थी और इस योजना के साथ भी उसने ठीक ऐसा ही किया।

इतनी बात तो तय थी कि टाम सायर ईमानदारी से जिम को छुड़ाने में मदद करना चाहता था। और यही बात मेरे लिए दुःख देने वाली हो गई। वह प्रतिष्ठित घराने का लड़का था और अच्छे ढंग से उसका पालन पोषण हुआ था, इस तरह के निकृष्ट काम से उसके चरित्र पर आंच आ सकती थी, घर पर उसके परिवार वालों का नाम और यश कलंकित हो सकता था; वह अक्ल का तेज़ और समझदार था, नासमझ और बेवकूफ नहीं; स्वभाव से भी वह बुरा और कमीना नहीं, भला और दयालु था। लेकिन फिर भी वह एक ऐसा निकृष्ट काम करने जा रहा था जिससे लोगों को उसपर उंगली उठाने का मौका मिल जाता और वह [illegible] उसके घर वालों की निन्दा होने लगती। उसका यह आचरण — [illegible] [illegible], भलाई और सामाजिक [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] — [illegible] [illegible] नहीं आ रहा था। [illegible]

अन्तिम बार तो उसका खोपड़ा फूटते-फूटते बचा। उसने सोचा कि यह रास्ता शायद छोड़ ही देना होगा, लेकिन थोड़ा आराम करके जो एक बार फिर भाग्य आज़माया तो सफलता मिल गई।

सवेरे हम जल्दी, दिन निकलते ही उठ गए और हबशियों की कोठरियों की ओर चले गए। हम कुत्तों को परखा लेना और जिम को—यदि वह जिम ही था तो—खाना खिलाने वाले हबशी से दोस्ती कर लेना चाहते थे। हबशी लोग नाश्ता करके खेतों के लिए रवाना हो ही रहे थे। जिम का खाना ले जाने वाला हबशी टिन के एक तसले में रोटी और गोश्त और खाने की दूसरी चीज़ें भर रहा था। जैसे ही दूसरे हबशी चलने को हुए मकान से चाभी आ गई।

यह हबशी भले स्वभाव का हंसमुख आदमी था। उसने अपने सिर के सारे बाल छोटे-छोटे गुच्छों में धागे से अलग-अलग बांध रखे थे। यह डायनों को अपने से दूर रखने का टोटका था। उसका कहना था कि आजकल रात में बहुत-सी डायनें उसके सिर पर चढ़ आती हैं और बहुत सताती हैं—कभी तरह-तरह की अजीब शक्लें दिखाती हैं और कभी तरह-तरह की अजीबोगरीब आवाज़ें सुनवाती हैं। उसने यह भी कहा कि डायनों की इतनी लम्बी बाधा तो उसे अपनी जान में कभी व्यापी नहीं थी। अपने कष्टों का वर्णन करने में वह ऐसा मगन हो गया कि हाथ का काम सफा भूल ही गया और यह भी ध्यान न रहा कि कहीं जाना है।

अन्त में टाम को कहना पड़ा, "यह खाना क्या कुत्तों को खिलाने ले जा रहे हो?"

उसके काले-कलूटे चेहरे पर मुस्कान इस तरह फैल गई मानो पनीले कीचड़ में ईंट फेंक दी हो, और तब बोला, "हांव सिड शाब, एक कुतरा, बड़ी भी अजब-गजब का कुतरा है। आप चलेगा असकू देखने कू?"

"हां, चलेंगे।"

मैंने टाम को ठूसा मारकर चुपके से कहा, "यह क्या करते हो! दिन-दहाड़े वहां जा रहे हो! हमारी योजना तो यह नहीं थी।"

"पहले ज़रूर नहीं थी, मगर अब हो गई।"

मुझे उसकी यह बात ज़रा भी अच्छी नहीं लगी, लेकिन फिर भी मन

क्यों न हम उसे आरी से छेद-काटकर निकाल लाएं, जैसा मैंने अपनी हत्या के समय किया था ?"

"हां, यह कुछ ठीक रहेगा।" उसने कहा, "यह काम थोड़ा मुश्किल भी है और सनसनीखेज भी। लेकिन हम इससे भी मुश्किल, पेचीदा और लम्बा तरीका सोच सकते हैं। ऐसी कोई जल्दी भी नहीं है। अभी तो झोंपड़ी के मुआयने का काम जारी रखो।"

पिछवाड़े की ओर झोपड़ी और बागड़ के बीच की जगह में झोंपड़ी की ओलतियों से जुड़ा हुआ, चारों ओर से बन्द, पटरों का एक सायबान बना था। लम्बा तो वह झोपड़ी के बराबर था, परन्तु चौड़ाई में कम, सिर्फ छह फुट होगा। दरवाजा उसका दक्षिण वाले सिरे पर था और उसमें ताला पड़ा था। टाम साबुन वाले कड़ाहे के पास से ढूंढ़-खोजकर लोहे का वह हत्था उठा लाया जिससे कड़ाहे का ढकना उठाने का काम लिया जाता था। इस हत्थे से उसने आंट लगाकर एक तरफ से जो कुण्डा उठाया तो ताला लगे रहने के बावजूद जंजीर निकल आई और हम दरवाजा खोलकर भीतर चले गए। अन्दर जाकर हमने दरवाजा बन्द कर लिया और दिया-सलाई जलाई। तीली के उजाले में हमने देखा कि सायबान का झोंपड़ी से कोई सम्बन्ध नहीं था, वह सिर्फ उसकी दीवाल के सहारे खड़ा कर लिया गया था और वहां फर्श भी बना हुआ नहीं था। उसके अन्दर कुछ पुराने जंग लगे कुदाल, फावड़े और गैंते तथा एक टूटा हल रखा था। तीली के बुझने के साथ ही हम बाहर निकल आए और कुण्डे को उसकी जगह लगा दिया तो ताले सहित सांकल फिर लग गई।

टाम ने खुश होकर कहा, "हम सुरंग खोदकर उसे बाहर निकाल लाएंगे; बस हफ्ते-भर का काम समझो।"

वहां से हम घर की ओर लौटे। मैं तो पिछवाड़े के दरवाजे से अन्दर चला गया—वे लोग कुण्डी नहीं लगाते थे, हिरन के चमड़े का फन्दा खींचने से किवाड़ें खुल जाते थे—लेकिन टाम सायर को इतना सीधा-सादा ढंग पसन्द नहीं था। उसका हर काम रोमांचक और सनसनीखेज होना चाहिए; इसलिए उसने बिजली के छड़ की राह ऊपर आने का फैसला किया। उसने तीन बार कोशिश की और तीनों बार आधी दूर आकर फिसल गया।

अब टाम खाना लाने वाले हबशी की ओर मुड़ा, जिसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थी और उससे सख्ती से बोला, "तुम्हारे दिमाग में कुछ खलल तो नहीं आ गया है ? क्या सोचकर कह दिया कि कोई बोला था ?"

"ओय शाब, फिर तो जरूर डायनों का फितूर होवेगा। वो तो मेरी जान ले के ही पिंड छोड़ेंगी। वर हमेशा मेरे पीछू पड़ी रेहती हैं; जाने क्यू मेरे जान की गाहक हो रही हैं ! जब देखो शाब, तभी मेरे कूं डरा देती हैं ! ओय शाब, आप इस बात कूं किसी कूं केहना मत। बडे मालिक सिलास शाब कू मालूम होवेगा तो शाब मेरे कूं नाराज होवेंगे और डाटेंगे। उनका केहना है के डायन-फायन कुछ नहीं होती। मैं उनकूं कैसे समझाऊ शाब ! अगर अबी वो या होते तो खुद-ब-खुद सुन लेते, फिर क्या कहते ? फिर तो उनकूं मानना ही पड़ता न, फिर कैसे इनकारी होते शाब ? हो नहीं सकते थे। लेकिन वर हमेशा ऐसा ही होता है शाब। सब लोग ऐसे ही हैं और सब लोग ऐसा ही करते हैं; खुद-ब-खुद अपने से मालूम कोई नहीं करता और मामले की तह तक कोई नहीं पोचता। और मैं अपनी युगनी केहना हूं शाब तो किसीको यकीन नहीं होता।"

टाम ने उसे एक छोटा सिक्का थमा दिया और आश्वासन दिया कि हम यह बात किसीसे नहीं कहेंगे; और उसने उससे यह भी कह दिया कि इस पैसे से कुछ धागा और खरीदकर अपने बाल बांध लेना। फिर उसने जिम की ओर देखकर कहा "पता नहीं सिलास मौसा इस हबशी को क्या सजा देंगे ! शायद फासी टाग देंगे। अगर मैं पकड़ पाता तो ऐसे अहसान-फरामोश भगोड़े हबशी गुलाम को जरूर फासी लगा देता।"

इस बीच खाना देने वाला हबशी दरवाजे की ओर यह देखने के लिए चला गया था कि उसे जो सिक्का मिला है वह खोटा तो नहीं है। टाम ने इस अवसर का उपयोग कर लिया और जिम के पास खिसककर धीरे से कहा, "किसीसे कहना मत कि तुम हमें पहचानते हो। और रात में खोदने की आवाज सुनाई दे तो समझ जाना कि हम हैं। हम तुम्हें यहा से छुड़ाने की कोशिश में लगे हैं।"

जिम को सिर्फ इतना समय मिला कि हम दोनों के हाथ पकड़कर दबा सके, क्योंकि इतने मे तो वह हबशी लौट आया था। हमने उससे कहा कि

मारकर जाना पड़ा। अन्दर इतना अंधेरा था कि सहसा कुछ दिखाई नहीं दिया। लेकिन जिम वहां था, क्योंकि दूसरे ही क्षण उसकी आवाज सुनाई दी, "ओ हो, हक ! और यह कौन, मिस्टर टाम तो नहीं ?"

मैं जानता था कि यह होगा और हुआ भी वही। समझ में नहीं आता कि अब क्या करना चाहिए; और समझ में आ भी जाता तो कुछ कर नहीं सकता था, क्योंकि तभी खाना लानेवाला हबशी बीच में कूद पड़ा और बोला, "ओय साब, ये आप लोगों कू पेचानता है ?"

अब तक आंखें अंधेरे की अभ्यस्त हो गई थीं और हमें वहां की हर चीज साफ-साफ दिखाई देने लगी थी। टाम ने अपनी आंखें उस हबशी पर गड़ा दीं और आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा, फिर बोला, 'कौन हमें पहचानता है ?"

"ये ई भाग के आनेवाला हबशी और कौन !"

"मेरे खयाल में तो यह नहीं पहचानता; लेकिन यह बात तुम्हारे दिमाग में आई कैसे ?"

"आई कैसे ? ओय साब, अभी तो इसने आपका नाम लेके बोला था।"

टाम-जैसे कुछ परेशान हो गया और बोला, "बड़ी अजीब बात है। कौन बोला ? कब बोला ? क्या बोला ?' फिर मेरी ओर मुड़कर उसने बड़ी शान्ति के साथ पूछा, "तुमने किसी को बोलते सुना ?"

इस प्रश्न का सिर्फ एक ही जवाब हो सकता था और वही मैंने दिया, 'नहीं तो, मैंने तो किसी को भी बोलते नहीं सुना।

फिर उसने मुड़कर जिम को इस तरह देखा मानो बिलकुल ही नहीं पहचानता और जीवन में पहली बार देख रहा हो और तब उसने पूछा, [illegible] कौन है ?'

गया है वह सारा तरीका बहुत ही मुर्खतापूर्ण और असुरक्षित है। हक, अब हमारे सामने सिवा इसके कोई चारा नहीं रहा कि सब तरह की कठिनाइयां स्वयं पैदा करें। जो स्थिति अभी है उसे ज्यादा से ज्यादा पेचीदा बनाना होगा। सब तरह के खतरों और कठिनाइयों के बीच से कैदी को छुड़ा ले जाने में जो मजा और गौरव है वह इन हालतों में कभी हो नहीं सकता। असल में तो उसे कैद में रखने वालों का कर्तव्य था कि वे हमारे लिए पग-पग पर मुसीबतें और खतरे पैदा करते, उन्होंने नहीं किया तो अब हमीं को अपने दिमाग से सोच-विचार कर तरह तरह के संकटों और कठिनाइयों का आविष्कार करना पड़ेगा। लालटेन की ही बात लो। हम इस नतीजे पर पहुंचे जो एक तरह से अपने मन को समझाना ही है कि लालटेन के उजाले में काम करना खतरे से खाली नहीं। लेकिन जो स्थिति है उसमें तुम लालटेन तो क्या मशालें जलाकर भी काम कर सकते हो—मैं दावे के साथ कहता हूं कि चाहो तो जरूर कर सकते हो! और अच्छी याद आई अब तो आरी बनाने के लिए भी कोई चीज तलाशनी होगी।"

"आरी का क्या होगा?"

"होगा क्या? जिम की खटिया के पाए को काटना नहीं होगा, जिससे उसकी जंजीर निकाली जा सके?"

"अभी तो तुम कह रहे थे कि पाया उठा दो और जंजीर निकल जाएगी।"

"हक फिन, तुम तो बिलकुल नासमझी की बात करते हो। कैदी को छुड़ाने चले हो और सोचते हो नन्हें बच्चे की तरह। क्या तुमने कोई किताब पढ़ी ही नहीं! बैरन ट्रेंक, कासानोवा[1] बेन वेनुटो चेल्लीनी या हेनरी चतुर्थ आदि वीरों के साहसिक कार्यों के बारे में क्या तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं? कहीं भी किसी कैदी को खटिया का पाया उठाकर आजाद किया गया है? पाया उठाने का ढंग नासमझ बूढ़ी औरतों का है, वीरों-बहादुरों का नहीं। और पाया उठाकर कैदी आजाद किया भी नहीं जा सकता। कैद से भागनेवाले जितने भी महान पुरुष हुए हैं, वे सब खटिया का पाया काट कर

---

१. कासानोवा द' सिंगाल, ज्योवान्नी जाक्कोमो, इतालवी—साहसी लेखक (१७२५-१७९८)

अगर चाहोगे तो हम फिर तुम्हारे साथ यहां आ जाएंगे। वह खुश होकर बोला कि साब जरूर से आना। अंधेरे में डायनें बहोत दिक करती हैं। आप साथ रहोगे तो उनका दांव इतना नहीं चल सकेगा साब। आप जरूर से आना।

अध्याय ३५

अभी नाश्ते में करीब घण्टे-भर की देर थी, इसलिए हम जंगल में निकल गए, क्योंकि टाम रात में खुदाई करते समय उजाले के लिए कुछ ऐसी लकड़ियां जमा कर लेना चाहता था जो सड़ जाने पर फासफोरस-विकिरण के कारण अंधेरे में जगमगाने लगती हैं। लालटेन तो हम जला नहीं सकते थे, क्योंकि उसका प्रकाश अधिक होने के कारण दिखाई दे जाता और हम मुसीबत में पड़ जाते। थोड़ी ही देर में हमने काफी सड़ी लकड़ियां जमा कर ली और उन्हें घास में छिपा दिया।

इसके बाद हम आराम करने लगे और तब टाम ने अपना असन्तोष व्यक्त करते हुए कहा, "सब कुछ इतना सहज और सीधा है कि बहुत सिर खपाने पर भी कोई मुश्किल योजना बन नहीं पाती। एक तो पहरे वाले नहीं हैं, जिन्हें हम कुछ खिला-पिला कर बेहोश कर दें। कम से कम एक पहरे वाला तो होना ही चाहिए। कुत्ता भी नहीं है कि उसे सुलाने का उपाय किया जा सके। फिर जिम के सिर्फ एक पांव में दस फुट लम्बी बेड़ी पड़ी है, जिसका एक सिरा उसकी खटिया के पाए से फिरोया हुआ है, बस, पाया उठा दो और जंजीर निकल आएगी। और हमारे सिलास मौसा हैं ऐसा आदमी, हर किसी पर विश्वास कर लेते हैं; और इसीलिए चाभी थमा देते हैं उस निरे मसखरी हबशी को, यहां तक कि उसके साथ किसी को रखवाली के लिए भी नहीं भेजते। अगर वह दस फुट लम्बी जंजीर पांव में न पड़ी होती तो जिम कभी का खिड़की के रास्ते निकल भागता, लेकिन उतनी लम्बी जंजीर के साथ जाए भी कहां! बेड़ी को जिस तरह रखा

"जरूरत है या नहीं, तुम क्या जानो। कई विशेषज्ञ और अधिकारी पुरुष ऐसा भी करते हैं। जब बेड़ी खुलती या निकलती नहीं तो वे अपना हाथ काटकर भाग जाते हैं। और जब हाथ काटने का उल्लेख है तो पाँव क्यों नहीं काटा जा सकता? बल्कि पाँव काटना तो और भी अच्छा रहेगा। लेकिन हम ऐसा कुछ नहीं करेंगे, क्योंकि एक तो जरूरी नहीं है और दूसरे जिम हबशी है, इसलिए वह यूरोप के रीति-रिवाजों और पद्धतियों को समझ न सकेगा। मगर रस्सियों की सीढ़ी तो उसे भी चाहिए ही। हम चादरें फाड़कर उसके लिए एक रस्सियों वाली सीढ़ी बना देंगे और किसी चीज़ में छिपाकर उसके पास भेज देंगे। कैदियों के पास चीजें इसी तरह भेजी जाती हैं। अक्सर तो गुझिया या कचौड़ी या खाने की ऐसी ही किसी चीज़ में रखकर भेजी जाती है। हम भी रस्सियों वाली सीढ़ी को गुझिया में रखकर भेज देंगे।"

"यह तुम कैसी बात करते हो टाम सायर?" मैंने कहा, 'जिम रस्सियों वाली सीढ़ी का क्या करेगा? वह तो उसके किसी काम नहीं आएगी।"

"काम क्यों नहीं आएगी? तुम क्या जानो! बगैर जाने-समझे बीच में मत बोला करो हक। रस्सीवाली सीढ़ी उसे चाहिए और ज़रूर चाहिए। किताबों में जितने भी कैदी भागे हैं रस्सीवाली सीढ़ी सभी के पास थी।"

"जिम उस सीढ़ी को करेगा क्या?"

"क्या करेगा? अपने बिस्तर में छिपा देगा। और लोगों ने भी यही किया और वह भी यही करेगा। हक, तुम कोई भी काम तरीके से करना नहीं चाहते, सब कुछ ऊटपटांग और बचकाने ढंग से ही करोगे। मान लिया कि रस्सियों वाली सीढ़ी उसके काम नहीं आएगी, मगर उसके बिस्तर में तो रहेगी; उसके भाग जाने के बाद वह एक निशानी होगी और पीछा करनेवालों को कुछ निशानी, कोई सुराग मिलना चाहिए या नहीं? क्या तुम चाहते हो कि कोई सुराग छूटे ही नहीं! यह तो अच्छी बात नहीं। सब काम ढंग से और शास्त्रों के अनुसार होना चाहिए, बेढंगेपन से नहीं।"

"अच्छी बात है"; मैंने कहा, "अगर नियम है कि रस्सियोंवाली सीढ़ी होनी चाहिए तो अवश्य हो, मुझे कोई एतराज नहीं। मैं नियम के विरुद्ध कोई काम नहीं करना चाहता। जिम को भी ज़रूर एक सीढ़ी दे दी जाए।

हीं भागे हैं। महापुरुषों की यही रीति रही है। बड़ी सफाई से खटिया का पाया काटकर वे उसे उसी हालत में छोड़ देंगे; बुरादा जितना होगा सब निगल जाएंगे ताकि किसीको पता न चले; पाया जहां से कटा होगा वहां ग्रीज़ में धूल मिलाकर चुपड़ देंगे, जिससे तेज निगाहों वाले कर्मचारी को भी दिखाई न दे कि पाया कटा हुआ है, वह यही समझता रहे कि पाया बिलकुल साबुत है। फिर जिस रात भागना हुआ पाये को लात मारी और उसके दो टुकड़े हो गए, जंजीर निकल आई और भागने का रास्ता खुल गया। अब तो सिर्फ अपनी रस्सियोंवाली सीढ़ी को कोट के कंगूरों से लटकाकर उतरना भर रह गया। बस खटा-खट उतर गए, मगर खाई में गिर पड़े और एक टांग टूट गई। टांग इसलिए टूटेगी कि रस्सी की उन्नीस फुट की सीढ़ी भी छोटी पड़ेगी। मगर कोई चिन्ता की बात नहीं, नीचे तुम्हारे घोड़े, घुड़सवार नौकर-चाकर और साथी-सरदार तैयार खड़े हैं। वे फौरन उठाकर घोड़े पर बिठा देते हैं और तुम अपनी लेंगुडोक या नवार[1] की गद्दी या जो भी उसका नाम हो, उसकी दिशा में अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाने लगते हो! इतने सनसनीखेज ढंग से भागा करते हैं कैदी! मेरे विचार में तो इस झोंपड़ी के चारों ओर एक खाई भी होनी चाहिए। कोई बात नहीं, भागनेवाली रात हम यहां खाई खोद देंगे।"

मैंने कहा, "खाई की क्या जरूरत है? उसे तो हम निकालेंगे सुरंग की राह!"

लेकिन उसने मेरी बात सुनी ही नहीं। वह शायद मेरे अस्तित्व और दूसरी सभी बातों को भूल गया था। देर तक हाथ पर ठुड्डी रखे सोचता रहा और फिर बोला, "नहीं, यह ठीक नहीं रहेगा; और न इतना जरूरी ही है।"

"क्या जरूरी नहीं है?" मैंने पूछा।

"जिम का पांव काटना।" उसने कहा।

"बाप रे!" मैं बोला, "उसका पांव क्यों काटोगे? पांव काटने की तो कोई जरूरत दिखाई नहीं देती।"

---

१. स्पेन के अन्तर्गत नवारा प्रान्त में स्थित एक छोटा-सा प्राचीन शहर, जिसपर फ्रांस का अधिकार हुआ करता था।

की दुम में से पंख खींचकर कलम बना लें। वे अपनी कलमें हमेशा
की समई (शमादान) या इसी तरह की धातु की वस्तु से, जो
नों से हाथ लग जाती है, बनाते हैं। और एक कलम बनाने में इन्हें
, बल्कि कई बार तो महीनों लग जाते हैं, क्योंकि रोज थोड़ा-थोड़ा
ल पर घिसकर कलम बनानी होती है। यदि मिल जाए तो भी वे हंस-
की कलम का उपयोग नहीं करते, क्योंकि ऐसा नियम नहीं है।"

"अच्छी बात है। मगर स्याही का क्या होगा?"

"अधिकतर तो लोहे के मोरचे में अपने आंसू मिलाकर उसीसे स्याही
काम निकालते हैं, लेकिन ऐसा प्रायः औरतें और मामूली लोग ही
हैं। उच्च कोटि के और राज कुलोत्पन्न बीर हमेशा अपने खून की
ी से लिखते हैं। जिम को भी अपने खून से स्याही का काम लेना
ए। वैसे अगर उसको कोई छोटा-मोटा और मामूली सा रहस्यपूर्ण
र बाहर वालों के नाम भेजना हो या लोगों को यह बताना चाहे कि
कहां कैद करके रखा गया है तो टिन की तश्तरियों की पेंदों पर किसी
ली चीज से लिखकर खिड़की के बाहर फेंक सकता है। आयरन मास्क[1]
हमेशा ऐसा ही करता था। यह तरीका है भी बहुत बढ़िया।

"लेकिन जिम के पास तो टिन की प्लेटें हैं नहीं। उसे खाना तसले में
खिलाया जाता है।"

"तो क्या हुआ; हम प्लेटें उसे पहुंचा देंगे।"

"उसकी लिखी प्लेटों को कोई पढ़ेगा भी?"

"सवाल पढ़ने का नहीं हक फिन, लिखने का है। उसका काम सिर्फ
इतना है कि प्लेट पर लिखे और बाहर फेंक दे। इसमें पढ़ने की बात ही
कहां है? कैदियों की लिखी प्लेटें और दूसरा भी बहुत-सा जो वे लिखते
हैं सब का सब पढ़ा थोड़े ही जाता है?"

---

१. यूरोपीय साहसिक कथाओं का एक अज्ञातनामा फ्रांसिसी बन्दी जिसकी सही नामोपता आज तक मालूम नहीं हो सका। वह कई वर्षों तक अनेक कारागृहों में बन्दी रहा और अन्त में १७०३ के युद्ध में मारा गया। अपने सम्पूर्ण बन्दी-जीवन में वह काले मखमल का मुखौटा पहने रहा जो उसके सिर के पीछे लोहे की स्प्रिंगों और कब्ज़े के मतानुसार ताले से ढंका रहता था। —अनुवादक

मगर टाम सायर, एक बात है, अगर हमने चादर फाड़कर सी… तो सैली मौसी जीता न छोड़ेंगी। तो ऐसा क्यों न करें, हिक्री… की सीढ़ी बना दें। उसमें चादर-रस्सी कुछ न लगेगा और कि… का नुकसान भी न होगा; बिना हर्र-फिटकरी के चोखा रंग आ… उसे भी किसी गुझिया-बुझिया में रखकर भेजा जा सकता है और… छिपाकर रखा जा सकता है। जहां तक जिम का सवाल है, उसे ऐ… का कोई अनुभव नहीं, इसलिए जैसी रस्सियों की वैसी हिक्री… की सीढ़ियां—उसके लिए कोई फर्क नहीं पड़ेगा, क्यों?"

"ओह, हक फिन! कितनी बार कहना पड़ेगा कि जिन बा… तुम जानते नहीं उनमें टांग मत अड़ाया करो। अगर मैं तुम्हारी जग… और किसी बात को न जानता तो चुप ही रहता। किसी कैदी… हिक्री की छाल की बनी सीढ़ी से भागने की बात मैंने तो कभी किसी… नहीं पढ़ी होगी। सोचो तो, भाड़ी कैसी और हिक्री की छाल की… कितना बुरा मालूम पड़ता है!"

"अच्छा टाम, जैसा तुमको ठीक लगे करो। लेकिन मेरी इतनी… अगर मानती होगी कि चादर इस अजब तमाशे की [illegible] नहीं कर… रस्सी पर सूखती हुई चादर उतार' न लूंगा।"

वह मान गया लेकिन तभी उसे एक बात और सूझ गई और…

"एक कमीज भी ले लेना।"

"कमीज क्या होगी टाम?"

"जिम उस पर अपने कारनामों का ब्यौरा लिखेगा।"

"अच्छा! फिर लिखेगा! जिम को लिखना आता ही कहां है?"

[illegible]

[illegible]

नहीं और इतना फर्क तुम्हे समझना चाहिए था। अगर
छिपाकर जिस को भेजने की जरूरत होती, ताकि वह कर्मच
सके तो फिर कोई बात नही थी, तुम मजे से तरबूज चु
उसकी इस बात पर मैंने कोई विवाद नहीं किया, परन्तु
विभेद के साथ बन्दी का प्रतिनिधित्व करने की बात मुझे
नहीं लगी, खासकर ऐसे समय जबकि तरबूज पके हुए थे औ
से उड़ाया जा सकता था।

हां, तो मैं चादर और कमीज की बात कर रहा था।
अपने-अपने काम-धन्धे में लग गए और बाड़ा खाली हो गय
थैले को उठाकर सायबान की तरफ चला और मैं कुछ दूर
रता रहा। वह थैले को सायबान में रखकर बाहर आ गया
कड़ियों के ढेर पर बैठकर बातें करने लगे।

वह बोला, "और तो सब इन्तजाम हो गया है, अब मिल
गहिए, लेकिन वे भी मिल जाएंगे।"

"औजार?" मैंने कहा।

"हां, औजार!"

"औजार क्या होंगे?" मैंने पूछा।

"खोदेंगे काहे से? दांत और नाखूनों से तो खोदने से

"वे पुराने-पुराने कुदालें, फावड़े और पैने रखे तो हैं
न एक हब्शी को छुड़ाने के लिए सुरंग भी नहीं खोद स
हा।

उसने मुझे ऐसी हिकारत की निगाह से देखा कि और
ने लग जाता; फिर बोला, "हक फिन, तुम्हारी अक्ल की
ने तो आज तक नहीं सुना कि कोई बंदी कुदालें, फावड़े
ज़ारों से सुरंग खोदकर भागा हो। सोचने की बात है। कि
लेंगी कहां? और मिल भी जाएं तो इस तरह खोदने में
क्या? फिर तो उसे चाबी ही क्यों नहीं दे देनी चाहिए?
ने और चलता बने। अजी जनाब, कुदाल-फावड़ा बन्दी होने
ा राजाधिराज को भी नहीं दिया जाता; और कहते हैं

"फिर प्लेटें खराब करने से फायदा ?"

"होती रहें खराब, कैदी की तो वे हैं नहीं।"

"न सही कैदी की, दूसरों की तो हैं; और कोई चीज
की जाए ?"

"दूसरों की ही सही, पर कैदी का इससे क्या वास्ता"

उसकी बात अधूरी ही रह गई, क्योंकि नाश्ते का बिगुल
हम फौरन मकान की ओर चल पड़े।

उसी दिन सवेरे मैंने तनी पर सूख रही एक चादर औ
'उधार' ले लिए। मैंने दोनों चीजें एक पुराने थैले में रख
वहीं मिल गया था। फिर हम नीचे जाकर जगमगाने वाली
आए और उन्हें भी उसी थैले में रख दिया। मैंने तनी पर से
कमीज उठाने को 'उधार लेना' कहा है, क्योंकि पिताजी भी
थे। लेकिन टाम का कहना था कि यह उधार लेना नहीं चोरी क
इस सम्बन्ध में उसका तर्क यह था कि हम कैदियों का प्रतिनिधि
थे और कैदी इस बात की चिन्ता नहीं करते कि उन्हें कौन-सी चीज
तरह मिलती है; वे तो जिस चीज की जरूरत होती है उसे बस से
कोई उन्हें दोष नहीं देता टाम ने यह भी कहा कि यदि कैदी आजा
लिए किसी चीज को चुराता है तो उसे दोष नहीं लगता। यह उसका
नहीं, अधिकार है, इसी तरह जब तक हम कैदी का प्रतिनिधित्व कर
जेल से छूटने के लिए हमें यहां की किसी भी चीज की जरूरत हुई,
चुराने का हमें पूरा अधिकार है। आगे उसने यह कहा कि मगर कै
बिना किसी चीज को चुराना बहुत बुरी बात है और केवल नीच आ
चोरी-चमारी करते हैं। इस तरह हमने तय कर लिया कि जिस कि
चीज की जरूरत होगी हम उसे चुरा लेंगे। लेकिन एक दिन जब मैं
सियों के खेत में से तरबूज चुराकर खा लिया तो वह बहुत नाराज
बोला, "जाओ फौरन जाकर उन्हें पैसा दो, कारण बताने की जरूरत न
और मुझे उसके आदेश का पालन करना पड़ा। उसने कहा कि हे
उस चीज को चुराने से था जिसकी हमें जरूरत हो। मैं यह कहने पर कि

नहीं और इतना फर्क तुम्हें समझना चाहिए था। अगर तरबूज में चाकू छिपाकर जिम को भेजने की जरूरत होती, ताकि वह कर्मचारी का खून कर सके तो फिर कोई बात नहीं थी, तुम मजे से तरबूज चुरा सकते थे।" उसकी इस बात पर मैंने कोई विवाद नहीं किया, परन्तु इतने सारे भेद-विभेद के साथ बन्दी का प्रतिनिधित्व करने की बात मुझे जरा भी ठीक नहीं लगी, खासकर ऐसे समय जबकि तरबूज पके हुए थे और उन्हें आसानी से उड़ाया जा सकता था।

हां, तो मैं चादर और कमीज की बात कर रहा था। जब सब लोग अपने-अपने काम-धन्धे में लग गए और बाड़ा खाली हो गया तो टाम उस थैले को उठाकर सायबान की तरफ चला और मैं कुछ दूर खड़ा निगरानी करता रहा। वह थैले को सायबान में रखकर बाहर आ गया और तब हम लकड़ियों के ढेर पर बैठकर बातें करने लगे।

वह बोला, "और तो सब इन्तजाम हो गया है, अब सिर्फ कुछ औजार चाहिए, लेकिन वे भी मिल जाएंगे।"

"औजार?" मैंने कहा।

"हां, औजार!"

"औजार क्या होंगे?" मैंने पूछा।

"खोदेंगे काहे से? दांत और नाखूनों से तो खोदने से रहे।"

"वे पुराने-धुराने कुदालें, फावड़े और गैंते रखे तो हैं। क्या उनसे हम एक हबशी को छुड़ाने के लिए सुरंग भी नहीं खोद सकते?" मैंने कहा।

उसने मुझे ऐसी हिकारत की निगाह से देखा कि और कोई होता तो रोने लग जाता; फिर बोला, "हक फिन, तुम्हारी अक्ल की बलिहारी है। मैंने तो आज तक नहीं सुना कि कोई कैदी कुदालें, फावड़े और आधुनिक औजारों से सुरंग खोदकर भागा हो। सोचने की बात है कि ये चीजें उसे मिलेंगी कहां? और मिल भी जाएं तो इस तरह खोदने में उसकी वीरता ही क्या? फिर तो उसे चाबी ही क्यों नहीं दे देनी चाहिए? मजे से ताला खोले और चलता बने। अजी जनाब, कुदाल-फावड़ा बन्दी होने पर राजा तो क्या राजाधिराज को भी नहीं दिया जाता; और कहते हो कुदालें, फावड़े

और मेरे ! छिः !"

"अच्छा भाई, कुदाल-फावड़े न सही तो फिर कौन-से औजार चाहिए?" मैंने पूछा।

"गुप्तेक बड़ी छुरियां।"

"सायबान और झोंपड़ी के आरपार सुरंग खोदने के लिए ?"

"हां।"

"कैसी बेवकूफी की बात कह रहे हो टाम !"

"तुम्हारे लेखे कितनी ही बेवकूफी की क्यों न हो, पर है सही और नियमानुकूल। और तो कोई ढंग मैंने कहीं पढ़ा नहीं। इस विषय की जितनी भी किताबें पढ़ीं सबमें यही लिखा पाया कि बन्दी चाकू या खाना खाने की छुरियों से सुरंग खोदकर भागे। और उन बेचारों को तो मिट्टी के फर्श में नहीं चट्टानों में सूराख करने पड़े थे। हफ्तों, महीनों और बरसों लग जाते थे। पुराने जमाने में एक कैदी को मार सेली (मारसिले-फ्रान्स) बन्दर की डीफ गढ़ी के तहखाने में बन्द कर दिया था। जानते हो, उसे सुरंग खोदने में कितना वक्त लगा था ?"

"मुझे नहीं मालूम था।"

"कल्पना तो कर सकते हो ?"

"शायद ही कर सकूं। क्या डेढ़ महीना ?"

"पूरे सैंतीस बरस लगे और निकला कहां जाकर ? ठेठ चीन में, ऐसे-ऐसे बहादुर लोग हो गए हैं। काश हमारी इस गढ़ी का फर्श भी ठोस चट्टानों का होता।"

"जिम तो चीन में किसीको जानता नहीं।"

"जानने न जानने का इस बात से क्या सम्बन्ध ? वह आदमी भी तो चीन में किसी को नहीं जानता था। लेकिन असल बात से भटकने की तुम्हारी आदत पड़ गई है। जो बात सोचने-विचारने की है उसपर कभी ध्यान नहीं दोगे और बेकार की बातों में उलझते रहोगे।"

"अच्छा बाबा, मेरी बला से, वह चीन में निकले या और कहीं। मुख्य ——। क्यों निकला इसकी चिन्ता न मुझे है —— तो

गया है कि छुरियों से सुरंग खोदी गई तो सुरंग तैयार होने तक वह जिन्दा नहीं बचेगा।"

"बचेगा कैसे नहीं, जरूर बचेगा। मिट्टी में दीवाल के आर-पार सुरंग खोदने में क्या सैंतीस बरस लग जाएंगे ?"

"तो कितना वक्त लगेगा ?"

"देखो, ज्यादा वक्त तो हम चाहें तो भी नहीं लगा सकते, क्योंकि सिलास मौसा को जल्दी ही यह खबर मिल जाएगी कि जिम न्यूओरलियन्स से नहीं भागा है ! फिर वे शायद जिम के बारे में विज्ञापन छपाएं या पर्चे निकालें। मतलब यह कि हम खुदाई में ज्यादा समय नहीं लगा सकते। वैसे हिसाब से तो खुदाई में कई वर्ष लग जाने चाहिए, लेकिन जाहिर है कि हम लगा नहीं सकते। समय जो नहीं है। तो करना यह चाहिए कि खुदाई जल्दी से जल्दी पूरी कर डालें और उसमें जितना समय लगे उसे सैंतीस बरस मान लें। बस, मानकर चलना ही ठीक रहेगा। जैसे ही सुरंग तैयार हो जाए हम उसे वहां से निकालकर फौरन भाग जाएं। मेरे खयाल में यही सब से अच्छा रहेगा।"

"यह मान लेने की बात तुमने अच्छी बता दी। मेरी राय में यह सबसे समझदारी की बात हुई। मान लेने में न कुछ लगता है और न कोई परेशानी होती है। यदि माना जा सके और कोई एतराज न हो तो मैं उस समय को सैंतीस क्या डेढ़ सौ बरस मान लूंगा। मेरा तो कुछ बिगड़ता नहीं है, बस, काम हो जाना चाहिए। अच्छा अब खिसकूं और दो-एक छुरियां उड़ाने का बन्दोबस्त करूं।"

"दो नहीं, तीन।" टाम ने कहा, "एक छुरी हमें आरी बनाने के लिए चाहिए।"

मैंने कहा, "अगर नियम-विरुद्ध और अनुचित न हो तो मांस-मछली को ताजा रखने वाले कमरे के पिछवाड़े पटियों का जो ढेर लगा है उसमें एक पुरानी जंग लगी आरी मैंने देखी है।"

उसने ऐसी निगाहों से देखा मानो मुझसे तंग आ गया हो और बोला, "तुम्हें समझाने-सिखाने में कोई फायदा नहीं हक। जाओ, जैसा कहता हूं, करो—दो नहीं, तीन छुरियां लाना।"

मैंने अगत्या उसकी आज्ञा का पालन किया।

अध्याय ३६

उस रात जब सब लोग सो गए तो हम बिजली के छड़ के सहारे नीचे उतरे और सायबान में जा घुसे। फिर अन्दर से दरवाजा बन्द कर हमने च-मकनेवाली लकड़ियों का गट्ठा निकाला और काम शुरू कर दिया। हमने पहले झोंपड़ी का जो जमीन से सटा हुआ लट्ठा था उसकी ओर लेकर, आसपास की चार-पांच फुट जगह साफ कर डाली। टाम के बयान से यह जगह जिम के बिस्तरे के ठीक पीछे थी; और तैयार हो जाने पर छेद उधर से किसी को इसलिए दिखाई नहीं दे सकता था कि जिम का पलंगपोश धरती तक लटका रहता था और खटिया के नीचे देखने के लिए उसे उठाना जरूरी होता।

आधी रात तक हम बराबर छुरियों से खोदते रहे और बुरी तरह थक गए; हाथों में छाले भी पड़ गए थे, मगर खड्डा अभी एक बालिश्त गहरा भी नहीं हो पाया था।

अन्त में मैंने कहा, "टाम सायर, यह काम सैंतीस नहीं पूरे अड़तीस बरस का है।"

उसने कोई जवाब नहीं दिया। सिर्फ एक लम्बी सांस लेकर हाथ रोक दिया और बैठा देर तक जाने क्या सोचता रहा। फिर बोला, "नहीं हक, इस तरह काम नहीं चलेगा। अगर हम खुद कैदी होते तब कोई बात न थी। हमारे पास काफी समय रहता और थोड़ा-थोड़ा कर रोज आराम से खोदा करते। उस समय हमें खोदने का मौका भी सिर्फ तभी मिलता जब पहरे-दारों की बदली होती। इस तरह खोदने से हाथों मे छाले भी नहीं पड़ते, काफी दिनों तक खोदते रहते और जैसाकि किताबों में लिखा है सचमुच कई बरस लग जाते। लेकिन हमें तो काम जल्दी निपटाना है, समय हमारे पास है ही कहां! अगर एक रात और इस ढंग से काम किया तो हाथ के

के कारण हफ्ते-भर की छुट्टी हो जाएगी, क्योंकि छुरी भी नहीं
सकेगी।"

तुम्ही बताओ टाम, क्या करें ?"

ाता हूं, हालांकि बात अच्छी नही है और न उचित ही, अगर
ा होता तो मैं यह बात शायद मुह से निकालता भी नहीं, लेकिन
वा इसके कोई चारा नही है। हम कुदाल-फावडे से खुदाई करेंगे
लेंगे की छुरियों से की है।"

टाम, इतनी देर के बाद अब तुमने काम की बात कही !" मैंने
ठोकी, "उचित कहो, अनुचित कहो, खोदने की चीज कुदाल
जब खोदना ही है तो मैं उचित-अनुचित के पचडे मे पड़ना
। जब मैं हबशी को भगाने चला हूं, या तरबूज को चुराने, या
स्कूल से भजन की पोथी उड़ाने तो मेरा सारा ध्यान इस बात
ाहिए कि काम बन जाए, इसपर नहीं कि वह जिस तरीके से
उचित है या अनुचित। तरीके मे क्या रखा है ! मुझे तो मेरा
ए, या तरबूज या प्रार्थना की पोथी, और अगर कुदाली से यह
ई और उससे मुझे मेरा हबशी या तरबूज या भजन की पोथी
मैं कहूगा, कुदाली ज़िन्दाबाद ! फिर मैं इस बात की चिन्ता
क विशेषज्ञो और अधिकारी पुरुषों को इस सम्बन्ध मे क्या

तो; ऐसे मामले में अगर कुदाली को छुरी मान लेने की व्यवस्था
कभी इस बात केलिए तैयार न होता और न नियमों को भंग
ाखिरकार जो सही है वह सही है और जो गलत है वह गलत।
ों को अच्छी तरह जानता है और तुम्हारी तरह अनजान नही
ाम करने का कोई हक नही। तुम जिस को निकालने के लिए
ाने बिना कि वह छुरी है, सुरग खोद सकते हो, क्योंकि नियम-
ाते। लेकिन मैं तो ऐसा नहीं कर सकता। लाओ, छुरी दो।"
हाथ में ही थी, फिर भी मैंने अपने वाली दे दी। उसने
ीन पर फेंक दी और ज़ोर देकर बोला, "मुझे छुरी दो !"
त मेरी समझ में नही आई, लेकिन थोड़ा सोचने के बाद

सब कुछ साफ हो गया। मैं फौरन पुराने औज़ारों का अहाता ढूंढने चला। वहां मुझे एक कुदाल मिल गया। मैंने उठाया और उसकी ओर बढ़ा दिया। उसने ले लिया और चुपचाप काम में लग गया, एक शब्द भी न बोला।

नियम और सिद्धान्त के मामले में वह हमेशा इतना ही चौकस रहता था; मजाल नहीं कि उसके रहते कोई उल्लघन कर सके और खुद उनके उल्लंघन करने का तो सवाल ही नहीं उठता।

उसे कुदाल थमाकर मैंने फावड़ा उठा लिया और दोनों काम पर जुट गए। कभी वह कुदाल चलाता और कभी मैं; कभी वह फावड़ा चलाता और कभी मैं। इस तरह हम करीब आधा घण्टा काम करते रहे, क्योंकि इससे ज्यादा करने की शक्ति ही नहीं बची थी, परन्तु इतने ही में वहां काफी गहरा गड्ढा खुद गया था।

जब मैं ऊपर अपने कमरे में पहुंच गया तो मैंने खिड़की की राह देखा कि टाम बिजली की छड़ के सहारे ऊपर आने की कोशिश कर रहा है; लेकिन फफोलों के कारण वह सफल न हो सका। तब उसने मुझसे कहा, "ऐसे तो आना बहुत मुश्किल है। क्या करूं? तुम्हीं कोई रास्ता निकालो।"

"रास्ता है तो जरूर," मैंने कहा, "लेकिन नियमानुकूल नहीं है। सीढ़ियों से आ जाओ और मान लेना कि बिजली की छड़ के सहारे चढ़ कर आए हो।"

उसने ऐसा ही किया।

दूसरे दिन टाम ने घर में से काले कागज़ का एक थान और पीतल का मोमबत्ती दान चुराया। इससे वह जिम के लिए कलम बनाना चाहता था। साथ ही उसने छः मोमबत्तियां भी पार कर दीं। ऊपर मैं दुकानियों की कोठरियों में जा पहुंचा और मौका देखकर टीन की तीन तश्तरियां मार लाया। टाम ने कहा, "ये तो कम हैं, इतने से काम बनेगा नहीं। मैंने जवाब दिया, किसी के देखने पर खिड़की के नीचे धतूरे आदि की कंटीली झाड़ियों में ही तो गिरेंगी, वहां किसी की निगाह नहीं जाएगी, हम फिर बटोरकर उसे पहुंचा देंगे," मेरे इस जवाब से टाम को संतोष हो गया।

थोड़ी देर बाद वह बोला, "अब यह सोचना है कि इन चीजों को जिम तक पहुंचाया कैसे जाए?"

"जब गड्ढा खुद जाएगा तो उसकी राह पहुंचा देंगे।" मैंने फौरन जवाब दिया।

बड़ी अवहेलना से मेरी ओर देखकर वह जो कुछ बड़बड़ाया उसका सार यह था कि कैसा मूर्खतापूर्ण विचार है, और फिर चुप बैठकर सोचने लगा। कुछ देर के बाद उसने दो-तीन योजनाएं सोच डालीं; परन्तु अन्तिम रूप से कोई फैसला नहीं किया और बोला, "पहले जिम को बता तो दें।"

आज की रात कोई दस बजे के बाद हम बिजली की छड़ के सहारे नीचे उतरे और अपने साथ एक मोमबत्ती भी लेते गए। खिड़की के नीचे खड़े होकर हमने सुना तो जिम आराम से खर्राटे भर रहा था। हमने मोमबत्ती अन्दर फेंकी, मगर उसकी नींद नहीं खुली। अब हमने सायबान में जाकर कुदाल-फावड़ा उठाया और खुदाई में जुट गए। ढाई घण्टे में काम पूरा हो गया। हम छेद की राह रेंगकर झोपड़ी में जिम की खटिया के नीचे जा निकले। वहां से बाहर आकर पंजों के बल चलते हुए मोमबत्ती को ढूंढा और खटिया के पास खड़े होकर उसकी रोशनी में जिम को देखा तो वह पहले से काफी तन्दुरुस्त, तगड़ा और प्रसन्न दिखाई दिया। हमने उसे बहुत धीरे-धीरे जगाया। हमें देखकर वह इतना खुश हुआ कि आंखें ही भर आईं। देर तक 'मेरे लाल' 'मेरे प्यारे,' 'मेरे छौने' आदि स्नेह-भरे सम्बोधनों से हमें पुकारता रहा। उसकी राय तो यह थी कि कहीं से छैनी लाकर उसकी बेड़ी काट दें और फौरन यहां से भाग चलें। लेकिन टाम ने उसे समझाया कि ऐसा करना नियम-विरुद्ध होगा और फिर उसके पास बैठकर अपनी पूरी योजना समझाने लगा। अन्त में उसने जिम को दिलासा दिया कि डरने-घबराने की कोई जरूरत नहीं है, यदि कोई खतरा दिखाई दिया तो फौरन अपनी पूरी योजना बदल देंगे और जैसे भी होगा उसे मुक्त ले जाएंगे, वह निश्चिन्त रहे। और जिम निश्चिन्त हो गया। फिर हमने कुछ देर तक पुराने दिनों को याद किया और तब टाम ने उससे बहुत से सवाल पूछे।

जिम के यह बताने पर कि सिलास मौसा रोज या अंतरे में आते और साथ प्रार्थना कराते हैं, और सैली मौसी भी आकर कुशल-क्षेम में पूछ जाती हैं और उसको आराम एवं भरपेट खाना मिलता है या नहीं इस

का पूरा ख्याल रखती हैं और दोनों ही बड़े मेहरबान और दयालु हैं।" टाम ने कहा, "बस-बस, तरकीब हाथ आ गई; हम उन दोनों के हाथ तुम्हारे पास कुछ चीजें भेजेंगे।"

मैंने फौरन उनकी बात काटी, "हां-हां ! ऐसी गलती हरगिज करना। इससे बड़ी बेवकूफी की बात और कोई न होगी।"

लेकिन टाम ने मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह अपनी ही धुन में मस्त बोलता चला गया। उसका स्वभाव ही ऐसा था। एक बार बात मन में बैठ जाती तो वह उसे पूरा करके ही रहता था।

उसने जिम को विस्तार से सारी बातें समझा दीं कि हम उसका खाना लाने वाले हबशी नैट के ज़रिये रस्सियों वाली सीढ़ी और दूसरी बड़ी चीजें भेजेंगे, वह होशियार रहे, चकरा न जाए और नैट को पता न चलने दे और उसके सामने किसी चीज को खोलकर देखे; छोटी चीजें हम मौसा जी की में रख देंगे या मौका मिल गया तो मौसी के एप्रन की तनियों से बांध देंगे उनकी जेबों में रख देंगे। जिन्हें वह चुरा ले। और हमने उसे यह भी बता दिया कि कौन-कौन सी चीजें भेजी जाएंगी और वे किस काम आएंगी। अन्त में उससे यह भी कहा कि उसे अपने खून से कमीज पर [illegible] का ब्योरा लिखकर रखना पड़ेगा। मतलब यह कि उसे सब कुछ बता दिया गया। बहुत-सी बातें जिम की समझ में नहीं आईं, बहुतों को उसने बेकार समझा, लेकिन फिर भी जैसा हमने कहा करने को राजी हो गया, क्योंकि वह हम गोरों को अपने-आपसे अधिक समझदार, जानकार और होशियार मानता था। उसने बड़ी तसल्ली के साथ कहा कि टाम भैया, जैसा आप कहते हो मैं ठीक वैसा ही करूंगा।

जिम के पास मक्का की बालों के बहुत-से पाइप और ढेर सारी तम्बाकू थी, इसलिए हमारा समय और भी अच्छी तरह बीता। फिर हम उस छेद की राह रेंगकर सावधानी से लौटे और वहां से सोने के लिए घर चले आए। मगर हाथ हम दोनों के ऐसे हो रहे थे मानो किसी ने चबा डाले हों। और टाम की खुशी और उत्साह का क्या पूछना! बार-बार यही कह रहा था कि आज जैसा मज़ा तो ज़िन्दगी में कभी आया ही नहीं और [illegible] बैठा कि दिमाग का [illegible]

फिर वह बोला कि अगर उसका बस चले तो वह जिन्दगी-भर जिम को छुड़ाने की तरकीबें किया करे और अन्त में यह काम अपने बाल-बच्चों को सौंप जाए। उसका ख्याल था कि इस तरह छुड़ाया जाना धीरे-धीरे जिम को भी अच्छा लगने लगेगा और वह इसका आदी हो जायेगा। उसने हिसाब लगाकर यह भी बता दिया कि इस तरह जिम को छुड़ाने में करीब अस्सी बरस का समय लग जाएगा, जो इस तरह के कामों के इतिहास में सबसे लम्बा समय होगा। 'फिर तो हमारे नाम की धूम मच जाएगी और लोग कहेंगे कि उस कैदी को छुड़ाने में ये लोग भी थे।' इस तरह उसने अपनी बात समाप्त की।

दूसरे दिन सवेरे हम लकड़ियों के ढेर की तरफ निकल गए और वहां पीतल के मोमबत्तीदान को तोड़-ताड़कर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लिए। टाम ने उन टुकड़ों और कांसे के चम्मच को अपनी जेब में रख लिया और हम हबशियों की कोठरियों में पहुंचे। मैंने नैट का ध्यान बंटाया और टाम ने फौरन उन चीजों को जिम के तसले में रखी मक्का की रोटी में घुसेड़ दिया। फिर हम यह देखने के लिए नैट के साथ हो लिए कि हमारी यह योजना कैसी-क्या रहती है। योजना वाकई बहुत बढ़िया रही और टाम का कहना है कि इससे बढ़िया योजना और कोई नहीं हो सकती थी। हां, बेचारे जिम की बत्तीसी जरूर खिरते-खिरते बची, लेकिन उसने जरा भी भेद नहीं खोला; सिर्फ यही कहकर रह गया कि रोटी में हमेशा की तरह कंकरी निकल आई है। मगर उसके बाद जब तक वह चार-या-पांच जगह कांटा डालकर टटोल न ले किसी चीज को मुंह के अन्दर डालता नहीं था।

हम अभी झोपड़ी के धुंधले में खड़े ही थे कि जिम की खटिया के नीचे से एक-एक कर कुत्ते निकलने लगे और बात की बात में वहां ग्यारह कुत्ते जमा हो गए। अब कोठरी में तिल धरने को जगह नहीं रह गई थी। बात यह हुई कि हम सायबान का दरवाजा बन्द करना भूल गए थे। नैट के तो होश गुम हो गए। एक बार जोर से चीखा, 'डायनें!' और जमीन पर कुत्तों के बीच धड़ाम से गिरकर इस तरह हाय-हाय करने लगा मानों मरा ही जा रहा हो। टाम ने जिम के तसले में से मांस की एक बोटी उठा ली

और फौरन दरवाजा खोलकर बाहर फेंक दी। सारे कुत्ते फुर्र से बाहर चले गए। दूसरे ही क्षण टाम बाहर निकल गया और तुरंत लौट आकर उसने झोपड़ी का दरवाजा बन्द भी कर दिया। मैं समझ गया कि वह सायवान का दरवाजा बन्द करने गया था। फिर वह नैट को पुचकारने और दिलासा देने में लग गया और पूछने लगा कि कहीं उसने कोई अलाय-बलाय तो नहीं देख ली?

नैट आंखें टिमटिमाता हुआ उठ खड़ा हुआ और चारों तरफ देखता हुआ बोला, "हांय शिड साब! आप मेरे कू मूरख बोलेगा, मगर मैंने कुत्ते देखे, हजार-लाख कुत्ते; कि क्या मालूम वो भूत थे कि डायनें! मुझकू ऐसा डर लगा साब, कि मैं तो मर ही गया था। जरूर मर जाता साब! वो मेरे ऊपर पड़ गए थे साब; हांय साब, मेरे ऊपर सब पड़ गए थे। अगर एक भी डायन पकड़ आती तो मजा चखा देता। मैंने खूब हाथ मारे मगर एक भी नहीं पकड़ाई। कभी भी नहीं पकड़ाती साब! मत पकड़ाओ, मगर मेरे कू डराती क्यू हो! काहे कू मेरे पीछे पड़ती हो! मेरे कू फारगती दे दो न। मैं तो बस इतना ही मांगता शिड साहब, बस इतना ही।"

टाम ने कहा "सुनो, मैं बताता हूं कि ये तुम्हारे पीछे क्यों पड़ी रहती हैं। इस फरार हबशी के नाश्ते के वक्त ही आती हैं न? कारण साफ है। भूखी हैं, इसलिए खाने की गन्ध पाकर दौड़ी आती हैं। तुम एक काम करो। एक बड़ी-सी डायन-गुझिया बनाकर उन्हें चढ़ा दो, फिर वे तुम्हें सताना छोड़ देंगी।"

"मेरे कू तो, बनाना आता नहीं है शिड साहब, मैं किस तरह से बना-दूंगा। डायन-गुझिया तो नाम भी आज ही सुनता हूं।"

"अच्छी बात है, मैं बना दूंगा।"

"आप बना देवोगे साब, जरूर से बना देवोगे? फिर तो शिड साब, मैं आपके चरण धोय-धोय के पिवूंगा।"

"जरूर बना दूंगा। तुम्हारा कुछ तो लिहाज करना होगा। तुम हमारे साथ इतनी अच्छी तरह पेश आए, हमें इस फरार हबशी को देखने का मौका [illegible] हम तुम्हारे लिए इतना भी न करें! लेकिन देखो, बहुत सावधान-

कर रहा होगा। जब हम आएं तो पीठ फेर कर खड़े हो जाना और तसले में क्या है यह देखने की जरा भी कोशिश मत करना। जिम को तसला खाली करते हुए अगर तुमने देख लिया तो गजब ही हो जाएगा। क्या गजब होगा, यह तो मैं नहीं जानता, पर होगा जरूर और तब लेने के देने पड़ जाएंगे। और हां, डायनों के उस खाने को हाथ तो तुम भूलकर भी न लगाना, समझे?"

"मैं हाथ लगाऊंगा, सिड बाबू! आप ये क्या बोलते हो? मेरे कू जान प्यारी नहीं है? कोई हजार—लाख—करोड़ डालर देवे तो भी मैं हाथ लगाने का नहीं।"

अध्याय ३७

ऊपर की व्यवस्था करके हम लौटे तो डायन-गुझिया पकाने के लिए किसी बरतन की तलाश में लग गए। घर के पिछवाड़े पुराने जूतों, टूटी बोतलों, चिन्दों और चिथड़ों, टीन के टूटे-फूटे सामान और ऐसे ही काठ-कबाड़ का अम्बार लगा था। उसमें देर तक खोजते रहने के बाद हमें टीन की एक पुरानी-धुरानी कपड़ा धोने की तगारी मिल गई। हम उठा लाये और उसमें जितने छेद थे उन सबको बन्द किया। फिर नीचे तलघर में गए और उस पूरी तगारी को भर कर आटा चुराया। इसके बाद नाश्ता करने चले। रास्ते में हमें एक जगह कुछ चौरस कीलें मिल गईं। टाम ने कहा कि ये जेलखाने की दीवारों पर कैदी का नाम और उसके दुःख दर्द की कहानी लिखने के काम आएंगी। हमने कीलें उठा लीं और एक तो सैली मौसी के एप्रन की जेब में, जो कुर्सी की पीठ से टंगा था और दूसरी सिलास मौसा के टोप के ऊपर वाले पट्टे में रख दी, जो ब्यूरो की अलमारी पर रखा था। बच्चों से यह हमें पहले ही मालूम हो गया था कि अभी मौसे उनके [illegible] हब्शी की कोठरी में जाएंगे। इतना करके हम नाश्ते की मेज पर आ बैठे और वहाँ टाम ने आटे का एक चम्मच वहीं [illegible]

से सिलास मौसा के कोट की जेब में डाल दिया। मौसी अभी तक आई नहीं थी; इसलिए हमें थोड़ी देर इन्तजार करना पड़ा।

और मौसी जब आईं तो उनका पारा बहुत चढ़ा हुआ था—चेहरा तमतमाया हुआ और गुस्से से बेहाल। प्रार्थना पूरी होने तक रुकना भी उनके लिए दुश्वार हो गया। आते ही एक हाथ से कॉफी उंड़ेलने लगीं और दूसरे हाथ से जो बच्चा सबसे करीब था उसके माथे में मारती हुई बोलीं, "मैंने तो सारा घर छान डाला, लेकिन कहीं पता नहीं चला; राम जाने तुम्हारी दूसरी कमीज कहां गुम हो गई!"

सुना तो मेरा कलेजा मुंह को आ गया और ऐसी घबराहट हुई कि मक्का की रोटी का एक सख्त टुकड़ा पेट में जाने के बदले सांस की नली में फंस गया; उसे निकालने के लिए अंदर से इतने ज़ोर की खांसी उठी कि वह बन्दूक की गोली की तरह दन्-से सामने बैठे बच्चे की आंख में जाकर लगा, बच्चा बेचारा दर्द से दुहरा हो गया और लगा बुक्का फाड़कर रोने। उधर टाम का चेहरा भी एकदम फक हो गया। क्षण-भर के लिए तो हम दोनों के इतने बुरे हाल हो गए मानो कोई चोर रंगे हाथों पकड़ लिया गया हो, लेकिन फिर तुरन्त ही हम प्रकृतिस्थ भी हो गए। असल में मौसी ने इतने आकस्मिक ढंग से कमीज़ गुम होने की बात कही थी कि हमारे अंदर के चोर को समझने का मौका ही नहीं मिला।

और सिलास मौसा ने कहा, "यह तो बड़ी ही अजीब बात मालूम पड़ती है। कमीज आखिर जाएगी कहां, मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं

हर वक्त बैठी तुम्हारी-कमीज़ें सिया करूं ? मेरी तो कमीज़ सीं
अंगुलियां छलनी हो गईं और तुम्हें उनकी ज़रा भी खबर नही ! मे
समझ में नही आता कि तुमसे हिरा कैसे जाती हैं ? इस बुढ़ापे में भ
अपनी चीजें सहेज-सभालकर रखना न आया।"

"कोशिश तो बहुत करता हू सैली, लेकिन कसूर मेरे अकेले क
है। यह तो तुम भी जानती ही हो कि मैं कमीज़ को तभी हाथ लग
जब बदलनी होती है, उसके पहले वह कहा थी और उतारने के बा
जाती है मुझे क्या मालूम ! और इतना तो तुम भी मानोगी कि मे
पर रहते हुए कभी कोई कमीज़ नही खोई !"

"अच्छा बाबा, मान गई, तुम्हारा कसूर नही। लेकिन जो हाल
हैं उसमें तो एक दिन बदन पर पहनी हुई कमीज़ भी खो जाएगी, देख
और अकेली एक कमीज़ ही नही खोई है, मुआ एक चम्मच भी गाय
पूरे दस चम्मच थे, अब जो मैंने गिना तो नौ ही निकले। कमीज़ सं
माने लेती हू कि बछड़ा खा गया होगा, मगर चम्मच तो वह निगर
रहा। वह कहा चला गया ? इतना ही नहीं, और भी…"

मौसा ने घबराकर फौरन पूछा, "और क्या खोया है सैली ?"

"और खोई हैं छह मोमबत्तियां। मोमबत्तिया तो मेरा खयाल
ज़रूर चूहे खा गए या अपने बिलो में खींच ले गए। मैं तो तुमसे क
कर हार गई कि उन कम्बख्तों के बिल बन्द कर दो, मगर तुम्हारे क
जू रेंगे तब न ! इस तरह तो वे एक दिन सारा मकान अपने बि
घसीट ले जाएंगे; और तुम इसी तरह हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे तो
नहीं कि तुम्हारे सिर के बालो में बिल भी बना लें और तुम्हें पता न
मगर चम्मच कहां गया ? उसे तो चूहे ले नही गए; क्यूं हूं !"

"हां सैली, मैं अपनी गलती मंजूर करता हूं। बिल बन्द करने के
में मुझसे ज़रूर लापरवाही हुई। लेकिन कल एक-एक बिल बन्द
दूंगा, न करूं तो तुम कहना।"

"जल्दी क्या है ? कल न सही एक साल बाद ही सही। एम
अगेलिना मारा फिल्डा फेल्प्स !

पीठ पर ज़ोर का धमाका पड़ते ही लड़की ने घबराकर के बर

हुए सोचते रहे और तब उसी तरह खोए-खोए सीढ़ियों की ओर लौटते हुए बोले, "पता नहीं, मैंने ये बिल कब बन्द किए ? अब उस भले मानस को लाकर दिखा दूंगा कि चूहों के कारण मुझे दोष नहीं दिया जा सकता। लेकिन क्या फायदा, देवी जी का पारा तो उतरने से रहा।"

यों कहते हुए वे ज़ीना चढ़ गए और हम भी वहां से बाहर निकल आए। बेचारे बुढ़ऊ बहुत भले और सीधे आदमी थे, किसी पर नाराज़ होना तो वे जानते ही नहीं थे ।

चम्मच के यों हाथ से निकल जाने पर टाम बहुत परेशान हो उठा। बात परेशान होने की थी भी, क्योंकि उसके विचार में चम्मच हमारे लिए बहुत ज़रूरी था। वह बैठकर चम्मच प्राप्त करने का उपाय सोचने लगा। कुछ देर सोचने के बाद उसने मुझे बताया कि क्या करना होगा। हम वहां से उठे और चम्मच रखने की टोकरी के पास आ बैठे और तब तक बैठे रहे जब तक कि सैली मौसी उधर आती दिखाई न दीं। उन्हें आते देख टाम ने चम्मचों को गिनना और एक-एक कर बाजू में रखना शुरू कर दिया और मैंने फौरन एक चम्मच खिसका दिया, तब टाम बोला, "मौसी, ओ मौसी, चम्मच तो नौ ही हैं।"

उन्होंने कहा, "जाकर खेलो भागो, मुझे दिक मत करो। मैं जानती

"दस कैसे नहीं हैं रे बौड़म ? अभी मैंने तेरे सामने तो गिना।"

"हां मौसी, गिना तो है, लेकिन…"

"लेकिन क्या ? ला, एक बार फिर गिने लेती हूं।"

मैंने तुरत एक चम्मच उठा लिया। उन्होंने गिना तो पहले की तरह नौ ही निकले। वे बुरी तरह बौखला उठीं और कांपने लगीं। एक, दो, तीन, चार, कई बार गिनती ही चली गई, यहां तक कि अपने आपे में न रहीं और दो-चार बार तो टोकरी को भी चम्मच की जगह गिन डाला। उन्होंने कुल छः बार गिना, जिसमें से तीन बार दस चम्मच निकले और तीन बार नौ। आखिर उनका दिमाग इतना भिन्ना गया कि टोकरी उठाकर फेंक दी और पास खड़ी बिल्ली को इतने जोर से ठोकर मारी कि बेचारी म्याऊ-म्याऊ करती उछलकर दूर जा पड़ी। दूसरे ही क्षण हमें कड़ककर हुक्म दिया कि फौरन कमरे से बाहर निकल जाएं, उन्हें अकेला छोड़ दें और अगर खाने के समय से पहले दिख भी गए तो चमड़ी उधेड़ दी जाएगी।

हमने तुरन्त उनकी आज्ञा का पालन किया, लेकिन कमरे से जाते-जाते चार किया हुआ वह चम्मच उनके एप्रन की जेब में डालते गए, जिससे जिम को चौकोर कील के साथ दुपहर तक मिल जाए और उसे दोनों चीजें मिल भी गईं।

इस तरह सन्तोषजनक ढंग से काम बन जाने के कारण टाम को बड़ी खुशी हुई। उसने कहा कि परेशानी तो जरूर बहुत हुई, लेकिन काम जितना मुश्किल था उसके मुकाबले परेशानी कम ही हुई। इतना जरूर हुआ कि चम्मच की ओर से हम हमेशा के लिए निश्चिन्त हो गए, क्योंकि स्थिर चित्त होकर चम्मचों को दुबारा सही-सही गिन पाना अब मौसी के बूते का नहीं रह गया था। टाम ने तो यहा तक कहा कि वे इतनी झल्ला गई हैं कि अगर किसीने चम्मच गिनने की बात कही तो उसे फाड़ ही खाएगी।

चम्मच की ही तरह हमने मौसी को चादर में भी उलझाने का फैसला किया और इसलिए तानी पर से उठाई चद्दर को रात में फिर वहीं टांग दिया और बदले में उनकी अलमारी में से एक चादर उड़ा ली। फिर कई दिनों तक हम उस चादर को अलमारी में रखते और वहां से उठाते रहे, यहां तक कि मौसी अपनी चादरों की गिनती करते-करते तंग आ गईं और

मुस्कराकर बोल उठीं कि भाड़ में जाएं चादरें और उनकी गिनती ! मैं कहां तक गिना करूं कि घर में कितनी चादरें हैं और कितनी खो गईं। अब तो चाहे मर भी जाऊं तो भी चादरों को गिनूंगी नहीं।

इस तरह हम कमीज और चादर और चम्मच और मोमबत्तियों की ओर से निश्चिन्त हो गए। कमीज को तो बछड़ा खा गया था, मोमबत्तियों को चूहे अपने बिलों में घसीट ले गए थे, चादर और चम्मच की गिनती गड़बड़ा गई थी। रह गया मोमबत्ती दान, लेकिन वह इतनी छोटी चीज थी कि उसकी ओर ध्यान ही नहीं गया और जल्दी ही उसके खोने की बात आई-गई हो गई।

लेकिन डायन-गुझिया बनाना सबसे टेढ़ा काम सिद्ध हुआ। हमने उसे घर से दूर जंगल में बनाया और कई दिनों तक जुटे रहे, लेकिन आखिर में बना ही डाला और वह बन भी काफी अच्छी गई। तीन तगारी भरकर तो आटा ही लग गया, हम कई जगह बुरी तरह जल भी गए और धुएं से आंखें कई दिनों तक किरकिराती रहीं। हम गुझिया बिलकुल कड़क और फूली हुई बनाना चाहते थे, लेकिन वह हर बार पिचक जाती थी। गुझिया बन जाने के बाद रस्सी को उसके अन्दर रखना भी एक समस्या थी। आखिर हमने मनचाही गुझिया बनाने का सही ढंग सोच ही निकाला। यह तय किया कि रस्सी को पहले से अन्दर रखकर तब उसे पकाया जाए। दूसरी रात को हम तीनों आदमी जिम की झोंपड़ी में चादर की चिन्दियां फाड़-फाड़कर रस्सी बटने के काम में लग गए और सवेरा होने से पहले इतनी लम्बी और बढ़िया रस्सी तैयार हो गई कि चाहो तो उससे किसी को फांसी भी टांग दो। रस्सी बनाने का काम वैसे तो कुछ ही घण्टों में पूरा हो गया था, लेकिन हमने यही माना कि नौ महीने लग गए।

दूसरे दिन दुपहर के पहले हम रस्सी लेकर जंगल में पहुंचे, लेकिन वह इतनी लम्बी थी कि किसी भी तरह गुझिया में समा न पाती। हमने पूरी चादर फाड़कर रस्सी बटी थी इसलिए चालीस गुझिया में भरने के बाद भी शोरबे और गुलमे और लगौने दूसरी कई चीजों के लिए बची रह जाती। मतलब, उससे पूरी दावत का सामान बन जाता। लेकिन हमें तो सिर्फ एक गुझिया बनानी थी, इसलिए उतने-भर को रखकर बाकी रस्सी फेंक दी।

गुझिया हमने एक भी टीन की उस तगारी में नहीं पकाई; आंच पर चढ़ाने से उसकी झालन पिघल जाने का अन्देशा था। सौभाग्य से सिलास मौसा का लकड़ी के लम्बे हत्थे वाला पीतल का एक बहुत बढ़िया पानी गरम करने का ढक्कनदार पतीला हमारे हाथ लग गया था। मौसा इस पतीले की बड़ी कद्र करते थे, क्योंकि यह उनके पुरखों की निशानी थी और उनका कहना था कि विजेता विलियम के साथ मेफ्लावर या उसी तरह के किसी आरम्भिक जहाज़ में इंग्लैण्ड से आनेवाला उनका कोई पूर्वज इसे वहां से अपने साथ लाया था। मौसा ने पुरखों की इस निशानी को ऊपर अटारी में पुराने बरतनों और दूसरी कीमती चीज़ों के साथ निशानी के ही तौर पर रख छोड़ा था। हम चुपके से निकाल लाए और गुझिया बनाने का काम लेने लगे। शुरू-शुरू में तो इस पतीले में एक भी गुझिया ठीक से नहीं बनी, क्योंकि हमीं को बनाना नहीं आता था। लेकिन आखिरी वाली बहुत बढ़िया बन गई। हमने चारों ओर माढ़ा हुआ आटा रखकर पतीले को आग पर चढ़ा दिया, फिर रस्सी को बीच में रखकर ऊपर माढ़े हुए आटे की परत चढ़ा दी और ढक्कनबन्द करके उसपर भी अंगारे रख दिए। अब हम पतीले से पांचेक फुट के फासले पर उसके लम्बे हत्थे के पास आराम से खड़े हो गए और कोई पन्द्रह मिनट में गुझिया पक-पकाकर तैयार हो गई। उसकी सोंधी सुवास और सुहावना रूप देखकर किसीके भी मुंह में पानी आ जाता। लेकिन खाने वाले को कम से कम पीपा-भर दांत-कुरेदनियों की ज़रूरत पड़ती और उन रस्सी-सीढ़ी के पेट में जाने पर क्या होता वह राम ही जानें। मेरा खयाल है कि पेटदर्द के कारण उसे अगले जनम तक मछली की तरह तड़पना पड़ता।

नैट ने अपने वचन का पालन किया। उसने हमें जिम के तसले में उस गुझिया को रखते नहीं देखा। तसले के अन्दर खाने की चीज़ों के नीचे हमने टीन की उन तीनों प्लेटों को भी रख दिया था। इस तरह जिम को सब चीज़ें ठीक-ठिकाने से मिल गईं। झोंपड़ी में जब वह अकेला रह गया तो जिम ने फौरन गुझिया में से रस्सी-सीढ़ी को निकालकर पुआल के गद्दे में छिपा दिया और टीन की एक तश्तरी पर कील से कुछ निशान बनाकर उन्हें खिड़की की राह बाहर फेंक दिया।

अध्याय ३८

कलमें बनाना सबसे टेढ़ा काम निकला और आरी बनाना उससे भी मुश्किल, लेकिन जिम के ख्याल में सबसे मुश्किल काम था कैदी की हैसियत से कोठरी की दीवारों पर किसी नुकीली चीज से कुछ लिखना। काम कितना ही मुश्किल क्यों न हो, लिखना तो उसे होगा ही। टाम का कहना था कि किताबों में ऐसे किसी भी राजबन्दी का उल्लेख नहीं मिलता जो बन्दीगृह की दीवारों पर अपना वंश-चिह्न और कोई संदेश लिखकर या खोदकर छोड़ न गया हो।

"चाहे लेडी जेनग्रे[1] को लो या गिल्फोर्ड डडले को, या सबसे बूढ़े नार्थम्बरलैंड[1] को हो—सभीने अपने कारागृहों की दीवारों पर लिखा है। मान लिया कि काम मुश्किल है। मैं कहता हूं कि मुश्किल ही नहीं, बहुत मुश्किल है। लेकिन क्या मुश्किल होने से हम विधि-विधानों और नियमों का उल्लंघन कर सकते हैं? बोलो हक, इसका तुम्हारे पास क्या जवाब है? बस यही जवाब हो सकता है कि जिम को लिखना होगा और अपना 'कोट-आफ आर्म्स' (वंश-चिह्न) भी बनाना होगा। सभी बनाते आए हैं।"

यह सुनकर जिम बोल उठा, "भैया, मेरे पास कोट कहां है; न कोट है और न कोटाराम्स। सिर्फ यह एक पुराना कमीज तुमने ला दिया है, जिसपर मुझे यहां का ब्योरा रखना है।"

"जिम, तुम समझे नहीं। 'कोट आर्म्स' पहनने का कोट नहीं होता। वह दूसरी ही चीज है।" टाम ने कहा।

"लेकिन जिम ने गलत भी नहीं कहा।" मैं बोला, "उसने सच ही तो कहा कि उसके पास 'कोट राम्स' यानी 'कोट आफ आर्म्स' नहीं है।"

१—उदार स्वभाव की प्रतिभासम्पन्न और परदुःखकातर अंग्रेज महिला, जिसे बन्दी बनाकर सिर काट दिया गया। (१५३७-१५५४)
… एक ब्रिटिश सरदार, जिसे … ड्यूक आफ

'इतना तो मैं भी समझता हू ।" टाम ने कहा, "सच ही उसका आफ आर्म्स' नही है, मगर मैं वादा करता हू कि यहा से निकलने के ही जाएगा । वह बाकायदा ढग और नियम से ही यहा से जाएगा। न से नही । मैं किसीको यह कहने का मौका नही दूगा कि जिम ने नियमों का पालन नही किया ।"

सलिए मैं और जिम तो बैठे ईंटो के टुकडो पर घिस-घिसकर यार करते रहे—जिम मोमबत्तीदान के टुकडो को घिस रहा था। चम्मच को—और टाम बैठा 'कोट आफ आर्म्स' के बारे मे सोचना न्त में उसने कहा कि विचार तो बहुत आए हैं और मन में एक-बढकर वश-चिह्न सूझ रहे हैं, लेकिन जो उसे पसन्द है वह इस होगा ।

र वह बताने लगा, "कुल-चिह्न (कोर्ट आफ आर्म्स) वाली ढाल मे ऊपर दाहिनी ओर के सिरे से नीचे बाईं ओर के सिरे तक रहेगा और उसमे बायें बाजू के नीचे वाले कोने में शहतूतिया क गुणित चिह्न (क्रास)। खाके के बीच वाली दाहिनी पट्टी ता उकडू बैठा होगा और उस कुत्ते के पावों तले गुलामी से ने की प्रतीक जजीर पड़ी होगी। खाके के सबसे ऊपर वाले मकीले हरे रंग मे लहरियादार किनारों वाली वेणी (अग्रेजी क्षर उलटा हुआ—A) और बाकी नीले रग की खाली जमीन मे र लकीरें रहेगी । बीच वाली पट्टी के नीचे की जगह मे जमीन के ऊपर कुछ बड़े बिन्दु उभरे रहेंगे। इस ढाल की कलगी धतासूचक तिरछे दण्ड के ऊपर गठरी कन्धे पर लिए भागा हबशी। इस कलगी को हम काले रग मे रखेंगे। ढालवाहक रग की दो मानव आकृतिया, यानी मैं और तुम। और शीर्ष ' 'मेगियोरेफेटा, मास्नोरे अट्टो'। यह मैंने एक किताब मे जिसका मतलब होता है, जितनी जल्दीबाजी, रफ्तार कम।"

वाह !" मैंने कहा, "शीर्ष वाक्य तो बढ़िया है और तुमने उस-भी बता दिया, लेकिन बाकी सबका मतलब क्या है ?"

"मतलब लगाने की फुर्सत किसे है?" उसने कहा, "जैसा बताया है ठीक वैसा ही खोदकर बनाना होगा।"

"बना तो देंगे" मैंने कहा, "लेकिन इसमें बहुत-सी बातें ऐसी हैं जिनका मतलब कुछ भी समझ में नहीं आता; जैसे वेणी।"

"वेणी? वेणी होती है—होती है—लेकिन मतलब जानकर तुम्हें क्या करना है। जब वह काम शुरू करेगा तो मैं उसे बतला दूंगा कि वेणी कैसे बनाई जाती है।"

"नहीं टाम, यह ठीक नहीं।" मैंने कहा, "पूछे जाने पर मतलब तुम्हें बताना चाहिए। अवैधतासूचक तिरछा दण्ड क्या बला है?"

"क्यों सिर खा रहे हो? अवैधतासूचक तिरछा दण्ड क्या होता है यह मुझे भी नहीं मालूम। लेकिन कुल-चिह्न में उसका होना जरूरी है। हरएक राजबन्दी के कुल-चिह्न में वह होता है और इसलिए जिम के कुल-चिह्न में भी वह रहेगा, रहेगा जरूर रहेगा।"

ऐसी ही उसकी आदत थी। अगर किसी चीज को समझा न सकता या समझाना न चाहता तो अपनी जिद पर अड़ जाता था। फिर आप चाहे हफ्ते-भर पूछते रहें वह टस से मस न होता।

कुल-चिह्न की बात तय कर देने के बाद वह बाकी के काम में लग गया। यह काम था जेलखाने की दीवार पर लिखने के लिए कोई दर्दभरी सा वाक्य सोचना। टाम का कहना था कि जिम को कोई न कोई शोकपूर्ण वाक्य लिखना ही होगा। सभी बन्दी लिखते रहे हैं और जिम को भी लिखना होगा। थोड़ी ही देर में टाम ने कई वाक्य सोच डाले और उन्हें एक कागज पर लिखकर हमें सुना भी दिया। वे इस प्रकार थे.

१—यहां एक बन्दी-हृदय कुम्हलाया।

२—यहां मित्रों, सम्बन्धियों और सारी दुनिया से परित्यक्त एक अभागे बन्दी ने अपार कष्टों में अपना दुखी जीवन व्यतीत किया।

३—यहां सैंतीस वर्षों के एकाकी कारावास के पश्चात् एक भग्न हृदय बन्दी की क्लान्त आत्मा परलोकगामी हुई।

४—यहां सैंतीस वर्षों तक कठिन कारा में असहाय [illegible] रहने के बाद घर-बार से दूर और [illegible] के लिए [illegible] अवैध [illegible], जो

चौदहवें लुई का वास्तविक पुत्र था, प्राणान्त हो गया।

पढ़ते-पढ़ते टाम की आवाज कांपने लगी और गला भर आया; बड़ी मुश्किल से वह अपनी सिसकी रोक पाया था। हम लौटकर घर आगए तब तक भी वह तय नहीं कर सका कि जिम को कौन-सा वाक्य लिखने के लिए कहना चाहिए। उसकी राय में सभी बढ़िया थे, इसलिए अन्त में उसने यही कह दिया था कि क्यों न जिम सभीको लिख डाले! सुनकर जिम घबरा गया था और बोला था कि भैया, लट्ठों पर कील से इतनी सारी बातें तो मैं पूरे एक साल में भी नहीं लिख पाऊंगा, और फिर मुझे लिखना भी तो नहीं आता है। टाम ने उसकी इस दलील को यह कहकर उड़ा दिया था कि तुम इसकी चिन्ता न करो; मैं पेन्सिल से लट्ठों पर अक्षर बना दूंगा और तुम उन्हींपर कील फिराकर लट्ठों पर खोद देना।

तभी उसे एक नई बात सूझ गई और वह बोला, "नहीं, नहीं, लट्ठों पर खोदने से काम नहीं चलेगा। किसी भी कालकोठरी की दीवारें लट्ठों की नहीं बनी होती हैं। सभी बन्दियों ने अपने अभिलेख पत्थरों पर खोदे हैं। हमें भी किसी शिलाखण्ड का प्रबन्ध करना होगा।"

सुनते ही जिम ने कहा, "पत्थर पर लिखना तो और भी मुश्किल होगा। तब तो शायद मैं यहां से जिन्दा निकल ही न सकूं। पत्थर पर उतने सारे अक्षर खोदते-खोदते ही मर जाऊंगा।"

टाम ने उसे यह कहकर आश्वस्त कर दिया कि तुम्हें मरने न देंगे, हक को तुम्हारी मदद के लिए लगा देंगे। फिर उसने मुझसे और जिम से कलमें लेकर देखीं कि कैसी-क्या बनी हैं। कलमों की घिसाई करने का काम, जैसा कि मैं बतला चुका हूं, बहुत ही मुश्किल था और घिसते-घिसते मेरे हाथ चुटीले हो गए थे। हम दोनों घण्टों से घिस रहे थे, लेकिन अभी तक एक भी कलम तैयार नहीं हो पाई थी।

तब टाम ने कहा, "इससे काम न बनेगा। कोई और तरकीब सोचनी पड़ेगी। अरे हां, ऐसा क्यों न करें? कुल-चिह्न और शोकाकुल वाक्य खोदने के लिए जिम को शिलाखण्ड तो लाकर देना ही होगा। हम उसी पर कलमों की नोक भी बना लेंगे। एक ढेले में दो शिकार हो जाएंगे।

आरा मिल के बड़ा एक बड़ा-सा घिसैना (सान का पत्थर) रखा है। हम जाकर उसे उठा लाते हैं। जिम के लेम्प खोदने के काम आ जाएगा, कलमों की नोकें बन जाएंगी और उसपर घिस-रगड़कर आरी भी तैयार कर लेंगे।"

घिसैने को ढोकर लाना हंसी-मजाक तो था नहीं, फिर भी हम उसे लाने के लिए चल पड़े। अभी आधी रात भी नहीं हुई थी, इसलिए तुरत आरा मिल पहुंच गए और घिसैने को ठेलने लगे। लेकिन जल्दी ही नाकों पसीना आ गया। एक तो उसे उठाकर खड़ा करना ही मुश्किल और फिर लुढ़काकर ले जाना और भी मुश्किल। बार-बार गिर पड़ता था और हर बार हमारे हाथ-पाव पर ही आता था। जरा-सा भी चूक जाते तो फिर उठाना नसीब न होता, उसीके नीचे कुचलकर रह जाते। टाम ने तो यहां तक कह दिया कि आज हम दोनों में से, यह घिसैना, किसी एक की बलि लेकर ही रहेगा। किसी तरह आधी दूर तक लाए, परन्तु थककर चूर हो गए; पसीने के परनाले बहने लगे और हिम्मत ने जवाब दे दिया। साफ दिख रहा था कि हम इसे मुकाम पर पहुंचा न सकेंगे। तब जिम को बुला लाने का फैसला किया। उसने खटिया का पाया उठाकर जंजीर निकाली और गले में लपेटकर हमारे साथ सूराख में से रेंगता हुआ बाहर आ गया। फिर हम दोनों उसे लुढ़काते हुए बड़ी आसानी से झोपड़ी तक ले आए। टाम हमें हुक्म देता और मुकाइमी करता रहा। वह दूसरों से मेहनत करवाने और हुक्म देने का काम भी खूब अच्छी तरह कर लेता था। मेरी राय में तो दुनिया का ऐसा कोई काम न था जिसे वह न कर सके।

सूराख वैसे तो काफी बड़ा था, लेकिन इतना बड़ा नहीं कि वह पत्थर उसमें से निकल आए। जिम ने फौरन कुदाली उठा ली और जल्दी-जल्दी दस-बारह हाथ मारकर उसे और बड़ा और चौड़ा कर दिया। टाम ने उसपर कील से अक्षर और कुल-चिह्न बना दिए और जिम के हाथ में टांकी की जगह कीला और हथौड़े की जगह सायबान में पड़ा एक मरियल-सा पुराना बोल्ट थमा दिया और कहा कि जब तक मोमबत्ती बुझ न जाए काम

क

हां, इस बीच हमने उसके पांव की बेड़ी की जंजीर फिर खाट के पाए में पिरो दी थी।

इतना सब करके हम सोने के लिए लौट ही रहे थे कि टाम को कुछ याद आ गया और वह बोला, "जिम, यहां मकड़ियां तो नहीं हैं ?"

"ना भैया, भगवान की मेहर से मकड़ियां तो नहीं हैं।"

"खैर, कोई बात नहीं, हम ला देंगे।"

"ना भैया, मकड़ियां क्या होंगी ! और उनसे मुझे डर लगता है। सांप से भी मुझे उतना डर नहीं लगता जितना मकड़ियों से।"

टाम कुछ देर सोचता रहा और फिर बोला, "लो, और भी बढ़िया बात सूझ गई। मेरे खयाल में पहले भी लोगों ने ऐसा किया होगा, हमें भी करना चाहिए। बहुत बढ़िया खयाल है। अच्छा, तुम उसे रखोगे कहां ?"

"किसे ?"

"सांप को—खड़खड़िया सांप[1] को।"

"अरे बाप रे ! नहीं टाम भैया, नहीं। अगर यहां कोई सांप-वांप लाया गया तो मैं या तो दीवाल तोड़कर भाग जाऊंगा या लट्ठों से सिर टकराकर मर जाऊंगा ! बाप रे, खड़खड़िया सांप !"

"थोड़े दिनों में वह पालतू हो जाएगा और तुम्हें भी डर नहीं लगेगा।"

"पालतू हो जाएगा ?—यानी मैं उसे पालूंगा ?"

"हां; वह बड़ी आसानी से पालतू हो जाएगा। किताबों में लिखा है कि प्राणी-मात्र स्नेह का भूखा होता है, और बन्दियों से तो जीव-जन्तु बड़ी जल्दी हिल जाते हैं, खासकर उन बन्दियों से जो उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाते और दयालुता से पेश आते हैं। जेलखाने में रहते हुए बन्दियों के जीव-जन्तुओं को पालने और उनसे दोस्ती करने के बहुत-से किस्से मिलते हैं। मैं सिर्फ इतना ही चाहता हूं कि तुम भी कोशिश करके देखो। दो-

१. अमरीका का सबसे विषैला और भयानक 'रैटल स्नेक'। उसकी दुम का छोर हड्डियों के छल्ले-से टुकड़े होते हैं, जिनसे रेंगते में खड़खड़ाहट की आवाज होती है और छल्लों की गिनती से सांप की उम्र का मालूम की जाती है।

—अनुवादक

लगती है और जेल में तो वे उसपर लट्टू हो जाते हैं। विषाद-भरी धुन हो तो फिर क्या कहने ! और मुरचंग पर तुम सिर्फ ऐसी ही धुनें बजा सकते हो। सुनते ही चूहे आ जमा होंगे। उचक-उचककर देखने लगेंगे कि बात क्या है। बस-बस, यह सबसे बढ़िया रहेगा। रात में सोने से पहले और सवेरे नींद खुलते ही खाट पर बैठ जाना और 'छूट गए सब संगी साथी, टूट गया सब नाता।' की करुण धुन छेड़ना और फिर देखना चमत्कार। दो मिनट में तो तमाम चूहे और सांप और मकड़ियां निकल-निकलकर आ जाएंगे और तुम्हारे दुःख में दुःखी होकर रोने ही नहीं लगेंगे दिलासा देने के लिए बदन पर भी चढ़ आएंगे। और तब तुम्हें उनके स्नेह, सहानुभूति और भाई-चारे की कीमत मालूम होगी। खूब आनन्द रहेगा।"

"हां, भैया, आनन्द तो जरूर रहेगा, लेकिन सिर्फ चूहों, सांपों और मकड़ियों के लिए; जिम बेचारे की तो जान ही निकल जाएगी। मुझे तो तुम्हारी इस बात में कोई तुक नहीं दिखाई देती। इतने पर भी करना होगा, तो जरूर करूंगा। कुछ नहीं तो उन जीव-जन्तुओं को तो खुश रखना ही होगा, नहीं तो सब मिलकर मेरा जीना मुहाल कर देंगे।"

टाम कुछ देर चुप सोचता रहा कि कोई और बात तो नहीं छूट गई, फिर सहसा बोला "अरे, एक बात तो भूला ही जा रहा था। तुम फूलों का कोई पौधा यहां उगा सकते हो?"

"कुछ कह नहीं सकता टाम भैया ! शायद उग भी जाए। लेकिन उसका करेंगे क्या? एक तो यहां दिन-भर घुप अंधेरा रहता है और दूसरे, फूलों की मुझे कोई जरूरत नहीं। इसके अलावा बड़े झाड़े की पूरी [illegible] जाएगी।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उसे आंधीझाड़ा मत कहना; कहना होगा गुलदाउदी। जेलखानों में कैदी फूल के जिन पौधों को उगाते हैं उन्हें गुलदाउदी ही कहा जाता है, समझे। और देखो, तुम उसे अपने आंसुओं से सींचोगे।"

"आंसुओं से क्यों? पानी मेरे पास बहुत-सा रखा है—ताजा सोते का पानी।"

"अरे भाई, सोते के पानी से नहीं; आंसुओं से सींच-सींचकर फूल के पौधे उगाने होते हैं। किताबों में यही लिखा है।"

"किताबों में लिखे की तुम जानो। मैं तो इतना जानता हूं कि दूसरे को आंसुओं से सींचकर उगाने में जितना वक्त लगेगा उससे आधे वक्त में पानी से सींचकर आंधीझाड़े को उगा दूंगा।"

"आंधीझाड़ा नहीं, गुलदाउदी कहो। और बात जल्दी या देर से उगाने की नहीं, आंसुओं से सींचकर उगाने की है।"

"तब तो वह पौधा जरूर मर जाएगा, टाम भैया, जरूर ही मर जाएगा। बात यह है कि न मैं कभी रोता हूं और न आंसू आते हैं।"

टाम भैया को निरुत्तर रह जाना पड़ा, लेकिन हार मानने वाले जीव वे थे नहीं। फौरन इसका भी रास्ता खोज निकाला। बोले, "कोई बात नहीं। तुम इसकी फिक्र मत करो। आंसुओं का बन्दोबस्त हम कर देंगे। कल सवेरे हबशियों की कोठरियों में चले जाएंगे और तुम्हारे बाल्टी के बरतन में चुपके से एक बड़ा प्याज डाल देंगे। उसकी मदद से इतने आंसू ला सकोगे कि पौधा क्या चाहो तो पूरे पेड़ की सिंचाई कर लो।"

जिम ने कहा, "बाल्टी के बरतन में कुछ छिपाकर भेजना है तो प्याज क्यों तम्बाकू ही भेजो न!" और फिर लगा वह बड़बड़ाने कि एक से एक टेढ़े काम सुझा दिए—आंधीझाड़ा लगाओ, चूहों को मुरचंग में रिझाओ, सांपों को गले लगाओ, मकड़ियों को प्यार से थपथपाओ, पत्थर पर अक्षरों की खुदाई करो, कमीज पर ब्यौरा लिखकर रखो, कैदी न हुए अपने ही जी को जंजाल हो गए! कौन जानता था कि कैदी होते ही सिर पर इतनी जिम्मेदारियां आ पड़ेंगी और बेकार की फिकर-चिन्ताओं के मारे सोना-जागना हराम हो जाएगा।"

टाम थोड़ी देर तो सुनता रहा और फिर उसे कड़े हाथों लेता हुआ

बोला, "नम्बर एक के अहमक आदमी हो और अहसानफरामोश भी। कहां तो नाम कमाने के इतने अच्छे मौके मिलने के कारण खुश होना चाहिए और तुम लगे भुनभुनाने। दुनिया में आज तक किसी राजबन्दी को जो मौके न मिले वे तुम्हें मिल रहे हैं और तुम सराहना करने के बदले ठोकर मार रहे हो; हमारे किए-कराए पर पानी फेरे दे रहे हो। शर्म आनी चाहिए।"

इस लताड़ का पड़ना था कि जिम के देवता एकदम सीधे हो गए। लगा घिघियाने और माफी मांगने और बोला कि गलती हो गई, आगे ऐसा कभी न होगा। इसके बाद मैं और टाम सोने के लिए चले आए।

मकड़ियां, मत्कुण, मेढक, इल्लियां और दूसरे भी कई तरह के कीड़े-मकोड़े हमने काफी मात्रा में और बढ़िया किस्म के इकट्ठा कर लिए थे। हमारा इरादा तो ततैया का पूरा छत्ता ले आने का था, मगर न ला सके। बात यह हुई कि उस समय सब की सब ततैया छत्ते में ही थीं। हम भागे नहीं। काफी देर तक डटे रहे। देखना चाहते थे कि कौन थकता है, वे या हम ? आखिर हमीं थक गए और हार माननी पड़ी। दवाई लगाने से दर्द जरूर कम हुआ और सूजन भी कुछ उतरी, मगर ठीक से बैठ नहीं पाते थे। फिर हम सांप पकड़ने निकले और कोई एक दर्जन कबरे और घरेलू सांप पकड़कर थैले में बन्द किए और उन्हें अपने कमरे में लाकर रख दिया। तब तक शाम के भोजन का वक्त भी हो गया था। हमने भी पूरे दिन डट-कर काम किया था, तो क्या कड़ाके की भूख लगी थी ?—नहीं तो···

लौटकर अपने कमरे में आए तो वहां एक भी सांप नहीं था। कारण भी फौरन समझ में आ गया। थैले का मुंह कुछ ढीला रह गया था, इस-लिए एक-एक कर सभी सांप उसमें से रेंगकर बाहर आ गए और चलते बने। लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं थी। जाकर भी कहां गए होंगे ? घर में या घर के आसपास ही तो होंगे। फिर पकड़ लेंगे। सच ही, उसके बाद घर में सांपों की कोई कमी न रही, मानो बाढ़-सी आ गई। कोई छत की धन्नियों में से गिर रहा है तो कोई आपकी तश्तरी में और कोई बहुत धीरे से आपकी गर्दन पर। इस तरह और ऐसी जगह टपकते थे जिसकी आप कभी कल्पना भी नहीं कर सकते।

सब के सब बड़े खूबसूरत, कबरे और प्यारे-प्यारे सांप थे और डसना, फुफकारना तो जैसे जानते ही नहीं थे। लाख-करोड़ भी इकट्ठा होकर किसी-का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे। लेकिन सैली मौसी को कौन समझाए ! उनके लिए तो हर सांप विषैला विषधर भुजंग था। सांप की सूरत तो दूर उन्हें उसके नाम से भी दुश्मनी थी। सांप दीखा और उनके होश फाख्ता ए। कोई-सा भी काम क्यों न कर रही हों, सांप उनपर गिरा और वे उस ाम को वहीं फेंक-फाककर हिरन हो जातीं। ऐसी औरत तो मैंने देखी ही। कमरे के बाहर जाकर दम लेतीं और गला फाड़कर जेरिको को कारतीं। खुद उन्हें चिमटे से सांप उठाने के लिए राजी करना असम्भव

ही था। अगर बिस्तरे पर सांप दिख जाता तो तड़पकर बगटुट भागतीं और इस कदर चिल्लाने लगतीं मानों घर में आग लग गई हो! बुड्ढ को उन्होंने इतना परेशान कर डाला कि बेचारे मनाया करते कि अगर विधाता ने सांपों को बनाया ही न होता तो कितना अच्छा रहता। एक-एक सांप के घर में से निकल जाने के हफ्ता-भर बाद भी मौसी के मन में सांपों का डर वैसा ही बना रहा; सच में तो उनका यह डर कभी मिटा ही नहीं। बैठी कुछ सोच रही होतीं और उनकी गर्दन पर होले से पंख छुआ दिया जाता तो जमीन से पांच हाथ ऊपर उछल पड़तीं। मुझे देख-देख कर बड़ा आश्चर्य होता था। लेकिन टाम का कहना था कि सब औरतें ऐसी ही होती हैं। उसने यह भी कहा कि जरूर कोई कारण है जिससे भगवान ने उन्हें ऐसा बनाया।

जब भी हमारा कोई सांप उनके सामने आ जाता तो वे कस कर हमारी धुलाई कर देतीं और ऊपर से कहतीं कि यह तो कुछ भी नहीं है, अगर फिर सांपों को घर में लाए तो वो मार मारूंगी, वो मार मारूंगी कि जनम भर न भूलोगे। पिटाई की तो मुझे चिन्ता नहीं, क्योंकि छड़ी पड़ गई और धूल झड़ गई, मगर सांपों को दुबारा पकड़ने में चोटी का पसीना एड़ी पर आ गया। खैर, हमने दुबारा पकड़े और दूसरे तमाम जीव-जन्तुओं के साथ उन्हें जिम की कोठरी में पहुंचा दिया। अब वहां की रौनक देखते ही बनती थी और खासकर उस समय जब जिम बाजा बजाता और सब के सब उसकी

दूसरा उसके ऊपर सरकस कर रहा होता; और अगर वह नई जगह की तलाश में ज़रा-सा भी सीधा-टेढ़ा होता तो मकड़ियां दल बांधकर हमला बोल देतीं। बेचारा बुरी तरह तंग आ गया था और कहने लगा था कि एक बार यहां से निकलकर जाऊं, फिर कोई लाख रुपये भी दे तो कैदी न बनूं!

तीसरा हफ्ता ख़त्म होते-होते तो सब काम ठाठ से चल निकले और बहुत कुछ पूरे भी हो गए। कमीज़ हमने एक गुझिया में रखकर पहले ही पहुंचा दी थी। जैसे ही कोई चूहा काटता जिम फौरन उठ बैठता और ताज़ा स्याही से उसी समय थोड़ा ब्योरा लिख लेता। कलमें तैयार हो ही गई थीं और उसने घिसने पर कुल-चिह्न और जो भी कुछ लिखना था वह सब खोद दिया था। खटिये का पाया हमने आरी से काट डाला था और बुरादा खुद खा गए थे, हालांकि उससे हमारे पेट में बहुत ज़ोरों का दर्द हुआ; लगता था कि प्राण ही निकल जाएंगे, लेकिन निकले नहीं। यह बुरादा बहुत ही दुष्पाच्य था और यह राय मेरी ही नहीं टाम की भी थी। इस तरह सब काम पूरे हो गए और अब करने को कुछ भी नहीं रह गया था। और जब कोई काम न रहा तो हम दोनों और ख़ास तौर पर जिम सुस्ती और थकावट महसूस करने लगे।

उधर बुढ़ऊ ओरलियन्स के उस बागान को कई पत्र लिख चुके थे, लेकिन उस नाम का कोई बागान होता तो चिट्ठी का जवाब आता या कोई आकर अपने भागे हुए हबशी को छुड़ा ले जाता। इसलिए अन्त में उन्होंने सेंट लुई और न्यू ओरलियन्स के अख़बारों में जिम के बारे में विज्ञापन छपाने का निश्चय किया। और जब उन्होंने सेंट लुई का नाम लिया तो मुझे अपने पावों तले की धरती खिसकती दिखाई दी। सच, मेरे रोंगटे खड़े हो गए। अब हमारे पास खोने के लिए समय बिलकुल ही नहीं था।

जब मैंने टाम से कहा तो वह बोला कि अब गुमनाम पत्र लिखने का समय आ गया है।

"यह क्या होता है?" मैंने पूछा।

"लोगों को सचेत कर देना कि कुछ होने जा रहा है। सचेत करने के वैसे तो कई ढंग हैं, लेकिन आम तौर पर कोई न कोई जासूसी करता रहता

ही था। अगर बिस्तरे पर सांप दिख जाता तो तड़पकर बगटुट भागतीं और इस कदर चिल्लाने लगतीं मानों घर में आग लग गई हो! बुड्ढ को उन्होंने इतना परेशान कर डाला कि बेचारे मनाया करते कि अगर विधाता ने सांपों को बनाया ही न होता तो कितना अच्छा रहता। एक-एक सांप के घर में से निकल जाने के हफ्ता-भर बाद भी मौसी के मन में सांपों का डर वैसा ही बना रहा; सच में तो उनका यह डर कभी मिटा ही नहीं। बैठी कुछ सोच रही होतीं और उनकी गर्दन पर हौले से पंख छुआ दिया जाता तो जमीन से पांच हाथ ऊपर उछल पड़तीं। मुझे देख-देखकर बड़ा आश्चर्य होता था। लेकिन टाम का कहना था कि सब औरतें ऐसी ही होती हैं। उसने यह भी कहा कि जरूर कोई कारण है जिससे भगवान ने उन्हें ऐसा बनाया।

जब भी हमारा कोई सांप उनके सामने आ जाता तो वे कसकर हमारी धुलाई कर देतीं और ऊपर से कहतीं कि यह तो कुछ भी नहीं है, अगर फिर सांपों को घर में लाए तो वो मार मारूंगी, वो मार मारूंगी कि जनम-भर न भूलोगे। पिटाई की तो मुझे चिन्ता नहीं, क्योंकि छड़ी पड़ गई और धूल झड़ गई; मगर सांपों को दुबारा पकड़ने में चोटी का पसीना एड़ी तक आ गया। खैर, हमने दुबारा पकड़े और दूसरे तमाम जीव-जन्तुओं के साथ उन्हें जिम की कोठरी में पहुंचा दिया। अब वहां की रौनक देखते ही बनती थी और खासकर उस समय जब जिम बाजा बजाता और सब के सब उसकी ओर लपकने लगते।

जिम को मकड़ियां फूटी आंखों नहीं सुहाती थीं और मकड़ियों की भी उससे खास दुश्मनी थी। दोनों में निरन्तर युद्ध-सा छिड़ा रहता। मकड़ियों को जरा-सा भी मौका मिल जाता तो वे उसे तंग कर डालती थीं। अब जिम की खास शिकायत यह थी कि चूहे, सांप और घिसीने के कारण उसके बिस्तर में इतनी भी जगह नहीं रह गई थी कि आराम से सो पाता; और अगर जगह हो तो भी इतने जीवों की चहल-पहल के मारे कोई कैसे सोए! सब जीव तो एक साथ सोते नहीं थे—उनकी सोने की पारियां बंधी हुई थीं; जब सांप सो जाते तो चूहे उधम-कूद मचाने और जब चूहे सोए होते तो सांप आकर पहरा देते। हर समय एक गिरोह उसके नीचे रहता!

दूसरा उसके ऊपर सरकस कर रहा होता; और अगर वह नई जगह की तलाश में ज़रा-सा भी सीधा-टेढ़ा होता तो मकड़ियां दल बांधकर हमला बोल देतीं। बेचारा बुरी तरह तंग आ गया था और कहने लगा था कि एक बार यहां से निकलकर जाऊं, फिर कोई लाख रुपये भी दे तो कैदी न बनूं!

तीसरा हफ्ता खत्म होते-होते तो सब काम ठाठ से चल निकले और बहुत कुछ पूरे भी हो गए। कमीज़ हमने एक गुभिया में रखकर पहले ही पहुंचा दी थी। जैसे ही कोई चूहा काटता जिम फौरन उठ बैठता और ताज़ा स्याही से उसी समय थोड़ा ब्यौरा लिख लेता। कलमें तैयार हो ही गई थीं और उसने घिसने पर कुल-चिह्न और जो भी कुछ लिखना था वह सब खोद दिया था। खटिये का पाया हमने आरी से काट डाला था और बुरादा खुद खा गए थे, हालांकि उससे हमारे पेट में बहुत ज़ोरों का दर्द हुआ; लगता था कि प्राण ही निकल जाएंगे, लेकिन निकले नहीं। वह बुरादा बहुत ही दुष्पाच्य था और यह राय मेरी ही नहीं टाम की भी थी। इस तरह सब काम पूरे हो गए और अब करने को कुछ भी नहीं रह गया था। और जब कोई काम न रहा तो हम दोनों और खास तौर पर जिम सुस्ती और थकावट महसूस करने लगे।

उधर बुढ़ऊ ओरलियन्स के उस बागान को कई पत्र लिख चुके थे, लेकिन उस नाम का कोई बागान होता तो चिट्ठी का जवाब आता या कोई आकर अपने भागे हुए हबशी को छुड़ा ले जाता। इसलिए अन्त में उन्होंने सेंट लुई और न्यू ओरलियन्स के अखबारों में जिम के बारे में विज्ञापन छपाने का निश्चय किया। और जब उन्होंने सेंट लुई का नाम लिया तो मुझे अपने पावों तले की धरती खिसकती दिखाई दी। सच, मेरे रोंगटे खड़े हो गए। अब हमारे पास खोने के लिए समय बिलकुल ही नहीं था।

जब मैंने टाम से कहा तो वह बोला कि अब गुमनाम पत्र लिखने का समय आ गया है।

"यह क्या होता है?" मैंने पूछा।

"लोगों को सचेत कर देना कि कुछ होने जा रहा है। सचेत करने के वैसे तो कई ढंग हैं, लेकिन आम तौर पर कोई न कोई जासूसी करता रहता

है और वह गढ़ी के हाकिम को खबर कर देता है। जब सोलहवां लुई तूलरीज (तुलों ?) से भागने को हुआ तो एक बांदी ने इसकी सूचना वहां के हाकिम को दी थी। यह तरीका भी अच्छा है और गुमनाम पत्र देना भी अच्छा है। हम दोनों ही तरीके काम में लाएंगे। जब कैदी भागने को होता है तो आम तौर पर उसकी मां कैदी के कपड़े पहनकर पीछे रह जाती है और वह अपनी मां के कपड़े पहनकर निकल भागता है। हम भी यही करेंगे।"

"लेकिन टाम, हमें किसीको सावधान करने और यह सूचना देने की क्या जरूरत है कि कुछ गड़बड़ होने जा रही है ? पता लगाना उनका काम है, लगाएं। हमें इससे क्या मतलब ?"

"ठीक है; मैं भी जानता हूं कि पता लगाना उनका काम है। मगर सवाल यह है कि क्या वे लगा सकेंगे और अभी तक उन्होंने लगाया ? उन्होंने हमें मनमानी करने के लिए आजाद छोड़ दिया। सब तरह से हम-पर विश्वास करते रहे और फिर बौड़म भी इतने हैं कि एक बार भी उनका ध्यान इधर नहीं गया। आज तक उन्हें नहीं मालूम कि क्या हुआ और क्या होने जा रहा है। इसलिए अगर हम नहीं बताएंगे तो कोई रोकने नहीं आएगा और कोई रोकने नहीं आया तो इतनी मेहनत करके और तकलीफें उठाकर हमारा भागना एकदम मिट्टी हो जाएगा—मिट्टी भी नहीं गोबर, बल्कि उससे भी गया-बीता।"

"मुझसे पूछो तो मैं यही कहूंगा टाम कि कोई भी रोकने-टोकनेवाला

छोड़ आने में तुम्हें पन्द्रह मिनट से ज्यादा वक्त तो लगेगा नहीं।"

"अच्छी बात है, यह काम मैं कर दूंगा। लेकिन वह चिट्ठी तो मैं अपने इन कपड़ों में भी पहुंचा सकता हूं।"

"मगर इन कपड़ों में बादी तो लगोगे नहीं।"

"बादी तो जरूर नहीं लगूंगा, लेकिन उस समय देखेगा भी कौन !"

"फिर वही बात ! कितनी बार समझाना होगा कि सवाल दिखने और देखने का नहीं, तरीके और नियम का है। हमारा काम है ठीक ढंग से अपना कर्तव्य पूरा करना, बगैर इस बात की चिन्ता किए कि कोई देखता है या नहीं। सिद्धान्त और नियम भी कोई चीज़ है, या तुम सब घोलकर पी गए?"

"अच्छा बाबा ! मैं कुछ नहीं कहता। चलो, बादी तो मैं हो गया, जिम की मां कौन होगी ?"

"मैं हूंगा। सैली मौसी का एक गाउन इस काम के लिए उठा लाऊंगा।"

"फिर तो मेरे और जिम के वहां से निकल जाने के बाद तुम्हें झोपड़ी में रहना होगा।"

"ज्यादा समय तक नहीं। मैं फूस के एक पुतले को जिम के कपड़े पहनाकर उसकी खटिया पर लिटा दूंगा, वह हो जाएगा भेष बदलकर लेटी हुई जिम की मां। जिम मुझसे गाउन उतरवाकर खुद पहन लेगा और हम सब वहां से बचकर निकल जाएंगे। जब भी कोई राजबन्दी भागता है तो उसके लिए यही कहा जाता है कि वह 'बचकर निकल गया'; 'भागना' कहने का रिवाज नहीं है। राजा या बादशाह के लिए तो सिर्फ 'निकल आए' या 'निकल गए' ही कहते हैं; और राज-पुत्रों के लिए भी चाहे वे असली हों या न हों (वैध और अवैध) यही कहा जाता है।"

फिर टाम ने गुमनाम पत्र लिखा और मैंने आधी रात में हब्शी युवती का फ्राक चुराकर पहना और चुपचाप जाकर उस पत्र को सदर दरवाज़े की देहली में खिसका आया। सब-कुछ मैंने वैसा ही किया जैसा टाम ने कहा था। पत्र में लिखा था—

> होशियार ! मुसीबत आनेवाली है ! सावधान रहना ! गफलत न होने पाए।
>
> —गुमनाम दोस्त

दूसरी रात हमने सदर दरवाजे पर खून से एक दूसरे को काटती हड्डियों के ऊपर खोपड़ी का निशान बना दिया। तीसरी रात पिछले दरवाजे पर एक तावूत की आकृति बना दी। अब तो घरवालों के डर का क्या पूछना ! अगर सारे घर पर भूतों का कब्जा हो जाता और हर कोने-अंतरे में और पलंगों के नीचे और यहा तक कि हवा में भी भूत मंडराते दिखाई देने लगते तब भी शायद वे इतना न डरते। सबसे बुरे हाल सैली मौसी के थे। दरवाजा भी खड़कता तो वे 'हाय' करके उछल पड़तीं। कोई चीज गिरती तब भी 'हाय' करके उछल जातीं। अगर भूले-चूके कोई उनसे छू जाए और उनका ध्यान कहीं और रहे तब भी उसी तरह हाय मारकर उछलती थीं। उनके मन में यह डर समा गया था कि कोई पीछे खड़ा न हो, इसलिए हर समय डरी, घबराई और नाराज रहती और मुड़-मुड़कर देखा करती थीं। एक तरह से चकरघिन्नी ही हो गई थीं। डरते-डरते आधा मुड़कर पीछे की ओर देखतीं और हाय करके तुरत मुह सामने फेर लेती थीं। मारे डर के न सोने की हिम्मत होती थी और न बैठे रहने की। इस तरह हमारी चाल खूब रंग दिखा रही थी। टाम का कहना था कि आज तक उसकी कोई चाल इतनी सफल नहीं हुई थी। उसके विचार में इसका मतलब यह था कि हमारी यह चाल सोलहों आने सही और नियमानुकूल थी।

"इसलिए", टाम ने कहा, "अब हमें धड़ाका कर ही देना चाहिए।"

तब दूसरे दिन हम मुंहअंधेरे उठे और दूसरा गुमनाम पत्र लिखकर तैयार किया। लेकिन इसे यथास्थान पहुंचाने की समस्या उठ खड़ी हुई। रात में भोजन के समय हमने सुन लिया था कि आगे और पीछे दोनों ही दरवाजों पर सारी रात एक-एक हबशी पहरे पर तैनात कर दिए जाएंगे। टाम बिजली के छड़ के सहारे उतरकर टोह लेने गया तो पिछवाड़े के दरवाजे वाला हबशी खर्राटे भर रहा था; टाम ने पत्र उसकी गर्दन में खोंस [illegible] और आया। [illegible] में लिखा था :

साथी इधर आ निकले हैं और आज रात तुम्हारे भागे हु
को चुरा ले जाएंगे। ये तुम्हें बराबर डराते रहे हैं, जिससे
ही छिपे बैठे रहो और बाहर निकलने की हिम्मत न क
हालांकि उनका साथी हूं, मगर बुरे कामों और दुष्टत
तंग आ गया हूं और उनका साथ छोड़ना चाहता हूं,
तुम्हें आगाह कर रहा हूं और इनके बुरे इरादों की जान
रहा हूं। ये लोग उत्तर की तरफ से बागड़ फांदकर ठीक आ
के समय आएंगे। इनके पास नकली चाभी है, जिससे को
ताला खोलकर तुम्हारे हब्शी को निकाल ले जाएंगे। मु
पर तैनात किया गया है कि कुछ दूर खड़ा देखता रहूं और
होने पर टीन का बिगुल बजाकर उन्हें सावधान कर दूं। म
तय कर लिया है कि बिगुल नहीं बजाऊंगा और उनके
घुसते ही भेड़ की तरह मिमियाऊंगा। उस समय वे अन्द
की बेड़ियां काट रहे होंगे। तुम फौरन पहुंच जाना और
ताला लगा देना। वे अन्दर घिर जाएंगे; फिर तो उन्हें आ
मार सकोगे। जैसा मैं कह रहा हूं वैसा ही करना।
किया तो उन्हें शक हो जाएगा और तुम लोगों की जान
पड़ जाएगी। मुझे कोई इनाम नहीं चाहिए। मेरे लिए
काम करने की खुशी और सन्तोष ही सबसे बड़ा इनाम है।

गुमनाम

अध्याय ४०

आज हम बहुत खुश और बड़ी उमंग में थे। सवेरे नाश्ता किया और
तुरत बाद ही मेरी नाव लेकर नदी में मछली पकड़ने चले गए।
हर का खाना भी लेते गए। खूब मजा रहा। कई हाथों इधर-उधर
देख-भाल कर ली। वह बिलकुल ठीक-ठाक हालत में था। इस तरह

दिन बाहर बिताकर रात के खाने के समय घर लौटे। यहां सबके चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं। हर कोई बुरी तरह घबराया हुआ था। खाना खत्म होते ही हमें सोने के लिए भेज दिया गया। हमें यह नहीं बताया गया कि मुसीबत क्या है और न उस दूसरे पत्र का ही हमारे आगे जिक्र किया गया। कहने-बताने की कोई जरूरत भी नहीं थी, क्योंकि हमें तो सभी कुछ मालूम था। लेकिन हम अपने कमरे में नहीं गए। आधा जीना ही चढ़े होंगे कि मौसी की पीठ मुड़ती दिखाई दी और हम फुर्ती से तहखाने में उतर गए। फौरन अलमारी खोलकर काफी सारा खाना निकाला और उसे लेकर अपने कमरे में लौट आए और आराम से टांगें फैलाकर लेट गए। कोई साढ़े ग्यारह बजे उठे और टाम ने सैली मौसी का गाउन पहना, जिसे वह चुरा के ले आया था और खाना लेकर रवाना हो ही रहे थे कि टाम ने पूछा, "मक्खन कहां है?"

मैंने कहा, "मक्का की रोटी के बड़े टुकड़े पर एक पूरा लौंदा रखा था।"

"लगता है तुम वह टुकड़ा वहीं छोड़ आए — यहां तो कहीं नहीं है।"

"मक्खन की ऐसी क्या जरूरत है? काम तो उसके बिना भी चल

में डालें और उसे सिर पर पहन लिया। इतने में उन्होंने देख लिया और पूछ बैठी, "तुम नीचे तलघर में गए थे ?"

"हां, मौसी !"

"क्या करने ?"

"कुछ भी नहीं।"

"कुछ भी नहीं ?"

"हां, मौसी, कुछ भी नहीं।"

"फिर इतनी रात वहां क्यों गए ? कोई वजह ?"

"मालूम नहीं मौसी।"

"तुम गए और तुम्हीं को नहीं मालूम ? ठीक-ठीक बताओ, नीचे क्या करने गए थे ? उड़नघाइयों से काम नहीं चलेगा, समझे ?"

"मैंने वहां कुछ भी नहीं किया मौसी; सच, भगवान की सौगन्ध, कुछ भी नहीं किया।"

मैंने सोचा कि अब मौसी मुझे जाने न देंगी और दूसरा कोई दिन होता तो जरूर छोड़ देती, लेकिन आज काफी परेशानियां थीं और बड़ी विचित्र बातें हो रही थीं, इसलिए उन्हें पग-पग पर सन्देह की गन्ध आना स्वाभाविक था। किसी भी तरह की गड़बड़ को वे आज नजरअन्दाज करने की मनःस्थिति में नहीं थीं। हर शब्द पर जोर देकर बोलीं, "सीधे बैठके में जाओ और मेरे आने तक वहीं रहो। तुम नीचे जरूर कोई शैतानी कर रहे थे। पहले जाकर उसका पता लगा आऊं फिर तुमसे निपटूंगी।"

वे नीचे चली गईं और आगे बढ़कर बैठके का दरवाजा खोला। अन्दर जाकर देखा तो वहां लोगों की भीड़ लगी हुई थी। पास-पड़ोस के कोई पन्द्रहेक किसान बन्दूकें लिये बैठे थे। मैं बुरी तरह सन्तप्त एक कुर्सी पर जा बैठा। मेरे आसपास बैठे लोग दबे स्वरों में बातें कर रहे थे, सब के सब बड़े अधीर और अकुलाए हुए लग रहे थे और साथ ही अपनी उद्विग्नता को छिपाने की कोशिश भी कर रहे थे, लेकिन सफल नहीं हो पा रहे थे। कभी टोप उतारने तो कभी टोप पहनने, कभी सिर और गर्दन खुजलाने तो कभी पहलू बदलने और कभी बटनों को अकारण ही छूने-टटोलने में उनके आन्तरिक उद्वेग का साफ पता लग जाता था। अब तो मैं भी बहुत था, लेकिन

आवज़ें एक साथ सुनाई दी; "कौन है ? जवाब दो, वरना गोली
जाएगी !"

हमे पागल कुत्ते ने काटा था कि जवाब देते ! सिर पर पांव
नाक की सीध मे भाग चले। उधर से भी लोगो के दौड़ने की आवा
और फिर धांय-धाय कर बन्दूकें गरज उठी। गोलियां तड़तड़ाती हुई
चारों ओर बरस रही थी और वे पुकार-पुकारकर कह रहे थे, "वे
जा रहे हैं, उधर, नदी की तरफ ! देखो, निकलने न पाए। पीछे ल
जवानो। कुत्ते छोड़ दो उनपर।"

वे हमारे पीछे लगे दौड़े चले आ रहे थे।—उनके चिल्लाने का शो
पांवो की आवाज़ बूट पहने हुए होने के कारण साफ सुनाई दे रही थी
हम चुपचाप भागे जा रहे थे, क्योंकि न तो बूट पहने थे और न शोर
रहे थे। हम आरा मिल के रास्ते पर थे। जब वे काफी करीब आ गए
फौरन एक झाड़ी मे दुबक गए और उनको आगे निकल जाने दिया
को पहले इस डर से कि कहीं वे डाकुओं को भगा न दें, कुत्ताघर मे
कर दिया था, लेकिन अब किसीने खोल दिया था इसलिए वे भी जो
से भौंकते हुए आ पहुचे। परन्तु आखिर तो वे हमारे अपने कुत्ते थे
आकर जब उन्होंने देखा कि अरे, ये तो अपने ही आदमी हैं और इन
खतरा नहीं तो क्षण-भर ठिठककर दुम हिलाई और फिर उसी तरह
शोर से भौंकते हुए तेजी से आगे दौड़ गए। अब रास्ता साफ था;
भी कदम बढ़ाए और आरा मिल मे होते हुए झाड़ियो के रास्ते नदी
वहा पहुच गए जहा मेरी नाव बंधी हुई थी। हम फुर्ती से नाव मे बैठे
से उसे ढकेला और तीर की तरह मंझधार की ओर भागे। आवाज़
बनते कोशिश होने नही दी और जो हुई वह सिर्फ उतनी जिसके
काम चल नही सकता था। थोड़ी देर मे तो हम बड़े आराम से उस
की ओर पहुंच रहे थे जहा मेरा बेड़ा छिपाया हुआ था। हमे पकड़ने
लोग किनारे पर इधर-उधर दौड़ते हुए एक-दूसरे को पुकार रहे थे
उनके कुत्ते भी भौंक रहे थे। ये आवाज़ें हमसे क्रमशः दूर और
होती ... सुनाई देना बन्द हो गई।

...ी मैंने खुशी में भरकर कहा, "लो जिम, तुम

सुनाई दी। फिर किसी ने दरवाजे पर आकर ताला खोला और एक आदमी ने कहना शुरू किया, "मैंने तो पहले ही कहा था कि अभी बहुत जल्दी है, वे तब तक आए नहीं। ताला पड़ा है। अच्छा, अब तैयार रहो, कुछ आदमी अन्दर छिप जाओ। मैं बाहर से ताला लगा देता हूं। जब वे आएं तो अंधेरे में उन्हें पकड़कर मार डालना। बाकी लोग चारों तरफ बिखर जाओ और सुनते रहो कि वे आ रहे हैं या नहीं।"

और सुनते ही जब कुछ लोग ताला खोलकर अन्दर आए तो हम मड़िया के नीचे घुसे जा रहे थे, और उनके पांवों तले कुचलते-कुचलते बचे। गनीमत हुई कि हम पकड़े न गए और सही-सलामत सूराख के रास्ते रेंगकर सायबान में आ गए। टाम ने पहले से हिदायत दे रखी थी कि सब के आगे जिम, उसके पीछे मैं और सबके बाद में टाम सूराख में होकर बाहर निकलेंगे। ठीक इसी तरह हम जरा सी भी आवाज किए बिना रेंगकर सायबान में पहुंचे तो उधर भी लोगों के चलने की आवाज सुनाई पड़ रही थी। धड़कते दिलों से दबे पांव सायबान के दरवाजे के पास जा खड़े हुए। टोह लेने के लिए टाम आगे बढ़ आया और किवाड़ों की सेंध में आंख लगाकर बाहर देखने लगा। लेकिन अंधेरे में उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। तब वह बोला कि यहीं ठहरे रहो; जैसे ही उन लोगों के पांवों की आवाज दूर जाती सुनाई देगी मैं कुहनी मार दूंगा और तब सबसे पहले जिम बाहर निकलेगा और सबके बाद मैं। इतना कहकर वह दराज में कान लगाकर सुनता रहा, सुनता रहा और सुनता ही रहा, और, लोगो के वहीं आस-पास चलने की आवाज बराबर सुनाई पड़ती रही। फिर उसने सहसा कुहनी मारी और हम दबेपांव, सांस रोके, बिना आवाज किए, झुके-झुके बाहर निकल आए और एक कतार में बागुड़ की ओर बढ़ने लगे। जल्दी ही बागुड़ तक पहुंच गए और मैं और जिम तो सही-सलामत उस पार उतर भी गए लेकिन टाम की बिरजिस बागुड़ की एक नुकीली लकड़ी में फंस गई। पांवों की आवाज करीब आती जा रही थी इसलिए टाम ने जोर के झटके से बिरजिस छुड़ाने की कोशिश की तो लकड़ी खटाक से टूट गई और अंधेरे में वह आवाज चारों ओर सुनाई दे गई। ...
टाम कूदकर हमारे साथ आ

आवजें एक साथ सुनाई दीं, "कौन है ? जवाब दो, वरना गोली मार दी जाएगी !"

हमें पागल कुत्ते ने काटा था कि जवाब देते ! सिर पर पांव रखकर नाक की सीध में भाग चले। उधर से भी लोगों के दौड़ने की आवाज़ आई और फिर धांय-धांय कर बन्दूकें गरज उठीं। गोलियां तड़तड़ाती हुई हमारे चारों ओर बरस रही थीं और वे पुकार-पुकारकर कह रहे थे, "वे भागे जा रहे हैं, उधर, नदी की तरफ ! देखो, निकलने न पाएं। पीछे लगे रहो जवानो। कुत्ते छोड़ दो उनपर।"

वे हमारे पीछे लगे दौड़े चले आ रहे थे।—उनके चिल्लाने का शोर और पांवों की आवाज़ बूट पहने हुए होने के कारण साफ सुनाई दे रही थी, और हम चुपचाप भागे जा रहे थे, क्योंकि न तो बूट पहने थे और न शोर मचा रहे थे। हम आरा मिल के रास्ते पर थे। जब वे काफी करीब आ गए तो हम फौरन एक झाड़ी में दुबक गए और उनको आगे निकल जाने दिया। कुत्तों को पहले इस डर से कि कहीं वे डाकुओं को भगा न दें, कुत्ताघर में बन्द कर दिया था, लेकिन अब किसीने खोल दिया था इसलिए वे भी ज़ोर-ज़ोर से भौंकते हुए आ पहुंचे। परन्तु आखिर तो वे हमारे अपने कुत्ते थे। पास आकर जब उन्होंने देखा कि अरे, ये तो अपने ही आदमी हैं और इनसे कोई खतरा नहीं तो क्षण-भर ठिठककर दुम हिलाई और फिर उसी तरह ज़ोर-शोर से भौंकते हुए तेज़ी से आगे दौड़ गए। अब रास्ता साफ था; हमने भी कदम बढ़ाए और आरा मिल में होते हुए झाड़ियों के रास्ते नदी किनारे वहां पहुंच गए जहां मेरी नाव बंधी हुई थी। हम फुर्ती से नाव में बैठे, और मैं उसे खेता और तीर की तरह मझधार की ओर भागे। आवाज़ हमने करने कोशिश होने नहीं दी और जो हुई वह सिर्फ उतनी जितने बिना काम चल नहीं सकता था। थोड़ी देर में तो हम बड़े आराम से उस द्वीप की ओर पहुंच रहे थे जहां मेरा बेड़ा छिपाया हुआ था। हमें पकड़ने वाले लोग किनारे पर इधर-उधर दौड़ते हुए एक-दूसरे को पुकार रहे थे और उनके कुत्ते भी भौंक रहे थे। ये आवाज़ें हमसे क्रमशः दूर और धीमी होती गईं और फिर सुनाई देना बन्द हो गईं।

बेड़े पर पांव रखते ही मैंने खुशी से चहककर कहा, "लो जिम, अब फिर

आवजें एक साथ सुनाई दी; "कौन है ? जवाब दो, वरना गोली मार दी
जाएगी !"

हमें पागल कुत्ते ने काटा था कि जवाब देते ! सिर पर पांव रखकर
ाक की सीध में भाग चले। उधर से भी लोगों के दौड़ने की आवाज आई
ौर फिर धाय-धाय कर बन्दूकें गरज उठीं। गोलियां तड़तड़ाती हुई हमारे
ारों ओर बरस रही थी और वे पुकार-पुकारकर कह रहे थे, "वे भागे
ा रहे हैं, उधर, नदी की तरफ ! देखो, निकलने न पाएं। पीछे लगे रहो
वानो। कुत्ते छोड़ दो उनपर।"

वे हमारे पीछे लगे दौड़े चले आ रहे थे।—उनके चिल्लाने का शोर और
वों की आवाज बूट पहने हुए होने के कारण साफ सुनाई दे रही थी, और
ा चुपचाप भागे जा रहे थे, क्योंकि न तो बूट पहने थे और न शोर मचा
हे थे। हम आरा मिल के रास्ते पर थे। जब वे काफी करीब आ गए तो हम
रन एक झाड़ी में दुबक गए और उनको आगे निकल जाने दिया। कुत्तों
पहले इस डर से कि कहीं वे डाकुओं को भगा न दें, कुत्ताघर में बन्द
र दिया था, लेकिन अब किसीने खोल दिया था इसलिए वे भी ज़ोर-ज़ोर
भौंकते हुए आ पहुंचे। परन्तु आखिर तो वे हमारे अपने कुत्ते थे। पास
कर जब उन्होंने देखा कि अरे, ये तो अपने ही आदमी हैं और इनसे कोई
रा नहीं तो क्षण-भर ठिठककर दुम हिलाई और फिर उसी तरह ज़ोर-
र में ... आगे दौड़ गए। अब रास्ता साफ था; हमने
... झाड़ियों ...

सुनाई दी। फिर किसीने दरवाज़े पर लगा ताला टटोला और एक आदमी यह कहता सुनाई दिया, "मैंने तो पहले ही कहा था कि अभी बहुत जल्दी है, वे आए न होंगे। ताला पड़ा है। अच्छा, अब ऐसा करो, कुछ आदमी अन्दर छिप जाओ, मैं बाहर से ताला लगा देता हूं। जब वे आएं तो अंधेरे में उन्हें पकड़कर मार डालना। बाकी लोग चारों तरफ़ बिखर जाओ और सुनते रहो कि वे आ रहे हैं या नहीं।"

और दूसरे ही क्षण कुछ लोग ताला खोलकर अन्दर आए तो हम खटिया के नीचे घुसे जा रहे थे; और उनके पांवों तले कुचलते-कुचलते बचे। गनीमत हुई कि हम पकड़े न गए और सही-सलामत सूराख के रास्ते रेंगकर सायबान में आ गए। टाम ने पहले से हिदायत दे रखी थी कि सब के आगे जिम, उसके पीछे मैं और सबके बाद में टाम सूराख में होकर बाहर निकलेंगे। ठीक इसी तरह हम ज़रा-सी भी आवाज़ किए बिना रेंगकर सायबान में पहुंचे तो उधर भी लोगों के चलने की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। धड़कते दिलों से दबे पांव सायबान के दरवाज़े के पास जा खड़े हुए। टोह लेने के लिए टाम आगे बढ़ आया और किवाड़ों की संध में आंख लगाकर बाहर देखने लगा। लेकिन अंधेरे में उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। तब वह बोला कि यहीं ठहरे रहो; जैसे ही उन लोगों के पांवों की आवाज़ दूर जाती सुनाई देगी मैं कुहनी मार दूंगा और तब सबसे पहले जिम बाहर निकलेगा और सबके बाद मैं। इतना कहकर वह दराज़ में [illegible] और लोगों के

भी क्यों न खड़ा रहना पड़े।"

मैं खूब जानता था कि जिम बाहर से कितना ही काला हो अन्दर से तो पूरा गोरा था और मैं जानता था कि ठीक यही बात कहेगा। इसलिए उसकी बात पूरी हो जाने पर मैंने टाम से कहा कि मैं डाक्टर को बुलाने जा रहा हूं।

उसने बहुत विरोध किया, खूब बका-झका, पर मैंने और जिम ने उसकी एक न सुनी। तब वह टपरिया में से निकल आया और खुद बेड़े को ठेलने की कोशिश करने लगा। हमने उसकी यह चाल भी विफल कर दी। अन्त में निरुपाय होकर उसने असहायों के सबसे प्रबल अस्त्र गाली का सहारा लिया। हमने उसपर ध्यान ही नहीं दिया।

जब उसने मुझे नाव में सवार होते देखा तो बोला, "मेरे मना करने पर भी जा ही रहे हो तो देखो, सब काम इस तरह करना—दरवाजा बन्द करके डाक्टर की आंखों पर फौरन पट्टी चढ़ा देना। उससे वादा करवा लेना कि वह किसी से नहीं कहेगा। फिर अशर्फियों की एक थैली उसके हाथ में थमा देना और सब गांव की गलियों में इधर-उधर खूब घुमा-फिराकर नाव तक लाना। नाव का भी एकदम यहां मत ले आना। द्वीपों में खूब सारे चक्कर देकर लाना। उसकी तलाशी लेकर चाकू वगैरह कुछ हो तो अपने कब्जे में कर लेना और गांव में पहुंचाने के बाद ही लौटाना, नहीं तो वह बेड़े तक चाक के निशान बनाकर फिर यहां पहुंच जाएगा। इस काम को करने का तरीका यही है और पुराने लोग ऐसा ही करते थे।"

मैंने उसे यही कह कर आश्वस्त कर दिया कि अच्छी बात है, ऐसा ही करूंगा; और चलते-चलते जिम से कहा, "डाक्टर को आते देखो तो फौरन जंगल में छिप जाना और उसके लौट जाने के बाद ही निकलना।"

आज़ाद हो गए और अब कभी गुलाम न होंगे।"

"तुम लोगों की जूतियों के तुफैल से ! क्या तो खूबसूरत रास्ता सोचा और किस खूबी और सफाई से उसे पूरा किया कि वाह ! सच हक, इतना बढ़िया और पेचीदा ढंग सोच निकालना दूसरे किसीके बूते का तो है नहीं। मगर मेहनत भी खूब करना पड़ा।"

हम सब बहुत खुश थे, मगर टाम हम दोनों से भी कहीं ज्यादा खुश था, क्योंकि उसकी पिंडली में गोली लगी थी।

मैंने और जिम ने यह सुना तो हाथों के तोते उड़ गए और सारी खुशी एकबारगी गायब हो गई। टाम के पाव से खून अब भी बह रहा था और दर्द बराबर बढ़ता जाता था। हमने उसे टपरिया में लिटा दिया, और पट्टी बांधने के लिए ड्यूक की कमीज फाड़ी तो वह बोला, "लाओ, मुझे दो, मैं खुद बांध लूंगा। तुम रुको मत; बेड़े को ठेलकर फौरन चल पड़ो। अब यहां रुकने का कोई काम नहीं। हमारी योजना शान से पूरी हुई और सोलहों आने सफलता मिली। शाबाश जवानो ! कमाल कर दिखाया। इस खुशी में बेड़े की पतवार संभालो और छोड़ दो उसे धारा में। काश हमें सोलहवें लुई को छुड़ाने का मौका मिला होता तो आज उसकी जीवनी में यह न लिखा होता कि सन्त लुई का पुत्र स्वर्ग सिधार गया। हम उसे ठीक इसी तरह सीमा पार कराकर निकाल लाते; बिलकुल सही-सलामत छुड़ा लाते। डांड संभालो जल्दी से, डांड !"

लेकिन मैं और जिम सलाह-मशविरे में लगे परिस्थिति पर विचार कर रहे थे। थोड़ी देर बाद मैंने कहा, "जिम, तुम्हीं कहो।"

तब जिम ने कहा, "मेरे खयाल में तो बात इस तरह आती है हक, कि मान लो खुद उसीको आज़ाद किया जाता और किसी साथी को गोली लग जाती तो क्या वह यो कहता कि पहले मुझे बचाओ, इस घायल के लिए डाक्टर लाने की कोई जरूरत नहीं? क्या टाम भैया इस तरह कहते? क्या वे ऐसे आदमी हैं कि इस तरह की बात कह पाते? मैं कहता हूं कि नहीं, हर्गिज नहीं, वे ऐसा कभी न कहते। तो क्या अब जिम ऐसा कह सकता है? नहीं, वह भी नहीं कहेगा। मैं तो बिना डाक्टर को दिखाए [illegible] मरहम-पट्टी किए

चाहो तो मेरे लौटने तक इन्तजार करो या कोई दूसरी नाव आ
जाए तो उसमें चले आना, या तुम्हारी इच्छा हो तो घर लौट
अपने परिवार वालों को छकाने की तैयारी करो।"

मैंने कहा, "मैं कहीं नहीं जाऊंगा, यहीं आपका इन्तजार
और उन्हें बता दिया कि बेड़ा कहां मिलेगा।

इसके बाद डाक्टर साहब मेरी नाव में चले गए।

बैठे-बैठे मुझे खयाल आया कि मान लो टाम का घाव, जै
जाता है, चुटकी बजाते ठीक न हुआ और डाक्टर साहब ने क
तीन-चार दिन लग जाएंगे तो हम क्या करेंगे ? क्या तब तक व
और डाक्टर के मुंह से बात फूट जाने देंगे ? नहीं ऐसा तो मैं ह
दूंगा। मैं डाक्टर के लौटने का इन्तजार करूंगा और अगर उन्ह
फिर जाना होगा तो मुझे तैर कर भी क्यों न जाना पड़े, उनके
जाऊंगा और उन्हें वहीं बांधकर रख लेंगे और बेड़े को बीच ध
देंगे, जब टाम अच्छा हो जाएगा तो डाक्टर साहब को उनकी
हमारे पास जो भी होगा, वह सब देकर छोड़ देंगे।

यह निश्चय करके मैं कुछ देर सोने के लिए इमारती लक
ढेर में घुस गया; और जब जागा तो सूरज आसमान में बहुत
आया था। मैं वहां से सीधा भागकर डाक्टर के यहां गया तो प
वे रात के गए अभी तक नहीं लौटे। मैं समझ गया कि टाम की ह
खराब है इसलिए तुरन्त द्वीप पर पहुंचने का फैसला किया!
जैसे ही कोने से मुड़ने को हुआ कि सिलास मौसा से टकराते-ट

उन्होंने कहा, "अरे टाम, तुम अब तक कहां थे, शैतान
"वही तो था मौसाजी! मैं और सिड उस फरार हब्शी
थे।"

"जाने कहां चले गए थे! चलो-चलो! तुम्हारी मौसी
हो रही हैं।"

"परेशानी की तो कोई बात नहीं।" मैंने कहा, "हमें कु
हीं; बड़ी अच्छी तरह रहे। लोगों और कुत्तों के
रहे थे, इतने में वे आगे निकल गए और हम बहुत पीछे रह गए

अध्याय ४१

मैंने डाक्टर को सोने से जगाया। वह बूढ़ा बहुत भला और दयालु लगता था। मैंने उसे बताया कि मैं और मेरा भाई कल तीसरे पहर स्पेनिश द्वीप पर शिकार खेलने गए और रात वहीं एक बेड़े पर रहे, जो हमें वहां मिल गया था। आधी रात के करीब भाई ने सपने में बन्दूक को ठोकर मारी तो वह छूट गई और गोली उसके पांव में जा लगी। अब मैं आपको लिवाने आया हूं कि वहां चलकर गोली निकाल दें और उसकी मरहम-पट्टी कर दें; मगर यह बात किसी को न बताएं, क्योंकि हम आज शाम को घर लौटना और अपने परिवार वालों को छकाना चाहते हैं।

"तुम किस परिवार के हो?" डाक्टर ने पूछा।

"फेल्प्स परिवार, जो यहां से कुछ दूर रहता है।"

"अच्छा!" डाक्टर ने कहा और थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोले, "गोली लगने के बारे में तुम क्या कह रहे थे? कैसे गोली लग गई?"

"सपने में बन्दूक चलने से गोली लग गई।"

"बड़ा विचित्र सपना था।" इतना कहकर डाक्टर ने लालटेन जलाया और अपना बेग उठा लिया। लेकिन जब हम नदी किनारे नाव पर पहुंचे तो वे बोले, "एक के लिए तो नाव काफी बड़ी है, लेकिन दो आदमी नहीं बैठ सकते। डूबने का खतरा है।"

मैंने कहा, "जी नहीं, डरने की कोई बात नहीं है। हम तो इसमें तीन आदमी बैठकर गए थे और कुछ न हुआ।"

"तीन कौन?"

"मैं, मेरा भाई सिड और—और—जी, बन्दूकें। मेरा मतलब बन्दूकों से ही था।"

"अच्छा!" उन्होंने सिर्फ इतना कहा और नाव के ऊपरी पट्टे पर पांव रखकर उसे ज़ोर का झकोला देने के बाद सिर हिला दिया; और बोले "ठहरो, मैं कोई बड़ी नाव देखता हूं, अगर मिल जाए।"

लेकिन वहां जितनी भी नावें थीं सब की सब जंजीरों में ताले डालकर बांधी हुई थीं। अब डाक्टर ने कहा, "मैं इसमें अकेला ही जाऊंगा और तुम

सनकाहुआथा। मैं कहती हूं कि वहां की हर चीज से यही पता चलता है। उस घिसैंने को देखो। मैं कहती हूं कि जिसके होश-हवास दुरुस्त होंगे वह पत्थर पर उस तरह की बातें क्यों खोदेगा ? भग्न हृदय बन्दी का अवसान और सैंतीस बरस तक कारा-कष्ट भोगना और जाने किस तुई का जाने कौन-सा बेटा और ऐसी ही बहकी-बहकी बातें पत्थर पर खुदी हुई हैं। मैं कहती हूं वह बिलकुल सनकी, सिरफिरा हब्सी था। यही बात मैंने शुरू में कही, यही बात अब बीच में कह रही हूं और यही बात आखीर में भी और हमेशा कहती रहूंगी कि वह सनका हुआ था, बिलकुल सनका हुआ था।"

"और क्यों री बहना हार्चरिस," अब दूसरी बुढ़िया इस्मेरेल ने कहा, "तूने वह डोरियों वाली सीढ़ी नहीं देखी ? उसकी उस कमीने को क्या ज़रूरत पड़ गई, एं ?"

"ले, योई बात तो म्हैं अभी भेणा अहरवेक्सू कै रही थी ! तेरे कू मेरा यकीन नें ही आवे है तो विसी कू पूछ लेव, वो आपे ई हामी भर देवेगी। वा सिड्ढ़ी देख के नें मैं नें योई कह्या था के जिस मुए-मुर्दार कू सिड्ढ़ी रख के नें क्या करना था। अब तू ही बता भेणा हार्चरिस्।"

"अपने तो भेजे में उस बखत से ये बात घुस नहीं रही है कि वो इत्ता बड़ा घिसैंना उठाकर लाया तो कैसे लाया ? और इत्ता बड़ा गड्ढा खोदा तो कैसे खोदा ? और किसने⋯"

"मैं बताती हूं पेनराड थीरा, तुम मेरी सुनो ! मैं कह रही थी—अरे

बाद नदी पर से उनकी आवाज सुनाई दी तो हम एक नाव लेक
खोजने लगे। खोजते-खोजते उस पार तक चले गए, पर कोई
तब वहां से लौटे और बहुत बुरी तरह थक गए। नाव बायक
कि अभी घण्टे-भर पहले नींद खुली। वहां से नाव में यहां मालूम
कि शायद कुछ पता चल जाए। सिड डाकखाने में पता करने ह
और मैं खाने के लिए कुछ मिल जाए तो उसकी जुगत करने। अ
सीधे घर ही पहुंचेंगे।"

तब हम दोनों सिड की तलाश में डाकखाने गए, लेकिन वह व
तो मिलता। बुढऊ का एक पत्र आया हुआ था, उन्होंने उसे लिया
थोड़ी देर सिड का इन्तज़ार करते रहे। लेकिन जब वह नहीं आया
ने कहा कि चलो, हम चलें; मटरगश्ती से जी भर जाने के बाद वह
पैदल आ जाएगा या नाव से; हम घोड़ागाड़ी से चलते हैं। मैंने बहु
कि मुझे रुक जाने दीजिए, सिड के साथ आ जाऊंगा, लेकिन सिलास
ने एक न सुनी। बोले, "कोई फायदा नहीं। मेरे साथ ही चलो। वहां तु
मौसी रो-रोकर हलकान हुई जाती हैं। तुम्हें देखकर कुछ तो
बंधेगा।"

घर पहुंचे तो सैली मौसी मुझे गले लगाकर खुश भी हुईं और रो
और अच्छी तरह मेरी धूल भी झाड़ दी और बोली कि कम्बख्त सि
लौटने तो दो, उसकी भी ऐसी ही पीठ-पूजा की जाएगी।

घर में किसानों और उनकी घरवालियों की भीड़ लगी हुई थी
सबकी दावत का बढ़िया इन्तजाम किया गया था। वे लोग मेज़ पर
इतने ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे कि कानों पड़ी आवाज सुनाई नहीं
रही थी। सबसे तेज़ आवाज थी बूढ़ी मिसेज़ हाचकिस की और ज़बान
कतरनी की तरह कच-कच चल रही थी।

मैं पहुंचा तो वे कह रही थी, "सुनो बहिना फेल्प्स, मैं उस कोठरी के
अन्दर जाकर देख आई हूं और मुझे यकीन हो गया है कि वह हबशी ज़रू
सनका हुआ था। मैंने यही बात डमरेल बहिना से भी कही; क्यों बहिना
कही न ? मैं कहती हूं कि वह ज़रूर सनका हुआ था और ठीक यही बात
मैंने इनसे भी कही थी। ज़रा सब चुप होकर सुनो, मैं कहती हूं कि वह

सनका हुआ था। मैं कहती हूं कि वहां की हर चीज से यही पता चलता है। उस घिसैने को देखो। मैं कहती हूं कि जिसके होश-हवास दुरुस्त होंगे वह पत्थर पर उस तरह की बातें क्यों खोदेगा ? ,भग्न हृदय बन्दी का अवसान और सैंतीस बरस तक कारा-कष्ट भोगना और जाने किस लुई का जाने कौन-सा बेटा और ऐसी ही बहकी-बहकी बातें पत्थर पर खुदी हुई हैं। मैं कहती हूं वह बिलकुल सनकी, सिरफिरा हबशी था। यही बात मैंने शुरू में कही, यही बात अब बीच में कह रही हूं और यही बात आखीर में भी और हमेशा कहती रहूंगी कि वह सनका हुआ था, बिलकुल सनका हुआ था।"

"और क्यों री बहना हाचकिस," अब दूसरी बुढ़िया डमरेल ने कहा, "तूने वह डोरियों वाली सीढ़ी नहीं देखी ? उसकी उस कमीने को क्या जरूरत पड़ गई, एं ?"

"ले, योई बात तो म्हें अब्भी भेणा अहरवेक्स् के रही थी ! तेरे कू मेरा यकीन ने ही आवे है तो विसी कू पूछ लेव, वो आपे ही हामी भर देवेगी। वा सिड्ढ़ी देख के ने मै मे योई कह्या था के तिस मुए-मुर्दार कू सिड्ढ़ी रख के ने क्या करना था। अब तू ही बता भेणा हाच्चकिस् ।"

"अपने तो भेजे में उस बखत से ये बात घुस नहीं रही है कि वो इत्ता बड़ा घिसैना उठाकर लाया तो कैसे लाया ? और इत्ता बड़ा गड्ढा खोदा तो कैसे खोदा ? और किसने…"

"मैं बताती हूं पेनराड बीरा, तुम मेरी सुनो ! मैं कह रही थी—अरे, वो मिठाई वाली तश्तरी ज़रा इधर बढ़ाना—हां, तो कह रही थी, इसी घड़ी डनलप बहिना से कि वो घिसैना वहां गया तो गया कैसे ? मैं कहती हूं, बगैर किसी की मदद के तो गया नहीं। मैं कहती हूं, उसके पास तो उग नहीं आए थे। कोई कहे कि आप से चला गया तो मैं मानने की नहीं। अरे मैं कहती हूं कि दूसरों ने उसकी मदद की, और बहुत सारे लोगों ने उसकी मदद की, और मैं कहती हूं कि कोई दर्जन-भर हबशियों ने उसकी मदद की, तब तो घिसैना वहां पहुंचा। मैं कहती हूं कि मैं तो यहां के एक-एक हबशी की चमड़ी उधेड़कर मालूम कर लूंगी कि किस-किसने उसकी मदद की। और मैं कहती हूं कि……"

"क्या-क्या, एक दर्जन ! तुम कहती हो, एक दर्जन, चालीस आदमी भी

नहीं कर सकते उत्ता काम, क्या ? छुरियों से आरी बनाई हैं, क्या ! कित्ता मुश्किल काम है ! खटिया का पाया काटकर धर दिया, क्या ? छह आदमियों का हफ्ते-भर का काम हो गया, क्या ! और फूस का वह पुतला देखा, क्या ? और वह···"

"हाई टावर भैया, ठीक यही बात तो मैं फेल्प्स दादा से कह रही थी और खुद उन्होंने मुझसे पूछा कि हाचकिस बहिन, तुम्हारी इस बारे में क्या राय है ? तो मैंने कहा कि फेल्प्स दादा, मैं कहती हूं कि खटिया का पाया जिस तरह काटकर रखा गया है वो अपने से तो कटा नहीं, जरूर किसीने काटा है। मैं कहती हूं कि अपनी तो यही राय है, कोई मानना चाहे माने और नहीं मानना चाहे तो ना माने। मैं कहती हूं कि अपनी तो यही राय है। अब किसीके पास इससे अच्छी राय हो तो मैं कहती हूं कि वो बताए। मैं डनलप बहिना से भी कह रही थी ······"

"क्या नाम से, दलान-भर के हबशी रोज रात में लगते होंगे काम पर और क्या नाम से, कुत्ता खा जाए बिल्ली को, चार हफ्ते तक काम किया है उन्होंने तब इतना काम हुआ है। क्यों फेल्प्स भौजी ? क्या नाम से, उस कमीस (कमीज) को देखो, अंगुल-अंगुल जिगो (जगह) अफ्रीकाई लिखावट से भरी हुई है और एक-एक अच्छर, क्या नाम से, खून से लिखा हुआ है ! सारी-सारी रात इत्ते-इत्ते सारे लोगों ने काम किया होना चाहिए। क्या नाम से, कोई उस लिखावट को बांच दे तो बन्दा नकद दो डालर इनाम देने को तैयार है। और लिखने वाले हबशियों की तो क्या नाम से, मैं कोड़े मार-मार कर खाल ही उधेड़ दूं······"

"अरे भैया मारपल्स, अब तुम्हें क्या कहूं ! अगर तुम पिछले दिनों यहां होते तो पता चलता कि कितने लोगों ने कितनी तरह से उनकी मदद की है ! उन्होंने मेरे घर में से क्या-कुछ नहीं चुराया। जो भी चीज हाथ लगी देखते-देखते पार कर दी। दिन-दहाड़े तारों पर सूखती कमीज उड़ा ले गए। और जिस चादर से उन्होंने डोरियों की सीढ़ी बनाई उसे तो इतनी बार चुराया है कि मैं गिनकर बता नहीं सकती। आटा उन्होंने चुराया, मोमबत्तियां उन्होंने चुराईं, मोमबत्तीदान वे चुरा ले गए, चम्मच वे पार कर गए और पुरखों के जमाने का पानी गरम करने का पीतल का पतीला

उठा ले गए— कहां तक गिनाऊं, एक-दो हों तो बताऊं, बीसियों चीज़
जिनके नाम भी याद न रहे। हां, मेरा एक नया सूती गाउन भी उन न
टोटी ने गायब कर दिया। और ये सब उस समय जब मैं और तुम्हारे
मलार्मे और मेरी बहिन के दोनों बच्चे सिड और टाम हर घड़ी पहरा
रहते थे। राम जाने कब आते थे और कैसे चीज़ें उठा ले जाते थे! हम
तो किसीको देखा, न किसीकी आवाज़ सुनी और न किसीको पकड़ प
इतने चतुर-चालाक थे कि ठीक हमारी नाक के नीचे से खिसक गए
इण्डियन इलाके के डाकुओं को भी बुला लाए और अपने हबशी को स
सलामत निकाल ले गए और हमारे सोलह आदमी और बीस शिकारी
उनका पीछा ही करते रह गए! मेरी भी इतनी उमर हुई, ऐसा क
देखना तो दूर, सुना तक नहीं था। इतनी चुस्ती और सफाई से तो भूत
भी काम नहीं कर सकते। राम जाने, भूत ही थे या कौन थे! हमारे कु
तो तुम भी जानते ही हो। गैर आदमी को न बाड़े में घुसने देते हैं
न निकलने, इतने बढ़िया कुत्ते पास-पड़ोस में किसीके नहीं हैं।
ताज्जुब यह होता है कि एक बार भी कुत्तों की पकड़ में नहीं आए।
बताओ, तुम इसे क्या कहोगे? कोई भी तो समझा दे मुझे।"
"अजूबा ही कहना होगा......"
"राम जाने, कौन थे और कौन नहीं......"
"मेरी खुद की समझ में नहीं आता तो तुम्हें क्या समझाऊं......
"ज़रूर ही सबक सिखाने वाले रहे होंगे......"
"बाप रे, मेरी तो मारे डर के जान ही निकल जाती......"
"डर? तुम डर की कहती हो? मेरे प्राण अधर में लटके रहते थे। न
सकती थी, न लेट सकती थी, उठना और बैठना तक मुहाल हो गया
कहिए रिजवे, तुम्हें क्या कहूं, हर वक्त यह डर लगा रहता था कि...
उस रात जब बारह बज गए तो न पूछो मेरी फिकर-चिन्ता की बात।
सूख रही थी कि कहीं वे घर के किसी आदमी या बाल-बच्चे को न चुरा
जाएं। यों समझो कि मेरी अक्ल ही हिरा गई थी। अब इस वक्त
सकती हो? मुमकिन भी लेकिन उस वक्त लगी थी फुरफुरी लगी हुई
कि मेरे दो बच्चे ऊपर के कमरे में सो रहे हैं और कमरा अकेला है,

नहीं कर सकते उतना काम, क्या ? छुरियों से आरी बनाई हैं, क्या ! कितना मुश्किल काम है ! खटिया का पाया काटकर धर दिया, क्या ? छह आदमियों का हफ्ते-भर का काम हो गया, क्या ! और फूस का वह पुतला देखा, क्या ? और वह···"

"हाई टावर भैया, ठीक यही बात तो मैं फेल्प्स दादा से कह रही थी और खुद उन्होंने मुझसे पूछा कि हाचकिस बहिन, तुम्हारी इस बारे में क्या राय है ? तो मैंने कहा कि फेल्प्स दादा, मैं कहती हूं कि खटिया का पाया जिस तरह काटकर रखा गया है वो अपने से तो कटा नहीं, जरूर किसीने काटा है। मैं कहती हूं कि अपनी तो यही राय है, कोई मानना चाहे माने और नहीं मानना चाहे तो ना माने। मैं कहती हूं कि अपनी तो यही राय है। अब किसीके पास इससे अच्छी राय हो तो मैं कहती हूं कि वो बताए। मैं डनलप बहिना से भी कह रही थी ······"

"क्या नाम से, दलान-भर के हबशी रोज रात में लगते होंगे काम पर और क्या नाम से, कुत्ता खा जाए बिल्ली को, चार हफ्ते तक काम किया है उन्होंने तब इतना काम हुआ है। क्यों फेल्प्स भौजी ? क्या नाम से, उस खमीस (कमीज) को देखो, अंगुल-अंगुल जिगो (जगह) अफीकाई लिखावट से भरी हुई है और एक-एक अच्छर, क्या नाम से, खून से लिखा हुआ है ! सारी-सारी रात इत्ते-इत्ते सारे लोगों ने काम किया होना चाहिए। क्या नाम से, कोई उस लिखावट को बांच दे तो बन्दा नकद दो डालर इनाम देने को तैयार है। और लिखने वाले हबशियों को तो क्या नाम से, मैं कोड़े मार-मार कर खाल ही उधेड़ दूं······"

"अरे भैया मारपल्स, अब तुम्हें क्या कहूं ! अगर तुम पिछले दिनों यहां होते तो पता चलता कि इन्होंने लोगों में कितनी तरह से उनकी मदद की है। उन्होंने मेरे घर में से क्या-कुछ नहीं चुराया। जो भी चीज हाथ लगी देखते-देखते पार कर दी। दिन-दहाड़े तानी पर सुखाती कमीज उड़ा ले गए। और जिस चादर से उन्होंने डोरियों की सीढ़ी बनाई थी तो इतनी बार चुराया है कि मैं गिनकर बता नहीं सकती। आटा उन्होंने चुराया, मोमबत्तियां उन्होंने चुराईं, मोमबत्तीदान वे चुरा ले गए, चम्मच वे पार कर गए, और पुरुषों के नहाने का पानी गरम करने का पीतल का पतीला

उड़ा ले गए— कहा तक गिनाऊं, एक-दो हों तो बताऊं, बीसियों चीजें हैं, जिनके नाम भी याद न रहे। हां, मेरा एक नया सूती गाउन भी इन नास-पीटों ने गायब कर दिया। और ये सब उस समय जब मैं और तुम्हारे भैया सिलार्मी और मेरी बहिन के दोनों बच्चे सिड और टाम हर घड़ी पहरा देते रहते थे। राम जाने कब आते थे और कैसे चीजें उठा ले जाते थे! हमने न तो किसीको देखा, न किसीकी आवाज़ सुनी और न किसीको पकड़ पाए। इतने चतुर-चालाक थे कि ठीक हमारी नाक के नीचे से खिसक गए और इण्डियन इलाके के डाकुओं को भी बुला लाए और अपने हबशी को सही-सलामत निकाल ले गए और हमारे सोलह आदमी और बीस शिकारी कुत्ते उनका पीछा ही करते रह गए! मेरी भी इतनी उमर हुई, ऐसा अजूबा देखना तो दूर, सुना तक नहीं था। इतनी चुस्ती और सफाई से तो भूत-प्रेत भी काम नहीं कर सकते। राम जाने, भूत ही थे या कौन थे! हमारे कुत्तों को तो तुम भी जानते ही हो। गैर आदमी को न बाड़े में घुसने देते हैं और न निकलने, इतने बढ़िया कुत्ते पास-पड़ोस में किसीके नहीं हैं। मगर ताज्जुब यह होता है कि एक बार भी कुत्तों की पकड़ में नहीं आए। अब बताओ, तुम इसे क्या कहोगे? कोई भी तो समझा दे मुझे।"

"अजूबा ही कहना होगा······"

"राम जाने, कौन थे और कौन नहीं······"

"मेरी खुद की समझ में नहीं आता तो तुम्हें क्या समझाऊं······"

"जरूर से नकब लगाने वाले रहे होंगे······"

"बापरे, मेरी तो मारे डर के जान ही निकल जाती······"

"डर? तुम डर की कहती हो? मेरे प्राण अधर में लटके रहते थे। न सो सकती थी, न लेट सकती थी; उठना और बैठना तक मुहाल हो गया था। बहिना रिजवे, तुमसे क्या कहूं, हर बखत यह डर लगा रहता था कि···अरे कल रात जब बारह बज गए तो न पूछो मेरी फिकर-चिन्ता की बात। जान सूख रही थी कि कहीं वे घर के किसी आदमी या बाल-बच्चे को न चुरा ले जाएं। यों समझो कि मेरी अकल ही हिरा गई थी। अब इस बखत बात लगती तो है मूरखता की लेकिन उस बखत छाती में धुकधुकी लगी हुई थी कि मेरे दो बच्चे ऊपर के कमरे में सोए हुए हैं और कमरा अकेला है, क्या

नहीं कर सकते उतना काम, क्या ? छुरियों से आरी बनाई हैं, क्या ! कितना मुश्किल काम है ! खटिया का पाया काटकर धर दिया, क्या? छह आदमियों का हफ्ते-भर का काम हो गया, क्या ! और फूस का वह पुतला देखा, क्या ? और वह…"

"हाई टावर भैया, ठीक यही बात तो मैं फेल्प्स दादा से कह रही थी और खुद उन्होंने मुझसे पूछा कि हाचकिस बहिन, तुम्हारी इस बारे में क्या राय है ? तो मैंने कहा कि फेल्प्स दादा, मैं कहती हूं कि खटिया का पाया जिस तरह काटकर रखा गया है वो अपने से तो कटा नहीं, जरूर किसीने काटा है। मैं कहती हूं कि अपनी तो यही राय है, कोई मानना चाहे माने और नहीं मानना चाहे तो ना माने। मैं कहती हूं कि अपनी तो यही राय है। अब किसीके पास इससे अच्छी राय हो तो मैं कहती हूं कि वो बताए। मैं डनलप बहिना से भी कह रही थी……"

"क्या नाम से, दलान-भर के हबशी रोज रात में लगते होंगे काम पर और क्या नाम से, कुत्ता खा जाए बिल्लो को, चार हफ्ते तक काम किया है उन्होंने तब इतना काम हुआ है। क्यों फेल्प्स भौजी ? क्या नाम से, उस खमीस (कमीज) को देखो, अंगुल-अंगुल जिगो (जगह) अफ्रीकाई लिखावट से भरी हुई है और एक-एक अच्छर, क्या नाम से, खून से लिखा हुआ है ! सारी-सारी रात इत्ते-इत्ते सारे लोगों ने काम किया होना चाहिए। क्या नाम से, कोई उस लिखावट को बांच दे तो बन्दा नकद दो डालर इनाम देने को तैयार है। और लिखने वाले हबशियों को तो क्या नाम से, मैं कोड़े मार-मारकर खाल ही उधेड़ दूं……"

"अरे भैया मारपल्स, अब तुम्हें क्या कहूं ! अगर तुम पिछले दिनों यहां होते तो पता चलता कि कितने लोगों ने कितनी तरह से उनकी मदद की है ! उन्होंने मेरे घर में से क्या-कुछ नहीं चुराया। ओ भी चीज हाथ लगी देखते-देखते पार कर दी। दिन-दहाड़े तानी पर सूखती कमीज उड़ा ले गए। और जिस चादर से उन्होंने डोरियों की सीढ़ी बनाई उसे तो इतनी बार चुराया है कि मैं गिनकर बता नहीं सकती। आटा उन्होंने चुराया, मोमबत्तियां उन्होंने चुराईं, मोमबत्तीदान वे चुरा ले गए, चम्मच वे पार कर गए और पुरखों के जमाने का पानी गरम करने का पीतल का पतीला

उठा ले गए— कहां तक गिनाऊं, एक-दो हों तो बताऊं, बीसियों चीजें हैं, जिनके नाम भी याद न रहे। हां, मेरा एक नया सूती गाउन भी उन नास-पीटों ने गायब कर दिया। और ये सब उस समय जब मैं और तुम्हारे भैया मिलाकर और मेरी बहिन के दोनों बच्चे मिल और टाम हर घड़ी पहरा देते रहते थे। राम जाने कब आते थे और कैसे चीजें उठा ले जाते थे। हमने न तो किसीको देखा, न किसीकी आवाज सुनी और न किसीको पकड़ पाए। इतने चतुर-चालाक थे कि ठीक हमारी नाक के नीचे से खिसक गए और इण्डियन इलाके के डाकुओं को भी बुला लाए और अपने हबशी को सही-सलामत निकाल ले गए और हमारे सोलह आदमी और बीस शिकारी कुत्ते उनका पीछा ही करते रह गए! मेरी भी इतनी उमर हुई, ऐसा अजूबा देखना तो दूर, सुना तक नहीं था। इतनी चुस्ती और सफाई से तो भूत-प्रेत भी काम नहीं कर सकते। राम जाने, भूत ही थे या कौन थे! हमारे कुत्तों को तो तुम भी जानते ही हो। गैर आदमी को न बाड़े में घुसने देते हैं और न निकलने, इतने बढ़िया कुत्ते पास-पड़ोस में किसीके नहीं हैं। मगर ताज्जुब यह होता है कि एक बार भी कुत्तों की पकड़ में नहीं आए। अब बताओ, तुम इसे क्या कहोगे? कोई भी तो समझा दे मुझे।"

"अजूबा ही कहना होगा……"

"राम जाने, कौन थे और कौन नहीं……"

"मेरी खुद की समझ में नहीं आता तो तुम्हें क्या समझाऊं……"

"जरूर से जरूर सताने वाले रहे होंगे……"

"बापरे, मेरी तो मारे डर के जान ही निकल जाती……"

"डर? तुम डर की कहती हो? मेरे प्राण अधर में लटके रहते थे। न भूख लगती थी, न नींद आती थी, उठना और बैठना तक मुहाल हो गया था। कहिता रिश्ते, तुमसे क्या कहूं, हर वक्त यह डर लगा रहता था कि……और जब रात को बारह बज गए तो न पूछो मेरी फिकर-चिन्ता की बात। बस मुझे यही थी कि कहीं वे घर के किसी आदमी का काम-तमाम कर न जाएं। यो समझो कि मेरी अक्ल ही हिरा गई थी। अब तुम कह सकती हो कि मूर्खता थी लेकिन उस वक्त डरों से कुड़कुड़ी भरी हुई थी कि मेरे दो बच्चे ऊपर के कमरे में सोए हुए हैं और कमरा अकेला है, क्या

जाने कब क्या हो जाए। सो बहिना, मैं दौड़कर ऊपर गई और दोनों बच्चों को ताले में बन्द कर आई। ऐसे समय दिमाग कुछ सोचता-विचारता थोड़े ही है! डर के मारे सोचने की सामरथ ही नहीं रहती और घबराहट में आकर न करने जैसा काम आदमी के हाथों से होने लगता है। फिर मुझे विचार आया कि मान लो मैं बच्चा होती और ऊपर वाले कमरे में रहती और दरवाज़ा बन्द होता तो…" सैली मौसी बोलते-बोलते रुक गईं, मानो अचरज में पड़ गई हों और फिर उन्होंने धीरे-धीरे सिर घुमाकर मेरी ओर देखा और जैसे ही उनकी निगाहें मुझ पर आकर रुकीं मैं वहां से उठकर बाहर चला आया।

कोई न कोई कारण तो उन्हें बताना ही होगा कि आज सवेरे हम कमरे में क्यों नहीं थे। कोई बहाना सोचने के लिए मैं उस भीड़-भाड़ से ज़रा दूर आ गया। बहुत दूर तो जा नहीं सकता था, नहीं तो वे तुरन्त किसी को मेरे पीछे दौड़ा देतीं। तीसरे पहर जब सब लोग चले गए तो मैं उनके पास आ गया और बताया कि रात में शोर गुल और बन्दूकों की आवाज़ सुनकर मैं और सिड जाग गए। कमरे का दरवाज़ा बाहर से बन्द था और नज़ारा देखना चाहते थे इसलिए बिजली के खम्भे के रास्ते खिसककर नीचे आ गए। हम दोनों को चोटें थोड़ी सी लग गईं और हमने उसी समय कान पकड़े कि आइन्दा ऐसी हरकत कभी नहीं करेंगे। और फिर मैंने वही किस्सा दुहरा दिया जो सिड मौसा को पहले सुना चुका था।

मैंने सोचा, इससे अच्छा मौका दूसरा नहीं मिलेगा। फौरन बो
"अभी शहर दौड़ा चला जाता हूं और वह जहां भी होगा पकड़ लाऊंगा
"नहीं, तुम कहीं नहीं जाओगे।" उन्होंने कहा, "यहीं मेरी निग
के सामने रहोगे। एक साथ दोनों के न रहने से तो एक का रहना फिर
अच्छा। मैं नहीं चाहती कि तुम दोनों एक साथ गुम हो जाओ। अगर
रात के खाने तक भी नहीं आया तो तुम्हारे मौसा जाएंगे उसे ढूंढने।"
रात का खाना भी हो गया और वह नहीं आया, तब मौसा उसे ढू
निकले।

करीब दस बजे रात म वे लौटे और कुछ परेशान भी थे। टाम उ
सारे शहर में कहीं मिला नहीं, न उसका कुछ पता चला। मौसी का ब
चिन्ता के बुरा हाल हो गया। मौसा ने यह कहकर किसी तरह दिला
दिया कि चिन्ता की कोई बात नहीं, बाल-बुद्धि ठहरा, कहीं खिसक ग
होगा, रात नहीं आया तो सबेरे जरूर आ जाएगा। उन्हें कुछ शांति हु
पर बोलीं कि थोड़ी देर बैठकर रास्ता देखूंगी, शायद आ जाए और दी
भी जलता रखूंगी कि उसे दूर से दीख जाए।

और जब मैं ऊपर अपने कमरे में आकर सो गया तो वे मोमब
लेकर वहां आईं, मुझे अच्छी तरह से ओढ़ाया और खूब प्यार किया
उनके इस मातृस्नेह ने मुझे अपनी धृष्टता और नीचता का इतनी तीव्र
से भान कराया कि आत्मा कचोटने लगी और उनसे आंखें मिलाने की मे
हिम्मत न हो सकी। फिर वे मेरे बिस्तरे पर बैठ गईं और देर तक ि
के बारे में बातें करती रहीं कि वह कितना अच्छा लड़का है, और बा
कर-करके उसके गुणों का बखान करने लगीं। ऐसा लग रहा था कि
सारी रात इसी तरह बैठी सिड के बारे में बातें करती रहेंगी और फि
भी उनका मन नहीं भरेगा। वे बार-बार मुझसे पूछती थीं कि तुम्हा
ख्याल में सिड कहां होगा और आशंका प्रकट करतीं कि वह कहीं चल
तो नहीं गया या चोट-चपेट तो नहीं आ गया या कहीं डूब ही गया ह
या कहीं घायल पड़ा तड़प रहा हो या अस्पताल न करें, कर गया हो क
होगा। जाने कहीं अकेला पड़ा हुआ और कोई उसके पास निकट ही
वाला, प्यार से पुचकार के उसका देखभाल करने वाला भी न होगा। हा

मैं तो यहां इतनी दूर बैठी हूं। और उनकी आंखों से आंसू की धाराएं बहने लगतीं और वे उदासमन चुप हो जातीं, और तब मैं उन्हें धीरज बंधाता कि सिड जहां भी होगा भला-चंगा होगा। और सबेरे ज़रूर घर लौट आएगा। सुनकर वे थोड़ा आश्वस्त हो जातीं, स्नेह से मेरा हाथ झकझोरतीं और बार-बार मेरा मुंह चूमकर पूछतीं—"आ जाएगा न, मेरा सिड, सबेरे ज़रूर आ जाएगा न ? एक बार फिर तो कहो दाम बेटे कि वह सबेरे ज़रूर आ जाएगा।' उन्हें मेरे मुंह से यह बात बार-बार सुनना अच्छा लगता था और सुनकर हिम्मत बंधती थी। इसीसे पता चल जाता है कि वे कितनी दु:खी और परेशान रही होंगी।

अन्त में वे जाने के लिए उठीं तो देर तक मेरी ओर स्नेह-भरी दृष्टि से देखती रहीं और फिर कोमल स्वर में बोलीं, "दाम बेटा, आज दरवाजे में ताला नहीं डालूंगी और यह खिड़की है और यह चिमनी का छप्पर मगर तुम उतरकर जाओगे नहीं। बोलो, नहीं जाओगे न ? अपनी मौसी की इतनी बात मान लोगे न ?"

मेरा भगवान जानता है कि मैं जाने के लिए कितना छटपटा रहा था। मौका ही देख रहा था कि वे निकलें और मैं दौड़ा जाकर दाम को देखूं। लेकिन उनके इतना कहने के बाद मैं कहीं नहीं गया, अगर सारी दुनिया का राज्य मिल रहा होता तो भी न जाता।

अध्याय ४२

सवेरे, नाश्ते के पहले बुढ़ऊ एक बार फिर शहर गए, लेकिन टाम का कहीं
पता न चला। दोनो दुश्चिन्ताओं में खोए, उदास मन मेज़ पर आ
बैठे। न उनसे खाया गया, न पिया गया और न मुंह से बोल ही फूटे।
काफी रखी-रखी ठण्डी हो गई। अन्त में बुढ़ऊ ने लम्बी सांस छोड़कर कहा,
" मैंने तुम्हें वह पत्र दिया या नहीं ?"

"कौन सा पत्र ?"

"वही, जो कल डाकखाने से लाया था।"

"नहीं, तुमने मुझे कोई भी पत्र नहीं दिया।"

"तब तो मैं ज़रूर भूल गया।"

उन्होंने कोट की सब जेबें टटोल डाली, लेकिन पत्र न मिला। तब
कुछ याद करके उठे और जहां रखा था वहां से ले आकर मौसी को थमा
दिया।

वे बोली, "अरे, यह तो सेंट पीटर्सबर्ग से आया है; बहिन ने भेजा
है।"

उस समय मैंने कितना चाहा कि उठकर कहीं चला जाऊं, मगर पांवों
ने साथ देने से इनकार कर दिया। और अभी उन्होंने लिफाफा खोला भी
न था कि उसे एक ओर फेंक दरवाज़े की तरफ दौड़ पड़ीं। उन्होंने कुछ
देख लिया था और उनके साथ मैंने भी देखा। वह टाम सायर था, जिसे
लोग गादी पर उठाकर ला रहे थे; साथ में वह बूढ़ा डाक्टर था और जिम,
मौसी का सूती गाउन पहने। उलटी मुश्कें बंधी हुई थीं और पीछे और भी
कई लोग चले आ रहे थे। मैंने सबसे पहला काम यह किया कि पत्र को
छिपा दिया और फिर बाहर की ओर भागा।

मौसी चीख मारकर टाम पर जा गिरीं और रोने लगीं, "चला गया,
मेरा लाल हमें छोड़कर चला गया रे।"

तभी टाम ने थोड़ा-सा सिर घुमाया और जाने क्या बर्रा उठा। लग
रहा, जैसे सन्निपात में हो।

मौसी फौरन उठ बैठीं और दोनों हाथ उछालकर चिल्ला पड़ीं, "मरा
...

नहीं है, भगवान की कृपा से जिन्दा है, मेरा लाल जिन्दा है!" उन्होंने फौरन उसका एक चुम्बन लिया और बिस्तरा तैयार करने के लिए घर में दौड़ी गईं। हर कदम पर वे आदेशों की झड़ी लगा रही थीं; और हबशियों को ही नहीं, जो भी सामने पड़ जाता उसी को कुछ न कुछ काम बता देती थीं।

मैं यह देखने के लिए लोगों की भीड़ के साथ हो लिया कि वे जिम के साथ कैसा बर्ताव करते हैं। डाक्टर और सिलास मौसा टाम के पीछे-पीछे अन्दर चले गए थे। इधर लोग बहुत नाराज और उत्तेजित हो रहे थे और कुछ ऐसे भी थे जो जिम को फांसी टांग देना चाहते थे। उनका कहना था कि जिम ने एक भले परिवार को इतने दिनों तक डर और घबराहट में रखा, इतनी मुसीबतें खड़ी कीं और भागने का गुनाह किया। उस दुष्ट को तो तुरत फांसी दे देना चाहिए, जिससे दूसरे हबशियों के लिए नसीहत हो जाए। लेकिन कुछ और लोग ऐसे भी थे जो इस पक्ष में नहीं थे, उनका कहना था कि जिम हमारा हबशी नहीं है और अगर हमने उसे फांसी चढ़ा दिया और उसके मालिक ने आकर कीमत मांगी तो देनी पड़ेगी, और यह मुफ्त की चपत हो जाएगी। इस तर्क ने फांसी देने की बात करनेवालों का जोश ठंडा कर दिया। मैंने हमेशा पाया है कि नाहक बात करने वाले हबशी को फांसी देने की बात करनेवाले खास तौर पर वही लोग होते हैं जो उनको पकड़ कर अपने मन की भड़ास निकाल लेने के बाद भी उनकी कीमत चुकाने

मिलेगा और अगर एक खास मुद्दत में तेरा मालिक आकर तुझे ले न गया तो खुले बाजार नीलाम कर दिया जाएगा। और भागने की कोशिश की तो जान से मारा जाएगा, क्योंकि दो किसान हर रात भरी बन्दूकें लिए झोपड़ी का पहरा देते रहेंगे और दिन में दरवाजे पर बुलडाग बंधा रहेगा। वे लोग अपना काम निपटाकर और उसे खूब खरी-खोटी सुनाकर जा ही रहे थे कि डाक्टर साहब वहां आ गए।

उन्होंने सारी व्यवस्था देखी, लोगों की कुछ बातें भी सुनीं और तब बोले, "इस बेचारे के साथ जरूरत से ज्यादा सख्ती मत करो। कुल मिलाकर यह काफी अच्छा और भला हबशी गुलाम है। तुम सोचते हो उतना बुरा नहीं है। जब मैं वहां पहुंचा तो बच्चे की हालत बहुत खराब थी—इतनी खराब कि मैं बिना किसीकी मदद के अकेला उसके पांव से गोली निकाल नहीं सकता था। उसे अकेला वहां छोड़कर किसी मददगार को ले जाने के लिए आ भी नहीं सकता था। और उसकी हालत बराबर बिगड़ती जा रही थी। मेरे देखते-देखते उसे सन्निपात हो गया। अब न वह मुझे पास आने देता था, न हाथ लगाने देता था। जाने क्या अण्ट-शण्ट चिल्लाने भी लगा। कभी कहता कि बेड़े पर चाकू से निशान बनाया तो गला घोंट दूंगा, कभी कुछ और कभी कुछ। और मेरी मुसीबत यह कि गोली निकालने और उसे आराम पहुंचाने के लिए कुछ कर नहीं पा रहा था। आखिर मैंने कहा कि कोई मददगार तो लाना ही होगा। जैसे ही मेरे मुंह से यह बात निकली और यह हबशी जाने कहां से आकर खड़ा हो गया और बोला कि सा'ब, मैं आपकी मदद करूंगा। इसने मदद की और बहुत अच्छी तरह मदद की। मैं समझ गया था कि यह वही भागा हुआ हबशी होना चाहिए और मैंने बिलकुल ठीक ही समझा था। मुझे वहां बाकी का सारा दिन और पूरी रात रहना पड़ा। यों समझ लो कि फंस गया था। अच्छी-खासी परेशानी हो गई थी मेरे लिए। शहर में मेरे कुछ बीमार थे—जूड़ी-बुखार के और उनकी खोज-खबर लेना मेरा फर्ज था। बहुत चाहता था कि दौड़ जाकर उन्हें देख आऊं, मगर इसलिए नहीं गया कि हबशी भाग जाएगा तो लोग मुझे दोष देंगे। किस्मत की बात उधर से कोई नाव भी नहीं निकली, जिसे पुकारकर बुला लेता। इस तरह आज सवेरा होने तक वहीं अटका

और बारीकी के काबिल काम किया है और उसे इनाम मिल
इसलिए सबने यहीं, जिम के सामने, यह वादा किया कि अब को
नहीं देगा और न बुरा-भला कहेगा। इसपर मैंने मन ही मन ड
को हृदय से धन्यवाद दिया। उन्होंने जिम पर यह बड़ा उपका
मुझे इस बात की खुशी थी कि डाक्टर साहब के बारे में मैंने
था वे ठीक वैसे ही साबित हुए। पहली बार देखते ही मैं समझ
वे सहृदय और सज्जन व्यक्ति हैं।

इसके बाद लोग कोठरी में से बाहर निकल आए और जि
में बन्द कर दिया। मैं आशा कर रहा था कि वे उसकी दो-एक
जंजीरें तो जरूर उतार देंगे और पानी-रोटी के साथ थोड़
सब्जियां देने के लिए भी राजी हो जाएंगे, लेकिन किसीने य
नहीं। शायद उनके खयाल में भी नहीं आई। और मेरा कहन
होता। मगर मैंने वहीं फैसला कर लिया कि जैसे ही बाधाए
जाएंगी सैली मौसी को जिम के बारे में डाक्टर साहब की राय
बेचारे की कुछ मुश्किलें तो हल कर ही दूंगा। बाधाओं से मेरा
सफाई से है जो 'सिड' के गोली से घायल हो जाने के बारे में
हो गई थी। मैंने सिलास मौसा और सैली मौसी को यह नहीं बत
उस रात डाकुओं का पीछा करते और बाद में नदी पर ढूंढ-
समय 'सिड' को कब, कैसे और कहां गोली लगी।

सफाई देने के लिए मुझे काफी समय मिल गया था; क
मौसी वह सारा दिन और पूरी रात बीमार के कमरे में रहीं औ
भी सिलास मौसा खोए-खोए से सामने आते दिखाई दिए मैं हर
काट गया।

दूसरे दिन सवेरे जब मैंने यह सुना कि टाम की हालत अच
मौसी थोड़ी देर के लिए सोने चली गई हैं तो चुपके से टाम
पहुंच गया। मैं इसलिए गया था कि अगर वह जागता हुआ मि
दोनों मिलकर सलाह कर लें कि गोली लगने के बारे में क्या
रहेगा, जिससे घरवालों को सन्देह न हो और बात उनके गले उ
लेकिन टाम सो रहा था और सो भी रहा था बड़ी शान्ति से गहर

चेहरा इस समय जरूर पीला पड़ गया था; अब उसे लेकर आए वे
तमतमाया हुआ नहीं था। मैं वहीं बैठकर उसके जागने का इन्तजार क
लगा। अभी मुश्किल से आधा घण्टा हुआ होगा कि सैली मौसी आ धमकी
अब मेरे काटो तो खून नहीं। लेकिन उन्होंने मुझे अंगुली होठ पर रख
चुप हो जाने का इशारा किया और खुद मेरी बगल में बैठकर कानाफूसि
में बताने लगीं कि अब चिन्ता की कोई बात नहीं है, लक्षण सब अच्छे है
वह देर से इसी तरह शान्तिपूर्वक सोया हुआ है, एक बार भी कराहा या
बर्राया नहीं, इसलिए आशा बंधती है कि अपने होश-हवास में ही जागेगा।

इसलिए हम दोनों वहीं बैठे देखते रहे कि कब जागता है। कुछ देर के बाद वह कुनमुनाया और धीरे-धीरे आंखें खोलीं। उसकी दृष्टि बिलकुल स्वाभाविक थी। उसने अचरज भाव से चारों ओर देखा और तब बोला, "अरे, मैं तो घर में हूं। यह कैसे हुआ? बेड़ा कहां है?"

"सब ठीक है।" मैंने कहा।

"और जिम?"

"वह भी।" लेकिन मेरे इस कथन में उत्साह नाम को भी नहीं था। परन्तु उसका ध्यान इस ओर नहीं जा पाया और वह बोला, "बहुत बढ़िया! अब हम लोग खतरे से बिलकुल बाहर हैं। क्या तुमने मौसी को बता दिया?"

मैं 'हां' कहने जा ही रहा था कि मौसी एकदम बीच में कूद पड़ीं और बोलीं, "किस बारे में सिड?"

"जिस तरह सारा काम हुआ है।"

"कौन-सा काम?"

"कुल क्या एक ही तो काम है, और वह यह कि मैंने और टाम ने उस फरार हब्शी को आजाद कर दिया।"

"हे भगवान, यह क्या कह रहा है! कहीं फिर तो बच्चे को सन्निपात का दौरा नहीं पड़ गया।"

"नहीं, कुछ दौरा-वौरा नहीं पड़ा। मैं बिलकुल ठीक हूं और जो कुछ कह रहा हूं, होश में कह रहा हूं। हमने उसे आजाद किया—मैंने और टाम ने। हमने योजना बनाई थी और उसे बड़ी खूबी के साथ पूरा भी किया।"

वह बड़े उत्साह [illegible]

कोशिश नहीं की। वहाँ बैठी, उसकी ओर देखती हुई सुनती रहीं और वह बोलता रहा। मैं भी चुप रहा, क्योंकि जानता था कि कुछ कहना व्यर्थ ही होगा। "बड़ी मेहनत करनी पड़ी मौसी। हफ्तों तक, हर रात जब तुम सब लोग सो जाते थे, हम कई-कई घण्टे काम में भिड़े रहते थे। अपनी ज़रूरत के लिए हमें मोमबत्तियाँ, चादर, कमीज़, तुम्हारा गाउन, चम्मच, टीन की तश्तरियाँ, छुरियाँ, पीतल का वह पतीला, घिसौना, आटा, मोमबत्तीदान और भी न जाने कितनी चीज़ें चुराना पड़ीं। कलमें और आरियाँ बनाने और पत्थर पर खुदाई करने और इसी तरह के दूसरे बहुत-से कामों में हमें जिन मुश्किलों का सामना करना पड़ा और जो मेहनत करनी पड़ी है उसका तुम अन्दाज़ भी नहीं लगा सकतीं मौसी! लेकिन इन कामों में मज़ा भी खूब आया! खेल का खेल था और मेहनत की मेहनत भी। इतना ही नहीं, दरवाज़ों पर खोपड़ी और ताबूत के निशान भी हमीं को बनाने पड़े और वे गुमनाम पत्र भी हमीं ने लिखे। बिजली वाले छड़ के रास्ते हमें आना-जाना पड़ता था। झोंपड़ी में बहुत बड़ा गड्ढा खोदना पड़ा। रस्सियों की सीढ़ी बनाई और उसे अन्दर रखकर भेजने के लिए बड़ी-सी गुझिया पकाई। और चम्मच और दूसरी बहुत-सी चीज़ें तो हमने तुम्हारे ही एप्रन की जेब में रखकर भेजीं…"

"भगवान बचाए तुमसे!"

"…और जिम की सोहबत के लिए साँप और चूहे ले जाकर उसकी कोठरी में छोड़े, लेकिन ऐन वक्त पर टाम को, जब वह टोपी में मक्खन लिए आ रहा था, काफी देर रोके रखकर तुमने सारा गुड़ करीब-करीब गोबर कर ही दिया था, क्योंकि हम कोठरी में से निकलने भी नहीं पाए थे कि लोग-बाग वहाँ पहुँच गए और हमें भागना पड़ा। उन्होंने सुन लिया और पीछा किया और मेरे पाँव में गोली लगी। लेकिन हमने रास्ते से उन्हें भुला दिया और वे आगे निकल गए, फिर कुत्ते आए, लेकिन हमें पहचानते थे, इसलिए कुछ न बोले और भौंकते हुए उधर चले गए जिधर वे लोग शोर मचा रहे थे। इस बीच हम नदी किनारे जाकर अपनी नाव में सवार हो गए और बेड़े पर पहुँच गए। इस तरह सुरक्षित निकल भागे और जिम को आज़ाद कर दिया। यह सब अपने हाथों से किया मौसी! बोलो, रहा

न हैरत अंगेज़ और सनसनीदार ?"

"मैं तो सपने में भी नहीं सोच सकती; और न इतनी उमर हुई क[illegible] सुना। अब पता चला कि सारी कारस्तानी तुम्हारी थी। शैतान, तूने डरा-डराकर हम लोगों की जान ही ले ली थी! बीमार न होता तो म[illegible] ही यो मार मारती, यो मार मारती कि सारी हैरतअंगेज़ी और सनसनी-दारी धरी रह जाती। मैं मारे डर के रात-रात-भर बैठी रह जाती थी औ[र] तुम दोनों उधर यो गुल खिला रहे थे, क्यों! अच्छे हो तो जाओ बच्चू[illegible] घड़ी-प्रसाद खिलाकर सीधा न कर दिया तो कहना, हां!"

लेकिन टाम खुशी और गर्व के मारे फूला नहीं समा रहा था। वह अपनी करतबगिरी के बखान करता ही गया और इधर मौसी उसे फट-कारती और आड़े हाथों लेती रहीं। वह जितने ज़ोर से बखान करता मौसी उतने ही ज़ोर से फटकारती थी। यहां तक कि दोनों में होड़-सी मच गई और उनका चिल्लाना ऐसा प्रतीत होने लगा मानो बिल्लियां लड़ रही हों।

अन्त में मौसी ने कहा, "इस बार तो जो कर लिया सो कर लिया, लेकिन आगे कभी उसके मामले में अपनी टांग फंसाई है तो मुझसे बुरा..."

"वह तुम किसके मामले में टांग फंसाने की कह रही हो?" टाम की मुस्कराहट गायब हो गई थी और उसकी आंखों में गहरा विस्मय था।

"वही मनहूस हबशी, दूसरे किसके बारे में कहूंगी!"

टाम ने अपनी आंखें घुमाकर मुझ पर डालीं और बड़ी गम्भीरता से पूछा, "टाम, तुम तो अभी कह रहे थे कि वह अच्छी तरह से है। वो भाग न सका?"

"उससे क्या पूछना है, मैं बताती हूं।" मौसी बोलीं, "वह भागकर जा न सका। [illegible] और फिर कोठरी में बन्द किया। इस बार दूनी, भारी और वज़न की [illegible] डाली गई हैं और अब तक उसका मालिक आकर ले नहीं जाता या नीलाम नहीं कर दिया जाता सिर्फ रोटी और पानी पर रखा जाएगा।"

टाम तकिए पर से उठकर बैठ गया। उसकी आंखों से अंगारे निकल रहे थे। नथुने फूल रहे थे और उसने गरजकर मुझसे कहा, "उसे कैद में रखने का अधिकार किसी को नहीं है। जाओ और उस [illegible]

[illegible]

आज़ाद कर दो। वह गुलाम नहीं है। धरती के किसी भी जीव की तरह वह भी आज़ाद है, बिलकुल आज़ाद।"

"यह छोरा कह क्या रहा है ?"

"वही कह रहा हूं जो मुझे कहना चाहिए। सुनो मौसी, अगर कोई उसे छुड़ाने नहीं जाता तो मैं खुद जाऊंगा। मैं उसे बचपन से जानता हूं और टाम भी जानता है। उसकी मालकिन मिस वाटसन को मरे दो महीने हो गए। अन्त तक पछताती रहीं कि बेचारे को दक्षिण में बेचने की बात चलाई ही क्यों। मरने से पहले वे अपने वसीयतनामे में उसे आज़ाद कर गई हैं।"

"अरे नासपीटे, जब वह आज़ाद था तो तूने उसे आज़ाद करने के लिए इतना तिकड़म क्यों किया ?"

"तुमने भी मौसी, क्या सवाल पूछ लिया, बिलकुल औरतों जैसा ! मुझे तो साहसिक काम कर दिखाना था और वह मैंने किया। अगर इसके लिए खून की नदी भी तैरकर पार करनी पड़ती···अरे वाह ! पोली मौसी !"

सच, बीच दरवाज़े में वही खड़ी थी, बिलकुल देवदूतों-जैसी मनमोहक और परम प्रसन्न ! एक क्षण तो मुझे अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ।

सैली मौसी लपककर उनके गले लिपट गई और देर तक दोनों एक-दूसरे को चूमती रहीं और थोड़ा रोना-धोना भी हो लिया। इस बीच मैं खाट के नीचे जा घुसा, क्योंकि अब हम दोनों की खैर नहीं थी—पोली मौसी के रूप में हमारी शामत ही आ गई थी।

मैंने नीचे से झांककर देखा तो पोली मौसी ने अपने को सुधार लिया था और चश्मे के ऊपर से घूरकर इस तरह टाम को देख रही थीं मानो कच्चा ही चबा जाएंगी। फिर बोलीं, "तुम्हारे लिए बेहतर यही होगा टाम कि मुझे अपना मुंह मत दिखाओ ! तुम्हारी जगह मैं होती तो कभी न दिखाती, समझे टाम !"

"हाय-हाय !" सैली मौसी बोल उठीं, "क्या वह इतना बदल गया कि तुम पहचान भी न सकीं ? अरे बहिन, यह टाम नहीं सिड है। टाम तो···टाम तो···कहां चला गया वह ? अभी, इसी घड़ी तो यहीं था।"

"तुम्हारा मतलब हकफिन से है—हां, ज़रूर उसीसे है
मैंने जिसे पाल-पोसकर छोटे से बड़ा किया उस मुसीबत के
को देखकर पहचान भी न सकूंगी ? चलो, यह भी अच्छी
रही। अब हकफिन, फौरन खाट के नीचे से निकल तो आओ

निकले बिना कोई चारा नहीं था, इसलिए निकलना पड़ा,
बैठी जा रही थी।

सैली मौसी की तो शक्ल देखने काबिल हो गई थी; वैसा
मैंने किसीको नहीं देखा था। हां, सिलास मौसा को अन्दर बु
सारी बात बताई गई तो वे भी उतने ही बदहवास हुए। मानो
खूब शराब पीकर सुध-बुध भूल गए हों। फिर सारा दिन वे वै
हालत में ही घूमते रहे, और उस शाम उन्होंने एक प्रार्थनासभा
प्रवचन किया वह इतना ऊटपटांग और बेमानी था कि दुनिया का
बूढ़ा आदमी भी उसका अर्थ नहीं लगा सकता था।

आखिर इस तरह मेरी पोल खुली और टाम की पोली मौसी
लोगों को मेरे बारे में सब कुछ बता दिया कि कौन हूं और क्या हूं
लिए मुझे भी मंजूर कर लेने के सिवा कोई चारा नहीं था। मैंने अ
बता दिया कि उस समय मैं इतनी मुसीबत में था कि जब फिनेस
ने—वे फौरन मेरी बात काटकर बोलीं, 'मुझसे [illegible] हो
इसलिए सैली मौसी ही कहो, आन्टी बदलने की ज़रूरत नहीं"—
कहा कि जब सैली मौसी ने मुझे टाम सायर समझा तो उसे मान ले
सिवा मेरे सामने और कोई चारा नहीं था। और जहां तक टाम का
सवाल, मैं जानता था कि उसे कोई एतराज न होगा, बल्कि खुशी ही हो
क्योंकि इस तरह के कामों में उसे मज़ा आता है और वह अपने
काम बना लिया करता है। आखिर हुआ भी यही, वह फिर बन गया
मेरी पोल खुलने न दी।

और सैली मौसी ने इस बात का समर्थन किया कि टाम ने जिम के लिए
[illegible] बारे में यह भी बताया कि वे जिसको आज़ाद कर गई वह सब
[illegible] वसीयत में [illegible]
[illegible]

ाने के लिए इतनी मुसीबतें उठाई थीं ! जब टाम मेरा साथ देने के ् तैयार हुआ तो मुझे इसलिए आश्चर्य हुआ था कि जिन परिस्थितियों सका लालन-पालन हुआ उनमें कोई भी गोरा बालक इस काम के लिए ी नहीं हो सकता था; वह तो ऐसे काम को बुरा और निन्दनीय ही मता। परन्तु अब राज खुला और उसकी तत्परता का रहस्य समझ ा गया।

पौली मौसी ने यह भी बताया कि सैली मौसी से यह पत्र पाकर कि ा और सिड सकुशल पहुंच गए, इन्हें बड़ा अचरज हुआ और वे समझ कि टाम ने जरूर कोई शैतानी की है। बोली, "मैं अपने को कोसने ो कि नाहक उसे अकेला भेजा। किसीके साथ भेजना चाहिए था। ्र उसने कोई शैतानी की है। अब सिवा इसके कोई चारा नहीं रहा खुद ग्यारह सौ मील नदी पर चलकर यहां आऊं और अपनी आंखों देखूं कि इस आफत के परकाले ने क्या गजब ढाया है, क्योंकि मेरे तो ः भी खत का जवाब तुम्हारे इधर से मिल नहीं रहा था।"

"क्या कहती हो ? मुझे तो तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला।" सैली मी ने कहा।

"ताज्जुब है। मैंने एक नहीं दो-दो खत लिखे और हर बार यही पूछा सिड के यहां पहुंचने से तुम्हारा क्या मतलब है।"

"ना बहिन, मुझे तो एक भी पत्र नहीं मिला।"

पौली मौसी ने फौरन टाम की ओर मुड़कर कठोर स्वर में कहा, ाम, सुना !"

"हां, सुना तो; फिर क्या ?" उसने कुछ ढिठाई से जवाब दिया।

"देख, मुझसे 'क्या-क्या' करना तो रहने दे और खत इधर ला, मेरे ाले कर।"

"कौन-से खत ?"

"अभी बताती हूं कौन-से खत ? चल, निकालता है या नहीं; या बगैर टे अकल ठिकाने नहीं आएगी ?"

"जाओ, ट्रंक में रखे हैं, ले लो। जैसे आए थे वैसे ही हैं; मैंने खोला ा नहीं। डाकखाने से लाकर सीधे ट्रंक में रख दिए। पढ़ने की कोशिश

छह हजार डालर और ऊपर का पैसा भी, सब का सब जज साहब के पा
जमा है और तुम्हारे पिता जी अभी तक नहीं लौटे। कम से कम मेरे जाने
तक तो नही लौटे थे।"

"और हक, अब वे कभी लौटेंगे भी नहीं।" जिम ने कुछ गम्भीर
होकर कहा।

'क्यों ?"

"यह मत पूछो हक, कि क्यों ! मगर मैं जानता हूं कि अब वे कभी
नही लौटेंगे।"

लेकिन जब मैंने जिद ही ठान ली तो उसने बताया, "वह नदी में ब
कर जाता हुआ मकान तो तुम्हें जरूर याद होगा और यह भी याद होगा
कि उसमें एक आदमी मरा पड़ा था और उसका चेहरा ढंका हुआ नहीं था
और मैंने चेहरा ढाक दिया था और तुम्हें अन्दर जाने से मना किया था।
अब तुम जब चाहो अपना पैसा वापिस पा सकते हो, क्योंकि वह आदमी
तुम्हारे पिता जी थे।"

टाम अब अच्छा हो गया है और उस गोली को घड़ी की जंजीर में
लगाकर हरदम अपने गले मे डाले रहता है और बार-बार देखा करता है कि
कितने बजे हैं, और इसलिए विशेष कुछ लिखने को रहा नहीं है, और मुझे
भी इस बात की बहुत खुशी है, क्योंकि अगर पहले से मालूम होता कि किताब
लिखना इतना मुश्किल काम है तो मैं कभी इसमें हाथ न लगाता और आगे
तो इस काम में हर्गिज हाथ नहीं डालूंगा। लेकिन मैं सोच रहा हूं कि दूसरों
से पहले ही इण्डियन इलाके मे निकल जाऊं, क्योंकि सैली मौसी मुझे गोद
लेने और सभ्य बनाने का फैसला कर चुकी है, जो मुझे किसी भी शर्त पर
स्वीकार नहीं है। बहुतेरी सभ्यता भी देख आया हूं।

सस्नेह तुम्हारा
हक फिन

॥॥

कुछ महत्त्वपूर्ण उपन्यास

छे कागज पर २०×३०/१६ प्राकार में, सुन्दर ढंग से
त आवरणों से सज्जित, सजिल्द आकर्षक पुस्तकें, जो वि
न साहित्यकारों की रचनाओं के लोकप्रिय अनुवाद हैं—
यन्त उपादेय और संग्रहणीय। मूल्य बहुत कम। लगभग
ी पुस्तकें हिन्दी मे पहली बार प्रकाशित हो रही हैं।

'पुल' (फ़ॉर हूम द बेल टॉल्स) हेमिंग्वे का सर्वोत्तम
वे उपन्यास है और हिन्दी में पहली बार प्रकाशित हो
रहा है। हेमिंग्वे की अनूठी कहानी-कला की समग्र
०८ विशेषताओं से भरपूर यह उपन्यास विश्व-साहित्य
१० की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति माना जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास में अमरीका के न्यू इग्लैंड राज्य के
एक बिगड़ते हुए कुलीन परिवार और उसकी विशाल
४० हवेली की जड़ में ही किराये के एक छोटे-से कमरे में
०० रहने वाले नवयुवक, हालग्रेव की कहानी है। इसमें
चरित्रों और घटनाओं के चारों ओर एक बहुत ही
भीनी पौराणिक धुन्ध-सी तैर रही है, जो उनके
सौन्दर्य में चार चाँद लगा देती है। बाद के मनोवैज्ञा-
निक उपन्यासों का इसे अग्रदूत कहा जा सकता है।

पन अभिजात मान्यताओं और संस्कारों के साथ नई
११ मान्यता के संघर्ष की इस कहानी द्वारा लेखक ने
८०२ अमरीकियों की नैतिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं
को यूरोप की प्राचीन नैतिकता और प्रथाओं के सन्दर्भ
में रखा है। इसका नायक प्रकृति अपनी कोख जिसमा